88
अनमोल सीरीज

कीरो

हस्तरेखा विज्ञान



हाथ की रेखाओं का विस्तृत ज्ञान। हाथ, अंगुलियों, अंगूठे की बनावट,
त्वचा, रंग के आधार पर स्वभाव की विस्तृत जानकारियों
से भरपूर रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तक

❑ पुस्तक : कीरो हस्तरेखा विज्ञान (सचित्र)
❑ मूल लेखक : कीरो
❑ प्रस्तुति :आबिद रिज़वी
❑ प्रकाशक : मारुति प्रकाशन,
अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ-2
©(0121)2518025,3255234
❑ कम्प्यूटरीकृत पृष्ठ सज्जा : सैन्ट्रो ग्राफिक्स, मेरठ।
❑ मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, दिल्ली।

दो शब्द

हस्तरेखा ज्ञान या पामेस्ट्री ऐसा विषय है जिसके प्रति हर मनुष्य को जिज्ञासा रहती है। स्त्री और पुरुष अपने भाग्य और भविष्य की जानकारी के लिए जिज्ञासु रहते ही हैं, बच्चे तक अपना हाथ दिखाकर अपने भविष्य के बारे में जानकारी पाने के लिए उत्सुक होते हैं।

वास्तव में मनुष्य का हाथ विधाता द्वारा रचा हुआ उसके जीवन, भाग्य, स्वास्थ्य, विवाह, संतान, स्वभाव, कर्म का, रेखाओं के रूप में, ऐसा कोष होता है, जिसका लेखा-जोखा हस्तरेखाशास्त्री के सामने हाथ देखते ही आ जाता है।

विश्वविख्यात हस्तरेखाशास्त्री कीरो, ऐसे प्रकाण्ड ज्योतिषी हुए हैं जिन्होंने जिस किसी के भी हाथ को देखकर जो कुछ भी बताया, शत-प्रतिशत अपने जीवन में ही खरा उतरता हुआ पाया। वे न सिर्फ हस्तरेखाशास्त्री बल्कि अंक विज्ञानी एवं ज्योतिष शास्त्री भी थे। वे ऐसे भविष्यदृष्टा हुए कि आने वाले समय के लिए जो भविष्यवाणी की, खरी उतरी।

कीरो ने दूर देशों की यात्राएं कीं, भारत के ज्योतिष शास्त्र से सम्बन्धित प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन किया, ज्योतिष विद्या की गूढ़ ज्ञान की जानकारी रखने वालों की खोज की, उनके पास वंश परम्परा से, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित चले आ रहे ज्ञान की जानकारी प्राप्त की तथा अपना ज्ञान बढ़ाया; और 'हस्तरेखा विज्ञान' पर विश्व को ऐसी पुस्तक दी कि संसार देखकर विस्मय से भर उठा।

कीरो ने हस्तरेखा विज्ञान पर जो कुछ भी लिखा वह वर्षों

अध्ययन-अनुभव और ज्ञान का फल था। मनुष्य के हाथों में पायी जाने वाली साधारण-से-साधारण रेखा के फल को भी जाना-परखा और उसका जीवन, भाग्य, स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका विस्तृत वर्णन किया।

पुस्तक की रचना इतने सरल, सुबोध, रुचिकर ढंग से और चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की कि हस्तरेखा में कुछ भी जानकारी न रखने वाला भी पुस्तक को पढ़कर इस विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर अपना भाग्य और भविष्य जान सके। भविष्य के बारे में जानकर उसके प्रति सजग रह सके।

इस पुस्तक के माध्यम से कोई भी व्यक्ति मात्र अध्ययन के आधार पर अपना, अपने परिवार का, मित्रों व रिश्तेदारों का हाथ देखकर उसके स्वभाव, भाग्य और भविष्य की जानकारी पा सकता है, दे सकता है।

पुस्तक में केवल उन्हीं रेखाचित्रों को स्थान दिया गया है जिनसे आपका हित हो सके, जो आपका ज्ञानवर्धन कर सके। ऐसे चित्रों को जो कि विरले लोगों के हाथों में ही, यदा-कदा देखने को मिलते हैं उन्हें अनावश्यक समझकर निकाल दिया गया, ताकि व्यर्थ के पृष्ठ बढ़ने के कारण आपकी जेब पर पुस्तक की बढ़ी हुई मूल्य का बोझ न पड़ सके।

यह पुस्तक आपके लिए हर प्रकार से उपयोगी साबित होगी, ऐसा पूर्ण विश्वास है।

—प्रकाशक

विषयानुक्रमणिका



हस्तरेखा ज्ञान क्या है?

मणिबन्ध रेखाओं, अंगुलियों के सिरे तक का भाग हाथ कहलाता है। हस्तरेखा के अध्ययन के लिए इस भाग का ही प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए हाथ की बनावट, हथेली, करपृष्ठ, अंगूठा, नाखून, अंगुलियां, रेखायें और विभिन्न चिह्न आदि का अध्ययन किया जाता है। ये सभी हाथ के अन्तर्गत ही आते हैं, जिससे मनुष्य की प्रवृत्ति, बौद्धिक शक्ति, नैतिक चरित्र, क्रिया-कलाप एवं भावी घटनाओं के संकेत प्राप्त होते हैं।

त्वचा के आधार पर चरित्र-व्यक्तित्व की जानकारियां

हथेली की त्वचा को देखकर ही मानव के चरित्र, स्वभाव और और मेहनत करने की क्षमता का पता लगाया जा सकता है। हाथ को छूकर ही उसके बारे में बहुत कुछ पता लग जाता है। कुशल और अनुभवी व्यक्ति हाथ के छूते ही किसी भी व्यक्ति की आदत और चरित्र को जान जाते हैं। हाथ की त्वचा के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं–

(1) जिस व्यक्ति की हथेली मांसल और साधारण कोमल होती है ऐसा व्यक्ति आनन्दप्रिय होता है, विलासितापूर्ण जीवन जीते हुए मर्यादित रहता है। अपनी मर्यादा की सीमा का उल्लंघन नहीं करता है।

(2) जिसकी हथेली मांसल तथा कम कठोर है, ऐसा व्यक्ति मेहनती तथा भावुक होता है।

(3) जिसकी हथेली मांसल एवं कठोर है, वह व्यक्ति क्रूर प्रवृत्ति का होगा।

(4) जिसकी हथेली मांसल तथा साधारण कठोर है, वह सिद्धान्तवादी और ईमानदार व्यक्ति होता है।

(5) यदि हथेली नर्म और लचकदार होती है और लाल है तो ऐसे व्यक्तियों में शारीरिक क्षमता कम होती है, मेहनत या विपरीत परिस्थितियों में ऐसे व्यक्ति घबराते हैं, वे आत्मकेन्द्रित और स्वाभिमानी होते हैं।

(6) यदि व्यक्ति की हथेली मांसल और अधिक कोमल होती है वह व्यक्ति भावना-प्रधान होता है। प्रेमी और कल्पनाशील भी होता है। ऐसे व्यक्ति साहित्यकार, कवि, लेखक, संगीतकार, चित्रकार, कलाकार, आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्याओं के जानकार होते हैं। काम (Sex) इनकी कमजोरी होती है और नियन्त्रण न रखने की हालत में पतन की वजह भी यही होता है।

(7) यदि हथेली पतली, मांसहीन और मुलायम हो तो ऐसा व्यक्ति चरित्रहीन होता है। उसका चरित्र हनन आयु के किसी भी भाग में हो सकता है।

(8) यदि हथेली का बीच का भाग नीचा है तो ऐसा व्यक्ति स्वभाव से डरपोक और कायर होता है लेकिन गप मारना उसकी आदत में होता हैं। वीरता का प्रदर्शन करता रहता है।

(9) यदि हथेली पतली, छोटी, मांसहीन है तो ऐसा व्यक्ति दुर्बल होता है। अस्थिर जीवन जीता है। दिल और विचारों से भी कमजोर होता है।

(10) यदि हथेली का अगला भाग पतला, मांसहीन तथा कठोर है तो ऐसे व्यक्ति अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं। स्वार्थ-सिद्धि के लिए जघन्य अपराध करने से भी नहीं डरते हैं। वे लोभी एवं संकीर्ण विचारधारा के व्यक्ति होते हैं।

(11) यदि हथेली का मध्य भाग चपटा और ऊंचा हो तो ऐसा व्यक्ति अहंकारी होगा। मूर्ख भी हो सकता है और जिद्दी स्वभाव का होगा। स्वार्थी और गुस्सा करने वाला होगा।

रंग के आधार पर चरित्र-व्यक्तित्व ज्ञान

हथेली का रंग मनुष्य के जीवन का अन्दर का प्रतिबिम्ब होता है। हथेली को कई बार अंगुलियों से दबाने पर हथेली का असली रंग आ जाता है। रंग से किसी भी मनुष्य के जीवन की अनेक सम्भावनाओं को जाना जा सकता है, जो अग्र प्रकार हैं–

(1) यदि हाथ का रंग मटमैला है और हथेली ठण्डी है और पसीने से भीगी रहती है तो ऐसा मनुष्य रहस्यमयी होता है। आसानी से उसके बारे में नहीं जाना जा सकता है।

(2) यदि हथेली का रंग गुलाबी हैं तो ऐसा व्यक्ति नीरोग होता है तथा प्रेम दया, करूणा, क्षमा, धैर्य, श्रद्धा, स्नेह, भावुकता, मिलनसार, जीवन के प्रति ललक, उत्साह आदि मानवीय गुणों से धनी होता है।

(3) यदि हथेली अधिक गुलाबी या लाल रंग की है तो ऐसा व्यक्ति जल्दबाज, परिवर्तनशील और गुस्से वाला होता है।

(4) यदि हथेली का रंग पीला है तो ऐसा मनुष्य उदर रोग या अन्य किसी रोग से ग्रसित होता है। ऐसे व्यक्ति निराशावादी होते हैं। इनमें पलायनता, विरक्ति की भावना अधिक होती है। कभी-कभी इसी भावना से ग्रसित होकर अपना पारिवारिक जीवन भी समाप्त कर डालते हैं। इनके सोचने का ढंग हमेशा नकारात्मक होता है। जीवन के अधिकांश भाग में इन्हें नाकामी ही मिलती है, उसके लिए वह खुद जिम्मेदार होते हैं।

(5) जिनकी हथेली साफ और श्वेत रंग की होती है, वे आध्यात्मिक शक्ति के धनी होते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में असाधारण कामयाबी अर्जित करते हैं।

(6) रक्त की कमी की वजह से स्त्रियों के हाथ में पीलापन आ जाता है या मेहंदी की वजह से वास्तविक रंग में अन्तर आ जाता है। दोनों ही हालत में फलादेश नहीं करना चाहिए।

(7) यदि हथेली का रंग नीला या बैंगनी हो तो ऐसा व्यक्ति रोगी होगा और जीवन के प्रति निराश होगा।

(8) यदि हथेली का रंग काला है तो ऐसा मनुष्य चोरी करने की प्रवृत्ति रखता है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि में जुटा रहता है लेकिन उदास औ नाकाम जीवन व्यतीत करता है।

(9) कई बार खून की कमी की वजह से भी हाथ पीले या सफेद हो जाते हैं। स्वस्थ हो जाने तक उनके रंग के आधार पर फलित नहीं करना चाहिए। नीरोग व्यक्ति की हथेली के रंग पर ही विचार करना चाहिए यदि हथेली लम्बे समय तक सफेद रहती है तो व्यक्ति रोगी और हृद रोग से ग्रस्त होता है।

□□□



हाथों के भाग और तकनीकी शब्द

आम भाषा में कन्धे के जोड़ से लेकर हाथों की उंगलियों तक के भाग को हाथ कहा जाता है, लेकिन 'हस्तरेखा विज्ञान' में हाथ का तात्पर्य कलाई (मणिबन्ध) से लेकर हथेली और उंगलियों तक होता है। इसलिए हाथ को हस्तरेखा विद्वानों ने विभिन्न भागों में विभक्त किया है। जिन्हें निम्न प्रकार समझा जा सकता है—

दक्षिण हस्त—दाएं हाथ को 'दक्षिण हस्त' कहते हैं।

वाम हस्त—बाएं हाथ को 'वाम हस्त' कहते हैं।

करतल—हाथ की कलाई (मणिबन्ध) से उंगलियों की जड़ तक के भाग को 'करतल' या हथेली कहते हैं। हस्तरेखा विज्ञान में हाथ के इस भाग को अधिक महत्त्व दिया है। इसी भाग में मोटी और पतली अनेक रेखाएं होती हैं।

करपृष्ठ—करतल (हथेली) के पिछले भाग (पृष्ठभाग) को कहते हैं।

मणिबन्ध—करतल (हथेली) के पीछे लगभग एक इन्च की दूरी तक के भाग को जिसमें वलय की तरह रेखाएं दिखाई देती हैं, मणिबन्ध कहलाता है।

अंगुष्ठ—हस्तरेखा विज्ञान में अगूंठे को 'अंगुष्ठ'' कहा जाता है।

तर्जनी—यह अंगूठे के बाद वाली उंगली होती है।

मध्यमा—तर्जनी के बाद वाली हाथ की सबसे लम्बी उंगली को कहते हैं।

अनामिका—मध्यमा के बाद वाली उंगली।

कनिष्ठिका—हाथ की सबसे छोटी उंगली को कनिष्ठिका कहते हैं।

पर्व—प्रत्येक उंगली में दो गांठें होती हैं, इन्हीं गांठों की वजह से उंगली तीन भागों में बंट जाती है। इन्हीं भागों को पर्व कहते हैं।

पोर—प्रत्येक उंगली के ऊपरी भाग को पोर कहते हैं।

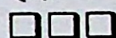
पोर रेखा—पोरों को बांटने वाली उंगलियों की गांठों पर एक, दो या तीन रेखाएं होती हैं। इन्हें ही पोर रेखा कहते हैं।

नख—हर पोर के ऊपर (पृष्ठ भाग में) जो कड़ा, चिकना और चमकीला भाग होता है, उसे नाखून कहते हैं।

ऊर्ध्व अंगुष्ठ—अन्य उंगलियों की तरह अंगूठे में भी तीन पर्व होते हैं, लेकिन इसका निचला पर्व हथेली के अन्दर जुड़ा रहता है। अतः प्रकट में इसमें दो ही पर्व दिखाई देते हैं। ऊपरी पर्व को ऊर्ध्व अंगुष्ठ या 'ऊर्ध्व पर्व'' कहते हैं।

रोम—हथेली के पृष्ठ भाग व मणिबन्ध के पृष्ठ भाग पर जो महीन बाल उगे रहते हैं, उन्हें ही 'रोम' कहा जाता है।

मणिबन्ध रेखाएं—मणिबन्ध को वलय की तरह घेरे रहने वाली दो रेखाओं को मणिबन्ध रेखाएं कहते हैं, गणना में ये तीन से चार तक होती हैं।





हस्तरेखा ज्ञान की आवश्यकता

पामेस्ट्री या हस्तरेखा एक ऐसी कला है जिससे हथेली, अंगुलियों की बनावट और हथेली पर पाए जाने वाले विभिन्न पर्वतों एवं रेखाओं की उपस्थिति से जातक (जिसका हाथ देख रहे हैं) का चरित्र-चित्रण किया जा सकता है। यह ज्ञान जातक की मानसिक शक्ति का, विवाह-शादी, आयु, विद्या, भाग्य, बच्चे, कारोबारी व सामाजिक हालात की जानकारी कराता है।

हस्तरेखा ज्ञान का अध्ययन कैसे करें?

जैसे कोई भी भाषा एक दिन में नहीं सीख सकते, वैसे ही आप इस बात की उम्मीद न करें कि हस्तरेखा ज्ञान आपको कुछ घन्टों में ज्ञात हो जाएगा। सही हालातों को समझें और धैर्य के साथ आगे बढ़ते चले जाएं।

यह सच है कि घन्टों में आपको यह ज्ञान नहीं आ सकता पर यह भी सच है कि किताब के एक घन्टे के अध्ययन से और मनन के बाद आपको ऐसा जरूर लगेगा कि, अब से पहले जो कुछ आपको नहीं आता था वह आ गया। आप अपने अन्दर आत्मविश्वास और अनोखी खुशी महसूस करेंगे यही आपकी लगनशीलता और सीखने की तरफ उन्मुख होने की प्रेरणा है।

अगर आपने पुस्तक को सही-सही पढ़ा तो आपके जीवन में इस ज्ञान को समझने की अद्‌भुत क्षमता आ जाएंगी। इस बात का भी ध्यान रखें कि थोड़ा-

सा ज्ञान अर्जन करने के बाद ही आप दूसरों का हाथ देखना शुरू न कर दें अन्यथा अधकचरे ज्ञान की वजह से उपहास के पात्र भी बन सकते हैं।

हाथ देखने का तरीका

अगर आप हस्तकला पर पूरा भरोसा करते हैं, और रेखाओं का ज्ञान करके अपना या दूसरों का हाथ देखकर भाग्य और भविष्य देखने में रुचि रखते हैं, तो सबसे पहले जरूरी है कि हाथ देखने वाले के ठीक सामने बैठें—और उस दिशा में बैठें कि प्रकाश सीधे उसके हाथों पर पड़े।

हाथ दिखाते या देखते वक्त कोई तीसरा व्यक्ति न हो तो ठीक है, क्योंकि अनजाने में ही कुछ बोलकर वह हाथ देखने वाले का ध्यान बंटा सकता है।

हाथ और हाथ की रेखाओं को सफलतापूर्वक पढ़ने के लिए कोई विशेष सामान जरूरी नहीं। अलबत्ता हाथ की बहुत बारीक रेखाएं देखने के लिए रेखाओं को स्पष्ट करके दिखाने वाले शीशे का इस्तेमाल किया जा सकता है। हाथ देखने के लिए भारत में सूर्योदय के समय को खास महत्त्व दिया गया है जिसके फलस्वरूप रेखाएं ज्यादा प्रभावयुक्त और स्पष्ट होती हैं।

हाथ देखने का काम आगे बढ़ाते हुए देखने वाले को सबसे पहले इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किस प्रकार का हाथ है? उंगलियां हथेली के अनुरूप हैं या अपने आप में किसी विशेष श्रेणी में आती हैं। इसके बाद सावधानी से बायां हाथ देखना चाहिए तब दाएं की तरफ आना चाहिए। इससे यह पता चलता है कि उनमें क्या-क्या परिवर्तन हुआ है। उसके बाद दाएं हाथ को अपने निरीक्षण का आधार बना लेना चाहिए। बाएं हाथ से काम करने वाले आदमियों का बायां हाथ देखना चाहिए।

आप जिस हाथ को देख रहे हैं, उसे दृढ़ता से अपने हाथों में पकड़ें, रेखा या निशान को तब तक दबाते रहें, जब तक उनमें रक्त का प्रवाह न आ जाए, इस तरह आप इनके विकास की प्रवृत्तियों को देख सकेंगे।

कुछ कहने से पहले हाथ का पीछे का भाग, सामने का हिस्सा, नाखून, त्वचा, रंग आदि का ठीक से निरीक्षण करें। अंगूठे का परीक्षण पहले होना चाहिए। देखें कि अंगूठा लम्बा है या छोटा है या ठीक से विकसित नहीं हुआ है।

इच्छाशक्ति वाली पोर दृढ़ है या लचकीली है, वह मजबूत है, या कमजोर है तब अपना ध्यान हथेली पर लगाएं, देखें कि हथेली कठोर है, कोमल है या थुलथुली है।

इसके बाद अगले चरण में उंगलियों पर ध्यान दें। इस बात को देखें कि

हथेली से उनका अनुपात क्या है? वे लम्बी हैं, या छोटी, मोटी हैं या पतली हैं। इस तरह उनकी श्रेणी निर्धारित है।

उंगली के बाद नाखूनों पर ध्यान दें ताकि उससे मिजाज़ का पता चले और स्वभाव, स्वास्थ्य आदि का ज्ञान हो सके।

इसके बाद सारे हाथ को सावधानी से परख कर अपना ध्यान पर्वतों पर लाएं, देखें कि कौन-सा पर्वत अधिक प्रभुता लिए हुए है। उसके बाद रेखाओं पर आएं।

कौन-सी रेखा को पहले देखा जाए, इसके लिए निर्धारित नियम नहीं है। एक विधि यह भी है कि स्वास्थ्य रेखा और जीवन रेखा को एक साथ लेकर शुरू किया जाए तब मस्तिष्क रेखा की तरफ बढ़ा जाए। उसके बाद भाग्य रेखा को देखें।

हाथ दिखाने वाले की भावना को भी देखें और समझें। हाथ दिखाने वाला जिस बात में ज्यादा दिलचस्पी लेकर समाधान चाहता है, उसकी उस रेखा को देखकर उसकी जिज्ञासा का समाधान करें। अविवाहित जातक ज्यादातर विवाह की बात जानना चाहते हैं, नवविवाहित औलाद की और प्रौढ़ लोग अपने कारोबार के लाभ की बात जानना चाहते हैं।

कौन-सा हाथ देखें?

हाथ कौन-सा देखना चाहिए, इस विषय में भारतीय मत यह है कि आदमियों का दाहिना हाथ और औरतों का बायां हाथ देखना चाहिए। लेकिन पाश्चात्य मत अलग है।

पाश्चात्य मत के अनुसार, जातक या जो अपने हाथ की रेखाएं देखकर अपना नसीब-भविष्य देख रहा हो। चाहे नारी हो या नर, उसके प्रधान हाथ को ही देखना चाहिए। आदमी जिस हाथ से ज्यादा कार्य करता है, उसे गौण हाथ कहते हैं।

दुनिया के निन्नयानवें प्रतिशत आदमी दाहिने हाथ से काम करते हैं, अतः उनका दाहिना हाथ प्रधान होता है, अतः उसे ही देखना चाहिए। जो लोग बाएं हाथ से काम करते हैं स्त्री हो या पुरुष उसका बायां हाथ देखना चाहिए।

बायां वह हाथ है जो हमें जन्म से मिला है, दाहिना वह हाथ है, जिसे हम खुद बनाते हैं। बाएं हाथ में जन्मजात गुण-अवगुण रहते हैं।

आदमी जन्म के समय क्या संस्कार लेकर आया है, उस समय के ग्रहों की स्थिति देश-काल, वातावरण आदि का क्या प्रभाव पड़ा है, उससे क्या नियति,

स्वभाव, भाग्य बनना चाहिए, आदि बातें हाथ में देखी जाती हैं।

जन्म के पश्चात् वर्तमान तक जातक पर वातावरण, सामाजिक परिवेश, शिक्षा, अनुभव आदि का क्या प्रभाव पड़ा, उसके सस्कारों में क्या बदलाव आया, मस्तिष्क के विचारों में क्या परिवर्तन हुए, इन सबका भविष्य में होने वाली घटनाओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा, ये समस्त बातें दाहिने हाथ की रेखाओं में अंकित होती चली जाती हैं।

उपरोक्त तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य के बाएं हाथ की रेखाओं में नगण्य-सा ही परिवर्तन होता है, या जीवन भर वैसी ही रहती हैं। इसके विपरीत दाहिने हाथ की रेखाओं में समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। अतः जातक के वर्तमान और भविष्य का ठीक-ठीक फलादेश कहने के लिए, दाहिने हाथ का परीक्षण करना चाहिए।

जो लोग अपने सभी काम बाएं हाथ से करते हैं, उनकी जन्मजात प्रवृत्तियां उनके दाहिने हाथ में होती हैं, अतः ऐसे लोगों के बाएं हाथ को प्रमुखता देते हुए उसी का परीक्षण करना चाहिए।

हाथ के विषय में कुछ जानकारियां

रेखाओं के द्वारा जातक के स्वभाव और अन्य जानकारियों के अलावा कुछ खास जानकारियां अन्य प्रकार से भी मिलती हैं, जो निम्न प्रकार की होती हैं—

रेखाओं से भरा हाथ—

जब पूरा हाथ रेखाओं से भरा हो, मानो इसकी जगह पर कोई जाल फैला हो तो इससे पता चलता है कि जातक की प्रकृति ज्यादातर कायर और संवेदनशील है, परन्तु प्रकृति ऐसी कि छोटे-छोटे विचारों और संकटों को लेकर लगातार क्षुब्ध और चिंतित रहें, जब कि उन बातों का दूसरों के लिए कुछ भी महत्त्व नहीं होता। यह बात विशेष रूप से तब और सही है, जब हथेली कोमल हो। ऐसे लोग बीमारी या मुसीबत आने पर हर तरह की बात सोच जाते हैं। लेकिन अगर हाथ कठोर और दृढ़ हो तो यह उत्साह से भरे स्फूर्तिवान चरित्र का द्योतक है। लेकिन ऐसे आदमी दूसरों के मामले में कहीं ज्यादा कामयाब होते हैं न कि खुद अपने मामले में।

सपाट हाथ—

ऐसे सपाट हाथ जिन पर बहुत ही कम रेखाएं हों उन लोगों के होते हैं, जो अपनी आदत में बल्कि शारीरिक निर्माण में भी बहुत शान्त किस्म के होते

हैं। वे शायद ही कभी चिन्ता में डूबते हैं। क्रोध तो उन्हें बहुत ही कम आता है और जब आता है तो उन्हें वजह पता होती है कि वे क्यों क्रुद्ध हैं? इसमें भी हथेली के कोमल और कठोर होने से परिवर्तन होता है। जब हथेली दृढ़ हो तो कोमल के मुकाबले यह नियन्त्रण और शान्ति का अधिक चिह्न है।

कोमल होने की हालत में बात नियन्त्रण की उतनी नहीं है, जितनी उदासीनता की है। आदमी किसी मामले में इतनी दिलचस्पी ही नहीं लेगा कि गुस्से की नौबत आए। उसके लिए ऐसा करने में बड़ी मेहनत पड़ जाएगी।

त्वचा–

यदि हथेली की त्वचा स्वाभाविक रूप से बहुत अच्छी और हल्की हो तो आदमी मोटी त्वचा वाले की तुलना में ज्यादा युवावस्था का उत्साह और प्रकृति अपनाए रहेगा। यद्यपि उस बात पर आदमी के काम का बहुत प्रभाव है जहां मामला शारीरिक श्रम का ही हो। वहां भी त्वचा पर उभरी, ऊंची-नीची मेड़ का निरीक्षण किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में कभी दो हथेलियां एक-सी नहीं मिलतीं।

परिणाम–श्रम-परिश्रम त्वचा को मोटा भले ही कर दें, उसकी निजी विशेषता वही बनी रहती है।

हथेली की रंगत–

हथेली की रंगत का बाहरी हाथ की तुलना में कहीं ज्यादा महत्त्व है। पहली बार में तो यह अजीब बात लगती है, परन्तु थोड़ी गहराई से देखने पर इस बात का सच प्रमाणित हो जाएगा।

हथेली, स्नायुओं और स्नायु द्रव्य के नियन्त्रण व क्रिया के अधीन है। वैज्ञानिकों के अनुसार हाथ में शरीर के किसी अन्य भाग की तुलना में ज्यादा स्नायु हैं और उससे भी आगे हाथ के कभी अन्य हिस्से के मुकाबले हथेली में ज्यादा स्नायु होते हैं।

जहां तक स्नायु द्रव्य का सम्बन्ध है, एबरक्रोबी विद्वान् ने सन् 1838 में लन्दन में प्रकाशित हुए अपने एक शोध में लिखा है, ''ज्ञानेन्द्रियों से मस्तिष्क तक प्रभावों के सम्प्रेषण कर श्रेय स्नायुविक द्रव्यों की क्रियाओं को दिया गया है, जो कुछ और भी नहीं विद्युत से मिलता-जुलता एक अत्यन्त सूक्ष्म सार पदार्थ है।'' इससे प्रमाणित होता है कि यह सूक्ष्म सार पदार्थ जरूर शरीर के किसी अन्य भाग में हथेली को ही ज्यादा प्रभावित करता है। इसलिए हर तरह से इसका महत्त्व है। हाथ के पिछले भाग के मुकाबले हथेली की रंगत ज्यादा महत्त्व रखती है।

यह देखा जा सकता है कि लगभग हर हथेली अपनी सपाट और अलग रंगत रखती है, जिसका श्रेणी विभाजन इस तरह है–

(1) जब हथेली पीली, लगभग सफेद रंग की हो तो आदमी अपने को छोड़ किसी अन्य बात में दिलचस्पी नहीं लेता। दूसरे शब्दों में वह स्वार्थी, अहंकारी और सहानुभूतिविहीन होता हैं।

(2) जब हथेली गहरे पीले रंग की हो तो आदमी विकृति उदास और अर्धपागल-सा होगा।

(3) जब हथेली का रंग नाजुक-सा गुलाबी हो तो प्रकृति और सुकोमल, आनन्दवान होगी और जब काफी लाल हो तो स्वास्थ्य सुदृढ़ और मनोबल मजबूत होता है। आदमी भावावेगपूर्ण और त्वरित स्वभाव का होता है।

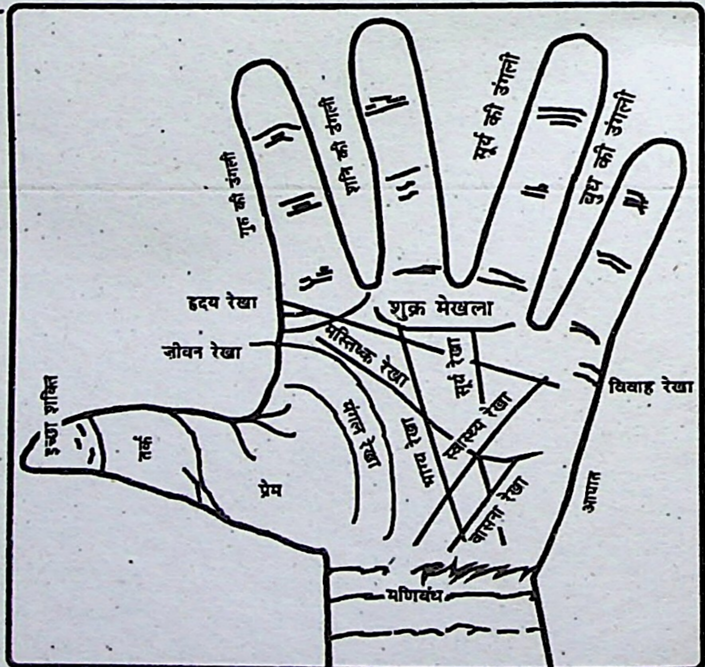
□□□



हाथ की मुख्य रेखाएं

जीवन रेखा–

हथेली में तर्जनी और अंगूठे के बीच में शुक्र क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध की ओर आने वाली रेखा को जीवन रेखा कहते हैं। इससे आयु, रोग, अकस्मात् मृत्यु, दुर्घटना से बचाव आदि का आंकलन करते हैं।

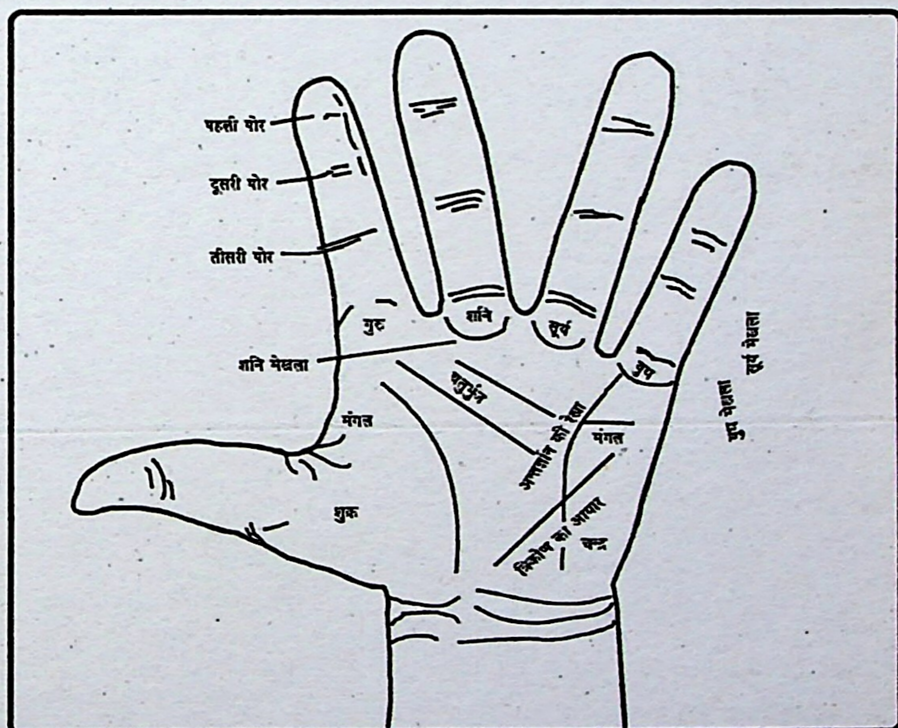


चित्र 1–हाथ की मुख्य रेखाएं

भारतीय विद्वान् इसे प्रगूढ़ रेखा, पितृ रेखा, गोत्र रेखा या कुल रेखा कहते हैं। इनका तात्पर्य भी लगभग एक ही है, लेकिन भारतीय विद्वान् यह नहीं मानते कि यह रेखा सिर्फ आयु और स्वास्थ्य की निर्णायक है। इनके अनुसार व्यक्ति के जन्म के समय से लेकर मृत्यु तक की शुभ-अशुभ स्थितियां, हृदय की दशा, उनके मित्रों, गोत्र या कुल के विषय में भी इससे जाना जा सकता है।

हृदय रेखा–

कनिष्ठिका उंगली के मूल स्थान से नीचे बुध पर्वत से निकलकर वर्तुलाकार ऊपर उठती हुई शनि या गुरु क्षेत्र की ओर जाने वाली रेखा को पाश्चात्य विद्वान् हृदय-रेखा कहते हैं।



चित्र 2–हाथ के पर्वत

मस्तिष्क रेखा–

तर्जनी उंगली और अंगूठे के मध्य भाग से निकलकर हथेली के बीच भाग से होती हुई चन्द्र या मंगल क्षेत्र की ओर जाती है, उसे पाश्चात्य विद्वान् "मातृ रेखा या 'धन रेखा' कहते हैं।

भाग्य रेखा–

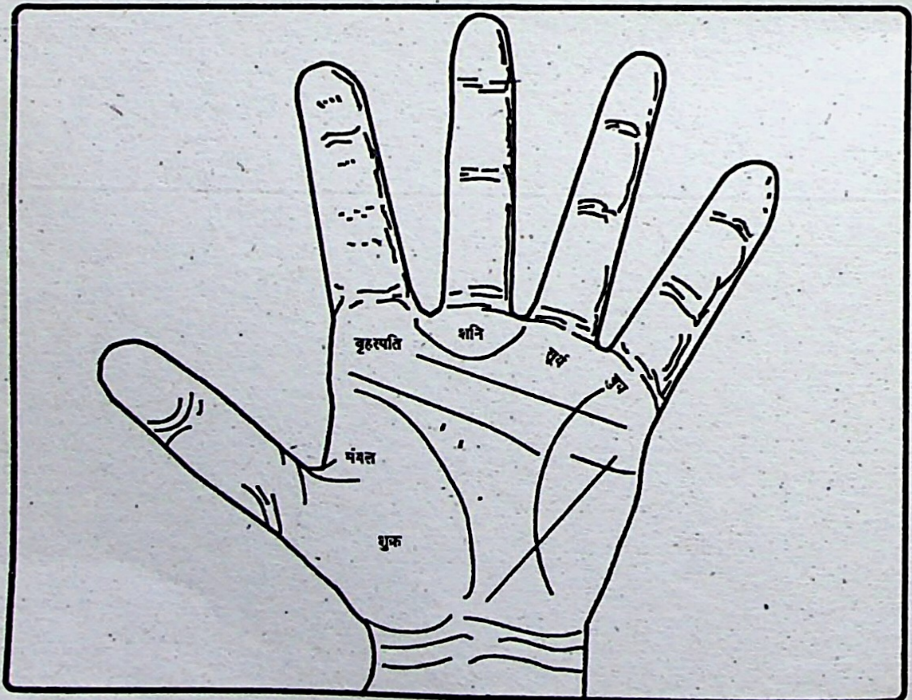
मणिबन्ध के ऊपरी भाग से शुरू होकर मध्यमा उंगली के मूल तक जाने वाली रेखा को पाश्चात्य विद्वान् भाग्य रेखा कहते हैं। प्राचीन भारतीय विद्वान् इस रेखा को प्रारब्ध रेखा, धन रेखा, विभव रेखा आदि नामों से सम्बोधित करते हैं।

स्वास्थ्य रेखा–

यह रेखा बुध क्षेत्र से निकलकर नीचे की तरफ चलती है। पाश्चात्य विद्वान् इसे स्वास्थ्य रेखा भी कहते हैं और प्राचीन विद्वान् भारतीय विद्वान् इसके प्रभाव की गणना सम्मान, प्रतिष्ठा आदि की स्थिति जानने के लिए सहायक ऊर्ध्व रेखाओं की तरह इसका अध्ययन करते हैं।

विवाह रेखा–

यह रेखा बुध क्षेत्र में लेटी हुई दिखाई देती है, वैसे देखने में इसकी लम्बाई अधिक नहीं होती। अनेक विद्वान् इसे मुख्य रेखा मानते हैं, लेकिन कीरो के अनुसार इसकी गणना सहायक या गौण रेखाओं में की जाती है। कीरो कलाई पर स्थित तीनों रेखाओं को भी विवाह विषयक रेखाओं से ही सम्बन्धित मानते हैं।

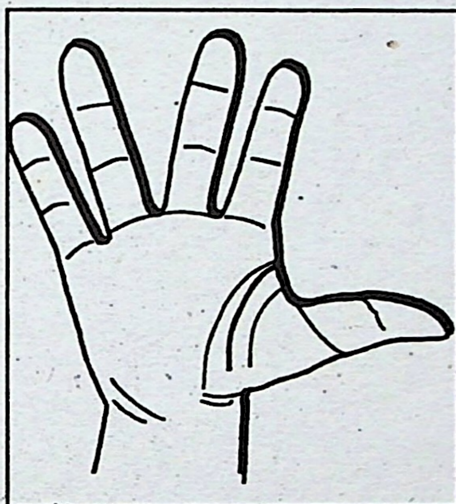


चित्र 3–सातों ग्रहों की स्थिति-स्थान

सूर्य रेखा–

मणिबन्ध, चन्द्र क्षेत्र या हथेली के बीच भाग से निकलकर अनामिका उंगली के मूल में पहुंचने वाली रेखा सूर्य रेखा कहलाती हैं। यह नाम पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दिया गया है। वे इसे 'यश' रेखा भी कहते हैं।

सहायक रेखाएं



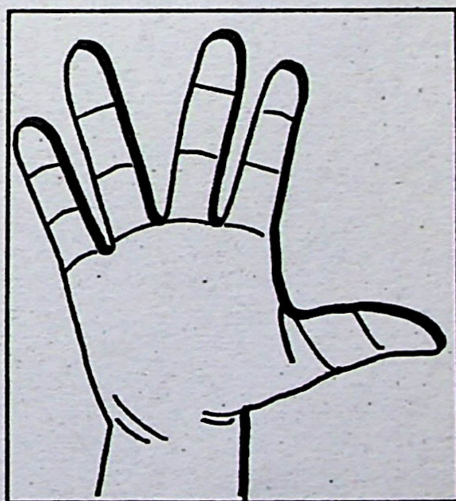
चित्र 4–मंगल रेखा

मंगल रेखा–

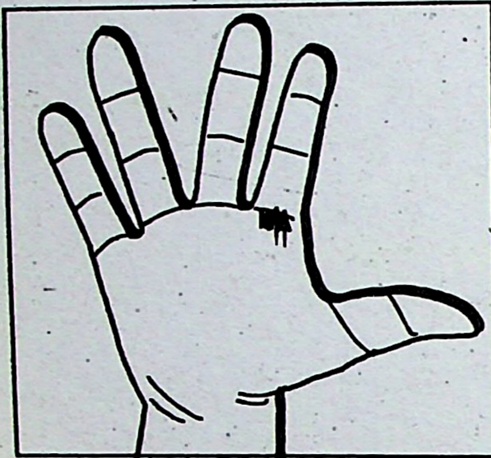
यह रेखा शुक्र क्षेत्र में जीवन रेखा के असमानान्तर होती है। यह द्वितीय मंगल क्षेत्र से शुरू होती है।

ज्ञान रेखा–

यह रेखा अंगूठे के मूल में होती है। यह रेखा बहुत कम हाथों में पायी जाती है।



चित्र 5–ज्ञान रेखा



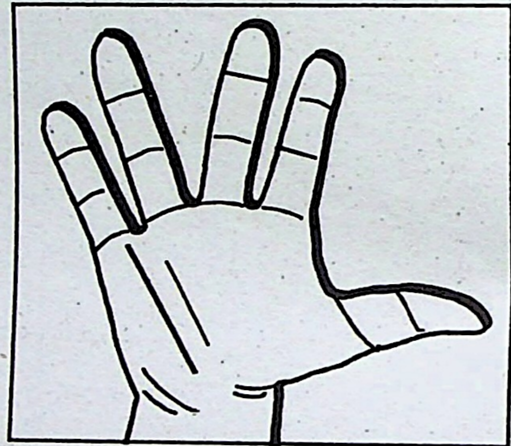
चित्र 6—प्रवृत्ति रेखा

प्रवृत्ति रेखा—

यह रेखा मणिबन्ध से ऊपर शुक्र क्षेत्र को जोड़ने वाली एक वृत्ताकार रेखा होती है। यह अन्य रूप में भी हो सकती है।

कामुक रेखा—

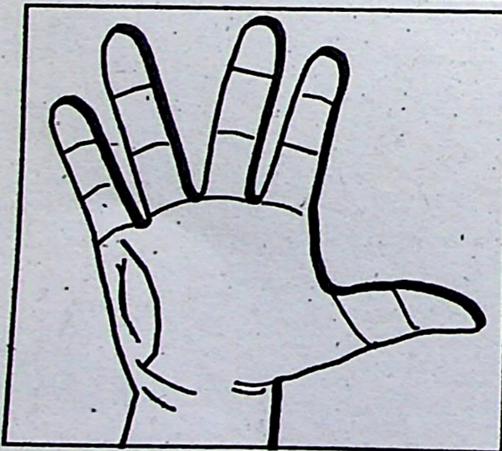
यह रेखा केतु क्षेत्र से निकलकर बुध क्षेत्र तक जाती है।



चित्र 7—कामुक रेखा

अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा—

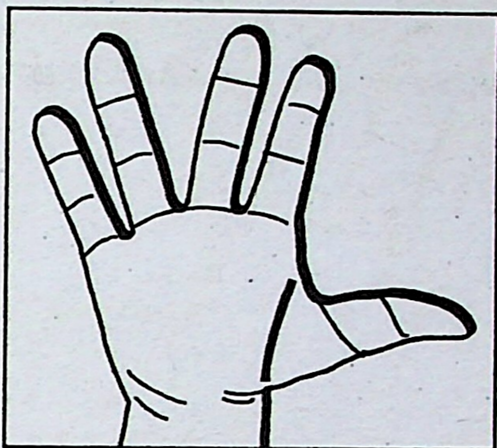
यह रेखा चन्द्र क्षेत्र के निम्न भाग से शुरू होकर बुध क्षेत्र तक जाती है।



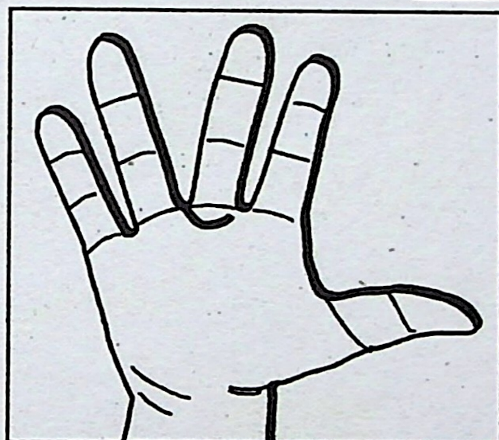
चित्र 8—अतीन्द्रिय रेखा

परधन-प्राप्ति रेखा-

यह रेखा शुक्र क्षेत्र में मंगल से बायीं तरफ होती है और जीवन-रेखा के साथ चलती है। यह रेखा भी बहुत कम हाथों में पायी जाती है।



चित्र 9—परधन-प्राप्ति रेखा



चित्र 10—शनि मुद्रिका

शनि मुद्रिका या मेखला-

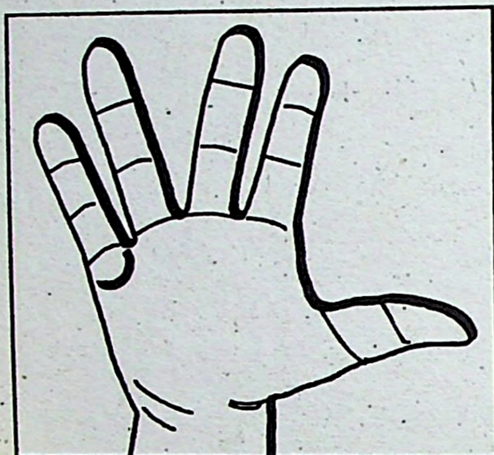
यह रेखा मध्यमा उंगली के नीचें शनि क्षेत्र पर प्रायः अर्द्धवृत्ताकार रूप में होती है। यह रेखा सीधी या वक्र दोनों रूपों में पायी जाती है।

बृहस्पति मुद्रिका-

तर्जनी और मध्यमा के बीच के नीचे से शुरू होकर गुरुक्षेत्र के अर्द्धचन्द्राकार रूप में घेरने वाली यह रेखा बहुत कम हाथों में पायी जाती है।



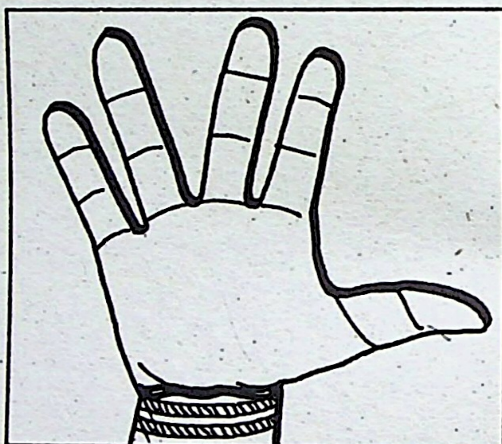
चित्र 11—बृहस्पति मुद्रिका



चित्र 12–बुध मुद्रिका

बुध मुद्रिका–

यह कनिष्ठिका उंगली के नीचे बुध क्षेत्र में अर्द्धवृत्ताकार रूप में होती है।



चित्र 13–मणिबन्धीय रेखाएं

मणिबन्धीय रेखाएं–

ये रेखाएं हथेली के नीचे कलाई के जोड़ पर होती हैं।



चित्र 14–यात्रा रेखाएं

यात्रा रेखाएं–

यात्रा को निर्दिष्ट करने वाली रेखाएं कई स्थान पर होती हैं। इनका विवरण निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

(1) चन्द्र क्षेत्र से शुरू होने वाली।

(2) मणिबन्ध से शुरू होकर ऊपर जाने वाली।

(3) जीवन रेखा से शुरू होकर ऊपर जाने वाली।

(4) अंगूठे के मूल से निकलकर पितृ रेखा से जा मिलने वाली।

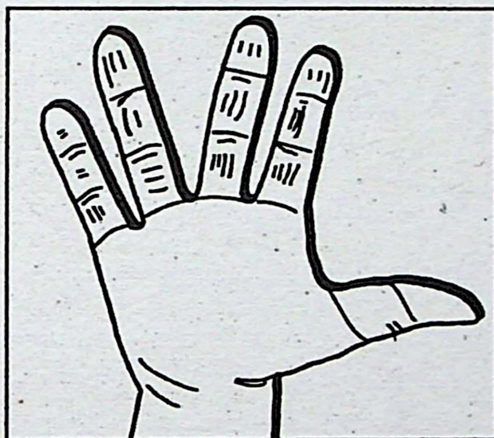
(5) मणिबन्ध से ऊपर जीवन रेखा से निकलकर चन्द्रपथ पर जाने वाली।



चित्र 15–रवि मुद्रिका

रवि मुद्रिका–

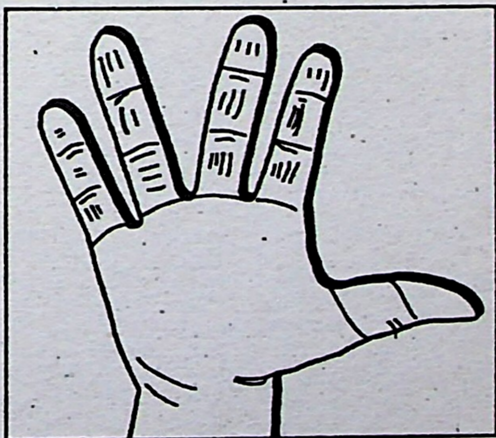
यह मध्यमा और अनामिका के बीच से निकलकर अर्द्धचन्द्राकार रूप में सूर्य क्षेत्र घेरे रहती है। यह भी किसी-किसी हाथ में पायी जाती है।



चित्र-16

उंगलियों की रेखाएं–

ये रेखाएं उंगलियों पर पायी जाती हैं।



चित्र-17

अंगूठे की रेखाएं–

ये रेखाएं अंगूठे पर पायी जाती हैं।





हाथ के वर्गीकरण के आधार पर चरित्र-व्यक्तित्व

हाथ का आकार, करपृष्ठ आदि से मनुष्य की प्रवृत्ति, शक्ति, बौद्धिक स्तर एवं नैतिक चरित्र का पता चल जाता है। हाथ की आकृति और पर्वतों की रचना, रेखा-चिह्न आदि प्रत्येक हाथ में अलग-अलग होते हैं। मस्तिष्क मनीषियों ने व्यक्ति के गुणों के आधार पर हाथ को तीन भागों में बांटा है–

(1) सात्विक

(2) राजस

(3) तामस

विद्वानों ने इनके भी भेदोपभेद किये। उनका विचार था कि कोई भी हाथ ऐसा नहीं है जिसे शुद्ध रूप से उपर्युक्त प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सके। उनका मत था कि उपर्युक्त तीन प्रकारों द्वारा किया गया वर्गीकरण इस प्रकार है–

(1) सात्विक हाथ।

(2) राजस हाथ।

(3) तामस हाथ।

(4) सात्विक-राजस मिश्रित हाथ।

(5) राजस-तामस मिश्रित हाथ।

(6) तामस-सात्विक मिश्रित हाथ।

(7) सात्विक-राजस-तामस मिश्रित हाथ।

पाश्चात्य विद्वान् तथा महान् हस्तरेखा विशेषज्ञ कान्टे सी० डी० सेण्ट जर्मन ने हाथ का वर्गीकरण निम्न चौदह भागों में किया है–

(1) आदर्श हाथ (The Psychic Hand)

(2) कलात्मक हाथ (The Artistic Hand)

(3) उपयोगी हाथ (The Useful Hand)

(4) आवश्यक हाथ (The Necessary Hand)

(5) दार्शनिक हाथ (The Philosophical Hand)

(6) प्रारम्भिक हाथ (The Elementary Hand)

(7) कलात्मक प्रारम्भिक हाथ (The Artistic-elementary Hand)

(8) हत्यारे का हाथ (The Murders's Hand)

(9) मूर्ख का हाथ (The Idiot's Hand)

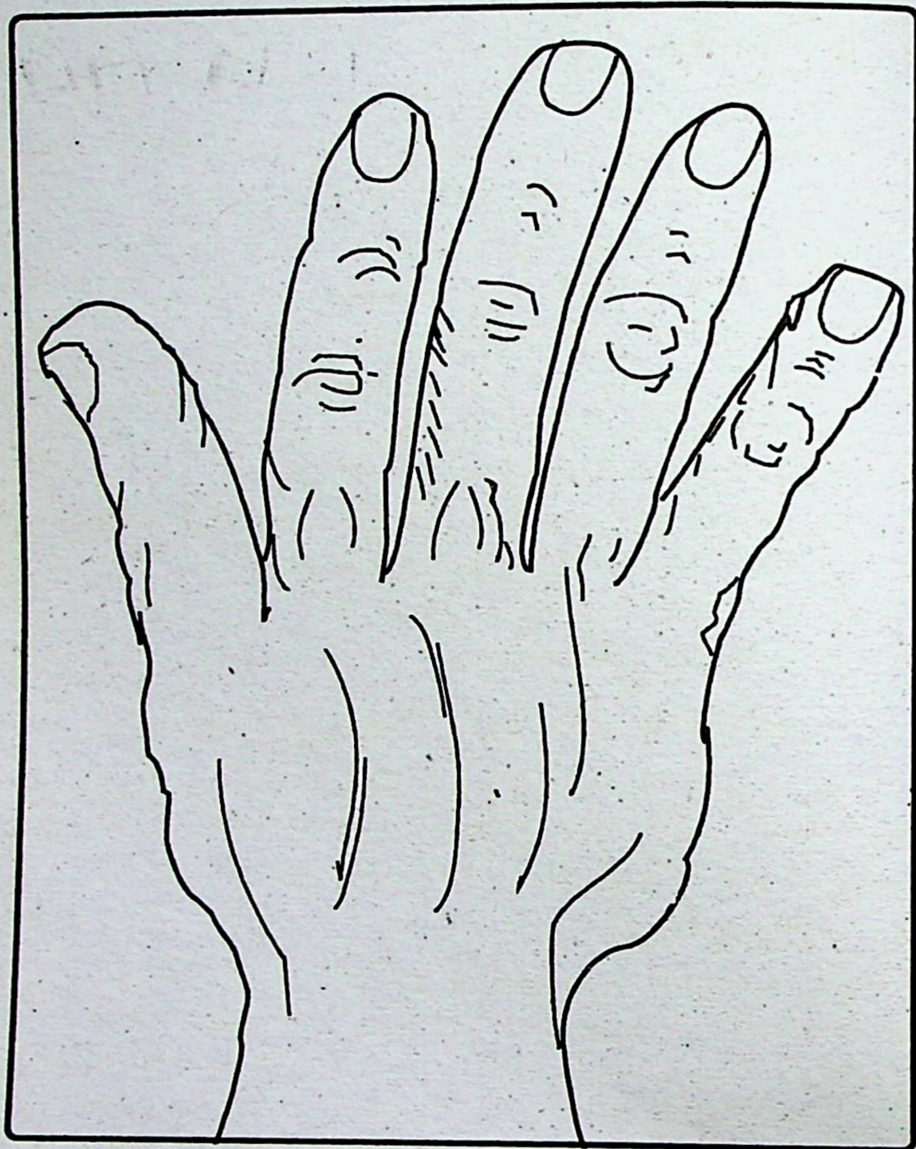
(10) मिश्रित हाथ (Mixed Hand)

नारी का हाथ (The Woman's Hand)

उपर्युक्त वर्गीकरण उचित होते हुए भी जटिल है। मूल रूप में मानव हाथ को सात भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है और उन्हीं में ये समस्त प्रकार समाहित हो जाते हैं। प्रमुख प्रकार से हाथ इस प्रकार हैं–

(1) प्रारम्भिक हाथ–

ऐसा हाथ देखने में अत्यन्त साधारण होता है और वैसे भी साधारण जीवन जीने वाले व्यक्ति का हाथ होता है। ऐसे व्यक्तियों का मानसिक विकास अति न्यून होता है। हाथ की बनावट बहुत ही बेडौल होती है। खुरदरा और भारी हाथ होता है। अंगुलियां छोटी होती हैं। उन उंगलियों तथा हाथ के पिछले हिस्से पर बाल अधिक होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के जीवन का उद्देश्य सिर्फ रोटी कमाना ही होता है। ये रोटी, कपड़ा, मकान के अलावा अन्य कुछ भी सोचने में असमर्थ होते हैं। इनमें तामसिक प्रवृत्ति अधिक होती है। अधिकतर अपराधी प्रवृत्ति के लोग इसी वर्ग में आते हैं। इनमें हिंसा की प्रवृत्ति ज्यादा होती है, वहशीपन ज्यादा होता है जबकि इंसानियत इनको छू तक नहीं जाती। ऐसे व्यक्ति मेहनत करने से घबराते हैं। अपराधियों में चोर, जेबकतरे जैसे छोटे स्तर के लोग होते हैं।

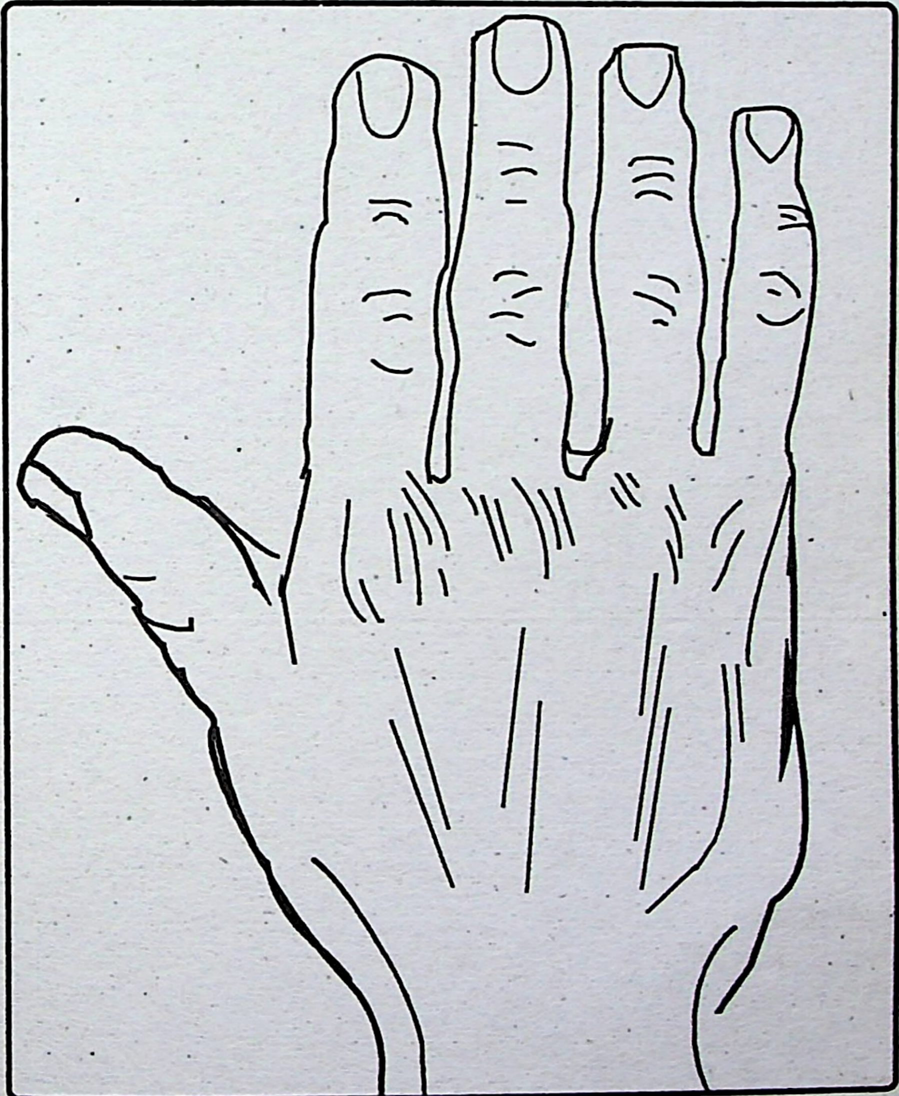


चित्र 18—साधारण हाथ

अंगुलियों के साथ नाखून भी छोटे होते हैं। इनके रहन-सहन से भी आभास हो जाता है क्रि ये समाज के साथ नहीं रहना चाहते। इनकी आकृति और रहन-सहन का ढंग जानवरों की भांति होता है। प्रारम्भिक हाथ को पशुत्व हाथ कहना अधिक उचित होगा; क्योंकि ऐसे व्यक्ति मनुष्य शरीर धारण करते हुए भी जानवरों के समान आचरण करते हैं।

(2) वर्गाकार हाथ–

ऐसा हाथ उत्तम और श्रेष्ठ होता है। ऐसे व्यक्ति ईमानदार, व्यवहारकुशल, भावुक, धार्मिक, शिष्ट, सदाचारी, शान्तिप्रिय, सात्विक, तर्कशील, धैर्यवान, लगनशील, उदार, श्रमशील, परोपकार तथा करूणा के साक्षात् रूप होते हैं। धार्मिक होते हुए भी अन्धविश्वासी नहीं होते हैं। शान्तिप्रिय होते हुए भी अन्याय का

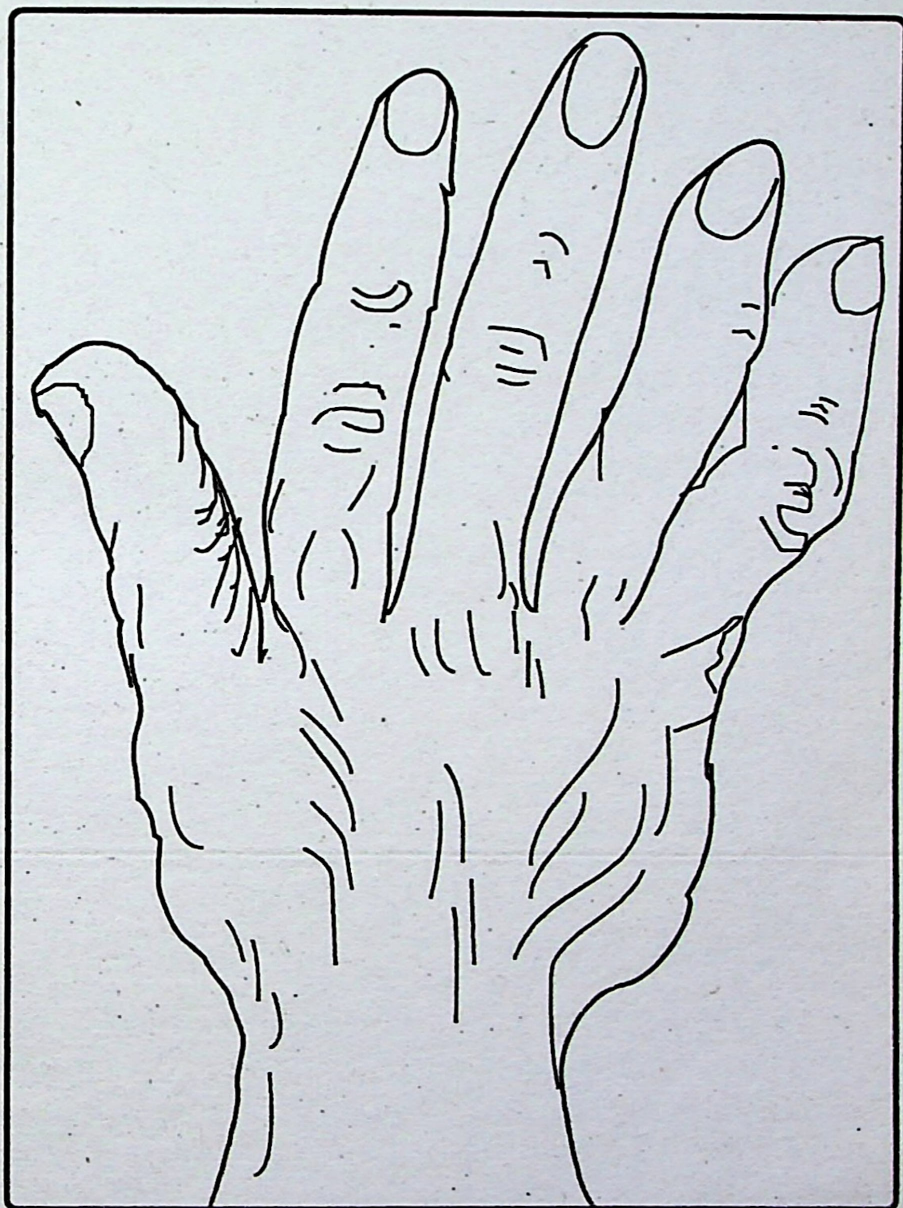


चित्र 19–वर्गाकार हाथ

डटकर मुकाबला करते हैं। सहज होते हुए भी आंख बन्द कर किसी की बात का विश्वास नहीं करते हैं—जब तक कि वे तर्क की कसौटी पर परख नहीं लेते। ऐसे व्यक्ति मिलनसार होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के हाथ का ऊपर तथा नीचे का भाग वर्गाकार होता है। ऐसे हाथों के नाखून छोटे तथा चोकोर होते हैं। ऐसे ही हाथ को श्रेष्ठ हाथ माना जाता है। कई बार दूसरों की भलाई में अपना नुकसान कर बैठते हैं, परन्तु इनके जीवन का लक्ष्य निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहता है। छोटी-मोटी कठिनाइयों से ये विचलित नहीं होते। जब तक अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच जाते तब तक उस दिशा में कोशिश करते रहते हैं। यही श्रेष्ठता की वजह है। ऐसे लोग आर्थिक रूप से भी सम्पन्न रहते हैं। व्यक्तिगत रूप से ऐसे व्यक्ति मित्रता का निर्वाह करना जानते हैं। लेना जानते हैं तो देना भी आता है। ऐसे लोग एक कामयाब उद्योगपति, अधिकारी, समाजसेवी, नेता, संन्यासी, लेखक और कृषक होते हैं। वह जहां भी रहता है, समाज का नेतृत्व करता है। उसके कर्मों के कारण समाज उसे यश और सम्मान की नज़र से देखता है।

(3) दार्शनिक हाथ–

सर्वोत्तम हाथ इसी वर्ग में आते हैं। दार्शनिक हाथ वाले स्वभाव और गुण से भी दार्शनिक श्रेणी के लोग होते हैं। ऐसे लोग उच्च राजनेता आई० ए०एस० अधिकारी, विचारक, दार्शनिक, लेखक, कवि, कलाकार, साहित्यकार, संन्यासी, समाजसुधारक, वैज्ञानिक एवं युगपुरुष होते हैं। ऐसे लोगों का हाथ लम्बा और नुकीला होता है। अंगुलियों का आकार विशेष प्रमुख होता है। अंगुलियों की गांठें उठी हुई और निकली हुई होती हैं। नाखून लम्बे होते हैं। ऐसा हाथ फूला हुआ होता है। हाथ की आकृति में सुडौलता नहीं होती है। हाथों में लचक अधिक होती है। ऐसा हाथ देखने में भी भिन्न-सा प्रतीत होता है। ऐसे व्यक्तियों का जीवन निरर्थक नहीं जाता है। वे जीवन में जो भी मापदण्ड निश्चित करते हैं उस ऊंचाई तक जाने में भी सफल होते हैं। ऐसे लोग जीवन में धन की अपेक्षा सम्मान को अधिक महत्त्व देते हैं। आदर्श और विश्वासों के प्रति गहन आस्था रखते हैं। स्वतन्त्र चिन्तन होता है। सृजन भी मौलिक ही करते हैं। कम बोलते हैं और उनकी चित्तवृत्ति भी अन्तर्मुखी होती है। यदि हाथ में अंगुलियां भी वर्गाकार हैं तो वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होंगे। आर्थिक पक्ष भी सुदृढ़ होता है। इनमें गौरव की भावना कुछ विशेष ही होती है। सोच-विचार कर कोई फैसला करते हैं, एक बार जो फैसला करते हैं उस पर अटल रहते हैं। धैर्यवान होते हैं। यदि अंगुलियों में गांठें निकल आएं तो ऐसे व्यक्ति विचार एवं आत्म-शक्तिमान

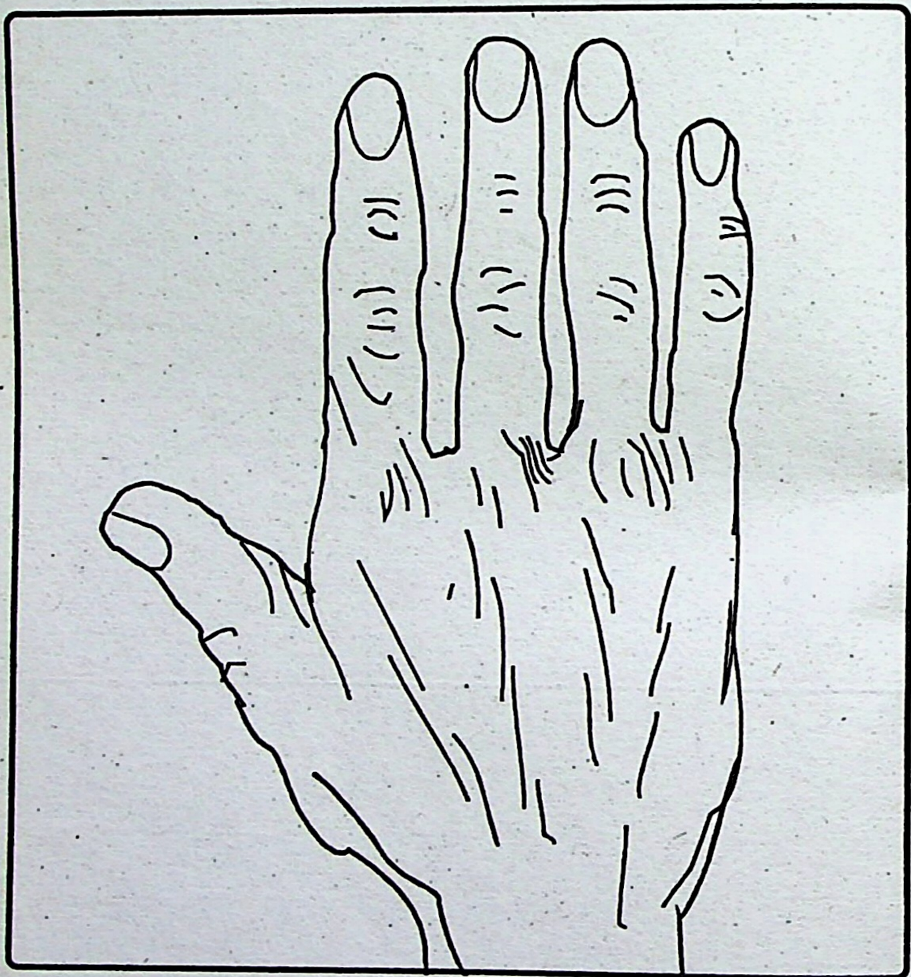


चित्र 20–दार्शनिक हाथ

होते हैं। यदि वर्गाकार अंगुलिया हैं तो ऐसे व्यक्ति धनी होने के साथ-साथ धैर्यवान भी होते हैं। यदि अंगुलियां नुकीली हैं तों ऐसा व्यक्ति सन्त होगा आत्मत्यागी होगा।

(4) कर्मठ हाथ–

ऐसा व्यक्ति शारीरिक श्रम के साथ-साथ मानसिक श्रम की भी क्षमता रखता है। ऐसा मनुष्य बेकार और खाली नहीं रह सकता है। ऐसे लोग सदा खोज में लगे रहते हैं; और जिज्ञासु प्रवृत्ति के होते हैं। व्यावहारिक जीवन जीते हैं। भावना-



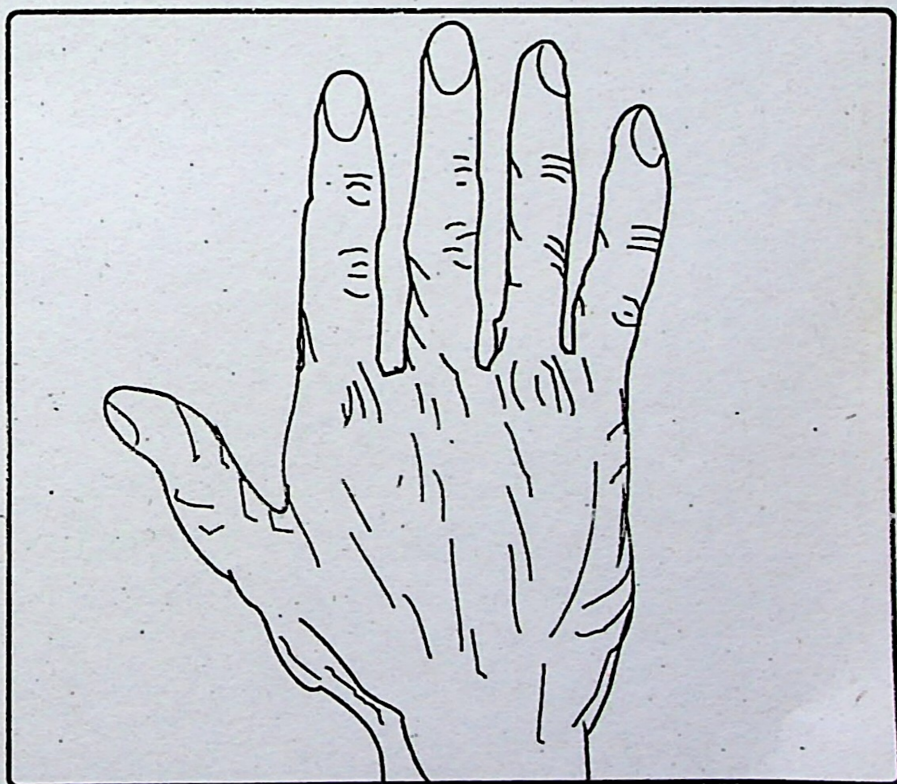
चित्र 21–कर्मठ हाथ

प्रधान नहीं होते हैं। ऐसे लोगों का हाथ चौड़ाई की अपेक्षा अधिक लम्बा होता है। मणिबन्ध के पास का हिस्सा भारी और अगले भाग का हिस्सा हल्का होता है। देखने में ऐसा हाथ बड़ा ही भद्दा, अस्त-व्यस्त और बेडौल आकार का होता है। आगे का हाथ फैला हुआ और अंगुलियों के सिरे फैले हुए होते हैं। हथेली

मांसल होने के साथ-साथ कठोरता लिये होती है। ऐसे लोग कठोर जीवन से नहीं भागते हैं। पलायनवादी नीति विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं स्वीकार करता है। अपने लक्ष्य में लगा रहता है। आजाद प्रवृत्ति का होता है। किसी के मामले में दखल नहीं करता है और न अपने मामले में किसी का दखल चाहता है। गुस्सा करना इनकी आदत है। ऐसे लोग शोध कार्य, इन्जीनियर, डॉक्टर, इतिहासवेत्ता, वैज्ञानिक और राजनेता, क्रान्तिकारी व तान्त्रिक के रूप में खास सफलता पाते हैं। वैसे भी इनमें इतनी क्षमता होती है कि जीवन के जिंस क्षेत्र में भी प्रवेश करते हैं, वहीं अपने आपको सफल बना लेते हैं इनकी कार्यप्रणाली एकदम निराली होती है। जिज्ञासु प्रवृत्ति इनकी कामयाबी का मुख्य राज है।

(5) कलात्मक हाथ–

यह हाथ देखने में जितना सुन्दर होता है उतना ही जीवन में असफल होता है। पलायनवादी व्यक्ति, असफल प्रेमी, बिगड़े हुए राजकुमार इसी वर्ग के व्यक्ति



चित्र 22–कलात्मक हाथ

चित्र 24—मिश्रित हाथ

किसी वर्ग की हैं तो हथेली किसी और वर्ग की। यदि कोई उंगली फैली हुई होती तो कोई उंगली नुकीली। ऐसे लोगों में कई दोष होते हैं, कई विशेषताएं भी होती हैं। इनकी आदत, चरित्र, प्रवृत्ति मिश्रित होते हैं। इसी कारण इनका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है। ज्यादातर असफलताओं के कारण ऐसे लोग निराशावादी हो जाते हैं। जीवन के प्रति उदासीन हो जाते हैं। कठोर मेहनत से डरते हैं। आंशिक रूप से अस्थिर और परिवर्तनशील रहते हैं। परिवर्तन करने की वजह से नुकसान भी उठाते हैं। ऐसे लोगों के हाथ में भाग्य रेखा या मस्तिष्क रेखा यदि अच्छी है तो जीवन में कुछ उपलब्धियां भी हो जाती हैं और ऐसा नहीं है तो साधारण जीवन ही जीते हैं।



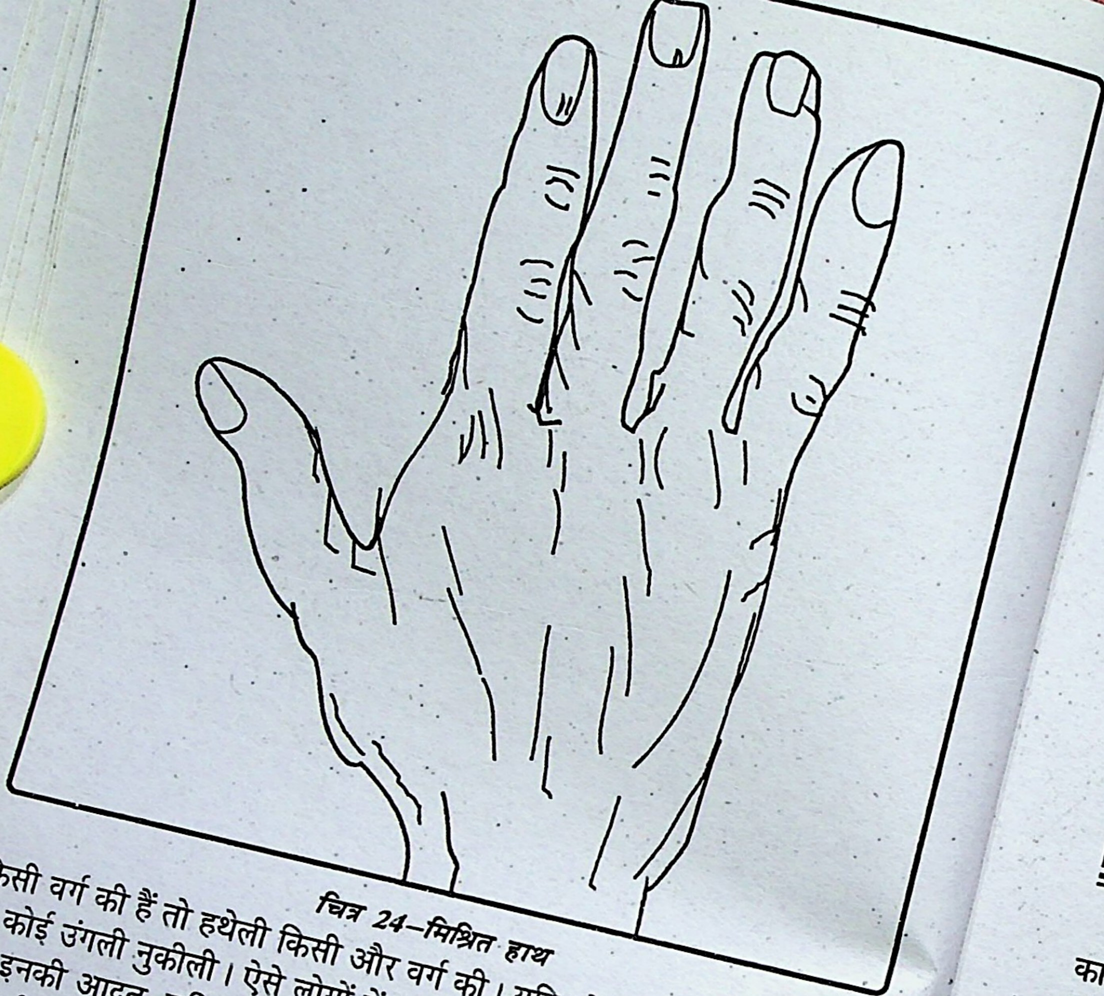


अंगूठे की जानकारी व भाग्य सम्बन्ध

सामुद्रिक शास्त्र में अंगूठे का बहुत महत्त्व है। अंगूठे के माध्यम से मनुष्य का स्वाभाविक गुण और चरित्र का पता लगाया जा सकता है। हाथ का मूल अंगूठा है। इससे विहीन अंगुलियों का महत्त्व नगण्य हो जाता है। यह नैसर्गिक इच्छाशक्ति का केन्द्र है। इच्छा मानव-जीवन का आधारभूत तत्व है, इसीलिए अंगूठे का महत्त्व एवं अध्ययन अति आवश्यक है।

अंगूठे का महत्त्व सामुद्रिक शास्त्र में ही नहीं चिकित्सा विज्ञान में भी है। चिकित्सा विज्ञान में कहा गया है कि यदि अंगूठा फट जाए और खून का संचार अति तीव्र हो, तो ऐसी हालत में आदमी पागल हो सकता है।

अंगूठे से मानव की कार्यक्षमता और विचारों की जानकारी मिलती है। प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख है। प्रयोग पारिजात में लिखा है—"अंगूठे के मूल में यदि यवमाला (जौ की तरह का चिह्न) है तो व्यक्ति धनाढ्य होगा। यदि अंगूठों में काकपद है तो (कौवे के पैर जैसा चिह्न) व्यक्ति वृद्धावस्था में कष्ट पाता है।" जो (यव) का चिह्न दो रेखाओं से बनता है—एक रेखा ऊपर कुछ गोलाई लिए होती है, नीचे की रेखा भी कुछ गोलाई लिए होती है इन दोनों के मध्य भाग को यव कहते हैं जो कि जौ के दाने की तरह होता है।



चित्र 24–मिश्रित हाथ

किसी वर्ग की हैं तो हथेली किसी और वर्ग की। यदि कोई उंगली फैली हुई होती तो कोई उंगली नुकीली। ऐसे लोगों में कई दोष होते हैं, कई विशेषताएं भी होती हैं। इनकी आदत, चरित्र, प्रवृत्ति मिश्रित होते हैं। इसी कारण इनका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है। ज्यादातर असफलताओं के कारण ऐसे लोग निराशावादी हो जाते हैं। जीवन के प्रति उदासीन हो जाते हैं। कठोर मेहनत से डरते हैं। आंशिक रूप से अस्थिर और परिवर्तनशील रहते हैं। परिवर्तन करने की वजह से नुकसान भी उठाते हैं। ऐसे लोगों के हाथ में भाग्य रेखा या मस्तिष्क रेखा यदि अच्छी तो जीवन में कुछ उपलब्धियां भी हो जाती हैं और ऐसा नहीं है तो साधारण वन ही जीते हैं।



अंगूठे की जानकारी व भाग्य सम्बन्ध

सामुद्रिक शास्त्र में अंगूठे का बहुत महत्त्व है। अंगूठे के माध्यम से मनुष्य स्वाभाविक गुण और चरित्र का पता लगाया जा सकता है। हाथ का मूल ा है। इससे विहीन अंगुलियों का महत्त्व नगण्य हो जाता है। यह नैसर्गिक क्ति का केन्द्र है। इच्छा मानव-जीवन का आधारभूत तत्व है, इसीलिए का महत्त्व एवं अध्ययन अति आवश्यक है।

ूठे का महत्त्व सामुद्रिक शास्त्र में ही नहीं चिकित्सा विज्ञान में भी है। विज्ञान में कहा गया है कि यदि अंगूठा फट जाए और खून का संचार हो, तो ऐसी हालत में आदमी पागल हो सकता है।

से मानव की कार्यक्षमता और विचारों की जानकारी मिलती है। प्राचीन ं भी इसका उल्लेख है। प्रयोग पारिजात में लिखा है—''अंगूठे के वमाला (जौ की तरह का चिह्न) है तो व्यक्ति धनाढ्य होगा। यदि कपद है तो (कौवे के पैर जैसा चिह्न) व्यक्ति वृद्धावस्था में कष्ट (यव) का चिह्न दो रेखाओं से बनता है—एक रेखा ऊपर कुछ ी है, नीचे की रेखा भी कुछ गोलाई लिए होती है इन दोनों के व कहते हैं जो कि जौ के दाने की तरह होता है।

"नारदीय संहिता" में कहा गया है जिस किसी के हाथ में मत्स्य (मछली) चिह्न नहीं होता, वह पूर्ण विद्वान् नहीं हो सकता तथा यव चिह्न नहीं होता तो धनवान नहीं होगा।

विवेक विलास में कहा गया है कि अंगूठे के मूल में जितने यव होते हैं उतने ही पुत्र होते हैं। यदि मध्य में यव का चिह्न है तो यह विद्या, ख्याति और ऐश्वर्य का सूचक है।

"सामुद्रिक तिलक" में लिखा है कि यदि अंगूठा सीधा, चिकना, ऊंचा, गोल, दाहिनी तरफ मुड़ा हो तो व्यक्ति धनी होता है। अंगूठे के मध्य में यव का चिह्न हो तो वह भाग्यवान और विद्वान् होता है। यदि अंगूठे के मूल में चारों ओर तीन यवों की माला हो तो ऐसा व्यक्ति राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री होता है। जिसके दो यव माला हों वह व्यक्ति मन्त्री या संसद सदस्य बनता है।

जिस प्रकार भारतीय विद्वानों ने अंगूठे के महत्त्व को स्वीकारा है उसी प्रकार से पाश्चात्य विद्वानों ने भी अगूंठे के महत्त्व को स्वीकारा है। कुछ विदेशी वैज्ञानिकों ने शोध किया है कि अंगूठे को देखकर लकवे के रोग का ज्ञान हो जाता है। शरीर के किसी अंग में रो से पहले बहुधा कोई संकेत नहीं होता है, लेकिन इस तरह के संकेत चिह्न अंगूठे से मिलते हैं। अंगूठे की शल्य चिकित्सा पर वहां की शिराओं को ठीक कर देने से लकवा होने की आशंका खत्म हो जाती है। कुछ विद्वानों ने पुरुष के बाएं और नारी के दाहिने अंगूठे को श्रेष्ठ माना है और यह कहा है कि क्रम से इन्हें ही देखना चाहिए, लेकिन भारतीय विद्वान् इस मत से सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा है कि जातक का जन्म शुक्ल पक्ष में हुआ है तो दाहिने हाथ के अंगूठे से विचार करना चाहिए चाहे वह औरत हो या आदमी। अगर औरत का हाथ का अंगूठा सीधा, गोल और कोमल है और बीच में यव चिह्न भी है तो ऐसी औरतें धनधान्य और सौभाग्य की स्वामिनी होती हैं। अंगूठे के विषय में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं–

(1) अंगूठा लम्बा ऊंचा और पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति विवेकशील होते हैं।

(2) जो लोग अंगूठे को अंगुलियों के नीचे छिपाए रहते हैं, मानसिक रूप से कमजोर और अपराधी होते हैं।

(3) मृत्यु से पहले अंगूठा सीधा खड़ा नहीं होता, खड़ा होने पर हथेली पर गिर पड़ता है।

(4) जिनके अंगूठे सीधे और कमजोर होते हैं वे मानसिक रूप से कमजोर होते हैं।

(5) यदि अंगूठे का प्रथम पोर बहुत लम्बा हो तो व्यक्ति तानाशाही प्रवृत्ति का होगा। वह आत्म-प्रशंसक अधिक होता है।

(6) यदि अंगूठा मोटा, बेडौल छोटा हो तो उसमें उद्दण्डता और हिंसा की प्रवृत्ति होगी।

(7) यदि अंगूठा छोटा हो और हथेली की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति मन्दबुद्धि होता है।

(8) अंगूठा लम्बा और सुन्दर हो तो ऐसे लोग बुद्धिमान और सभ्य होते हैं।

(9) यदि पहला पोर बहुत चौड़ा हो और साथ में गोल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक क्रोधी, अशिष्ट और हिंसक प्रवृत्ति का होता है।

(10) यदि पहला पोर बहुत छोटा है तो ऐसा व्यक्ति "क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा" की कहावत को चरितार्थ करता है।

(11) यदि अंगूठा पीछे की ओर मुड़ा है तो ऐसा व्यक्ति उदार होता है।

(12) यदि पहला पोर छोटा होने के साथ-साथ चौड़ा भी है तो ऐसा व्यक्ति जिद्दी होता है।

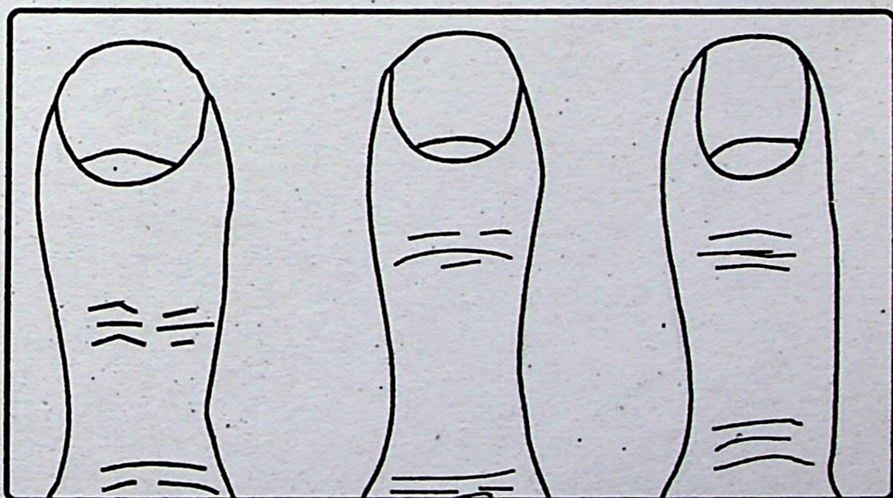
अंगूठे के प्रकार

अंगूठे को मानव जाति के अनुसार तीन भागों में बांटा गया है–

(1) अधिककोण अंगूठा

(2) समकोण अंगूठा

(3) न्यूनकोण अंगूठा



चित्र 25–अंगूठे के प्रकार

(1) अधिककोण अंगूठा–

यह अंगूठा देखने में सुन्दर, पतला और लम्बा होता है। यह पीछे की ओर मुड़ा हुआ होता है। ऐसे व्यक्ति सात्विक प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति उदार, भावुक हृदय और कोमल होते हैं। साहित्यकार, विद्याप्रेमी, कलाप्रेमी, कलाकार, ज्योतिर्विद आदि होते हैं। अगर पारिवारिक परिस्थितियां, निर्धनता इनका रास्ता रोकने की कोशिश करती है परन्तु यह उन मार्गों से निकलकर लक्ष्य तक पहुंच जाते हैं। अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के तृतीय पोर के मध्य भाग तक उत्तम मानी जाती है। यदि लम्बाई तर्जनी के दूसरे पोर के अर्द्ध भाग से भी ऊपर है तो वह व्यक्ति अत्यन्त मूर्ख होता है। यदि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के तृतीय पोर को स्पर्श करती है, ऐसे व्यक्ति मेधावी होते हैं। परिचय क्षेत्र अधिक होता है। सहन शक्ति शारीरिक रूप से अधिक होती है, परन्तु शंकालु स्वभाव के होते हैं जिसके कारण समाज में कई बार बेइज्जत भी होते हैं।

(2) समकोण अंगूठा–

ऐसे अंगूठे तर्जनी से जुड़ते समय समकोण बनाते हैं। देखने में मजबूत सुन्दर और सीधे होते हैं यह आगे और पीछे मुड़े नहीं होते हैं। ऐसे लोग कर्मवादी अधिक होते हैं। इनका स्वभाव अतिशीघ्र रुष्ट और अतिशीघ्र तुष्ट (क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा) होता है। प्राण जाए पर वचन न जाए, यह भी इनमें गुण है। प्रतिशोध की भावना इतनी ज्यादा होती है कि यह अपने जीवन के अन्तिम समय तक बदला लेना नहीं भूलते हैं। यह या तो कट्टर दुश्मन होते हैं या बहुत अच्छे मित्र होते हैं। उपकार का बदला चुकाना नहीं भूलते। ऐसे लोग सच्चे देशभक्त, कट्टर, धार्मिक संन्यासी होते हैं या तो ये चरम सीमा तक उन्नति करते हैं। अथवा गर्त में मिल जाते हैं। ये मध्य की स्थिति को नहीं अपनाते हैं। समझौते के सिद्धान्त विरोधी होते हैं।

(3) न्यूनकोण अंगूठा–

हथेली को सीधा करने से जो अंगूठा तर्जनी या हथेली की ओर झुका होता है, न्यूनकोण बनाता है। ऐसे अंगूठे मोटे और छोटे होते हैं। ये देखने में बेडौल होते हैं। ये अंगूठे मध्यम और निम्न वर्ग के सूचक होते हैं। ऐसे लोग धर्म-कर्म में विश्वास नहीं रखते हैं। अगर रखते भी हैं तो भूत-प्रेत सैयद आदि की पूजा करते हैं। ऐसे लोग आर्थिक अभावों में जीते हैं। अपव्यय इनकी आदत होती है। अधिकतर समय गप्प मारने, लड़ाई-झगड़ा करने में गुजरता है। अगर अंगूठा ज्यादा छोटा और स्थूल है तो ये अधिकतर दुराचारी होते हैं। इनके सम्बन्ध छोटे

स्तर की स्त्रियों से रहते हैं। ऐसे अंगूठे वाले हाथ उच्च परिवार के लोगों में भी देखने को मिलते हैं और उनमें ऊपर लिखित अवगुण भी प्राप्त होते हैं। ऐसे लोगों को समय-समय पर बदनामी भी मिलती रहती है।

अंगूठे के भाग

अंगूठा तीन भागों में बांटा गया है। पहला पोर जो कि नख से विपरीत दिशा में प्रथम जोड़ तक होता है। दूसरा पोर जोकि पहले पोर के नीचे मध्य में होता है। तीसरा पोर जो हथेली से जुड़ा रहता है।

प्रथम पोर—इच्छाशक्ति का सूचक है।

द्वितीय पोर—विचारशक्ति का सूचक है।

तृतीय पोर—प्रेम का सूचक है।

प्रथम पोर (पर्व)–

यदि प्रथम पोर विशेष दृढ़ और अधिक लम्बा है तो ऐसे लोग इच्छाशक्ति वाले होते हैं। यदि दूसरे पोर से पहला पोर बड़ा है तो ऐसे व्यक्ति तर्क या विचार-शक्ति से काम न लेकर केवल अपनी इच्छाशक्ति या प्रवृत्ति के अनुसार काम करते हैं। इनमें आजादी से फैसला करने की क्षमता होती है। व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। ये धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। वृद्धावस्था में और अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के हो जाते हैं। अगर दूसरा पोर बड़ा है और पहला पोर कुछ छोटा है तो वे अपने तर्क के कारण सिद्धान्त, भावना और कर्त्तव्य पर अडिग नहीं रह पाते हैं। शंकालु प्रवृत्ति के होते हैं। धीरे-धीरे मानसिक कमजोरी के कारण शारीरिक रूप से कमजोर हो जाते हैं और जीवन में असफल रहते हैं। अगर किसी स्त्री का अंगूठा ऐसा है तो वह दूसरे पुरुष के बहकावे में आ जाती है। पहला और दूसरा पोर लम्बाई-चौड़ाई और स्थूलता में बराबर है तो वह व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में कामयाब रहेगा। वह सम्मान के साथ जीवन गुजारता है।

क्योंकि इच्छाशक्ति और तर्कशक्ति बराबर होने के कारण उसको लोग आसानी से धोखा नहीं दे पाते। ऐसे लोग खुद भी किसी को धोखा नहीं देते हैं। जीवन के अत्यन्त गम्भीर समय में भी अपनी हिम्मत को नहीं खोते। नियन्त्रित जीवन जीते हैं।

यदि प्रथम पोर लम्बा सुडौल और दृढ़ है तो वह मनुष्य कर्त्तव्यपरायण, सहृदय परोपकारी सामाजिक व्यक्ति होता है। यदि प्रथम पोर भारी तथा नाखून चपटा हो तो ऐसा मनुष्य अधिक गुस्से वाला होता है। चिड़चिड़े स्वभाव का स्वार्थी, दम्भी, धोखेबाज होता है।



पहला पर्व छोटा और



भद्दा छोटा अंगूठा



दोनों बराबर



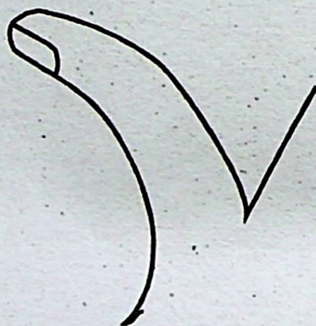
पहला पर्व छोटा व दूसरा लम्बा



पहला पर्व लम्बा व दूसरा छोटा



कठोर जोड़ युक्त



लचीला जोड़ युक्त

चित्र 26—अंगूठे के भाग

अंगूठे के पहले पोर की सन्धि अगर कठोर है तो वह व्यक्ति अधिक गुस्से वाला होता है और गुस्से में हत्या तक कर देता है।

यदि पहला पर्व चपटा है तो ऐसा व्यक्ति अल्प गुस्से वाला, शान्ति से जीवन जीने पर विश्वास रखता है।

अगर पहला पोर नुकीला, ढलवां तथा ऊपर की ओर पतला है तो ऐसे लोग धूर्त, अपराधी, ठग, दुराचारी स्वार्थी होते हैं। अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए वह दूसरों को अधिक से अधिक हानि पहुंचा सकते हैं। वह खुद को संसार के योग्य व्यक्ति समझते हैं।

द्वितीय पोर (पर्व)–

अंगूठे का द्वितीय पोर तर्कशक्ति का सूचक होता है। पहले से दूसरा पोर बड़ा और सुदृढ़ हो तो ऐसे लोग असाधारण तर्कशक्ति रखते हैं। वह किसी भी हालत में अपनी हार स्वीकार नहीं करते। ऐसे लोग केवल बुद्धि एवं वाकचातुर्य से विजय प्राप्त करते हैं। यह दूसरे की बात को अहमियत नहीं देते हैं यह अत्यधिक बातूनी होते हैं। यदि पोर पतला है तो अत्यधिक मुंहफट होते हैं, छिद्रान्वेषी होते हैं। इन्हें अपना जीवन भार लगता है क्योंकि इनकी स्नायुशक्ति दुर्बल होती है और तर्क करते-करते उत्तेजित हो जाते हैं। लम्बी-चौड़ी बातें तो बहुत करते हैं पर कोई यकीन नहीं करता। अगर दूसरा पोर पहले की तरह लम्बा-चौड़ा और मोटा होता है तो ये जीवन में कामयाबी हासिल करते हैं। इस वर्ग में उच्च कोटि के नेता, वकील, कलाकार, अधिकारी ज्योतिर्विद और उद्योगपति होते हैं।

यदि दूसरा पोर पहले की अपेक्षा दुर्बल छोटा और क्षीण हो तो ऐसे व्यक्तियों की तर्कशक्ति दुर्बल होती है, ये छोटे से काम को भी करने में दूसरों से सहयोग चाहते हैं। निर्णय लेने में अक्षम, बिना सोचे ही काम को शुरू करते हैं और बाधा आने पर काम को छोड़ भी देते हैं। इनका कोई लक्ष्य नहीं होता। इनमें शंका-प्रवृत्ति, हिंसक-प्रवृत्ति, आलस्य अकर्मण्यता, अस्थिर विचार, निर्धनता, तर्कहीनता अल्प-आस्थावान आदि अवगुण पाए जाते हैं। ये जीवन में प्रायः असफल रहते हैं।

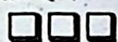
तृतीय पोर (पर्व)–

यह पोर शुक्र पर्वत से ऊपर होता है। पहले दो पोरों की तरह यह भाग लम्बाई में छोटा तथा चौड़ा अधिक होता है। यदि यह भाग ऊंचा, लालिमायुक्त है तो प्रेम के क्षेत्र में गम्भीर रहता है। ऐसे लोग समाज में सम्माननीय जीवन बिताते हैं, विचलित न होने वाले और प्रेम के क्षेत्र में गम्भीर होते हैं। अगर वह क्षेत्र अत्यधिक उन्नत तथा बढ़ा-चढ़ा हो तो ऐसे लोग सौन्दर्यप्रेमी, कामुक होते

हैं। प्रेम के आवेग में यह जीवन-मरण की हालत में पहुंच जाते हैं। यदि यह स्थान संकीर्ण पीला या काला या जालयुक्त है तो ऐसे व्यक्ति निराशावादी, प्रेम के स्थान पर वासना, भावनाहीन, स्वार्थी, धोखेबाज होते हैं। उन्हें बदनामी भी मिलती रहती है। इनका दामपत्य जीवन कलहपूर्ण होता है।

यदि इस क्षेत्र पर लाल तिल है तो वह दाम्पत्य जीवन कामयाब रहता है, नारियों में लोकप्रिय रहता है। यदि काला तिल है तो वह पहले प्रेम में ही बदनामी का शिकार होता है और असफल रहता है, नारी जगत में बदनाम रहता है। यदि 'यव' का चिह्न है तो उसका सम्बन्ध किसी अन्य से भी रहता है। यदि उस क्षेत्र पर चतुर्भुज या त्रिकोण का चिह्न है तो वह व्यक्ति सौन्दर्य-प्रेमी और रसिक स्वभाव का होता है।

यदि वह क्षेत्र काला या पीला है और क्रॉस का चिह्न है तो ऐसा व्यक्ति प्रेम के क्षेत्र में जघन्य अपराध भी करता है। अगर इस क्षेत्र में स्टार 'यव' या क्रॉस का चिह्न है तो प्रेम के बारे में ऐसे व्यक्ति की हत्या हो सकती है।





करपृष्ठ का विश्लेषण

भारतीय हस्तरेखाविदों और पाश्चात्य हस्तरेखाविदों ने इस विषय में भिन्न-भिन्न प्रकार के मत दिये हैं। हाथ के इस भाग की विवेचना में पाश्चात्य विद्वानों का विश्लेषण अधिक सूक्ष्म और प्रभावकारी माना जाता है, इसलिए यहां इसी की विस्तृत जानकारी दी जा रही है।

पाश्चात्य हस्तरेखाविदों का मत

(1) छोटे करपृष्ठ—हथेलियों की लम्बाई से छोटे और उंगलियों के अगले भाग (पोर) वर्गाकार हों, तो ऐसे करपृष्ठ छोटे करपृष्ठ कहलाते हैं।

गुणावगुण—ऐसे करपृष्ठ वाले व्यक्ति बुद्धिमान, उद्यमी, शुद्ध अन्तःकरण वाले तथा सफल होते हैं।

(2) चौड़ाई में अधिक छोटे करपृष्ठ—ऐसे करपृष्ठ जो उंगलियों से बहुत छोटे हैं और चौड़ाई में अधिक हों, इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति क्रूर, हिंसक और निर्भय होते हैं।

(3) लम्बे करपृष्ठ—उंगलियों से लम्बे तथा उंगलियां भी लम्बी, नुकीली एवं अगले पोर से उठे हुए करपृष्ठ को लम्बे करपृष्ठ माना जाता है।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति कलाप्रिय, कवि, साहित्यकार और अत्यधिक कामुक होते हैं।

(4) नुकीली उंगलियों वाले छोटे करपृष्ठ—उंगलियों की लम्बाई से छोटे और उंगलियों के पोर भी नुकीले हों तो ऐसे करपृष्ठ इसी वर्ग में आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति व्यावहारिक और सफलता प्राप्त करने वाले होते हैं।

(5) चमसाकार उंगलियों वाले छोटे करपृष्ठ—उंगलियों की लम्बाई से अधिक न हों और उंगलियों का अग्रसिरा (पोर) चमसाकार हो तो, ऐसे करपृष्ठ इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति परिश्रमी और उत्साही होते हैं, परन्तु आलसी जल्दबाज और अतिनिन्द्रा वाले होते हैं, इसी वजह से ऐसे लोग अपने गुणों का लाभ उठाने में असमर्थ होते हैं।

(6) सर्पफन के समान करपृष्ठ—मणिबन्ध के निकट पतला, बीच से चौड़ा और उंगलियों की जड़ के पास पुनः पतले करपृष्ठ को सर्पफन के समान करपृष्ठ कहते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति उत्साही भावुक और बुद्धिजीवी होते हैं।

करपृष्ठ के बारे में भारतीय हस्तरेखाविदों का मत

(1) ऊंचा उठा हुआ करपृष्ठ—ऐसे करपृष्ठ जो मध्य से उठे हुए हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति भाग्यवान, प्रतिष्ठित और सुखी जीवन जीने वाले होते हैं।

(2) नीचे दबा हुआ करपृष्ठ—ऐसे व्यक्ति भाग्यवान, प्रतिष्ठित और सुखी जीवन जीने वाले होते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति दरिद्र, ईर्ष्यालु तथा दुःखी होते हैं।

(3) रोमविहीन करपृष्ठ—ऐसे करपृष्ठ जिनके ऊपर रोम (बाल) न हों रोमविहीन करपृष्ठ कहलाते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति दाम्पत्य सुख प्राप्त करने वाले होते हैं।



चित्र 27—रोमविहीन करपृष्ठ

(4) सिकुड़ा हुआ करपृष्ठ—ऐसे करपृष्ठ जो प्रकट में सिकुड़े हुए और जिन पर झुर्रियां पड़ी होती हैं, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति उत्साहहीन, कुढ़ने वाले तथा द्वेषी होते हैं।

(5) शिराविहीन—ऐसे करपृष्ठ जिन पर शिराएं न चमकती हों, इस वर्ग में आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति आरोग्य, धन-सम्पत्ति प्राप्त होते हैं।

(6) सपाट व चौड़ा करपृष्ठ—ऐसे करपृष्ठ जो बिल्कुल सपाट तथा चौड़े फैले हुए होते हैं, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति प्रतिष्ठित तथा दाम्पत्य जीवन का सुख प्राप्त करते हैं।

(7) रोमयुक्त करपृष्ठ—ऐसे क़रपृष्ठ जिन पर रोम न दिखाई देते हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति निर्बल, उत्साहहीन, निर्धन और ईर्ष्यालु प्रवृत्ति के होते हैं।

(8) शिरायुक्त—ऐसे करपृष्ठ जिन पर शिराएं चमकती रहती हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति दुःखी, वैभवहीन, अपमानित और घृणित होते हैं।

करपृष्ठ पर रोम (बाल) का विश्लेषण

रोम की आकृति आकार व प्रकार के आधार पर भारतीय हस्तरेखाविदों और पाश्चात्य विश्लेषकों ने अलग-अलग मत प्रकट किये हैं, लेकिन पाश्चात्य विश्लेषण को ही मान्यता प्राप्त है। अतः यहां पाश्चात्य विश्लेषण का ही विवरण किया जा रहा है—

(1) हल्के रोम—ऐसे रोम जो अधिक घने न हों, और उनमें कोमलता भी हो, उन्हें हल्के रोम कहा जाता है।

गुणावगुण—ऐसे रोम वाले व्यक्ति प्रभावशाली, चैतन्य, शक्तिशाली और स्वावलम्बी होते हैं।

(2) छोटे व विरल रोम—ऐसे रोम जो करपृष्ठ पर कहीं-कहीं हों और लम्बाई में अधिक लम्बे न हों, छोटे व विरल रोम कहलाते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति दूरदर्शी, कोमल, भावयुक्त व सुखी होते हैं।

(3) कम मात्रा में हल्के चमकदार व भूरे रोम—ऐसे रोम जो मात्रा में कम हों, हल्की चमक और भूरी रंगत लिए हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—इस प्रकार के रोम वाले व्यक्ति आलसी, शीघ्र प्रभावित होने की प्रवृत्ति रखने वाले और सरल स्वभाव के होते हैं।

(4) रोमहीन—ऐसे करपृष्ठ जिन पर रोम न हों या कहीं-कहीं हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति मूर्ख, कुतर्की, कायर, कार्यक्षमता से युक्त होते हैं।

(5) लाल आभा वाले हल्के रोम—ऐसे रोम जो देखने में लाल रंग के प्रतीत होते हैं और हल्के रहते हैं, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति अधीर, चंचल तथा उद्दण्ड होते हैं।

(6) काले रोम—ऐसे रोम जो देखते ही काले लगते हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति अहंकारी, ईर्ष्यालू, चिड़चिड़े, क्रोधी और वासना-युक्त होते हैं।

(7) अधिक भूरे रोम—ऐसे रोम जो दूर से देखने पर ही भूरे नज़र आते हों, इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति खुशमिजाज, चंचल और विद्रोही होते हैं।

(8) गहरे रंग के चमकीले रोम—ऐसे रोम जो गहरी रंगत वाले और चमकीले हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति कामुक, चंचल और मनमौजी होते हैं।

(9) लाल रंग के मोटे रोम—ऐसे करपृष्ठ जिन पर लाल रंग के मोटे रोम हों, इस वर्ग के अन्तर्गत आते हैं।

गुणावगुण—ऐसे व्यक्ति कामी, क्रोधी, तामसी और ईर्ष्यालु होते हैं।

❑❑❑



अंगुलियों का विश्लेषण और भाग्य-भविष्य ज्ञान

हाथ के अंगूठे के अलावा चार अंगुलियां होती हैं। हस्तरेखा में अंगुलियों का भी विशेष स्थान है। अपराध विज्ञान में अंगुलियों की आकृत्ति और उनमें पाए जाने वाले निशानों के ज़रिये अपराधी को खोजने की प्रणाली है। ये अंगुलियां चार प्रकार की होती हैं—

(1) तर्जनी

(2) मध्यमा

(3) अनामिका

(4) कनिष्ठिका

जिनकी अंगुलियां विरल तथा छोटी हों ऐसे लोग गरीब होते हैं। जिनकी अंगुलियां सघन होती हैं अर्थात् अंगुलियां के बीच खाली स्थान नहीं होता है एक दूसरे से जुड़ती है तो ऐसा व्यक्ति धनाढ्य होता है।

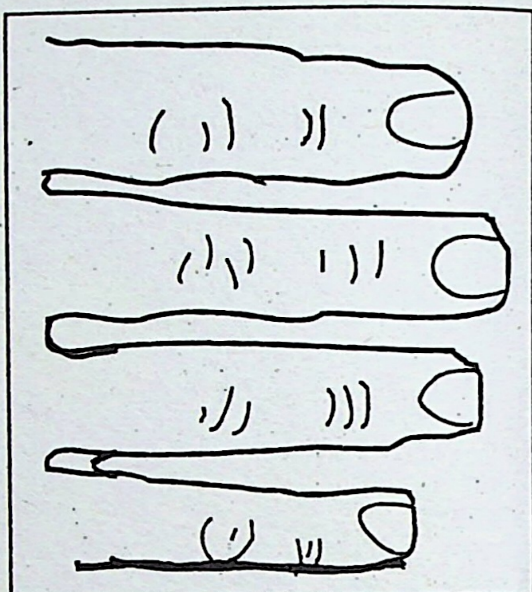
भविष्य पुराण में कहा गया है कि यदि अंगुलियां विरल हैं और खुरदरी हैं, अत्यधिक पतली हैं तो ऐसे लोग सिर्फ गरीब ही नहीं दुःखी भी रहते हैं।

वरूण पुराण का कथन हैं, "जिनकी अंगुलियां सीधी हों, वे दीर्घायु होते हैं।

जिनकी अंगुलियां छोटी, स्थूल या टेढ़ी होती हैं, ऐसा मनुष्य गरीब होता है। ऐसा मनुष्य धन इकट्ठा करने में असमर्थ रहता है। यदि धनाढ्य परिवार में पैदा हो गया तो उसे नष्ट कर देता है।

जिनकी उंगलियां चपटी हों वे लोग नौकरी करने वाले होते हैं। यदि उंगलियां मोटी हैं तो ऐसे लोग आर्थिक संकट का सामना करते हैं।

यदि उंगलियां करपृष्ठ की ओर मुड़ी हुई हैं तो ऐसे व्यक्ति को शारीरिक कष्ट विशेष रूप से उठाना पड़ता है।''



चित्र 28–अंगुलियों का विश्लेषण

लंका के प्राचीन विद्वान् नामदर्शी का कथन है, ''जिनकी उंगलियां लम्बी व आगे से नुकीली होती हैं वह लोग मेधावी होते हैं। तर्जनी और मध्यमा के बीच यदि छिद्र हो तो जीवन के तीस वर्षों तक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यदि मध्यमा और अनामिका के बीच छिद्र नहीं है तो जीवन के अट्ठाइस वर्ष से साठ वर्ष के मध्य आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

अनामिका और कनिष्ठिका के बीच छिद्र हो तो जीवन के अन्तिम क्षण तक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मोटी उंगलियां निर्धनता की सूचक हैं।

गांठरहित उंगलियां व्यक्ति को दार्शनिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति का बनाती हैं।

चिकनी गांठ वाले व्यक्ति भावुक एवं सिद्धान्तवादी होते हैं।

यदि कनिष्ठिका और अनामिका एक-दूसरे से मिली हों तो ऐसे लोग जीवन में किसी के आश्रित नहीं रहते हैं।

अधिक विकसित गांठ वाले लोग कठोर तथा व्यावहारिक होते हैं। जिनकी उंगलियां सीधी हों वह भाग्यशाली होता है। जिसकी उंगलियों में गांठ अधिक विकसित हों, वह बुद्धिमान होता है।

यदि कनिष्ठिका अनामिका के प्रथम पोर तक पहुंच जाए तो ऐसा व्यक्ति

आर्थिक रूप से सम्पन्न होता है। ऐसे व्यक्ति का झुकाव मातृपक्ष की तरफ ज्यादा होता है।

यदि अनामिका का मध्य पोर कनिष्ठिका से आगे बढ़ जाए तो मनुष्य सौ साल तक जीता है।

यदि कनिष्ठिका का अग्रभाग अनामिका के मध्य पोर तक पहुंच जाए तो वह व्यक्ति अस्सी वर्ष तक जीवित रहने की क्षमता रखता है।"

अंगुलियों के भेद

अंगुलियों के चार प्रकार होते हैं जिनका विवरण निम्न प्रकार है—

(1) तर्जनी उंगली—

अंगूठे के बाद जो उंगली होती है, उसे तर्जनी उंगली कहते हैं। यह साधारणतया लम्बी होती है। यदि तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो ऐसे लोग महत्त्वपूर्ण होते हैं, ऊंचे पद को प्राप्त करने वाले होते हैं। स्वभाव से गम्भीर होते हैं और गम्भीर होते हुए घमण्डी होते हैं। शासन करने की प्रवृत्ति कुछ आवश्यकता से अधिक होती है। ऐसा भी होता है कि ऐसे व्यक्ति किसी ऐसे व्यक्ति के विरोध के परिणामस्वरूप उसके प्रति प्रतिशोध की भावना से ग्रसित हो जाते हैं। जब तक बदला नहीं ले लेते चैन से नहीं बैठते हैं। इनमें धार्मिक प्रवृत्ति का अभाव होता है। अपना काम सीधा करने के लिए किसी भी हद तक गिर जाते हैं। साहस और धैर्य की स्थिति जरूर ही असाधारण होती है। अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहते हैं। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष की स्थिति से भी नहीं घबराते, अगर तर्जनी उंगली अनामिका से छोटी है तो ऐसे व्यक्ति स्वार्थी, चालाक, नमकहराम, येन-केन-प्रकारेण कार्यसिद्धि में निपुण, दूसरे की उन्नति से ईर्ष्यालु, निशिवासर, आत्मश्लाघाती और असत्यवादी होते हैं। अगर तर्जनी और अनामिका बराबर हैं तो ऐसा व्यक्ति निपुण, गम्भीर, करूणा, प्रेम, निष्ठावान स्वभाव वाला होता है लेकिन असत्यवादी होता है, लेकिन ऐसे लोग जिन्दगी में कामयाब जरूर होते हैं।

यदि तर्जनी मध्यमा के बराबर है, जोकि बहुत ही कम होती है, तो ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से विकृत होगा।

(2) मध्यमा उंगली—

यह उंगली मध्य में होती है इसी वजह से इसे मध्यमा कहते हैं। यह उंगली लम्बाई में सबसे बड़ी होती है। तर्जनी और अनामिका के बीच में होती है। शनि

पर्वत इसी उंगली के मूल में होता है। यह चौथाई इंच बड़ी हो तो शुभ होती है, ऐसे व्यक्ति में दूरदर्शिता एवं गम्भीरता होती है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक कार्य करने वाला होता है; विवेकशील, मितव्ययी एवं आदर्श जीवन जीने वाला होता है। समाज में सम्माननीय जीवन जीता है।

यदि उंगली चौथाई इंच से भी बड़ी है तो उस व्यक्ति का जीवन निराशा और नाकामी का समूह बन जाता है और दुःखों का अम्बार लगा रहता है। पश्चात्ताप और ग्लानि उसके अपने साथी बन जाते हैं। अगर उंगली लम्बी के साथ चपटी भी है तो ऐसे व्यक्ति को जीवन भर सम्मान नहीं मिलता है, अपमान और तिरस्कार रोज के साथी बन जाते हैं। अगर उंगली तर्जनी के बराबर हो तो ऐसे लोग मानसिक रूप से विकसित नहीं होते हैं। फूहड़ जीवन गुज़ारता है और उसका कोई चरित्र नहीं रह जाता है। अगर उंगली टेढ़ी है तो वह काम-वासना तथा हिस्टीरिया रोग का शिकार हो जाता है। हिंसक प्रवृत्ति का व्यक्ति बन जाता है। अगर यह उंगली तर्जनी से आधा इंच बड़ी है तो ऐसे लोग अपराधी प्रवृत्ति के हो जाते हैं, जघन्य अपराध करने में कोई संकोच या भय महसूस नहीं करते।

(3) अनामिका उंगली–

यह उंगली बहुत महत्त्वपूर्ण होती है क्योंकि इसका मूल सूर्य पर्वत से है। मध्यमा और कनिष्ठिका उंगलियों के बीच में यह उंगली होती है। यह मध्यमा से छोटी और तर्जनी तथा कनिष्ठिका से बड़ी होती है। तर्जनी से बड़ी होने पर सौन्दर्य-प्रेमी, अनंगप्रिय, भावना-प्रधान, स्वाभिमानी, दयालु, परोपकारी, प्रेम, स्नेह आदि का समावेश होता है। अगर उंगली मध्यमा के बराबर है तो व्यक्ति धूर्त, कमजोर, शराबी, स्वार्थी, व्यभाचारी, जुआरी और अपराधी प्रवृत्ति का होता है। अगर उंगली बहुत छोटी है तो व्यक्ति चोर या ठग या किसी कला के ज़रिये गलत तरीकों से जीविकोपार्जन करता है।

अगर अनामिका और तर्जनी बराबर हैं तो वह व्यक्ति आज़ाद प्रकृति वाला होता है। किसी के काम में हस्तक्षेप नहीं करता है और न ही खुद अपने काम में हस्तक्षेप पसन्द करता है। ऐसा मनुष्य व्यवहारकुशल होता है। अगर अनामिका का झुकाव कनिष्ठिका की तरफ हो तो उसे उद्योग-व्यापार में विशेष कामयाबी मिलेगी। अगर झुकाव मध्यमा की तरफ हो तो नौकरी और चिन्तनशील कामों में कामयाबी मिलती है।

(4) कनिष्ठिका उंगली–

यह सबसे छोटी उंगली होती है। कनिष्ठिका उंगली का मूल पर्वत है।

इस उंगली का अधिक लम्बा होना क्रूरता का प्रतीक है। अधिक छोटा होना जल्दबाजी की निशानी है। उंगली का झुकाव बुध पर्वत की ओर है तो ऐसे लोग उद्योग या व्यापार के क्षेत्र में खास सफलता पाते हैं। अगर कनिष्ठिका उंगली अनामिका के नाखून तक पहुंच जाती है तो ऐसे लोग अपने लक्ष्य में कामयाब रहते हैं। ऐसे व्यक्ति कुशल प्रशासक, उद्योगपति, डॉक्टर, इंजीनियर, कवि, साहित्यकार एवं पत्रकार होते हैं। अगर यह उंगली प्रथम पोर के अर्धभाग तक पहुंचती है तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ उद्योगपति या आई०ए०एस० का अधिकारी होता है। ऐसे लोगों के जीवन में कभी धन की कमी नहीं रहती। ऐसे व्यक्ति व्यवहार-कुशल मितभाषी और अपने वचनों के पक्के होते हैं। जिनकी उंगली टेढ़ी हो तो ऐसे लोग असत्यवादी होते हैं लेकिन जीवन में पूरी तरह कामयाब रहते हैं, जिनकी उंगलियां अधिक टेढ़ी होती हैं वे धोखेबाज, चरित्रहीन, बेईमान होते हैं।

कुछ विशेष बातें—दो उंगलियों के बीच में जो जगह होती है उसका भी अपना महत्त्व होता है, अंगूठे और तर्जनी के बीच अगर अधिक दूरी है तो वह व्यक्ति प्रेम, दया, क्षमा, संयम, व्यवहारकुशलता आदि गुणों का धनी होता है।

मध्यमा और तर्जनी के मध्य की दूरी स्वतन्त्र विचारधारा की द्योतक है, जबकि कम दूरी संकीर्णता का प्रतीक है।

मध्यमा और अनामिका के बीच की दूरी लापरवाही व्यक्त करती है।

अनामिका और कनिष्ठिका के बीच की दूरी कठोरता व्यक्त करती है। यदि हाथ की उंगलियां सीधी करने पर उनका झुकाव हथेली की तरफ है तो ऐसे लोग भौतिकवादी, भयभीत रहने वाले, गहन अध्ययन के पश्चात् किसी काम को शुरू करता है और एक बार शुरू करने के बाद पूरा करके ही रुकता है। ऐसे लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रायः उद्योगपति होते हैं। जिनकी उंगलियां करपृष्ठ की ओर झुकी होती हैं ऐसे लोग सिद्धान्तवादी, ऊंचे विचारों वाले और दार्शनिक प्रवृत्ति के साथ चरित्रवान होते हैं। ऐसे लोग धन की अपेक्षा सम्मान को अहमियत देते हैं। इसी वजह से इन्हें समय-समय पर आर्थिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है।

अंगुलियों पर चिह्न

उंगलियों पर प्रायः चिह्न पाए जाते हैं। अकसर सुना जाता है कि अमुक के हाथ में दशों चक्र हैं या शंख हैं, इसी वजह से उसकी उन्नति हुई। मेरा जन्म रोहिणी ग्राम में हुआ है। वहां पर पण्डित भगवान दीन रहा करते थे। उनके मुंह से सुना था कि जिसकी उंगलियों में दशों चक्र हों, वह चक्रवर्ती राजा होता है

और जिसके दशों शंख हों, वह संन्यासी होता है। मुझको गांव के लोगों से लेकर अत्यन्त विलासिता में पले लोगों के हाथों को भी देखने का मौका मिला लेकिन ऐसा कुछ नहीं पाया। चौधरी चरण सिंह भारत के प्रधानमन्त्री बने। उस समय उनके हाथ को भी देखा था, वहां पर भी वर्षों से सुनते आए इस बात को गलत पाया।

(1) अगर शंख के चिह्न हैं तो ऐसे लोग हृदय रोगी जरूर होते हैं। लेकिन हृदय से ऐसे व्यक्ति विशाल होते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ये हिम्मत नहीं हारते। ऐसे लोग मानसिक रूप से धनी होते हैं।

(2) जिनकी उंगलियों पर चक्र के चिह्न होते हैं ऐसे लोग भावुक, स्वतन्त्र विचारों वाले, विवेकशील और शोधकर्ता होते हैं। नेतृत्व करने की क्षमता होती है, मौलिकता होती है।

(3) जिनकी उंगलियों पर त्रिभुज के चिह्न पाए जाते हैं वे व्यवहारकुशल होते हैं, उनका जीवन व्यावहारिक ढांचे में ढला होता है। अगर दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली के पहले तथा तीसरे पोर पर त्रिभुज का चिह्न है तो ऐसा मनुष्य श्रेष्ठ भविष्यवक्ता, तान्त्रिक, संन्यासी, अघोरी, योगी और गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है।

(4) जिनके पोरों पर मेहराब के चिह्न पाए जाते हैं वे लोग स्वभाव से सशंकित होते हैं। पलायिनता, अस्थिरता इनके जीवन में महत्त्वपूर्ण भागों को प्रभावित करते हैं। ऐसे लोग जासूसी, शोधपूर्ण काम, रहस्यमय कामों के क्षेत्र में पूरी तरह से सफल हो जाते हैं।

(5) यदि तम्बू के निशान उंगलियों के पोरों पर हैं तो व्यक्ति भावुक, संवेदनशील, कलाकार, साहित्यकार होता है लेकिन 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा' को ये चरितार्थ करते हैं।

(6) अगर उंगलियों पर क्रॉस या धन (× या +) का निशान है तो वह व्यक्ति अपने लक्ष्य में सफल होता है। आर्थिक मामलों समृद्धिशाली होता है। कीर्ति, धन, सम्मान के क्षेत्र में भी सफल रहता है।

(7) अगर उंगली पर वृत्त का चिह्न (O) है तो ऐसा व्यक्ति आदर्श जीवन बिताता है। ऐसे व्यक्ति व्यवहारकुशल, संयमी, मृदुभाषी, धैर्यवान और लगनशील होते हैं। ऐसे व्यक्ति जीने की कला जानते हैं। अच्छे दोस्त, प्रेमी के रूप में सिद्ध होते हैं।

(8) जिन उंगलियों पर तारे (☆) का चिह्न होता है तो वह अत्यन्त भाग्यशाली होता है। उसको जीवन-भर सहायक और सहयोगी मिलते

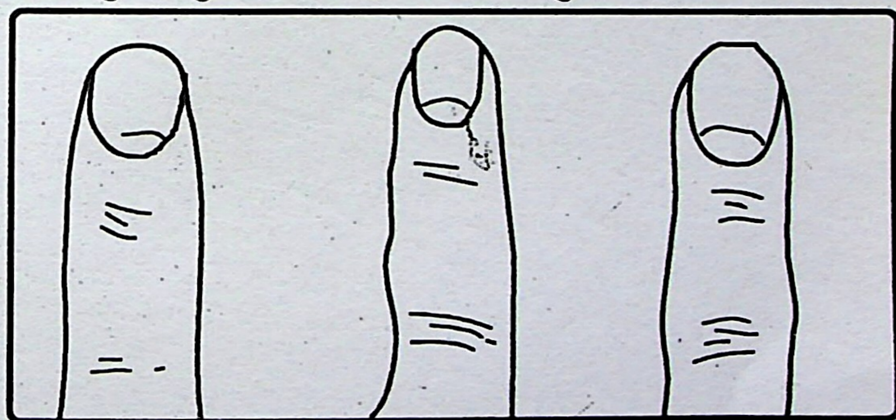
रहते हैं, जिनके बल पर लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं। यदि तारा कनिष्ठिका और तर्जनी उंगली पर है तो उस व्यक्ति को लॉटरी से या अकस्मात् धन मिलता है।

(9) जिन उंगलियों पर बाल के चिह्न पाए जाते हैं, ऐसे लोगों में अपराधी प्रवृत्ति होती है। जिनकी उंगलियां टेढ़ी होती हैं तो ऐसा व्यक्ति असत्यवादी होता है।

(10) जिन उंगलियों पर चतुर्भुज (□) का चिह्न पाया जाता है ऐसे लोग स्वावलम्बी होते हैं। अपना जीवन अपने बल पर शुरू करते हैं, पारिवारिक सहयोग नगण्य रहता है। अच्छी आदत और आजाद विचारों के होते हैं।

नारी की अंगुलियों का विश्लेषण

जिस स्त्री की उंगलियां बहुत छोटी हों और दोनों हाथों से अंजलि बनाने से अंगुलियों के मध्य में छिद्र रहे तो वह स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अपने पति का सारा धन नष्ट कर देती है। वह स्त्री दुःखभागिनी होती है। जिनकी अंगुलियों में तीन के स्थान पर चार पोर हों या मांसरहित उंगली हो, बहुत छोटी हो, अंगुलियों के मध्य छिद्र हो और करपृष्ठ पर रोम हों, तो ऐसी औरत खुद तो दुःख पाएगी ही, औरों को भी दुःख देगी।



चित्र 29—नारी की अंगुलियां

भारतीय प्राचीन विद्वानों का मत है कि जिस नारी की अंगुलियां गोलाई लिये हों, बराबर पोरों वाली, आगे से पतली हों, कोमल त्वचा और गांठरहित हों, तो वे औरतें सौभाग्यवती, सुन्दर, ऐश्वर्य भोगने वाली होती हैं।

अगर—

(1) गोल हों परन्तु चपटी न हों।

(2) सभी अंगुलियों के पौर लम्बाई में बराबर हों।

(3) आगे का भाग पतला हो।

(4) अंगुलियों में गांठें, खुरदरापन और टेढ़ी न हों।

—ऐसी औरतें जीवन में सभी सुख भोगती हैं। पति पर नियन्त्रण रखती हैं। पति से पहले मृत्यु होती है।

लेकिन अगर—

(1) अंगुलियों में तीन से अधिक पोर हों।

(2) मांसरहित हों।

(3) अधिक लाल हों।

(4) अधिक छोटी हों।

(5) विरल तथा रोमयुक्त हों।

—ऐसी स्त्रियां दुःख भोगती हैं, पति से तिरस्कृत होती हैं। जिन स्त्रियों के हाथों में कालापन हो, रोम हों और छिद्र हों—ऐसी औरतें विधवा का जीवन जीती हैं और पति से तिरस्कृत होकर जीवन बिताती हैं। ऐसी औरतों के सम्पर्क से अनेक दुःखों का सामना करना पड़ता है। ऐसी औरतों को अभागिनी की संज्ञा दी गई है।

❑❑❑



नाखून, वर्गीकरण व चरित्र-व्यक्तित्व

जहां तक स्वास्थ्य संकेत का सवाल है और लोगों को जिन रोगों द्वारा प्रभावित किये जाने की संभावना है, नाखून विशेष रूप से निश्चित जानकारी देने वाले सिद्ध होते हैं। आम तौर पर कोई रोगी यह नहीं जानता, या उस घड़ी भूल जाता है कि उसके मां-बाप को कौन-सी बामारी थी किससे उनकी मृत्यु हुई थी, परन्तु नाखूनों की जांच कुछ ही क्षणों में महत्त्वपूर्ण पैतृक रुझानों की जानकारी दे देता है।

नाखूनों की देखभाल किसी भी तरह उनके प्रकार को बदलती या प्रभावित नहीं करती, चाहे वह काम करने से टूटे हों या देखभाल से, सजा-संवारकर रखे गए हों उनका प्रकार अपरिवर्तित रहता है। उदाहरण के लिए, एक मैकेनिक के नाखून लम्बे हो सकते हैं और आराम का जीवन जीने वाले महानुभव के नाखून बहुत छोटे-चौड़े हो सकते हैं, भले ही वह रोज सुबह उन्हें काट लेता हो।

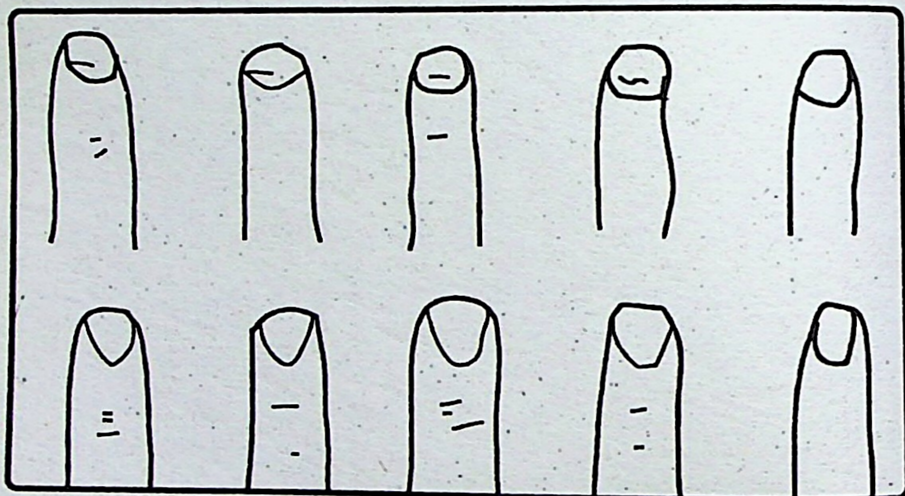
नाखूनों को चार भागों में बांटा गया है—लम्बे, छोटे, चौड़े और सकुंचित।

लम्बे नाखून–

लम्बे नाखून इतनी अधिक शारीरिक शक्ति के सूचक नहीं होते हैं, जितने

कि छोटे-चौड़े प्रकार के नाखून होते हैं। अधिक लम्बे नाखूनों वाले लोग छाती और फेफड़ों की बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं और यह सम्भावना और भी बढ़ जाती है, अगर नाखून मुड़े हुए वक्र भी हों। ऊपर से पीछे को उंगली की ओर भी वक्र और उंगली की चौड़ाई में भी व[redacted] ऐसा रूझान उस दिशा में और भी बढ़ जाता है, जब नाखून लम्बी धारीदार और पंजरयुक्त भी हों। इस तरह का नाखून अगर छोटा हो तो गले के रोगों का और गलकोष प्रदाह, दमा और श्वासनली के रोग आदि का सूचक होता है।

ऊपर से काफी चौड़ा नीलिमा लिए लम्बा नाखून गिरे हुए स्वास्थ्य या स्नायविक थकान की वजह से खून के खराब प्रवाह का सूचक है। ऐसा ज्यादातर चौदह से इक्कीस और बयालीस से सैंतालीस वर्ष की आयु की महिलाओं में देखने को मिलता है।



चित्र 30–विविध प्रकार के नाखून

छोटे नाखून–

कम और छोटे नाखून उन पूरे परिवारों में मिल जाएंगे जिनमें हृदय रेखा की तरफ रूझान रहा हो।

अपनी जड़ में पतले और सपाट नाखून, जिसमें बहुत कम या नहीं के बराबर चन्द्राकार बनता है, दिल के अत्यन्त कमजोर होने का प्रमाण है। सामान्यतया जिसका अर्थ हृदय रोग ही है।

बड़े चन्द्राकार वालों का खून का स्वस्थ दौरा बतलाते हैं।

ऐसे छोटे नाखून जो सपाट और जड़ में मांस के अन्दर फंसे दिखने वाले

हों स्नायविक रोगों की पहचान हैं।

बहुत सपाट और कोरों पर बाहर को मुड़कर आने वाले या उठकर आने वाले नाखून लकवे की खबर देते हैं, अगर वे सफेद, भुरभुरे और सपाट भी हों। ऐसा होने पर तो रोग काफी बढ़ चुका होता है।

छोटे नाखून वालों में हृदय रोगों या धड़ और शरीर के निचले भाग के रोगों से ग्रसित होने का ज्यादा रूझान होता है, जबकि लम्बे नाखून वालों में ऐसा नहीं होता है।

लम्बे नाखून वालों में शरीर के उत्तरार्ध के रोगों से फेफड़ों, छाती, सिर आदि में आक्रान्त होने की अधिक सम्भावना होती है।

नाखूनों पर प्रकृत रूप से जो दाग-धब्बे होते हैं अधिक कातर, आतुर प्रकृति के सूचक होते हैं। अगर नाखून ऐसे धब्बों से भरे हों तो पूरी स्नायुमण्डल का पुनर्परीक्षण जरूरी समझना चाहिए।

छोटे नाखून पतले भी हों तो कमजोरी और ऊर्जा की कमी के लक्षण होते हैं। बहुत संकरे और लम्बे नाखून अगर पर्याप्त उभरे हुए और वक्रता लिये हों, तो रीढ़ की बीमारी का खतरा है और ज्यादा ताकत होने के प्रति तो उनसे आश्वस्त हुआ ही नहीं जा सकता है।

नाखूनों से लक्षित स्वभाव–

लम्बे नाखूनों वाले व्यक्ति आदत में छोटे नाखूनों वाले लोगों के मुकाबले कम आलोचना करने वाले और अधिक प्रभाव ग्रहणशील होते हैं। वे आदत में ज्यादा शान्त और नम्र होते हैं।

लम्बे नाखून हर क्षेत्र में व्यक्ति की तटस्थता और शक्ति का निर्देशन करते हैं। नियम के अनुसार ऐसे लोग हर बात को शान्ति से मान लेते हैं। ऐसे लोग महान् आदर्शवादी होते हैं, उनमें कलात्मक अभिरुचि का भी भान होता है। ऐसे लोग नियम के अनुसार काव्य चित्रकला और अन्य सभी कलाओं के शौकीन होते हैं। लम्बे नाखून वाले व्यक्ति कल्पनाशील होते हैं जो तथ्यों को ज्यों का त्यों ग्रहण करने से बचते हैं, अगर तथ्य अरुचिकर भी हो तो भी लगे रहते हैं।

□□□



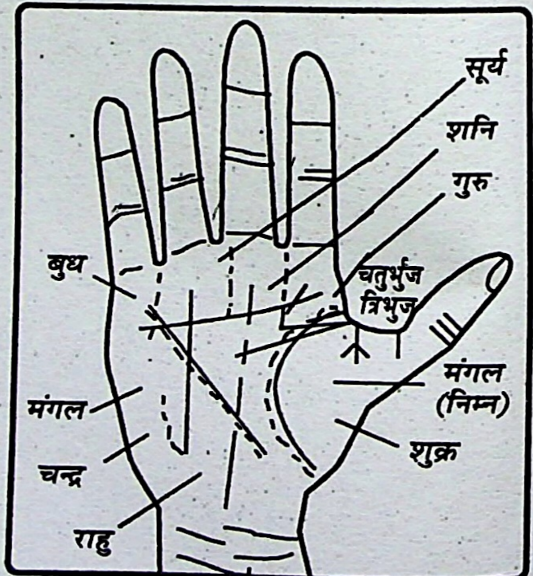
हाथ में पर्वतों की स्थिति

हाथ के आकार के आधार पर हमें जातक के गुण-दोष के विषय में पता चलता है। आइए हम देखें कि हथेली पर विभिन्न ग्रहों के पर्वत कहां हैं और हाथ में उनकी स्थिति से भविष्य सम्बन्धी क्या जानकारी कर सकते हैं।

मुख्य ग्रहक्षेत्र इस प्रकार हैं–

(1) सूर्य पर्वत
(2) चन्द्र पर्वत
(3) मंगल पर्वत (प्रथम)
(4) मंगल पर्वत (द्वितीय)
(5) बुध पर्वत
(6) गुरु पर्वत
(7) शुक्र पर्वत
(8) शनि पर्वत

अगर कोई भी क्षेत्र उभरा हुआ उन्नत ही तो जातक पर क्या प्रभाव डालता है और अगर दबा हुआ हो तो क्या बुरा प्रभाव डालता है, इसकी जानकारी हमें आगे मिलेगी। अभी पर्वत की स्थितियों की जानकारी लेते हैं।

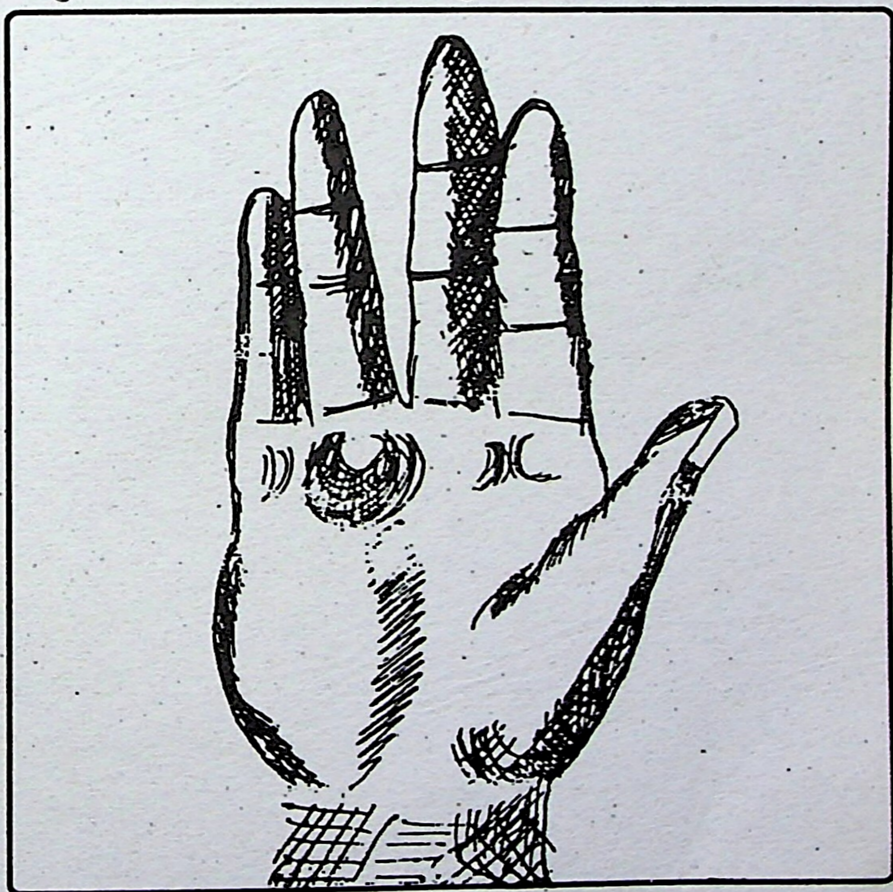


चित्र 31–हथेली में पर्वतों की स्थिति

सूर्य पर्वत–

अनामिका के मूल स्थान में सूर्य पर्वत का स्थान होता है। हृदय रेखा के ऊपर अनामिका के मूल तक शनि और बुध पर्वतों के बीच सूर्य पर्वत की स्थिति है।

अगर सूर्य पर्वत उभरा हुआ है तो जातक प्रेम, संगीत, साहित्य, शिल्पकला में निपुण, आत्मविश्वासी, भाग्यवान, दयालु, धनवान, भावुक, उदार, अक्लमन्द, धैर्यवान, वक्ता और सम्मानित होता है। सूर्य आत्मा का अधिष्ठाता है और ग्रहों के बीच राजा है। सूर्य पर्वत अच्छा होने पर आदमी राजकीय कार्यों में निपुणता और कामयाबी हासिल करता है। अगर हाथ में और शुभ चिह्न है तो ऐसा आदमी राजसुख या पदप्रतिष्ठा हासिल करके सुखी जीवन बिताता है।



चित्र 32–सूर्य पर्वत क्षेत्र

अगर सूर्य पर्वत अधिक उभरा हुआ है तो घमण्डी, अविवेकी, वाचाल, चंचल, कृपण होता है और पैतृक सम्पत्ति का नाश करता है। बाप-दादा की कमाई को हर वक्त अपने मौज-मेले में खत्म करता है।

अगर सूर्य पर्वत नीचा हो तो भाग्यहीन होता है। ऐसा मनुष्य कपटी, अविवेकी, साहित्य और कला में रुचिविहीन, मूर्ख और निष्ठुर होता है।

अगर सूर्य पर्वत बुध पर्वत के साथ इस तरह मिला हुआ हो या दोनों पर्वत इस तरह मिलें हों कि दोनों एक ही दिखें तो ईमानदार, व्यवसायी, विद्वान्, पशुधन से युक्त, व्यवहारकुशल होता है। नारी के हाथों में ऐसी स्थिति उन्हें सुन्दर सुखी, पतिसेविका, हँसमुख, सुशील बनाती है।

अगर सूर्य पर्वत शनि पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो धन-धान्य से युक्त भोग-विलास में व्यस्त रहता है। ऐसा व्यक्ति मेहनती, धार्मिक, साहसी, परिश्रमी भी होता है। इसके कई नौकर होते हैं। इसके बड़े-बड़े अधिकारियों, मन्त्रियों तक सम्बन्ध होते हैं। अगर औरत के हाथ में सूर्य पर्वत शनि की तरफ झुका हुआ हो तो ऐसी नारी क्रोधिनी, कार्य में असफल, चतुर व पति-अनुरक्ता होती है।

अगर हाथ में सूर्य पर्वत के साथ-साथ चन्द्र पर्वत भी उभरा हुआ हो, शेष पर्वत दबे हुए हों तो शिल्प कला और साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है और अपने क्षेत्र में लोकप्रियता हासिल करता है। ऐसा आदमी न्यायप्रिय, विचारवान और निष्कपटी होता है।

अगर सूर्य पर्वत के साथ-साथ बुद्ध पर्वत भी उभरा हुआ हो तो ऐसा आदमी अच्छा वक्ता, समझदार शास्त्रज्ञ, लेखक होता है। ये आदमी बड़े होकर सम्पादक, अध्यापक, वकील, इंजीनियर, व्यापारी बनते हैं।

अगर सूर्य और मंगल दोनों पर्वत उभरे हुए हों तो आदमी सेना-पुलिस में उन्नति करता है। रासायनिक शल्य, दन्त चिकित्सक भी ऐसे आदमी बन सकते हैं। ये आदमी उद्यमी व परिश्रमी होते हैं, और कभी निठल्ले नहीं बैठते। ऐसे पुरुष ज्यादातर नीरोगी रहते हैं। ज्यादातर इन्हें खाज-खुजली, फोड़ा, फुंसी, नकसीर, चोट आदि का डर रहता है।

अगर सूर्य और बृहस्पति के पर्वत ऊंचे हों तो आदमी परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति वाला, उदार, विद्वान्, मेधावी होता है। ये लोग पढ़ने में ज्यादा दिलचस्पी लेते हैं और कामयाब लेखक व साहित्यकार होते हैं। ये लोग पायः उच्च सरकारी पदों पर देखे गये हैं।

अगर औरत के हाथ में दोनों पर्वत उच्च हों तो ऊपर लिखे गुणों के साथ-साथ

वह 40 साल की उम्र के बाद धार्मिक कामों में ईश्वर आराधना तीर्थाटन में अपना चित्त लगाती है।

अगर सूर्य और शनि पर्वत समान रूप से उभरे हुए हों तो मनुष्य अन्यायी, क्रूर, आतंक फैलाने वाला होता है। किसी को कलेश पहुंचाना या किसी का कत्ल करना या करवाना इसके लिए खेल होता है। अगर औरत के हाथ में ऐसे लक्षण हों तो वह परपुरुषगामी, कुल्टा, वासनायुक्त होती है। ऐसी औरतें वेश्या जैसी हो सकती हैं।

अगर सूर्य पर्वत और शुक्र पर्वत समान रूप से उभरे हुए हों, तो पराक्रमी शक्तिशाली, धन-धान्य से युक्त परन्तु नारी के वशीभूत रहते हैं। यह आदमी संगीत कला साहित्य में रुचि रखते हैं। इनको कोई-न-कोई तलब लग जाती है; जैसे सुरा, सुन्दरी आदि। इनके दुश्मन अपने कुटुम्बी हो जाते हैं।

अगर सूर्य पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो ऊंचे पद पर आसीन होता है। विज्ञान या औषधि सम्बन्धी विद्या या व्यवसाय में कामयाबी हासिल करता है।

सूर्य पर्वत पर तारे का निशान हो तो यश और प्रसिद्धि प्राप्त करता है, लेकिन अगर सूर्य पर्वत पर क्रॉस का निशान हो तो धन को जुए या सट्टे में खत्म कर देता है।

अगर सूर्य पर्वत पर चतुर्भुज का निशान हो तो वो शुभ होता है।

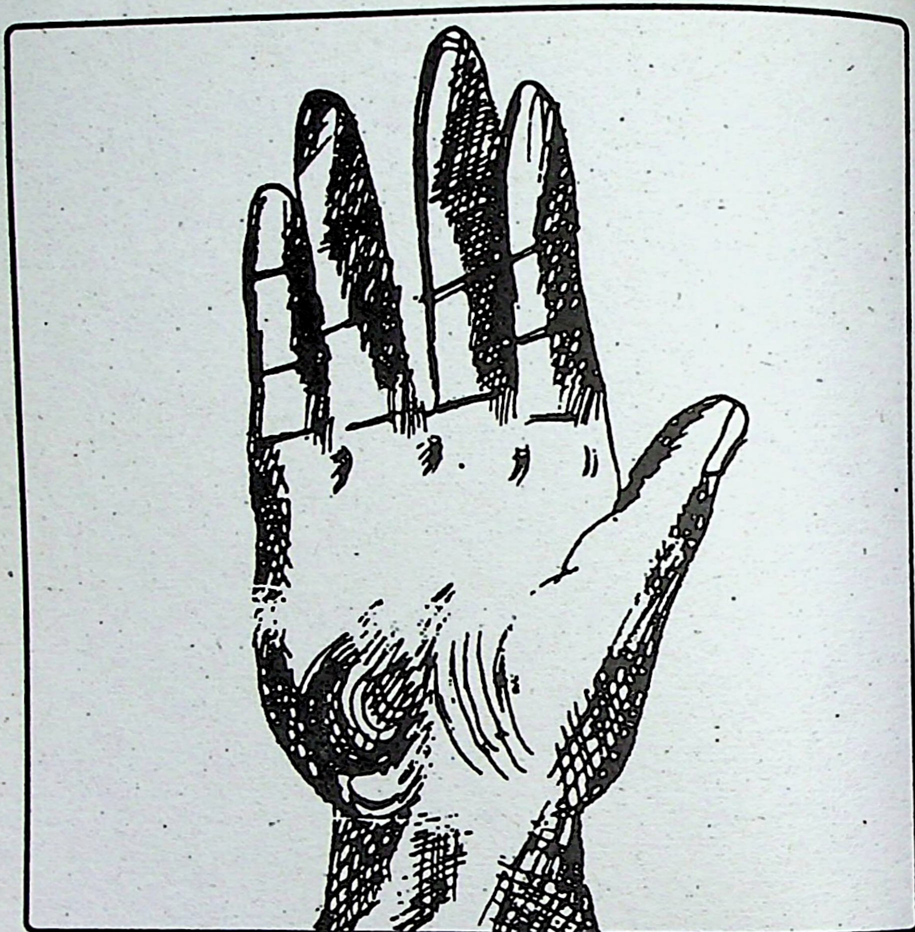
अगर सूर्य पर्वत दबा हुआ हो तो मनुष्य को पीलिया, जिगर, दिल-मस्तिष्क, मूत्राशय रोगों का भय रहता है।

चन्द्र पर्वत–

हथेली में शुक्र पर्वत के सामने मंगल पर्वत के नीचे मणिबन्ध तक, चन्द्र का पर्वत अथवा चन्द्र-क्षेत्र कहते हैं। यदि चन्द्र पर्वत विकसित हो तो सदाचारी, मधुरभाषी, दयालु, भ्रमणशील, काल्पनिक, मातृ सुखयुक्त, थोड़ी उम्र में शादी करने वाला, साहित्य, धन-धान्य से युक्त होता है। अच्छे नौकरों के हाथों में भी चन्द्र-क्षेत्र उभरा हुआ होता है।

अगर चन्द्र क्षेत्र नीचा हो तो आदमी अस्थिर चित्त वाला, रूखे स्वभाव वाला, कल्पना शक्ति से रहित होता है। ऐसे आदमियों की स्मरण शक्ति प्रायः कमजोर होती है।

अगर चन्द्र पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हुआ है तो उसमें मंगल के गुण भी पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति कभी अधिक गुस्सा करेगा और कभी शान्त रहेगा।



चित्र 33—चन्द्र पर्वत क्षेत्र

अगर चन्द्र पर्वत केतु क्षेत्र की ओर झुका हो तो आदमी दिव्य स्वप्न देखने वाला, हवाई किले बनाने वाला होता है। अगर हाथ में चन्द्र और शुक्र पर्वत विकसित हों और शेष पर्वत दबे हुए हों तो व्यक्ति धनवान होता है और हर तरह से सुख भोगता है। इस तरह अगर चन्द्र और बुद्ध क्षेत्र विकसित हों तो व्यक्ति अक्लमन्द, भाग्यशाली और हँसोड़ प्रकृति का होता है। अगर चन्द्र और बृहस्पति क्षेत्र समान रूप से उभरे हुए हों तो जातक वैभवशाली, उन्नतिशील आजीवन सुखी होता है।

अगर चन्द्र क्षेत्र पर स्टार (☆) का निशान हो तो व्यक्ति को पानी में डूबकर मरने का भय होता है। ऐसे आदमियों को जलोदर रोग, कफ विकार, मूत्र विकार आदि रोगों का भय रहता है।

अगर चन्द्र पर्वत पर त्रिकोण (◺) का निशान हो तो आदमी गुप्त विद्याओं में पारंगत होता है।

अगर चन्द्र क्षेत्र पर वर्ग (□) का निशान हो तो अशुभ चन्द्र के सभी दोष खत्म हो जाते हैं।

अगर चन्द्र पर्वत पर एक खड़ी रेखा हो। तो व्यक्ति को भविष्य के बारे में अन्तर्ज्ञान हो जाता है। होने वाली दुर्घटना का पूर्वाभास हो जाता है। अगर किसी नारी के हाथ में चन्द्र क्षेत्र पर जाली (▤) का निशान हो तो वह व्याभिचारिणी हो सकती है, उसे मृगी रोग हो सकता है।

अगर कोई रेखा जीवन रेखा से निकलकर चन्द्र पर्वत पर आ जाए तो व्यक्ति विदेश जाकर खूब धन कमाता है।

अगर मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर चन्द्र पर्वत को पार करके मंगल पर्वत पर जाए तो समुद्र यात्रा का योग बनता है।

अगर चन्द्र पर्वत अशुभ हो (यानी अधिक उभरा हुआ हो) या कमजोर हो तो ऐसे लोग वात, कफ, उदर रोग विकार, वीर्य विकार, दमा, लकवा रोग का भय रहता है।

मंगल पर्वत–

हथेली में हृदय रेखा के नीचे और चन्द्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है।

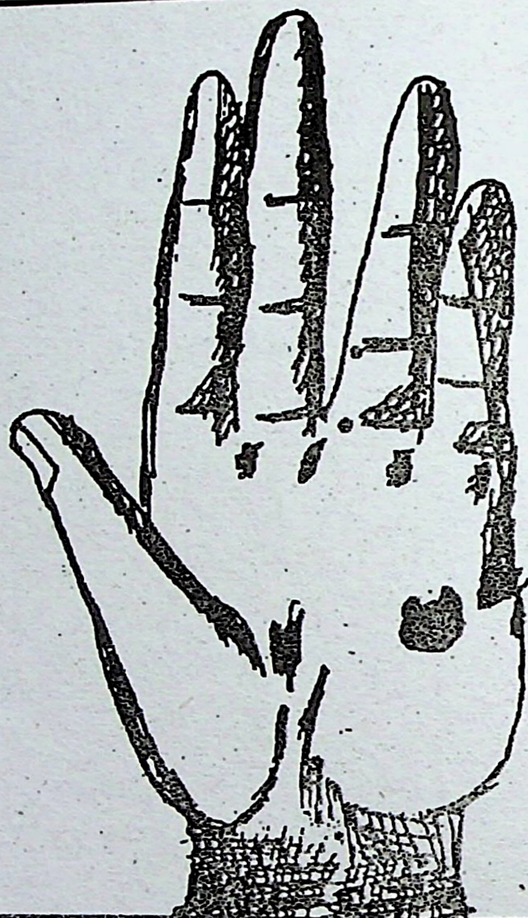
अगर मंगल पर्वत विकसित हो तो व्यक्ति साहसी, प्रभुत्वकांक्षी, बलशाली होता है। आदमी मेहनती, लड़ाई-झगड़े में उत्साही, उपद्रवी, चंचल, खेलकूद, घुड़सवारी में दिलचस्पी लेने वाले होते हैं। सैनिकों के हाथों में प्रायः मंगल पर्वत विकसित देखा जा सकता है।

अगर मंगल पर्वत अधिक उठा हुआ हो तो जातक अकारण गुस्सा करने वाला घमण्डी, दुर्व्यसनी, विषयानुरागी, निर्दयी दुराचारी होता है। छोटी-सी बात पर झगड़ा मोल ले लेता है। यह आदमी एक से ज्यादा शादी करता है।

अगर मंगल पर्वत दबा हुआ हो तो आदमी डरपोक, नास्तिक, पैतृक धन नष्ट करने वाला, बेकार में झगड़ने वाला होता है। ऐसा आदमी अपनी बीवी के सुन्दर होने पर भी दूसरों की औरतों पर नज़र रखता है।

अगर मंगल पर तारे का निशान है तो ऐसा व्यक्ति या तो तलवार या गोली से हत्या करता है अथवा आत्महत्या करता है।

अगर मंगल पर्वत पर क्रॉस (×) का निशान हो तो किसी के द्वारा हानि होती है।



चित्र 34–मंगल पर्वत क्षेत्र

अगर मंगल पर्वत पर काला बिन्दु (●) हो तो मुकदमेबाज़ी में जमीन-जायदाद, सम्पत्ति आदि का नुकसान होता है।

अगर मंगल पर्वत पर जाली (▦) क़ा निशान हो तो मनुष्य की अचानक मौत हो जाती है। ऐसा मनुष्य आत्महत्या भी कर सकता है।

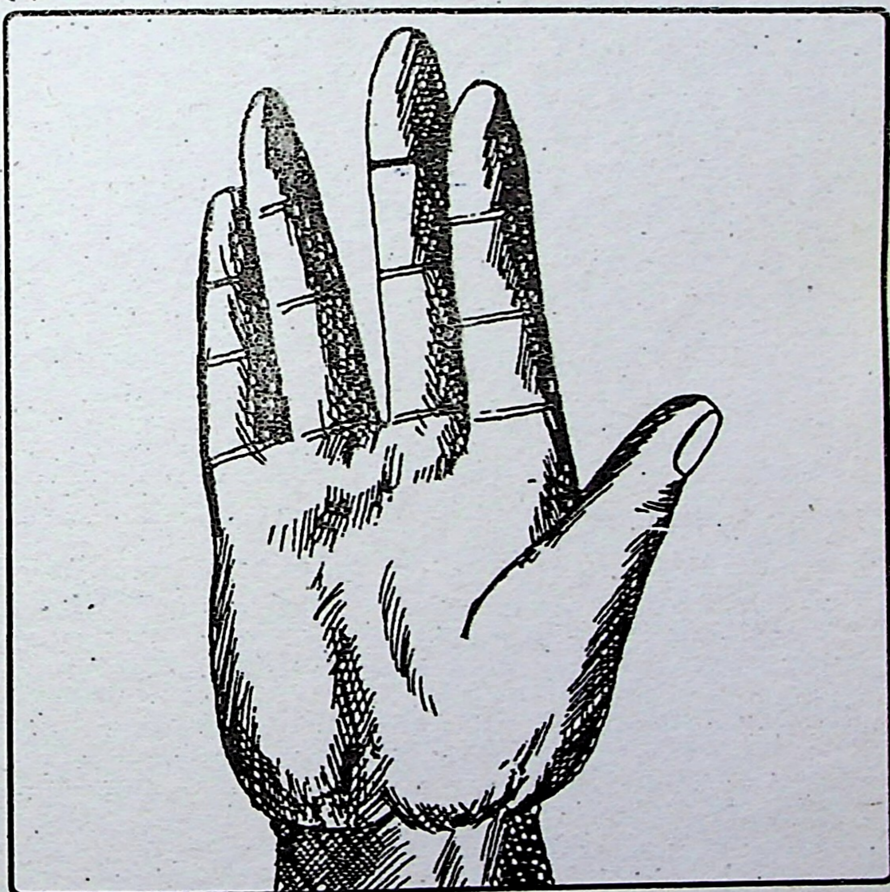
अगर मंगल पर्वत पर त्रिकोण (△) का निशान हो तो मनुष्य उत्तम सेना अधिकारी, युद्ध में कुशल, पक्के निश्चय वाला होता है। यदि बुध पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो मनुष्य अच्छा गणितज्ञ चालाक व तेज होता है।

बुध पर्वत–

यह पर्वत कनिष्ठिका उंगली के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर स्थित होता है। अगर बुध पर्वत भरा हुआ है तो जातक अक्लमन्द, कुशल वक्ता, कानू

का ज्ञाता, वैज्ञानिक, कवि, धनी, प्रतिभावान होता है। ये मनुष्य राजकीय उच्च सेवाओं में देखे जा सकते हैं। अच्छे बुध पर्वत वाले आदमी अविश्वासी, ठग, अभिमानी, द्वेषी, विश्वासघाती होते हैं। ऊंची विद्या पाने में मुसीबत आती है।

अगर बुध पर्वत नीचा हो तो जातक मन्दबुद्धि, परिजनों का विरोधी एवं धनहीन होता है। ऐसे आदमी पढ़ाई में भी ज्यादा तरक्की नहीं कर पाते। अगर बुध पर्वत सूर्य पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो मनुष्य व्यापार कुशल, सम्पादक, वकील, नेता, ज्योतिषी आदि हो सकता है। यह आदमी किताबों के कीड़े होते हैं। अगर स्त्री के हाथ में ऐसी स्थिति हो, तो वह विधवापन का दुःख भोगती है।



चित्र 35—बुध पर्वत क्षेत्र

यदि किसी नारी के हाथ में बुध पर्वत ऊंचा हो तो वह राज्य में ऊंचे पद

पर आसीन होता है उसका यश चारों ओर फैलता है, लेकिन उसका चरित्र अच्छा नहीं होता। यह विलासिनी, नीच मर्द या नौकरों से प्रेम करने वाली होती है।

अगर बुध पर्वत पर तारे का निशान हो तो मनुष्य विश्वासी और वीर होता है। इनको अपनी बेइज्जती से सावधान रहना चाहिए। अगर बुध पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो ऐसा आदमी मानप्रतिष्ठा प्राप्त करता है। राजदूत एवं व्यापारी के रूप में पर्याप्त धन-सम्पत्ति अर्जित करता है।

अगर बुध पर्वत पर दो-चार खड़ी रेखाएं हो तो वह डॉक्टर या कैमिस्ट होता है। नारी के हाथ में ऐसी रेखाएं हों तो वह नर्स या दाई होती है। अगर बुध पर्वत ऊंचा हो और उस पर क्रॉस का निशान हो तो जातक जुआरी होता है और अपनी पूरी सम्पत्ति दांव पर लगाकर नष्ट कर देता है।

अगर बुध पर्वत अशुभ और निर्बल हो तो मनुष्य मिथ्याभाषी होता है। ऐसे लोगों को उदर रोग, मन्दाग्नि, संग्रहिणी, बवासीर, प्रेमबाधा का डर रहता है।

गुरु पर्वत–

तर्जनी उंगली के मूल में मस्तिष्क रेखा के ऊपर के स्थान को गुरु (बृहस्पति) का पर्वत कहते हैं। अगर यह पर्वत ऊंचा हो तो मनुष्य तेजस्वी, भाग्यवान, देशभक्त, उदार, मंत्री, न्यायाधीश, सम्पादक, धर्माचार्य, अध्यापक, साहित्य या भविष्यवक्ता होता है। ऐसा आदमी बेटे-पोते से युक्त, सत्यवक्ता, स्वतन्त्र वक्ता, विदेश भ्रमण करने वाला होता है।

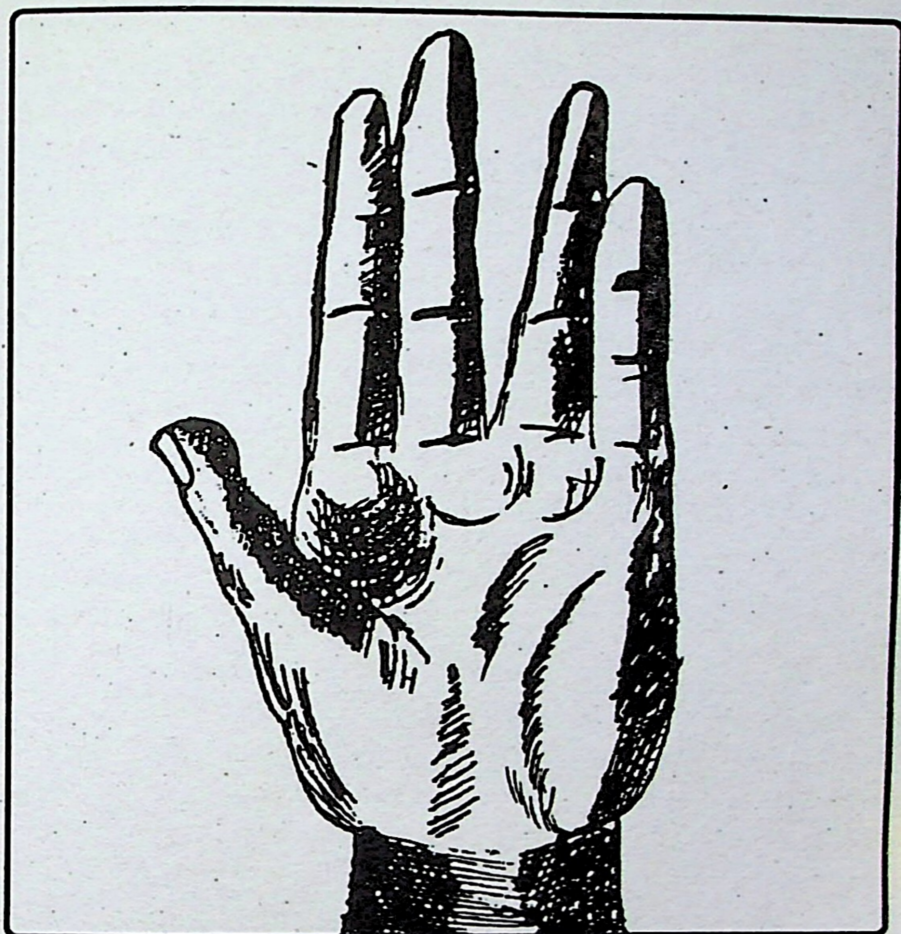
अगर बृहस्पति का पर्वत अत्यन्त उभरा हुआ हो तो मनुष्य धूर्त्त, स्वार्थी, अविश्वासी, मिथ्याभिमानी, अपव्ययी होता है। ऐसा आदमी कोई भी काम जिम्मेदारी से निभाता है। अगर नारी के हाथ में पर्वत की ऐसी स्थिति हो तो वह परपुरुषगामिनी होती है। बेटे की अभिलाषा में निकृष्ट काम भी कर बैठती है।

अगर बृहस्पति का पर्वत नीचा हो तो मनुष्य पराधीन चिड़चिड़े स्वभाव वाला होता है।

अगर गुरु और बुध के पर्वत समान रूप से उठे हुए हों तो ऐसा आदमी कवि, वैज्ञानिक, लेखक, विद्वान्, ज्योतिष, संगीतज्ञ होता है।

अगर गुरु पर्वत पर एक सीधी रेखा खड़ी हो तो जातक को आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है।

अगर बृहस्पति के स्थान पर तारे (☆) का निशान हो तो मनुष्य, धनी, उदार, सौभाग्यशाली, क्षमाशील, शादी के बाद ज्यादा तरक्की करने वाला होता है।



चित्र 36—गुरु पर्वत क्षेत्र

अगर गुरु पर्वत पर त्रिशूल (ψ) का निशान हो तो जातक की शादी धनी और कुलीन परिवार में होती है।

अगर गुरु पर्वत पर वर्ग (□) का निशान हो तो आदमी असाधारण उन्नति करता है—और राजकीय सेवाओं में उच्च पद हासिल करता है।

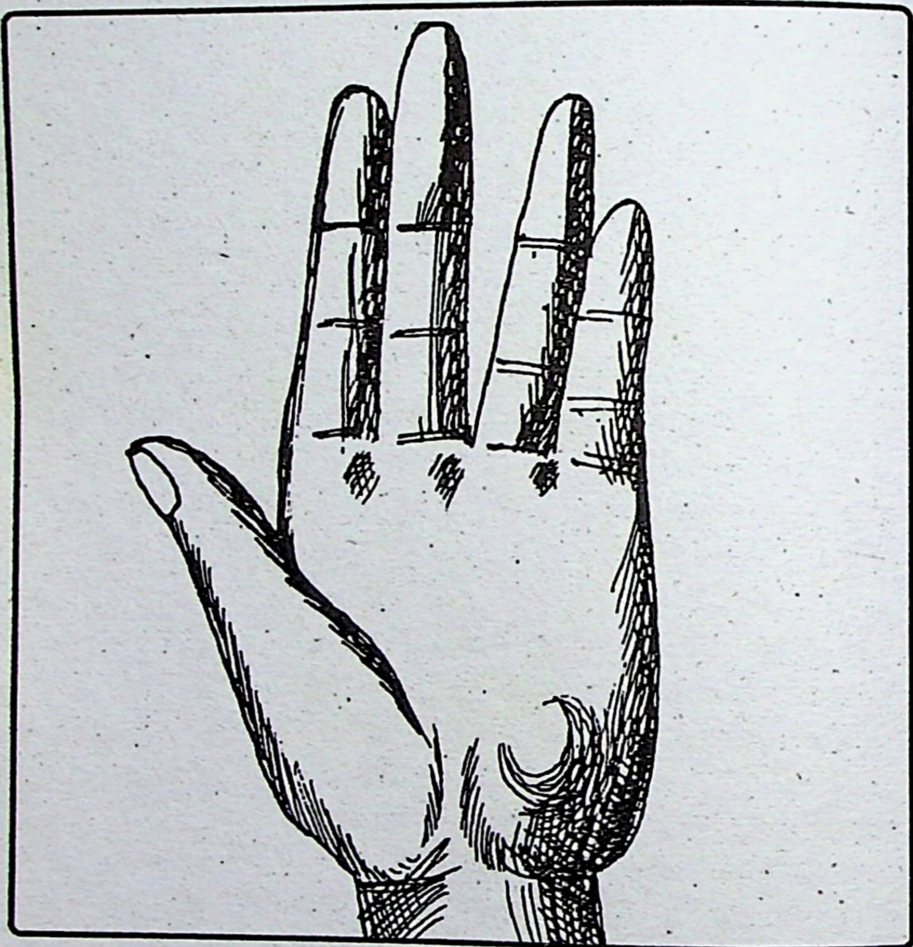
शुक्र पर्वत—

हथेली में अंगुष्ठ के मूल में मणिबन्ध तक उभरा हुआ क्षेत्र शुक्र पर्वत कहलाता हैं।

शुक्र वीर्य का स्वामी माना गया है। शुक्र का भावार्थ वीर्य होता है। निर्बलता आदि में मनुष्य में शारीरिक बल का अनुमान और नारी सुख के बारे में पता

चलता है। पर्वत, अच्छा उठा हुआ हो तो जातक सदाचारी, उदार, ऊंचे अभिलाषी, संगीतज्ञ, नृत्यप्रेमी, सौन्दर्यप्रेमी, कलाप्रेमी होता है।

यदि शुक्र पर्वत अत्यधिक उभरा हुआ हो तो जातक व्याभिचारी, परस्त्री-गामी, निर्लज्ज, घमण्डी होता है।



चित्र 37—शुक्र पर्वत क्षेत्र

अगर शुक्र पर्वत दबा हुआ हो तो मनुष्य वीर्य सम्बन्धी रोगों से पीड़ित रहता है। अगर औरत के हाथ में शुक्र पर्वत की ऐसी स्थिति हो तो उसे योनि सम्बन्धी रोग होते हैं।

अगर शुक्र और गुरु क्षेत्र उभरे हुए हों तो मनुष्य की माता का स्वर्गवास जातक के बचपन में हो जाता है। प्रेम के मामले में भी मनुष्य को निराशा का सामना करना पड़ता है।

अगर शुक्र पर्वत पर क्रॉस (×) का निशान किसी औरत के हाथ में हो तो वह कलहप्रिय, परनिंदक व राजद्रोहिणी होती है।

अगर शुक्र पर्वत पर वर्ग का निशान हो तो ऐसा आदमी महात्मा या ऋषि होता है।

अगर किसी औरत के हाथ में शुक्र पर्वत पर स्पष्ट वृत्त (O) का निशान हो तो वह परपुरुषगामिनी होती है। औरतों के हाथ में शुक्र पर्वत का ऊंचा होना ही काफी है।

अगर किसी आदमी के हाथ में शुक्र पर्वत पर जाली (▦) का निशान हो तो व्यक्ति धोखेबाज और बदमाश होता है। उसे जेल या पागलखाने में भी जाना पड़ता है।

अगर शुक्र पर्वत बड़ी-बड़ी टेढ़ी रेखाओं से बहुत लम्बी-चौड़ी जाली का निशान बन जाए और सूर्य पर्वत भी उठा हुआ हो तो जातक अच्छा गायक और अभिनेता हो सकता है।

यदि शुक्र पर्वत पर स्थित तारे से कोई रेखा निकलकर भाग्य रेखा से मिले तो जातक को अपने किसी मित्र-सम्बन्धी की धन-सम्पत्ति पाने का योग बनता है।

अगर शुक्र पर्वत अशुभ हो एवं दबा हुआ हो तो मनुष्य को गुप्त रोग, वीर्य विकार, मूत्र रोग, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग हो सकते हैं।

शनि पर्वत–

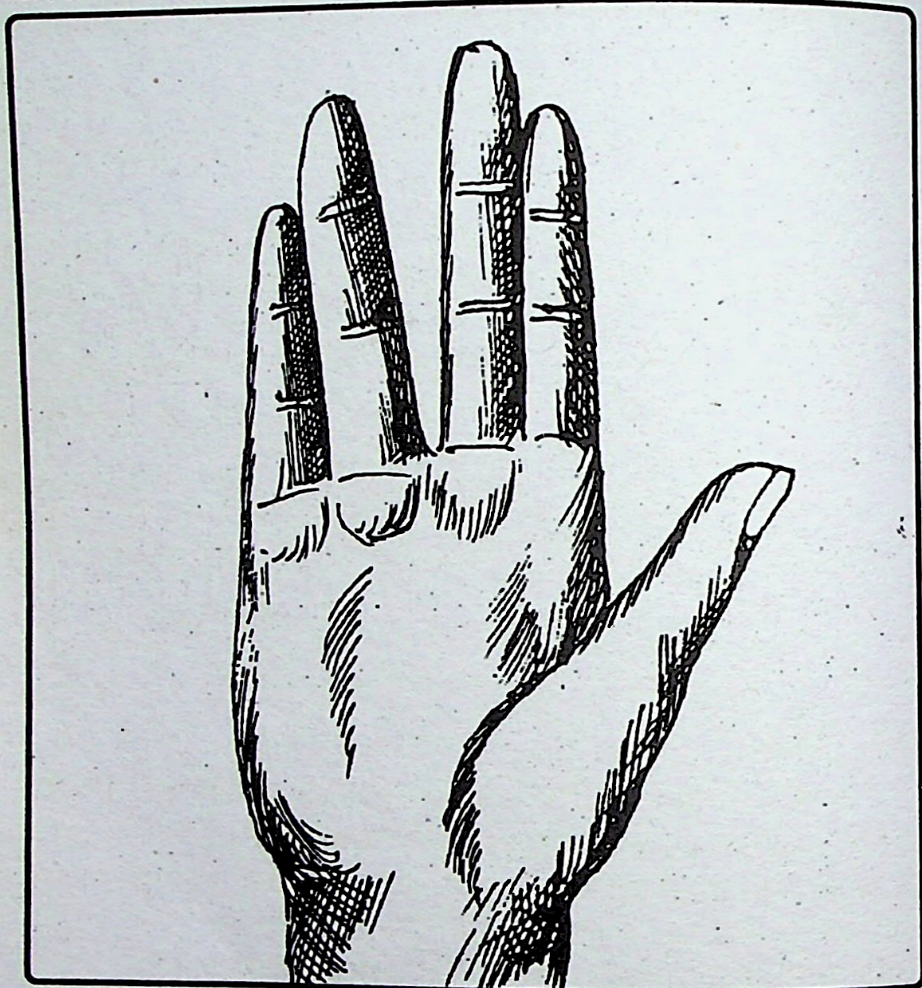
हथेली में मध्यम उंगली के नीचे हृदय रेखा से ऊपर बृहस्पति एवं सूर्य पर्वतों के बीच में शनि पर्वत स्थित है। अगर शनि क्षेत्र समान रूप से उभरा हुआ हो तो मनुष्य शक्ति, चिन्ता, एकान्तप्रिय, चिकित्सक, संयमी, रासायनिक गुप्त विधाओं का ज्ञाता होता है। ऐसे आदमी विचार शक्ति, योग्यभाषी और धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। यह बीवी से इतना प्यार नहीं करते जितना करना चाहिए।

अगर शनि का पर्वत अधिक विकसित हो तो व्यक्ति दुराचारी, व्याभिचारी, क्रूर कार्य करने वाला तमोगुणी होता है, ऐसा आदमी वात रोगी, उदर शूल, मूत्राशय का रोगी होता है। शंकालु, निर्दयी होता है। अगर कहीं सेवारत हो तो एक बार सस्पैंड जरूर होगा।

अगर शनि पर्वत ज्यादा नीचे दबा हुआ हो तो व्यक्ति आपत्तियों से घिरा रहता है, ऐसा आदमी झूठ बोलने वाला, जुआरी, व्यसनी, अदूरदर्शी, घमण्डी, कलंकी, राजदण्ड पाने वाला होता है।

अगर शनि पर्वत गुरु की ओर झुका हुआ हो तो जीवन का पहला आधा

भाग कष्टमय बीतता है। दूसरा आधा भाग सुखमय व्यतीत होता है। इसी बीच आदमी की आध्यात्मिक उन्नति होती है।



चित्र 38–शनि पर्वत क्षेत्र

अगर शनि पर्वत सूर्य पर्वत की ओर झुका दिखाई दे, तो आदमी उदास प्रकृति का होता है ऐसा होने पर भी आदमी मेहनती और यशस्वी होता है। इनमें अगर शनि पर्वत अधिक ऊंचा हो तो मनुष्य चरित्रहीन, ठग, धूर्त्त और निकम्मा होता है। यदि बृहस्पति और शनि के स्थान समान रूप से उभरे हुए हों तो मनुष्य विद्वान्, धार्मिक विचारों वाला, गुप्त विधाओं का जानकार, धनी होता है। अगर औरत के हाथों में ऐसा हो तो वह भगवान का भजन-पूजन करने वाली होती है।

अगर शनि और मंगल के क्षेत्र समान रूप से उभरे हुए हों तो मनुष्य अत्यन्त क्रोधी, अत्याचारी, ठग, डाकू, कत्ल करने वाला, मिथ्याभिगामी और नीचों की संगति करने वाला होता है। बिना वजह झगड़ा करना इसकी आदत होती है। यह आदमी वेश्यागामी होते हैं।

अगर शनि के स्थान पर तारे का निशान हो तो ऐसे आदमी को सांप के काटने, बिजली गिरने, हिंसक पशु के काटने, बार-बार दुर्घटनाग्रस्त होने का भय होता है।

अगर शनि पर्वत पर त्रिकोण का निशान हो तो मनुष्य ज्योतिष, गुप्त विद्या, सामुद्रिक, तन्त्र-मन्त्र का ज्ञानी होता है। शनि पर्वत पर एक सीधी खड़ी रेखा मनुष्य को भाग्यवान बनाती है जिससे दिन-प्रतिदिन उसकी उन्नति होती है।

युग्म पर्वत और उनकी स्थितियां

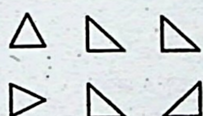
शायद ही कोई आदमी ऐसा होगा जिसके हाथ पर पर्वत न हों। यह बात अलग है कि वह विकसित अवस्था में है या अविकसित अवस्था में है। कई हाथों में एक से ज्यादा पर्वत पूर्ण विकसित अवस्था में पाए जाते हैं, ऐसी परिस्थिति में युग्म पर्वतों से सम्बन्धित एक साथ विकसित दो पर्वतों का फल यहां प्रस्तुत है—

गुरु और शनि—उत्तम भाग्यवर्धक।
गुरु और नेपच्यून—श्रेष्ठ विचार, उत्तम मन।
गुरु और हर्षल—विज्ञान में रुचि, ख्याति एवं परोपकार की भावना।
गुरु और प्लूटो—उर्वर मस्तिष्क, श्रेष्ठ वक्ता।
गुरु और राहु—आत्मविश्वास में कमी, दुष्ट विचार।
गुरु और केतु—बाधाएं, चिन्ता और परेशानी।
गुरु और चन्द्र—गम्भीर व्यक्तित्व और काम में सुघड़ता।
गुरु और शुक्र—भव्य व्यक्तित्व, सम्मोहन की विशेष योग्यता।
शनि और सूर्य—वैज्ञानिक भावना, तर्क-शक्ति, मननशीलता।
शनि और बुध—विवेकपूर्ण निर्णय, उत्तम विचार।
शनि और शुक्र—स्वार्थी, सौन्दर्य भावना में कमी, प्यार में दीवाना।
शनि और राहु—उत्तम गुणों से युक्त, आकस्मिक द्रव्य लाभ।
शनि और केतु—यौवनावस्था में कठिनाइयां, आजीविका की चिन्ता।
शनि और नेपच्यून—यात्रा, विदेश गमन।
शनि और हर्षल—कलाओं में निपुणता, एकांतप्रियता।

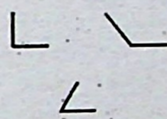
शनि और प्लूटो—विवेक तेजस्विता और चतुराई।
शनि और चन्द्र—रहस्यमय व्यक्तित्व।
शनि और मंगल—लड़ाकू प्रवृत्ति और आवेश में सबकुछ कर गुजरना।
सूर्य और बुध—वैज्ञानिक प्रतिभा का विकास, सफल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी।
सूर्य और शुक्र—मिलनसार, सफल दोस्त एवं योजनाबद्ध रूप से काम करने वाला।
सूर्य और राहु—संकट, चिन्ता, दुःख।
सूर्य और केतु—विदेश गमन।
सूर्य और हर्षल—ज्ञान, विवेक, और आत्मख्याति।
सूर्य और नेपच्यून—सोच-समझकर काम करने वाला।
सूर्य और प्लूटो—धीरता, गम्भीरता।
सूर्य और चन्द्र—कल्पना, कृत्रिमता और आडम्बर।
सूर्य और मंगल—बलिदान की प्रबल भावना।
बुध और शुक्र—विपरीत योनि के प्रति गहरी रुचि, संगीत, कलाप्रेमी।
बुध और राहु—चिड़चिड़ा स्वभाव।
बुध और केतु—यात्रा, प्रेम, मानवीय गुणों का विकास।
बुध और हर्षल—प्रेम कल्पना।
बुध और नेपच्यून—कल्याण कामना, परोपकार।
बुध और प्लूटो—सफल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारी।
बुध और चन्द्र—दूरदर्शिता, सूझ-बूझ और वैज्ञानिक प्रतिभा।
बुध और मंगल—तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता।
शुक्र और चन्द्र—प्यार की भावना की तीव्रता, सौन्दर्य, वासना, कलाप्रेमी।
शुक्र और राहु—निम्न स्तर की नारियों से सम्पर्क।
शुक्र और केतु—सहज द्रवणशीलता।
शुक्र और हर्षल—प्यार, तीव्रता।
शुक्र और नेपच्यून—उच्चकोटि की कला, प्यार, गहरी संवेदनशीलता।
शुक्र और प्लूटो—जीवन क्षमताओं को समझने वाला।
शुक्र और मंगल—संगीत ज्ञान में पूर्णता।
चन्द्र और मंगल—समुद्री यात्राएं।
चन्द्र और राहु—दुष्ट दोस्तों से सम्पर्क।
चन्द्र और केतु—यौवनावस्था में प्यार का टूटना, भग्न-हृदय।
चन्द्र और हर्षल—सहज भावना।

चन्द्र और नेपच्यून—ज्ञान भावना, कल्पना।
चन्द्र और प्लूटो—प्रबल कार्य, वेग।
राहु और केतु—प्रबल दुःख, आजीविका के लिए कठोर श्रम।
राहु और हर्षल—चिन्ता, दुःख।
राहु और नेपच्यून—विदेश में शादी।
राहु और प्लूटो—संवेदन भावना, अपराध वृत्ति।
केतु और हर्षल—दुःख और कठोर शासन भावना।
केतु और नेपच्यून—विदेश गमन, उच्चपद हासिल।
नेपच्यून और प्लूटो—तीव्र कामांधता, विदेश में प्रणय सम्बन्ध।

पर्वतों पर अंकित निशान—पर्वतों का अध्ययन करते समय उन पर अंकित निशानों का भी सावधानीपूर्वक अध्ययन करना चाहिए क्योंकि इन निशानों से भी फलादेश में काफी अन्तर आ जाता है। इन निशानों में मुख्यतः निम्न निशान होते हैं, जो पर्वतों पर एक या एक से ज्यादा पाए जाते हैं।

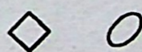




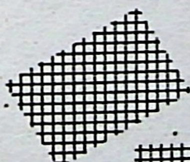


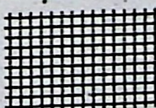


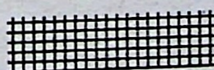


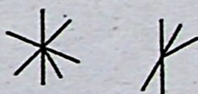


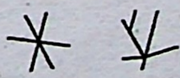
















चित्र 39—पर्वतों पर पाए जाने वाले निशान

(1) रेखा,
(2) ज्यादा रेखाएं,
(3) आपस में कटती रेखाएं,
(4) बिन्दु,
(5) क्रॉस,
(6) नक्षत्र,
(7) वर्ग,
(8) वृत्त,
(9) त्रिकोण,
(10) जाल।

अब प्रत्येक पर्वत पर इन निशानों का शुभ-अशुभ वर्णन किया जाता है–

गुरु पर प्रभाव–

एक रेखा–कार्यों में सफलता।
ज्यादा रेखाएं–नवीन लेखन भाग्योदय।
आपस में कटती हुई रेखाएं–निम्नकोटि के विचार, घटिया लेख।
बिन्दु–सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता।
क्रॉस–घर में मांगलिक काम, सुखी वैवाहिक जीवन।
नक्षत्र–ऊंची महत्त्वाकांक्षाएं और उनकी पूर्ति।
वर्ग–कल्पना और यथार्थ का सुखद सामंजस्य।
त्रिकोण–राजनैतिक और धार्मिक कामों में सफलता।
जाल–अशुभ घटना अन्धविश्वासों की वृद्धि और कलह।

शनि पर प्रभाव–

एक रेखा–सौभाग्य वृद्धि।
कई रेखाएं–जीवन में बाधाएं।
आपस में काटती हुई रेखाएं–दुर्भाग्य, चिन्ता।
बिन्दु–असम्भावित घटित घटनाएं।
क्रॉस–नपुंसकता।
नक्षत्र–दुष्ट भाव, हत्या करने की प्रबल भावना।
वर्ग–अनिष्टों से बचाव।
वृत्त–शुभ कामों में रुचि।
त्रिकोण–रहस्यमय कामों में अभिरुचि।
जाल–भाग्यक्षीणता।

सूर्य पर प्रभाव—

एक रेखा—धन, मान-प्रतिष्ठा।
कई रेखाएं—जीवन में बाधाएं।
आपस में काटती हुई रेखाएं—दुर्भाग्य, चिन्ता।
बिन्दु—असम्भावित घटित घटनाएं।
क्रॉस—नपुंसकता।
नक्षत्र—दुष्ट भाव, हत्या करने की प्रबल भावना।
वर्ग—अनिष्टों से बचाव।
वृत्त—शुभ कामों में रुचि।
त्रिकोण—रहस्यमय कामों में अभिरुचि।
जाल—भाग्यक्षीणता।

बुध पर प्रभाव—

एक रेखा—धन समृद्धि।
कई रेखाएं—व्यापार में असाधारण योग्यता।
आपस में काटती हुई रेखाएं—चिकित्सा क्षेत्र में निपुणता।
बिन्दु—व्यवसाय में हानि, असफलता।
क्रॉस—आकस्मिक, द्रव्य-हानि।
नक्षत्र—विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध।
वर्ग—कार्य तत्परता, भविष्य की बात को समझने वाला।
वृत्त—आकस्मिक, मृत्यु, एकसीडैन्ट।
त्रिकोण—राजनैतिक सफलता।
जाल—मानहानि, दिवालिया।

मंगल पर प्रभाव—

एक रेखा—साहस, दृढ़ता, पराक्रम।
कई रेखाएं—हिंसात्मक प्रवृत्तियां।
आपस में कटती हुई रेखाएं—युद्धप्रियता।
बिन्दु—युद्ध में घाव लगना।
क्रॉस—युद्ध में या लड़ाई-झगड़े में मृत्यु।
नक्षत्र—उच्च सेनापति पद या पुलिस विभाग में उच्च पद।
वर्ग—गुस्से की अतिरेकता।
वृत्त—नीति, निपुणता।

(1) रेखा,
(2) ज्यादा रेखाएं,
(3) आपस में कटती रेखाएं,
(4) बिन्दु,
(5) क्रॉस,
(6) नक्षत्र,
(7) वर्ग,
(8) वृत्त,
(9) त्रिकोण,
(10) जाल।

अब प्रत्येक पर्वत पर इन निशानों का शुभ-अशुभ वर्णन किया जाता है–

गुरु पर प्रभाव–

एक रेखा–कार्यों में सफलता।
ज्यादा रेखाएं–नवीन लेखन भाग्योदय।
आपस में कटती हुई रेखाएं–निम्नकोटि के विचार, घटिया लेख।
बिन्दु–सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता।
क्रॉस–घर में मांगलिक काम, सुखी वैवाहिक जीवन।
नक्षत्र–ऊंची महत्त्वाकांक्षाएं और उनकी पूर्ति।
वर्ग–कल्पना और यथार्थ का सुखद सामंजस्य।
त्रिकोण–राजनैतिक और धार्मिक कामों में सफलता।
जाल–अशुभ घटना अन्धविश्वासों की वृद्धि और कलह।

शनि पर प्रभाव–

एक रेखा–सौभाग्य वृद्धि।
कई रेखाएं–जीवन में बाधाएं।
आपस में काटती हुई रेखाएं–दुर्भाग्य, चिन्ता।
बिन्दु–असम्भावित घटित घटनाएं।
क्रॉस–नपुंसकता।
नक्षत्र–दुष्ट भाव, हत्या करने की प्रबल भावना।
वर्ग–अनिष्टों से बचाव।
वृत्त–शुभ कामों में रुचि।
त्रिकोण–रहस्यमय कामों में अभिरुचि।
जाल–भाग्यक्षीणता।

सूर्य पर प्रभाव–

एक रेखा–धन, मान-प्रतिष्ठा।
कई रेखाएं–जीवन में बाधाएं।
आपस में काटती हुई रेखाएं–दुर्भाग्य, चिन्ता।
बिन्दु–असम्भावित घटित घटनाएं।
क्रॉस–नपुंसकता।
नक्षत्र–दुष्ट भाव, हत्या करने की प्रबल भावना।
वर्ग–अनिष्टों से बचाव।
वृत्त–शुभ कामों में रुचि।
त्रिकोण–रहस्यमय कामों में अभिरुचि।
जाल–भाग्यक्षीणता।

बुध पर प्रभाव–

एक रेखा–धन समृद्धि।
कई रेखाएं–व्यापार में असाधारण योग्यता।
आपस में काटती हुई रेखाएं–चिकित्सा क्षेत्र में निपुणता।
बिन्दु–व्यवसाय में हानि, असफलता।
क्रॉस–आकस्मिक, द्रव्य-हानि।
नक्षत्र–विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध।
वर्ग–कार्य तत्परता, भविष्य की बात को समझने वाला।
वृत्त–आकस्मिक, मृत्यु, एकसीडैन्ट।
त्रिकोण–राजनैतिक सफलता।
जाल–मानहानि, दिवालिया।

मंगल पर प्रभाव–

एक रेखा–साहस, दृढ़ता, पराक्रम।
कई रेखाएं–हिंसात्मक प्रवृत्तियां।
आपस में कटती हुई रेखाएं–युद्धप्रियता।
बिन्दु–युद्ध में घाव लगना।
क्रॉस–युद्ध में या लड़ाई-झगड़े में मृत्यु।
नक्षत्र–उच्च सेनापति पद या पुलिस विभाग में उच्च पद।
वर्ग–गुस्से की अतिरेकता।
वृत्त–नीति, निपुणता।

त्रिकोण–योजनाबद्ध कार्य करने की क्षमता।
जाल–आत्मग्लानि अथवा आत्महत्या।

चन्द्र पर प्रभाव–

एक रेखा–कल्पना की प्रमुखता।
कई रेखाएं–सौन्दर्यप्रियता, कोमल स्वभाव।
आपस में कटती हुई रेखाएं–चिन्ता, मनःसन्ताप।
बिन्दु–प्यार में असफलता, द्रव्यहानि।
क्रॉस–लेखन, राजकीय सम्मान।
वर्ग–धन-प्राप्ति।
वृत्त–पानी में डूबने से मृत्यु।
त्रिकोण–उच्चकोटि का कवि।
जाल–निराशा, चिन्ता।

राहु या केतु का प्रभाव–

एक रेखा–हौसला।
कई रेखाएं–गुस्से की मात्रा में अतिरेक्ता।
आपस में काटती हुई रेखाएं–उत्तरदायित्वहीनता।
बिन्दु–सफलता।
क्रॉस–मानहानि, ठगा जाना।
नक्षत्र–युद्धप्रियता।
वर्ग–राज्य-सम्मान।
वृत्त–सेना में उच्च पद प्राप्त करना।
त्रिकोण–अतुल धन-प्राप्ति।
जाल–दरिद्री जीवन।

हर्षल पर प्रभाव–

एक रेखा–सम्मान।
कई रेखाएं–विदेश गमन।
आपस में कटती हुई रेखाएं–वायुयान दुर्घटना।
बिन्दु–उच्च सम्मान।
क्रॉस–विदेश प्रवास।
नक्षत्र–विदेशों में ख्याति।
वर्ग–वैज्ञानिकों के काम में रुचि।
वृत्त–धन-प्राप्ति।

त्रिकोण—इन्जीनियर या उच्च पद।
जाल—आकस्मिक दुर्घटना से मौत।

नेपच्यून पर प्रभाव—

एक रेखा—सामाजिकता।
कई रेखाएं—सामाजिक उत्तरदायित्वपूर्णता।
आपस में काटती हुई रेखाएं—निराशा, उदासी।
बिन्दु—विवेक, न्यायप्रियता।
क्रॉस—उत्साह सम्बन्धी भावनाओं की वृद्धि।
नक्षत्र—पानी यात्रा।
वर्ग—उच्च स्तरीय ख्याति।
वृत्त—मानसिक रूग्णता।
त्रिकोण—विदेश में शादी और विदेश में ही आदर।
जाल—जलयान में मौत।

प्लूटो पर प्रभाव—

एक रेखा—सर्वांगीण उन्नति।
कई रेखाएं—उन्नति व सामाजिकता।
आपस में काटती हुई रेखाएं—संन्यास अथवा सामाजिकता, सम्बन्ध-विच्छेद।
बिन्दु—उदासीनता।
क्रॉस—आत्महत्या।
नक्षत्र—उच्चकोटि का धर्मात्मा।
वर्ग—विवेकशून्यता।
वृत्त—ज्ञान, धार्मिक कामों में रुचि।
त्रिकोण—कई कलाओं में निपुणता।
जाल—असफल जीवन।

शुक्र पर प्रभाव—

एक रेखा—तीव्र काम-वासना।
कई रेखाएं—सौन्दर्यप्रेमी, भोगी।
आपस में काटती हुई रेखाएं—प्यार में असफलता, मानहानि।
बिन्दु—गुप्तागों में कोई भयंकर बीमारी।
क्रॉस—असफल प्यार, फलस्वरूप जीवन में निराशावादी भावना की वृद्धि।
जाल—अस्वस्थ जीवन।

□□□



मस्तिष्क रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

पाश्चात्य विद्वान् इस रेखा को विद्या, कल्पना, बुद्धि, विवेक, विचार, तर्क, ज्ञान, प्रभाव, कार्यकुशलता और मानसिक योग्यता के साथ-साथ आयु सम्बन्धी निर्देश देने वाली भी मानते हैं। प्राचीन भारतीय विद्वान् भी इस रेखा को यहीं मानते हैं, लेकिन इस रेखा के बारे प्राचीन ग्रन्थों में अत्यन्त अल्प विवरण प्राप्त होता है। सभी भारतीय हस्तरेखा पश्चिमी विश्लेषण को ही आधार बनाकर अपना फल मानते हैं। यहां अनुभव सिद्ध फलों का विवरण दिया जा रहा है।

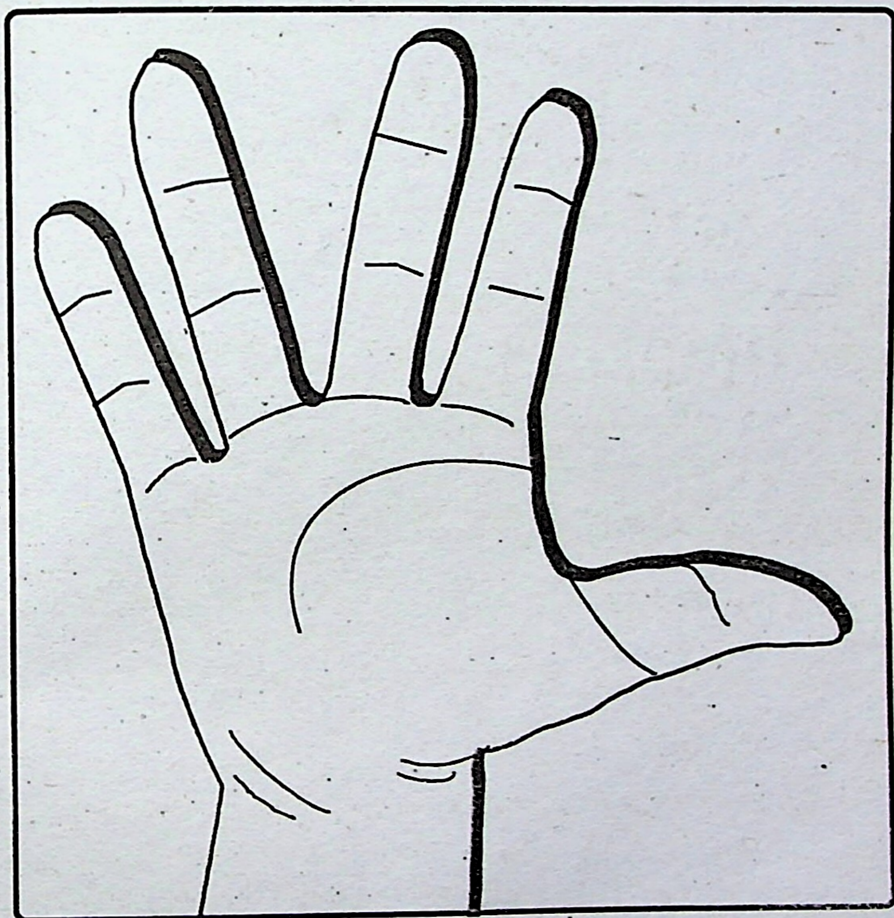
मुख्य स्थितियां–

(1) अगर मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा से हटकर ऊपर गुरु क्षेत्र से निकली हो और वह निर्दोष रूप से चन्द्र क्षेत्र की ओर गयी हो, तो मनुष्य सबल मस्तिष्क का स्वामी होता है। ऐसा व्यक्ति शीघ्रगामी और साहसी होता है। वह परिणाम पर विचार किये बिना प्रथम अनुभूति पर ही काम का कार्यान्वयन शुरू कर देता है। फलतः उसे नुकसान उठाना पड़ता है।

(2) मस्तिष्क रेखा अगर उद्गम से जीवन रेखा को छू रही हो और रेखा

लम्बी गहरी और निर्दोष हो, तो मनुष्य तीव्र बुद्धि वाला, सावधान और समझदारी से काम करने वाला व फैसला करने वाला होता है।

(३) अगर मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा से मिलकर निकली हो या कुछ दूर साथ चलकर अलग हो गई हो तो मनुष्य तीव्र बुद्धि वाला समझदार, आत्मविश्वासी होता है, लेकिन वह अस्थिर विचार वाला भुलक्कड़ होता है। इसी वजह से एक बिन्दु पर टिक कर कार्य नहीं कर सकता और असफलता उसकी नियति बन जाती है।



चित्र 40—मस्तिष्क रेखा

(4) अगर मस्तिष्क रेखा, मंगल क्षेत्र से निकलते ही जीवन रेखा को काटती हुई हथेली के दूसरे सिरे तक निकल जाए और समाप्ति स्थल पर बुध

या चन्द्र क्षेत्र पर चली गयी हो, तो ऐसी रेखा वाला आदमी अस्थिर मस्तिष्क वाला होता है इसमें साहस और दूरदर्शिता का अभाव रहता है, परन्तु वह इसे मानता नहीं। ऐसे लोग उग्र, क्रोधी, अशान्ति उत्पन्न करने वाले, ईर्ष्यालु और झक्की होते हैं। इस वजह से इसके शुभ चिन्तक भी क्षुब्ध होकर दुश्मन बन जाते हैं या उससे दूर हट जाते हैं। ऐसे लोग किसी काम में शीघ्रता करते हैं पर जरा-सी परेशानी होते ही मायूस होकर काम छोड़ देते हैं। संघर्ष वह विवश होकर करते हैं और पूरे जोश में करते हैं, पर अवरोध आते ही झगड़ा-झंझट, कलह आदि करके काम बिगाड़ लेते हैं।

(5) यदि मस्तिष्क रेखा स्पष्ट निकलकर मध्य भाग से आगे नीचे मुड़ गयी हो, तो व्यक्ति विचारशील, दूरदर्शी और विवेकी होता है।

(6) अगर मस्तिष्क रेखा गुरुक्षेत्र से निकलकर जीवन रेखा को स्पर्श करती निकलती हो, मनुष्य प्रबल मस्तिष्क वाला, शक्तिसम्पन्न, बुद्धिमान, दूरदर्शी और विचारशील होता है।

(7) अगर मस्तिष्क रेखा शुरू से ही झुकी हो तो मनुष्य संगीतकार, ललित कलाकार, बुद्धिमान, उत्साही, विवेकी और समझदार होता है इसका प्रभाव सात्विक हाथ पर ही होता है। अन्य पर यह इन कलाओं का प्रेमी ही होता है।

(8) अगर मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा के समीप हो रही हो, तो मस्तिष्क आघात की सूचक है।

(9) अगर यह रेखा चन्द्र क्षेत्र के किसी क्रॉस से मिल रही हो, तो जातक पाखण्डी, धूर्त्त, स्वार्थी, क्रोधी और अहंकारी होता हैं।

(10) अगर मस्तिष्क रेखा किसी सात्विक हाथ में चन्द्र क्षेत्र में दो रेखाओं में विभाजित हो तो जातक उच्चकोटि का लेखक, कवि, दार्शनिक, तत्वज्ञानी और श्रृंगार और आध्यात्मक दोनों का प्रेमी होता है।

(11) अगर यह रेखा असामान्य झुकाव से चन्द्र क्षेत्र पर होते हुए मणिबन्ध तक गई हो, अधिक कल्पनाशीलता, अव्यावहारिक के रूप में परिणत हो जाती है और वह हर क्षेत्र में नाकाम रहता है, निराश होकर आत्महत्या भी कर सकता है।

(12) अगर यह रेखा प्रथम मंगल क्षेत्र तक सीधी चली गई है तो मनुष्य व्यवसाय में सफल होकर प्रचुर मात्रा में धनोपार्जन करता है।

(13) अगर मस्तिष्क रेखा हथेली के बीच में हृदय की रेखा की ओर झुकते

हुए फिर उससे दूर होकर हथेली के दूसरी ओर चली गयी हो या कनिष्ठिका की तरफ चन्द्र क्षेत्र या मंगल क्षेत्र की ओर हो, तो जातक में आत्मविश्वास, आत्मिक बल एवं बुद्धि अधिक विकसित होती है।

(14) अगर मस्तिष्क रेखा हथेली के मध्य भाग तक ही हो, तो मनुष्य व्यवहारकुशल, व्यवसायकुशल और झुलसी हुई बुद्धि का होता है। वह कलाक्षेत्र के प्रति उदासीन होता है।

(15) अगर मस्तिष्क रेखा अन्त में दो भागों में विभक्त हो और दोनों चन्द्र क्षेत्र में हों तो अधिक कल्पनाशीलता का संकेत है। मनुष्य किसी संवेदनात्मक आघात से पागल भी हो सकता है।

(16) शनि क्षेत्र से इस रेखा के शुरू होने पर नेत्र रोग और कुबुद्धिपूर्ण विचारों का दोष उत्पन्न होता है।

(17) अगर यह रेखा अपने उद्गम पर दो शाखाओं में विभक्त हो और एक रेखा दूसरी जीवन रेखा को स्पर्श कर रही हो, तो मनुष्य के भाग्य की लगातार उन्नति होती है।

(18) अगर यह रेखा तर्जनी के नीचे अर्धवृत्त बनाती हुई हथेली के छोर तक हो, तो व्यक्ति में मिथ्या-अहंकार, खुद के प्रति भावुकता और संवेदना अधिक होती है।

(19) शनि क्षेत्र तक जाकर उसी ओर झुकी हुई मस्तिष्क रेखा संगीत और धर्म के प्रति रुचि जागृत करती है।

(20) शनि क्षेत्र तक सीधी हो, फिर मुड़कर चन्द्र क्षेत्र की ओर चली गयी हो, तो मनुष्य को लगातार भावात्मक आघात लगता है और उसे अधिक मानसिक कष्ट होता है।

(21) अगर मस्तिष्क रेखा बुध क्षेत्र की ओर झुकी हुई स्पष्ट और निर्दोष हो, तो विज्ञान, ज्ञान और व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता की वृद्धि प्राप्त होती है।

(22) अगर मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा पास-पास हों और दूर तक इसी स्थिति में हों, तो दमा रोग और हृदय रोग की सूचक है।

(23) अगर यह रेखा शनि क्षेत्र के नीचे तक सीधी जाकर फिर मुड़कर हृदय रेखा को काटती है और शनि क्षेत्र पर समाप्त हो जाए तो धर्मान्धता, स्वयं की जानकारियों और विश्वासों के प्रति अन्ध पूर्वाग्रहयुक्त उग्र क्रोध, अहंकार आदि की सूचना देती है।

(24) अगर वह सूर्य क्षेत्र के नीचे तक सीधी आयी हो और फिर एकाएक हृदय रेखा को कांटती हुई सूर्य क्षेत्र की ओर मुड़ जाए तो जातक साहित्य और कला के क्षेत्र में रुचि रखने वाला होता है, किन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं होती। अगर हृदय रेखा किसी स्थिति में कट नहीं रही हो, तो सफलता प्राप्त होती है।

(25) अगर कोई क्षुद्र रेखा इससे निकलकर हृदय रेखा को स्पर्श कर रही हो, तो मनुष्य भावात्मक, संवेग में परिणाम की परवाह नहीं करते हुए उग्र रूप से क्रियाशील हो जाता है।

(26) अगर कोई क्षुद्र रेखा इससे निकलकर गुरु क्षेत्र पर चली गयी हो, तो अहंकार, हुकूमत की भावना, अनुभूति की अवहेलना आदि का भाव जागृत होता है।

(27) अगर यह रेखा भाग्य रेखा से मिलने से पहले ही खत्म हो गयी हो, तो मनुष्य की अल्प आयु में अकाल मृत्यु होती है। वह जितने दिन जीवित रहता है, दुःख भोगता है।

(28) जब यह सूर्य क्षेत्र के नीचे से बुध क्षेत्र या सूर्य क्षेत्र के मध्य में गयी हो और हृदय रेखा को काटती न हो, कलात्मक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

(29) अगर यह रेखा प्रथम मंगल क्षेत्र तक आने के बाद शुक्र तक पहुंचकर हृदय रेखा को स्पर्श करते हुए बुध क्षेत्र में जा पहुंचे तो सिर का रोग होता है।

(30) अगर मस्तिष्क रेखा प्रथम मंगल क्षेत्र पर खत्म होकर दो भागों में या एक शाखा में हो गयी हो और एक शाखा की स्थिति में वह शाखा चन्द्र क्षेत्र पर चली गयी हो दूसरी की स्थिति में एक बुध क्षेत्र पर भी गयी हो, तो प्रथम में मनुष्य विश्वसनीय होता है, दूसरे में वह अत्यन्त संवेदनशील, हृदय भावों में सर्वस्व अर्पण करने वाला और प्रत्येक क्षेत्र में सफल होता है।

(31) मस्तिष्क रेखा लहरदार हो, हृदय रेखा के करीब हो और बुध क्षेत्र उठा हुआ हो तो मनुष्य बेईमान प्रकृति का कुटिल होता है।

(32) अगर यह रेखा शनि क्षेत्र पर टूटी हुई हो तो उस आयुमान में जातक की आकस्मिक मृत्यु होती है। अगर अन्य स्थितियां सहायक हों, तो दुर्घटना होती है।

(33) अन्तिम भाग में दो मुखी होने पर, जबकि एक शाखा छोटी, दूसरी बड़ी हो, मनुष्य की कल्पना शक्ति और व्यावहारिकता में सन्तुलन होता है।

(34) अगर यह रेखा प्रथम मंगल क्षेत्र तक आने के बाद हृदय रेखा को काटती हुई बुध क्षेत्र की ओर चली जाए, तो मनुष्य कुशल व्यावहारिक, प्रबन्धक, नीतिज्ञ, चतुर और धोखेबाज होता है।

(35) भाग्य रेखा उत्तम हो और मस्तिष्क रेखा की कोई शाखा सूर्य क्षेत्र पर चली गयी हो, तो पर्याप्त धन-लाभ होता है। अगर कोई रेखा कनिष्ठिका, अनामिका के बीच भाग की ओर उठी हो, तो धन-लाभ होता है। अगर ऐसी कोई शाखा बुध क्षेत्र की ओर गयी हो, तो मनुष्य व्यवसायी, न्यायाधिकारी या बुद्धिप्रधान पद पर आसीन होकर धन कमाता है।

(36) अगर मस्तिष्क रेखा चन्द्र और मंगल क्षेत्र के बीच भाग में जाकर रुक गयी हो, तो व्यक्ति बुद्धिमान विचारक, यशस्वी तथा धूर्त्त एवं प्रपंचक होता है।

(37) अगर यह रेखा टेढ़ी होकर मध्यमा के करीब झुकी हुई हो, तो धन एकाएक नष्ट हो जाता है।

(38) अगर मस्तिष्क रेखा से कोई शाखा निकलकर हृदय रेखा से जा मिले, तो हृदय की भावनाएं मस्तिष्क को असन्तुलित कर देती हैं और मानसिक दुःख प्रदान करती हैं।

(39) अगर मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के ही समीप छोटी-सी हो और वहीं खत्म हो गयी हो, तो मनुष्य अल्पायु होता है।

(40) मस्तिष्क रेखा कहीं टूटी हुई हो तो उस दशा में मस्तिष्क पर रोग या आघात का आक्रमण होता है और यदि रेखाओं का प्रभाव सहायता न कर रहा हो, तो मृत्यु होती है।

(41) अगर मस्तिष्क रेखा शनि क्षेत्र के नीचे से जीवन रेखा से अलग हुई हो, तो मस्तिष्क देर से विकसित होता है।

(42) अगर इस रेखा से उद्गम के समीप छोटी-छोटी रेखाएं उद्गम की ओर ही मिलकर उन्मुक्त हों, तो व्यक्ति महत्त्वाकांक्षी, धीर, गम्भीर, प्रबल, संवेदनशील कलाकार, वेदान्ती, गुप्त विद्याओं का ज्ञाता एवं निष्पक्ष समालोचक होता है।

(43) अगर इस रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर हृदय रेखा में मिल

रही हों तो जातक पर मित्रों, हितैषियों और प्रेमिका का प्रभाव अधिक रहता है।

(44) अगर मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा दोनों ही एक-दूसरे के समान्तर हथेली के आर-पार गयी हों, तो जातक सन्तुलित बुद्धि वाला जिद्दी, निष्ठुर, दृढ़प्रतिज्ञ, बदले की भावना से भरा हुआ और गुप्त विद्याओं का जानकार होता है।

(45) अगर मस्तिष्क रेखा के अन्तिम छोर से कोई रेखा हृदय रेखा से मिल रही हो, तो प्रेम सम्बन्ध में लोक-लज्जा का भी ध्यान नहीं रहता। या हृदय की भावनाओं में डूब कर बुद्धि की अवहेलना करता है।

(46) अगर मस्तिष्क रेखा अपने उद्गम पर ही जीवन रेखा और हृदय रेखा से मिली हो, तो मृत्यु योग होता है।

(47) अगर यह धनुषाकार होकर हृदय रेखा की ओर झुकी हो, तो मस्तिष्क पर चोट या आघात लगने की सम्भावना है।

(48) अगर मस्तिष्क रेखा पतली या पीले रंग की हो, तो वह रक्त की कमी को दर्शाती है।

(49) अगर मस्तिष्क रेखा के अन्तिम भाग में गाय की पूंछ की तरह छोटी रेखाएं निकलकर चन्द्र क्षेत्र की ओर गयी हों, तो अनेक गुण होते हैं। सम्मान भी प्राप्त होता है।

(50) नक्षत्र चिह्न हो तो उस काल मान में जहां रेखा पर यह चिह्न है, सिर पर गम्भीर चोट या गहरा मानसिक आघात होता है।

(51) इस रेखा पर सफेद निशान या दाग हो तो जातक, अविष्कारक बनेगा। काला, नीला दाग गम्भीर रोग का सूचक है।

(52) अगर मस्तिष्क रेखा में घुमावदार आंकड़े हों तो व्यक्ति किसी की भी हत्या कर सकता है। रेखा का रंग लाल हो तो वह हत्या करने वाला है, यदि पीली हो तो हत्या कर चुका है।

(53) अगर पूरी मस्तिष्क रेखा के दोनों ओर छोटी-छोटी रेखाएं और ये छोटी रेखाएं सूक्ष्म रेखाओं में कटी हों तो व्यक्ति पागल हो जाएगा।

(54) अन्तिम सिरे के किनारे बड़ा द्वीप हो, तो आंत की बीमारी का संकेत है।

(55) शुरू में द्वीप हो तो आनुवंशिक रोग होने का इशारा है।

(56) इस रेखा पर अनेक छोटे-छोटे द्वीप हों, तो मानसिक परिश्रम के कारण मस्तिष्क रोग का इशारा है।

(57) वर्ग हो तो खतरे से रक्षा का इशारा है।
(58) वृत्त चिह्न हो, तो नेत्रपीड़ा होती है।
(59) इस रेखा पर सफेद दाग या निशान हो तो व्यक्ति आविष्कारक बनेगा। उसके सिर पर चोट या मानसिक आघात का इशारा है।
(60) मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा दोनों पर द्वीप हो तो कुटिलता, बेईमानी, कुकर्म, चोरी, पराये धन को हड़पने या ठगने की प्रवृत्ति, झगड़े की प्रवृत्ति और वाचालता की निशानी है।
(61) इस रेखा पर त्रिकोण हो, तो मातृपक्ष से लाभ होता है। त्रिकोण किसी रेखा या कई रेखाओं में बंट रहा हो, तो लाभ का बंटवारा होगा।
(62) मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा दोनों पर दीप हों तो व्यक्ति सज्जनों को अपमानित करने वाला, खुद को महाज्ञानी और सर्वज्ञाता समझकर क्रोधावेश में उचित-अनुचित न सोचने वाला और कुटिलता से युक्त होता है।
(63) शनि क्षेत्र के नीचे द्वीप हो, तो जननेन्द्रिय पीड़ा या रोग का इशारा देती है।
(64) सूर्य के स्थान के नीचे द्वीप हो, तो नेत्र विकार का सूचक है।
(65) इस रेखा की समाप्ति पर बना नक्षत्र उदर रोग, स्त्री द्वारा दी गई पीड़ा एवं अल्पायु का सूचक है।
(66) इसके करीब कोई नक्षत्र हो तो यश, योग्यता, ऐश्वर्य की वृद्धि का सूचक है।
(67) मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा पर द्वीप हो तो मस्तिष्क की दुर्बलता का इशारा है।
(68) इसके करीब कोई क्रॉस का निशान हो, तो व्यवहारकुशलता और हाज़िर-जवाबी का इशारा है।



हृदय रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

बुध पर्वत के पास से तर्जनी की तरफ जाने वाली रेखा हृदय रेखा की संज्ञा से अभिहित की जाती है। हृदय रेखा का श्रेष्ठ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस रेखा के माध्यम से व्यक्ति में मानवीय गुणों की सर्जना होती है। भावुकता, अध्यात्म, ममता, प्रेम, स्नेह, दया, करूणा, कठोरता, क्रूरता, घृणा आदि गुण-अवगुणों का ज्ञान इसी रेखा के माध्यम से होता है।

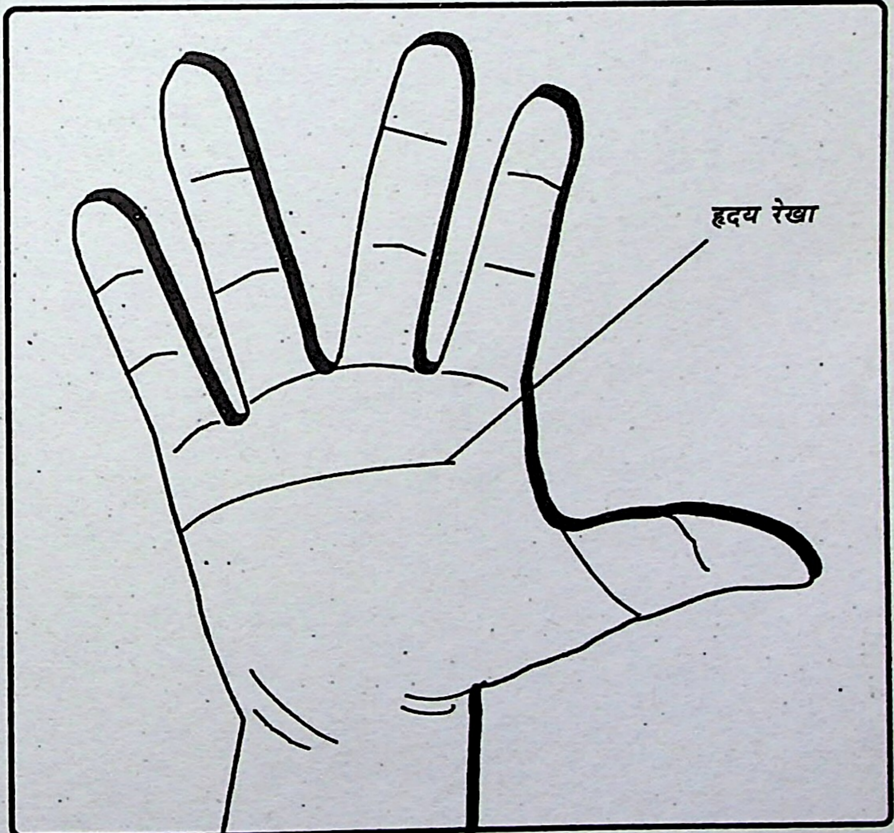
प्राचीन भारतीय विद्वान्, वराहमिहिर ने इसे आयु रेखा का नाम दिया है। **'गरुड़ पुराण'** में लिखा है कि यदि आयु रेखा बुध पर्वत से शुरू होकर गुरु पर्वत तक जाती है, तो व्यक्ति सौ वर्ष तक जीवित रहता है लेकिन अगर यह रेखा छिन्न-भिन्न है तो मृत्यु की आशंका रहती है जिस स्थान पर वह टूटी है, उस आयु में मृत्यु की आशंका रहती है।

अनेक विद्वानों ने इस रेखा के भिन्न-भिन्न उद्‌गम स्थान बताये हैं, अतः नीचे इसके उद्‌गम स्थानों की चर्चा दी जा रही है।

हृदय रेखा के उद्‌गम स्थान

हृदय रेखा के मूल रूप से आठ उद्‌गम स्थान बताए गए हैं—

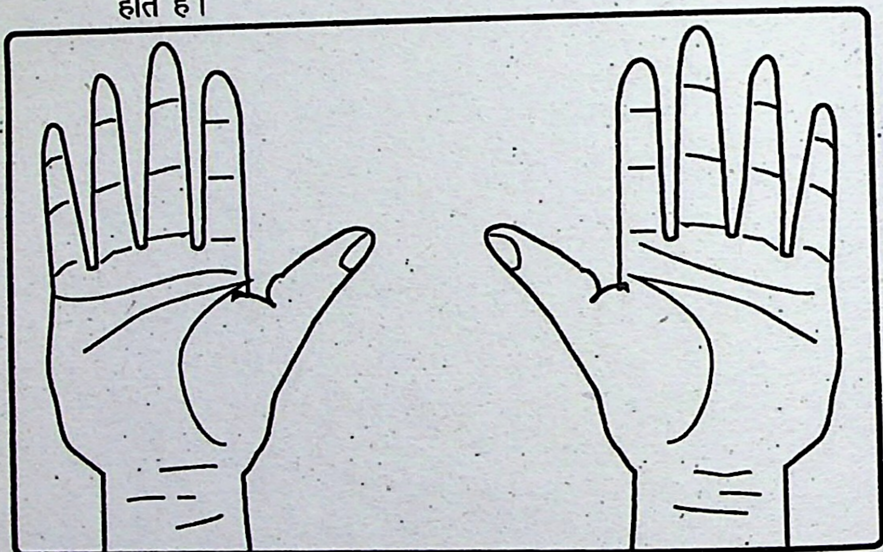
(1) बुध पर्वत के नीचे से शुरू होकर हथेली के उस पार तक जाती है।
(2) बुध पर्वत से निकलकर गुरु पर्वत पर समाप्त होती है।
(3) बुध पर्वत से प्रारम्भ होकर शनि पर्वत पर समाप्त होती है।
(4) बुध पर्वत से शुरू होकर शनि पर्वत पर समाप्त होती है।
(5) बुध पर्वत से शुरू होकर तर्जनी और मध्यमा के मध्य में पहुंचकर समाप्त होती है।
(6) बुध पर्वत से शुरू होकर मध्यमा और अनामिका के बीच में समाप्त होती हैं।
(7) बुध पर्वत से शुरू होकर जीवन रेखा के उद्‌गम स्थल पर जाकर मिलती है।
(8) बुध पर्वत से शुरू होकर मस्तिष्क रेखा से मिल जाती है।



चित्र 41—हृदय रेखा

आठों उद्‌गम स्थानों की सचित्र जानकारी–

(1) जिन व्यक्तियों की हथेलियों में हृदय रेखा बुध पर्वत से शुरू होकर हथेली के उस पार तक जाती है—ऐसे लोग अधिक महत्त्वाकांक्षी होते हैं तथा उन आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु सतत् प्रयत्नशील रहते हैं, क्योंकि ऐसे लोग अधिक मेहनती होते हैं, लक्ष्य की प्राप्ति में तन-मन-धन से लगे रहते हैं। जब तक लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती, ये शान्ति से नहीं बैठते हैं। अगर गुरु पर्वत के उस पार जिस स्थान पर रेखा खत्म होती है, रेखा का झुकाव नीचे की ओर है, तो इन्हें जीवन की सफलतायें प्राप्त होती हैं; और यश, मान, पद-प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, वैभव आदि प्राप्त होते हैं।



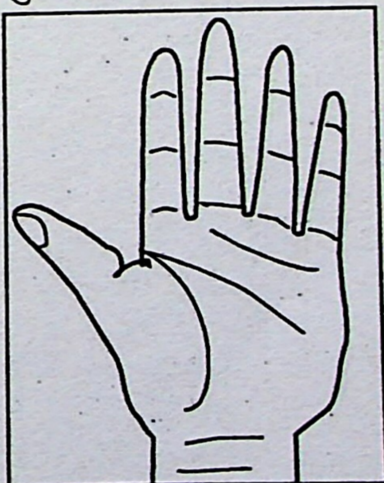
चित्र-42

(2) दूसरे प्रकार की हृदय रेखा बुध पर्वत से शुरू होकर गुरु पर्वत पर जाकर समाप्त होने वाली सर्वश्रेष्ठ रेखा कहलाती है। वास्तव में यह शनि और गुरु पर्वत को विभाजित करती है। ऐसी हथेली वाला व्यक्ति विशाल हृदय का होता है। परोपकारी, निष्पक्ष, न्यायप्रिय, निर्भीक, अपने लक्ष्य के प्रति प्रयत्नशील एवं लक्ष्य को प्राप्त करता है। सफलतायें सहचर्य होती हैं। ऐसा व्यक्ति न तो ज्यादा उच्छृंखल होता है और न ही अधूरापन लिये हुए जीवन जीता है। ये समाज की चिन्ता न करके समाज को महत्त्वपूर्ण योगदान दे जाते हैं। जीवन में

जो भी प्रतिज्ञा करते हैं या किसी को कोई वचन देते हैं तो उसका पूर्णरूपेण निर्वाह करते हैं। ऐसा व्यक्ति धार्मिक, सात्विक तथा ईमानदार होता है। इसका स्तर उच्च मानसिक विचारधाराओं पर निर्भर करता है। यह स्वतन्त्र विचारधारा के व्यक्ति होते हैं। इनकी करनी-कथनी में अन्तर नहीं होता है।

ये किसी के साथ कभी विश्वासघात नहीं करते। भावना-प्रधान होते हुए भी कर्त्तव्यनिष्ठ रहते हैं। प्रेम के क्षेत्र में गम्भीर होते हैं। इनमें चारित्रिक दोष नहीं होता। ये किसी के सौन्दर्य-जाल में नहीं फंसते हैं, अगर ऐसे व्यक्ति किसी से प्रेम करते हैं, तो उसे विवाह में परिणित करके उसके प्रति सम्पूर्ण जीवन निष्ठावान रहते हैं। इनको अनेक बार धोखा मिलता है। लेकिन यह धोखा उठाकर भी अपने प्रियजन के हृदय को ठेस नहीं पहुंचाते हैं। ऐसा व्यक्ति समाज के समक्ष अति प्रसन्न जीवन व्यतीत करता है। वियोग होने पर एकान्त में आंसू बहा लेता है। वह अपने आपको विचलित नहीं होने देते हैं और इनका लौकिक प्रेम अलौकिक प्रेम में परिणित हो जाता है, यह जीवन में शान्त, सुखी और सरल रहते हैं। जीवन में यश, मान, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इसकी मृत्यु के बाद भी इन्हें लोग याद करते हैं। संसार के श्रेष्ठ व्यक्तियों के हाथ में यह रेखा देखने को मिलती है। ऐसे लोग समाज और राष्ट्र को बहुत कुछ देकर जाते हैं।

(३) तीसरे प्रकार की हृदय रेखा बुध पर्वत से निकलकर शनि पर्वत पर जाकर समाप्त होती है। ऐसे लोग निम्न चरित्र के होते हैं। इनका जीवन छल, कपट, आडम्बर, झूठी शान-शौकत, व्यर्थ के दिखावे से पूर्ण रहता है। यह किसी के प्रति निष्ठावान नहीं होते। अधिक स्वार्थी होते हैं। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए जघन्य-से-जघन्य अपराध भी कर सकते हैं। इनका प्रेम सात्विक न होकर केवल वासनापूर्ति का साधन मात्र होता है।



चित्र-43

इनका प्रेम-प्रदर्शन मिथ्या होता है। वासनात्मक स्वार्थ-सिद्धि होने पर यह उसे पहचानने से भी इन्कार कर देते हैं। ऐसे लोग अनेक स्त्रियों से प्रेम करते हैं और सभी को धोखा देते हैं, लेकिन अधिक दिनों तक वह समाज की आंखों में धूल नहीं झोंक पाते हैं। इनका वास्तविक स्वरूप समाज के समक्ष पाप के घड़े के समान फूट पड़ता है। तब निन्दनीय और उपेक्षित जीवन व्यतीत करना पड़ता हैं। ऐसे लोग अविश्वासी, धोखेबाज, निर्भय, स्वार्थी और अविवेकी होते हैं। समाज में इन्हें कोई मान्यता प्राप्त नहीं होती।

(4) चौथे प्रकार की हृदय रेखा सूर्य पर्वत पर जाकर समाप्त होती है। ऐसा व्यक्ति असफल और आत्महत्या तक करने वाला होता है, क्योंकि इनमें लेश मात्र भी धैर्य नहीं होता। ऐसा व्यक्ति दयाहीन, ममताहीन, स्वार्थी, निन्दक, कुण्ठाग्रस्त अदूरदर्शी होता है।

ये व्यक्ति सफल चिन्तक होते हैं। ये कभी किसी की प्रशंसा करना तो दूर उसे सुन भी नहीं सकते हैं।

प्रेम के क्षेत्र में अत्यन्त अधीर होते हैं और असफल रहते हैं। इनका दिल अत्यन्त कमजोर और आशक्त होता है। ऐसे लोग स्वभावतः चिड़चिड़े दूसरे के दुःख से सहानुभूति करने वाले तथा धोखेबाज होते हैं।

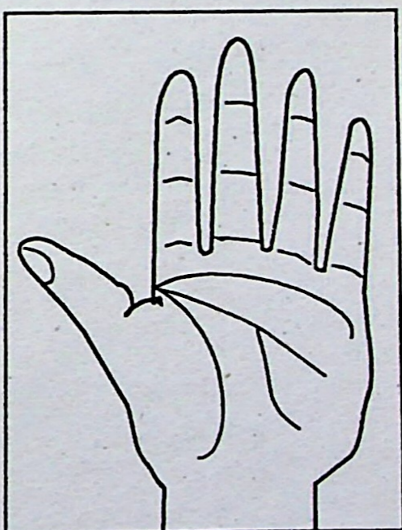
ये जीवन में सदा हर क्षेत्र में कामयाब रहते हैं। प्रायः ऐसे लोग आत्महत्या या हृदय रोग के कारण मरते हैं।

(5) पांचवें प्रकार की हृदय रेखा बुध रेखा से निकलकर तर्जनी और मध्यमा उंगलियों के बीच जाकर समाप्त होती है। ऐसे लोग आत्मकेन्द्रित होते हैं। ये व्यक्ति अपने काम में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि इन्हें दूसरों की ज़रा भी चिन्ता नहीं रहती है। ऐसे लोग परिश्रमी, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्षशील होते हैं। लेकिन इन्हें अनेक बार पराजय भी मिलती है। अगर इनका मस्तिष्क उर्वर है कामयाबी पाने से पहले ही उनका उत्साह, जोश, उमंग समाप्त हो जाता हैं और ध्येय में सफल नहीं हो पाता। इनका मुख्य कारण इनका शंकालु स्वभाव है। ये जीवन में कभी भी किसी पर विश्वास नहीं करते हैं। प्रत्येक को शक की नजरों से देखते हैं। इसी वजह से स्वजन सम्बन्धी, मित्र परिवारीजन अपने आपको इनसे अलग कर लेते हैं। इनमें मायूसी अधिक व्याप्त होती है। 50 वर्ष की आयु में अपने आपको निःसहाय समझने लगते हैं।

निराशाएं जीवन के उत्साह को भंग कर देती हैं और जीवन के बोझ को जीवन शव की भांति वहन करते-करते थक जाते हैं। प्रायः ऐसे लोग असफल ही जीवन जीते हैं।

(6) छठे प्रकार की हृदय रेखा बुध पर्वत से शुरू होकर अनामिका और मध्यमा के मूल में पहुंचकर खत्म होती है। ऐसे लोग व्यावहारिक ज्यादा होते हैं। भावना की अपेक्षा कर्त्तव्य को श्रेष्ठ स्थान प्रदान करती है। ये जीवन में अपने चिड़चिड़े स्वभाव के कारण अनेक लोगों से अकारण दुश्मनी कर बैठते हैं। ऐसे लोग कायर और निराशावादी भी होते हैं। ये प्रेम प्रसंग में अविश्वसनीय रहते हैं। ये कभी किसी से प्रेम नहीं करते, यदि किसी कारण प्रेम कर भी लेते हैं तो इनका प्रेम स्वार्थी होता है और अपना मतलब निकलते ही ये अपने प्रिय को त्याग देते हैं और उससे फिर कभी मिलते तक नहीं हैं। इन्हें हमेशा अपनी बदनामी का डर लगा रहता है, इसी वजह से ये कभी अपने प्रियजन से मिलने उसके स्थान पर नहीं जाते हैं।

(7) सातवें प्रकार की हृदय रेखा बुध पर्वत से निकलकर जीवन रेखा के उद्‌गम स्थल पर मिलती है। ऐसे लोग सामर्थ्यवान होते हैं, अत्यन्त भाग्यशील होते हैं इन्हें जीवन में सभी प्रकार के वैभव, यश, सम्मान, प्रेम प्रतिष्ठा प्राप्त होते हैं। ये मेहनती, आजाद विचार वाले, परोपकारी, न्यायप्रिय होते हैं। ईश्वर के प्रति आस्थावान होते हैं। जीवन में किसी के प्रति विश्वासघात नहीं करते हैं, मगर फिर भी इन्हें समय-समय पर धोखा मिलता रहता है।



चित्र-44

ऐसे लोग जिन्हें प्रेम करते हैं, उनके प्रति सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहते हैं। प्रेम के क्षेत्र में अत्यन्त गम्भीर रहते हैं। ये जीवन में पूर्णरूपेण सफल रहते हैं।

(8) कुछ हथेलियों में हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा परस्पर मिल जाती

हैं। अगर हृदय रेखा का विकास बुध पर्वत से ही होता है, ऐसे लोग साधारण जीवन ही जीते हैं। ये हृदयहीन कठोर एवं कर्कश स्वभाव के होते हैं। इनके जीवन में क्रम वात्सल्य, करुणा, दया का कोई भी स्थान नहीं होता है।

ऐसे व्यक्ति अनंगप्रिय होते हैं। अपनी स्वार्थसिद्धि हेतु जघन्य कृत्य करने से नहीं हिचकिचाते। अगर हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से लिपटी हुई हो तो ऐसा मनुष्य अपनी प्रेमिका या पत्नी की भी हत्या करने से नहीं हिचकिचाता। ऐसी रेखा वाले लोगों को समाज में कोई विशेष स्थान नहीं मिल पाता है।

हृदय रेखा की कुछ विशेष जानकारी–

(1) हृदय रेखा जिन-जिन पर्वतों से होकर गुज़रती है, उसमें उन पर्वतों के गुण आ जाते हैं।

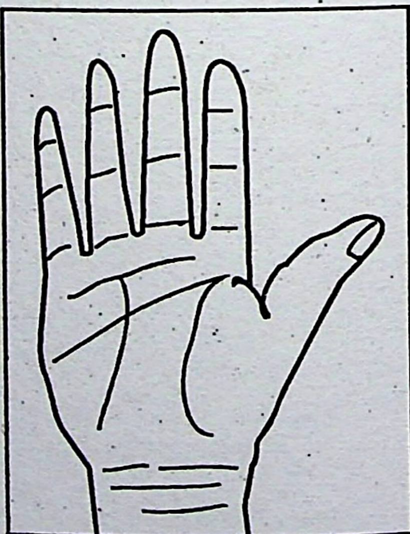
(2) हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा की तरफ जिस स्थान पर झुके उस आयु पर मस्तिष्क का पूर्ण विकास होता है, लेकिन अगर मस्तिष्क रेखा में यह रेखा पूरी मिल जाती है, तो मनुष्य में आज़ादी से निर्णय करने की क्षमता खत्म हो जाती है।

(3) अगर हृदय रेखा मंगल पर्वत पर उभार लिए हुए है और स्पष्ट है, तो वह व्यक्ति अधिक साहसी होता है।

(4) हृदय रेखा का अन्तिम छोर अगर दो भागों में बांट दिया जाए तो ऐसे लोग जीवन में असाधारण सफलताएं प्राप्त करते हैं। सहृदय और न्यायप्रिय होते हैं।

(5) अगर हथेली में हृदय रेखा नहीं है तो ऐसे लोग स्वार्थी, लोभी, कामुक एवं व्यसनी होते हैं। उसके हृदय में भावुकता, दया, प्रेम, ममता नगण्य मात्र रहती है।

(6) हृदय रेखा अगर सूर्य पर्वत पर समाप्त हो जाती है तो ऐसे व्यक्ति जीवन भर धोखा खाते हैं।



चित्र-45

(7) हृदय रेखा अगर अत्यधिक लाल है तो ऐसे लोगों में प्रेम की तीव्रता के कारण हिंसात्मक प्रवृत्ति होती है।

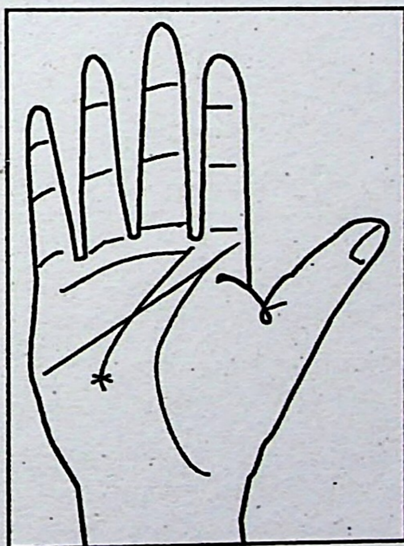
(8) हृदय रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर अगर मस्तिष्क रेखा में मिलती हैं तो उस व्यक्ति को सम्पूर्ण जीवन मानसिक कष्ट झेलने पड़ते हैं।

(9) अगर हृदय रेखा की कोई शाखा मस्तिष्क रेखा को काटती है, तो उस उम्र में मानसिक कलेश का योग बनता है।

(10) अगर हृदय रेखा हथेली के उस पार तक पहुंच जाती है तो व्यक्ति अन्ध श्रद्धालु होता है।

(11) हथेली में अगर दोहरी हृदय रेखा है तो वह व्यक्ति उच्च पद पर आसीन होता है और उसके प्रेम में गाम्भीर्य होता है।

(12) अगर हृदय रेखा कई स्थानों से कटी है तो व्यक्ति निराशावादी होता है।



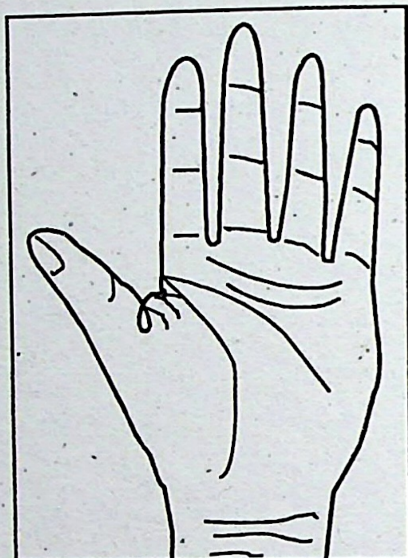
चित्र-46

(13) अगर हृदय रेखा अधिक पतली, गहरी और लम्बी है तो व्यक्ति हत्याएं करता है।

(14) अगर हृदय रेखा हल्के नीले सांवले से रंग की हो तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में कोई आकर्षण और उत्साह नहीं रहता है।

(15) अगर हृदय रेखा पीले रंग की है, तो हृदय रोग की सम्भावना रहती है।

(16) अगर हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से अधिक स्पष्ट लम्बी और कालिमा-युक्त है तो वह व्यक्ति असाधारण ख्याति अर्जित करता है।



चित्र 47—दोहरी हृदय रेखा

(17) हृदय रेखा से कोई रेखा चन्द्र पर्वत तक जाती है, तो उस व्यक्ति को हिस्टीरिया (मिर्गी) के दौरे की सम्भावना होती है।

(18) अगर हृदय रेखा व मस्तिष्क रेखा दोनों पर द्वीप हो, तो व्यक्ति निसन्देह कर्मचारी होगा।

(19) अगर हृदय रेखा की एक शाखा तर्जनी और मध्यमा के मूल में जाती है और दूसरी शाखा गुरु पर्वत पर पहुंचती है और चन्द्र पर्वत उभार लिए होता है, तो ऐसे व्यक्ति का जीवन पूरा शान्तिमय रहता है।

(20) अगर दो रेखाएं अत्यन्त घनिष्ठ हैं, तो ऐसा व्यक्ति अधिक स्नेह वाला होता है।

(21) अगर हृदय रेखा से कोई रेखा मस्तिष्क रेखा से जा मिलती है तो उस व्यक्ति का जिससे प्रेम होगा, उसे जीवन भर निभाता है।

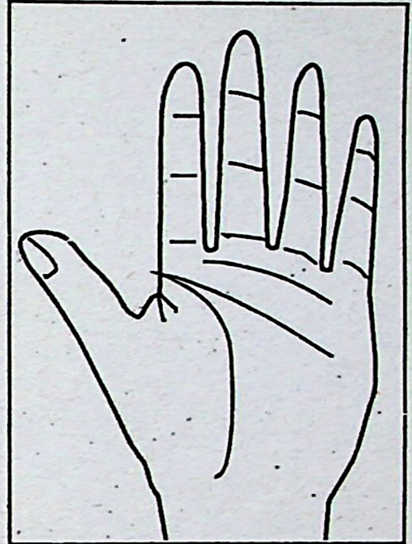
(22) अगर हृदय रेखा से कोई सहायक रेखा नहीं निकलती है तो व्यक्ति को सन्तान सुख नहीं मिलता है।

(23) अगर हृदय रेखा क्षीण तथा अस्पष्ट है और इससे कोई भी शाखा न निकले तो व्यक्ति में सन्तानोत्पादन शक्ति कम होती है।

(24) अगर हृदय रेखा से कोई शाखा मंगल पर्वत पर जाती है, तो वह व्यक्ति कठोर स्वभाव का होता है।

(25) हृदय रेखा अगर चतुर्भुज के साथ कहीं भी समाप्त हो जाती है, तो व्यक्ति चंचल स्वभाव का होता है।

(26) यदि हृदय रेखा से कोई शाखा मंगल पर्वत पर आती है तो वह व्यक्ति कठोर स्वभाव का होता है।



चित्र 48—टूटी हृदय रेखा

(27) अगर हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा से मिल जाती है तो उस व्यक्ति की मृत्यु 26 से 28 के बीच में हो जाती है।

(28) अगर हृदय रेखा अनेक स्थानों पर टूटी है, तो ऐसे लोगों को हृदय रोग अवश्य होता है।

(29) अगर हृदय रेखा पर वृत्त का निशान है तो मनुष्य हृदय से कमजोर होता है।

(30) हृदय रेखा पर यदि नक्षत्र पर निशान है तो वह आदमी आजीवन रोगी रहता है।





जीवन रेखा या पितृ रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

रेखाओं की जानकारी जीवन में अधिक महत्त्व रखती है। रेखा के अध्ययन में चार बातों का ध्यान जरूरी है।

(1) स्वयं रेखा--रेखाओं की आकृति, रंग, लम्बाई, चौड़ाई, आकार उसका उद्गम और अन्तःदिशा, मोड़ और कटाव।

(2) अन्याय रेखाओं से मूल रेखा का सम्बन्ध।

(3) सिरे पर शाखाएं।

(4) शाखाएं तथा चिह्न।

साधारणतया जीवन रेखा सभी के हाथों में होती है और इसका स्थान सर्वोपरि है। जीवन रेखा को हम पितृ रेखा भी कहते हैं या आयु रेखा भी कह सकते हैं।

शुक्र पर्वत के आधार पर स्थित यह पूरे शुक्र पर्वत को अपने घेरे में लिए रहती है। जीवन रेखा सदैव तर्जनी उंगली व अंगुष्ठ के बीच स्थान से चलकर शुक्र को घेरते हुए प्रायः मणिबन्ध तक जा पहुंचती है। हर हाथ में इसका प्रकार, लम्बाई-चौड़ाई समान नहीं होती। किसी हाथ में अर्धगोलाकार और किसी में बहुत सीधी ही चली जाती है, जो शुक्र को न्यूनता प्रदान कर अपनी लम्बाई छोटी

कर देती है। स्वस्थ, दीर्घायु जीवन व निर्विघ्न जीवन जीने के लिए इस रेखा का, गहरी व भली प्रकार विस्तार लिए हुए होना जरूरी है। गुलाबी, हल्का लाल रंग शुभत्व देता है।

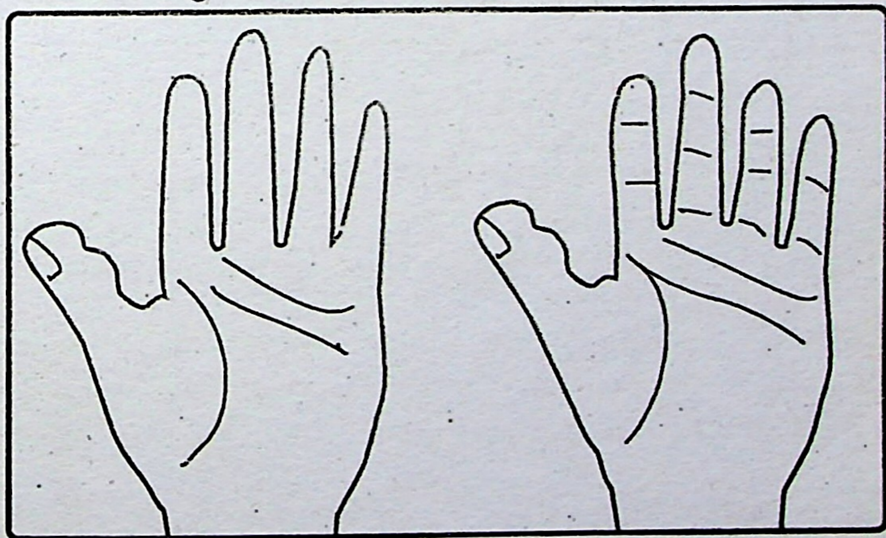
आवश्यक है कि इस रेखा पर बेकार के अशुभ निशान न हों।

जीवन रेखा स्वास्थ्य, शक्ति, मानसिक रूप की परिचायक है।

इस रेखा से यह पता चलता है कि जीवन प्रगति की ओर जा रहा है या अधोगति की तरफ? कब उन्नति का चरमोत्कर्ष होगा या कब पतन की गहरी खाई में गिरेगा?

गुरु पर्वत से उठी जीवन रेखा गजब की महत्त्वाकांक्षा देती है, उसमें सम्पत्ति, सफलता, धनोपार्जन की अद्‌भुत क्षमता है। देश, परिस्थिति, काल से लाभ उठाना वह जानता है। कम शुक्र पर्वत को घेरने का अर्थ है जीवन के प्रति उदासीन, अनासक्त भोगेच्छा, वासना की न्यूनता, कम आकर्षण विपरीत लिंग के प्रति।

चौड़ी व उथली जीवन रेखा शक्ति का अभाव प्रकट करती है। ऐसे लोग दुर्बल, कमजोर, जोश का अभाव, बीमारियों का घेरा, परिचित, मित्रों, सहयोगियों की मदद से इच्छुक होंगे।

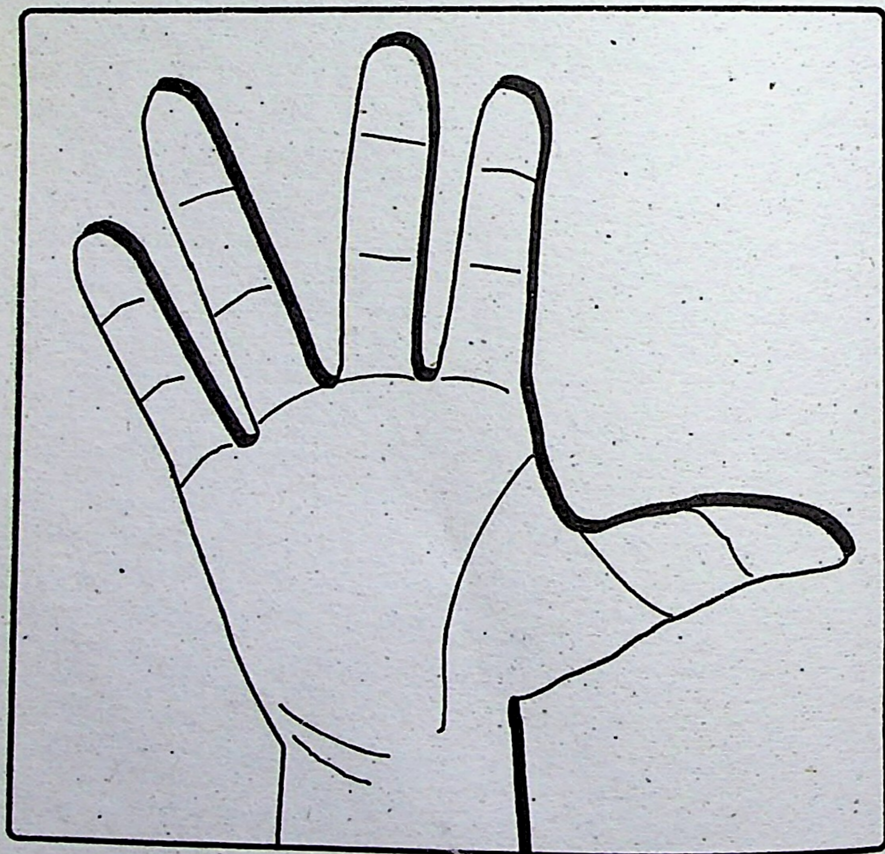


चित्र-49 *चित्र-50*

छोटी जीवन रेखा अल्पायु; पर मस्तिष्क की रेखा प्रबलता व अंगुष्ठ पर्व की मजबूती इस दोष से व्यक्ति को मुक्त करती है। अगर जीवन रेखा का अन्त छोटी-छोटी समान्तर रेखाओं में हो तो अकस्मात् जीवन को अन्त व दोनों हाथों

में एक-एक स्थान से टूटी जीवन रेखा मृत्यु का खतरा पैदा करती है। एक स्थान से टूटने का तात्पर्य है भयंकर रोग व बार-बार टूटने का मतलब है निरन्तर बीमार रहना।

हथेली में एक बड़ा-सा व्रत बनाते हुए चन्द्र पर्वत को स्पर्श करने का मतलब है शतायु; पर गुरु पर्वत के नीचे विशृंखलित होने का अर्थ है प्रारम्भिक जीवन में बालारिष्ट रोग, जंजीरदार रेखा शरीर की कोमलता की परिचायक है। पतली रेखा पर धब्बा अकस्मात् मृत्यु देता है। कहीं मोटी, कहीं पतली अस्थिरता व चंचलता की प्रतीक है तथा मोटी व लाल रेखा हिंसा, मानसिक बर्बरता की द्योतक; पर कहीं मोटी व कहीं पतली वह लाल रेखा रोग व ईर्ष्या देती है। जीवन रेखा से निकली कुछ रेखाएं शनि क्षेत्र के केन्द्र तक बिना बाधा के पहुंचने का अर्थ है इच्छापूर्ति; पर इसी के साथ मजबूत सूर्य इस गुण को और बढ़ाता है।



चित्र 51—जीवन रेखा

जीवन रेखा को काटती हुई आड़ी रेखाएं भिन्न रोग देती हैं। मंगल पर पहुंचे आड़ी रेखा तो रक्ताल्पता, सूर्य पर हृदय रोग व चन्द्र क्षेत्र पर जाए तो कफ-प्रधान रोग होता है।

जीवन रेखा को काटते हुए कोई रेखा चन्द्र पर पहुंचे और चन्द्र क्षेत्र दबा हुआ दुर्बल, निम्न व समतल हो या चन्द्र क्षेत्र किसी विशेष दोषयुक्त हो तो कोई ब्रीमारी जरूरी होती है। यह रोग मस्तिष्क सम्बन्धी, कामजनित, संग्रहिणी या आन्त्र शोथ सम्बन्धी हो सकता है। अगर जीवन रेखा व स्वास्थ्य रेखा एक-दूसरे को काटें तो गम्भीर रोग की पूरी आशंका बनी रहती है। यकृत विकार होता है और पाण्डु रोग उसे घेर लेते हैं।

शुक्र को जाती हुई रेखा निर्बल जीवन रेखा को काटे तो स्त्री से सम्बन्धित कष्ट होता है।

शीर्ष रेखा व जीवन रेखा पर परस्पर ज्यादा दूर रहना मानसिक कमजोरी का परिचायक है। खुद निर्मित योजना पर यकीन नहीं होता। शंकालु व ईर्ष्या वशीभूत रहने से कामयाबी नहीं मिलती, पर दोनों के पास-पास रहने का अर्थ है साहस, हठ, धैर्य, दृढ़ निश्चय व कार्य में सफलता।

जीवन रेखा व शीर्ष रेखा के बीच आड़ी रेखा इस प्रकार हो कि दोनों रेखाएं एक-दूसरे को काटती हों, तो परस्पर वैमनस्य भाव बढ़ता है। प्रायः वह लड़ाई-झगड़ों में फंसा रहता है। घर में प्रत्येक समय कलेश का माहौल रहता है।

मस्तिष्क रेखा से जुड़ी, जीवन रेखा से न होकर विशेषतः जब बीच की जगह छोटी-छोटी रेखाओं के जाल से भरी हो और जीवन तथा मस्तिष्क की रेखाएं भूरी व लाल हों—मूर्खता, विक्षिप्तता की द्योतक है।

अगर जीवन रेखा मणिबन्ध की तरफ जाती हुई हथेली से बाहर निकल जाए तो वह धन को नष्ट कर देती है; ऐसे लोग जिस उम्र में शाखाएं निकली हों, उस उम्र में अपने परिवार की सम्पत्ति भी खो देते हैं।

मस्तिष्क रेखा के साथ पास में जुड़ी हुई जीवन रेखा विवेक और दूरदर्शिता भरा जीवन खुद को प्रभावित करने वाली हर बात के लिए संवेदनशील रखती है।

जीवन, हृदय और मस्तिष्क की रेखाएं उदय स्थान पर जुड़ी हों, तो दुर्भाग्य और उग्र मृत्यु का अशुभ लक्षण समझें।

अंगूठे के पास विशेषकर अगर स्वास्थ्य और मस्तिष्क रेखाएं नक्षत्र द्वारा जुड़ी हों तो सन्तान नहीं होती।

लहरदार जीवन रेखा से युक्त मोटे शरीर का व्यक्ति, नेता होता है। पर

वह हर समय रोगी रहता है।

जीवन रेखा का टूटा-फूटा अन्त भाग्य रेखा से जा मिले तो जीवन के प्रति भारी खतरा सौभाग्य से टल जाता है।

कम गहरी या पतली रेखा भी प्राणशक्ति की न्यूनता को प्रदर्शित करती है। इसके कारण मनुष्य का स्वास्थ्य निर्बल रहता है, उसे भिन्न-भिन्न बीमारी घेरे रहती हैं।

जीवन रेखा जहां टूटती है, वहीं रोग का होना सम्भव है। अगर यह दूरी ज्यादा (अधिक) है तो रोग अवधि लम्बी होगी, लेकिन टूटने के स्थान पर एक व अधिक छोटी रेखाएं हों तो वे प्राणशक्ति को सबल बनाने में सहायक होती हैं। उनके प्रभाव से स्वास्थ्य बना रहता है।

जीवन रेखा से बाहर की ओर जाने वाली रेखाएं विदेशाटन की संकेतक हैं।

जीवन रेखा के साथ समानान्तर चलने वाली रेखाएं प्यार की भूख की संकेतक हैं।

जीवन रेखा की प्रशाखाएं अगर उंगलियों की तरफ जा रही हों, तो वह जितनी होगी, उतने ही पैतृक सम्पत्ति के भागीदार होंगे।

अंगूठे की तरफ जाने वाली प्रशाखा मित्रता और मातृ प्रेम की परिचायक है।

टूटी हुई या सदोष जीवन रेखा के साथ उंगलियों के सिरों का चौड़ा होना निष्क्रियता की परिचायक है। कार्यशक्ति क्षीण होती है। ऐसे लोग स्वस्थ रहते हुए भी काम में अधिक थकान का अनुभव करते हैं।

अच्छे हाथ में, उदय-स्थान पर बहुत सादी और स्पष्ट शाखा पुंज आत्मिक न्याय और निष्ठा का कारक है। लेकिन निकृष्ट हाथ में उदय स्थान में शाखाएं दर्प अनिश्चितता, विलक्षण कल्पना का कारण बनती हैं।

जीवन रेखा बढ़ते-बढ़ते रुक जाए तो मृत्यु समझें। जीवन रेखा धुंधले और सफेद दाग, स्नायु दुर्बलता का कारण बनती है।

जब जीवन रेखा का अन्त सर्प गिठा के आकार वाला हो, और उसकी एक शाखा भाग्य रेखा से मिले तो धारक आलसी, निस्तेज और निरूत्साही होता है। ऐसी हालत में भाग्य रेखा आगे मुड़कर बढ़े तो भाग्योदय मानना चाहिए।

जीवन रेखा से तर्जनी की ओर जाने वाली रेखाएं लाभ की संकेतक हैं।

जीवन रेखा व अंगूठे के बीच किसी चतुष्कोण वर्ग का होना विषैले कीड़ों का डर होना प्रदर्शित करता है। सर्पदंश सम्भव है।

हाथ के सिरे से शुरू उदय स्थल पर शाखापुंज अस्थिरता का प्रतीक है।

जीवन रेखा के ठीक बीच में शाखापुंज क्षय रोग का परिचायक है, बीच

में शाखापुंज, एक शाखा चन्द्र पर्वत के आधार की ओर दृढ़ हाथ में अशान्ति की संतुष्टि व्यसनों से करता है। आखिरी सिरे तक शाखापुंज से वृद्धावस्था बिगड़ती है।

जीवन रेखा पर काले-काले धब्बे रोग के सूचक हैं व गहरे हत्या या अकस्मात् मृत्युसूचक सूखी त्वचा व सपाट और कटे-फटे चन्द्र पर्वत के साथ स्नायुविक रोगसूचक है।

अन्त में रेखा पर क्रॉस बुढ़ापा बिगाड़ देता है, योग्य चरित्रवान रोगी, पर रेखा द्वारा काटा गया क्रॉस कमजोरी देता है, मृत्यु के रोगी के समान दुःख होता है।

रेखा पर काले धब्बे किसी रोग के परिणामस्वरूप स्नायुविक कमजोरी देते हैं और नीचे की ओर जाती हुई रेखाएं स्वास्थ्य व धनहानि देती हैं।

जीवन रेखा पर आड़ी-तिरछी रेखाएं दिखाई दें तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य कमजोर होता है, अगर हृदय रेखा और जीवन रेखा के बीच त्रिभुज की आकृति हो जाए तो वह जातक दमे का रोगी होता है।

रेखा पर द्वीप हो, स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तो पित्तदोष व अपच रोग होते हैं।

जीवन रेखा पर वृत्त व धब्बे अन्ध योग देते हैं या हत्या की पुष्टि करते हैं। जीवन रेखा से कोई शाखा बुध पर्वत तक जाती है तो व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार करता है।

रेखा पर क्रॉस व नक्षत्र दुःखमय जीवन देता है। लेकिन यह सही है कि वास्तविक जीवन रेखा वही है, जो अंगूठे के मूल स्थान के शुक्र क्षेत्र का घेरा करती है। इस रक्तवाहिनी का सीधा सम्बन्ध हृदय, पेट, नाड़ी, अन्य प्रमुख शारीरिक इन्द्रियों से होता है। इसी वजह से इसे जीवन शक्ति रेखा भी माना जाता है। शरीर की प्रमुख इन्द्रियों से इसका सम्बन्ध होने की वजह से मनुष्य की उम्र की गणना भी इसके द्वारा होती है और रोगों का पता लगता है।

निर्दोष जीवन रेखा उसे माना जाता है, जो लम्बी सुस्पष्ट हो उसमें कोई अनियमितायें न हों और कहीं भी टूटी-फूटी न हो। रेखा की ऐसी बनावट के परिणामस्वरूप मनुष्य दीर्घायु जीवन-शक्ति से पूर्ण, सशक्त शरीर वाला और नीरोग होता है। जीवन रेखा पेट और जीवन सम्बन्धी इन्द्रियों का प्रतिनिधित्व करती है अगर वह निर्दोष और बलवती हो, तो पेट और हाजमा बिल्कुल ठीक रहते हैं। अगर जीवन रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो, और जंजीराकार हो, तो स्वास्थ्य कमजोर रहेगा, पेट खराब रहेगा और मनुष्य में जीवन-शक्ति की कमी होगी।

करतल हर एक रेखा तथा चिह्न दो पार्ट अदा करते हैं। एक तो यह कि मनुष्य को अपने पूरे जीवन में किस रोग का शिकार होने की सम्भावना है और दूसरा यह है कि रोग जीवन के किस भाग में गम्भीर रूप धारण करता है। प्रकृति की इस विचित्र बात को समझने के लिए कीरो ने जीवन रेखा को उपयुक्त भागों में बांटा है।

सबसे पहले महत्त्वपर्ण जीवन रेखा के गुणों को जान लेना आवश्यक है। कुछ हाथों में जीवन रेखा चौड़ी और छिछली होती है। अन्य हाथों में वह गहरी व पतली होती है। चौड़ी और छिछली रेखा को देखकर कुछ लोगों का अनुमान होता है कि वह अच्छे स्वास्थ्य और सबल शरीर का द्योतक है, लेकिन वास्तव में गहरी और पतली रेखा इस विषय में अधिक गुणकारी मानी जाती है। चौड़ी रेखा उन लोगों के हाथ में पायी जाती है जिनमें पाशविक शक्ति ज़्यादा होती है। यह रेखा बुरे कामों में तत्परता दिखाने के लिए प्रेरित करती है। डाकू-चोर, व्यभिचारी और असामाजिक तत्वों की जीवन रेखा चौड़ी या मोटी लकीर लिए होगी। गहरी रेखा उन लोगों के हाथों में होती है जो साहसी होते हैं, जिनमें सहनशक्ति और इच्छाशक्ति की प्रबलता होती है। गहरी रेखा वाले लोगों में चौड़ी रेखा वाले लोगों की अपेक्षा किसी बीमारी या मुसीबत का सामना करने की अधिक क्षमता होती है। चौड़ी रेखा मांसपेशियों की शक्ति की तरफ संकेत करती है और गहरी रेखा इच्छाशक्ति बलवान होने की संकेतक होती है।

अगर जीवन रेखा जंजीराकार हो तो निर्बल स्वास्थ्य की द्योतक होती है, विशेषकर जब हाथ कोमल हो। अगर हाथ कठोर तथा दृढ़ हो तो ज़ंजीराकार रेखा का अधिक बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है। क्योंकि कठोर और दृढ़ हाथ वाला मनुष्य सशक्त शरीर वाला होता है।

एक और महत्त्वपूर्ण सावधानी देने की बात यह है कि जीवन रेखा की बनावट कैसी है? वह या तो सीधी शुक्र क्षेत्र को जाकर उसके विस्तार को छोटा कर देती है या एक अर्द्धवृत्त का रूप लेकर शुक्र क्षेत्र को घेरती है। पहली परिस्थिति में मनुष्य कमजोर शरीर वाला होता है और आकर्षण शक्ति कम होती है।

शरीर से हाथ को रक्त ले जाने वाली रक्तवाहिनी नाड़ियों में सबसे महत्त्वपूर्ण नाड़ी (ग्रेट पामार्च) कहलाती है। वह खून को हाथ से अंगूठे के मूल तक ले जाती है और फिर उसको आर्च की दूसरी ओर वापिस ले जाती है। वह दूसरा स्थान जीवन रेखा के नीचे होता है। इसीलिए कमज़ोर शरीर वालों के हाथ में रक्त बलवान् होता है।

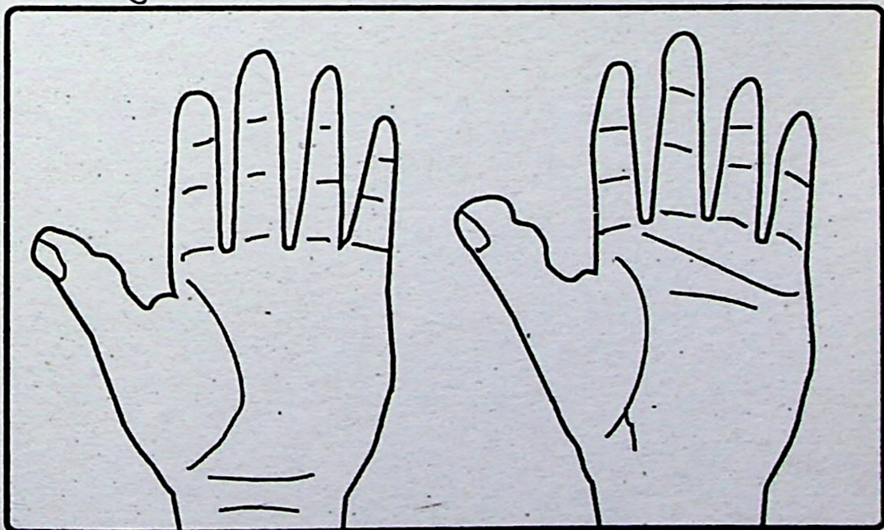
अतः पामार्च का घेरा बड़ा होता है। यही वजह है कि जब शुक्र क्षेत्र अधिक

विस्तृत होता है जो मनुष्य में कामुकतापूर्ण पाशविक स्वभाव की उस हाथ वाले मनुष्य से अधिकता होती है जिसमें शुक्र क्षेत्र संकीर्ण होता है। जब जीवन रेखा अर्द्धवृत्त आकार में शुक्र के स्थान को घेर लेती है और उसे विस्तृत कर देती है तो मनुष्य में शुक्र क्षेत्र के गुणों का प्रभाव पड़ता है। उसमें प्रेम करने की कला और कल्पनाशीलता और रोमांटिक आदतें आ जाती हैं। अगर जीवन रेखा सीधी हो और शुक्र क्षेत्र को संकीर्ण कर दे, तो जातक में शुक्र के गुणों की कमी आ जाती है।

अगर जीवन रेखा अपने शुक्र में बृहस्पति क्षेत्र की ओर ऊपर उठ जाती है तो मनुष्य को अपने ऊपर अधिक नियन्त्रण की क्षमता होती है और वह महत्त्वाकांक्षी होता है। जब रेखा करतल में नीचे की तरफ मंगल क्षेत्र की तरफ शुरू हो तो मनुष्य का स्वभाव तेज हो जाता है—और वह उस पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। वह झगड़ालु और अनुशासनहीन होता है। वह महत्त्वाकांक्षी भी नहीं होता।

ऊपर की तरफ जाने वाली रेखाएं

जीवन रेखा से जब कई रेखाएं ऊपर उठती हैं, चाहे वह छोटी ही क्यों न हों तो यह पता चलता है कि व्यक्ति का जीवन शक्ति से भरा हुआ है और जिस-जिस स्थान से ये रेखाएं ऊपर उठती हैं जीवन के उन भागों में मनुष्य अपने भाग्य को सुधारने की कोशिश करता है।



चित्र-52 *चित्र-53*

जब ये रेखाएं उठकर बृहस्पति क्षेत्र की ओर आती हों तो यह समझ लेना चाहिए कि मनुष्य के मन में ऐसी उन्नति करने की आकांक्षा उत्पन्न हो गयी है, जिससे वह दूसरों के ऊपर अधिकार प्राप्त कर सके।

अगर कोई रेखा जीवन रेखा से उठकर मस्तिष्क रेखा पर रुके तो ऐसा योग इस बात का प्रतीक है कि किसी बौद्धिक गलती से या गलत फैसले की वजह से मनुष्य के प्रयत्न में कामयाबी हासिल करने में बाधा पड़ गयी है—और जीवन रेखा से उठी हुई कोई रेखा हृदय रेखा पर समाप्त होती है, तो यह अर्थ होगा कि प्रेम या स्नेह की वजह से मनुष्य सफलता प्राप्त करने में विघ्न उपस्थित हो गया है।

अगर इन उठती हुई रेखओं में से कोई भाग्य रेखा में मिल जाती है तो वह संकेत करती है कि उस वक्त से जब वह जीवन रेखा को छोड़ती है मनुष्य अपना भाग्य सुधारने का प्रयत्न करता है, और उन हालातों से जिनमें वह घिरा होता है, अपने आपको आजाद करता है। कीरो का मत है कि समय का अनुमान भाग्य रेखा पर उस स्थान से करना चाहिए, जो जीवन रेखा से उठती हुई रेखा के स्थान से बिल्कुल सामने पड़े। ऐसी रेखा का भाग्य रेखा से मिलना बहुत सौभाग्यपूर्ण लक्षण है। जो सुखद घटना जीवन रेखा से उठती हुई रेखा के समय होती है, वैसी ही घटना एक निश्चित समय के पश्चात् मनुष्य के जीवन में फिर घटित होतीं है। उदाहरण के लिए, अगर ऐसी उठती हुई मनुष्य के 26वें वर्ष से देखी जाती है; तो वैसी ही घटना फिर घटित होगी जब वह 52 वर्ष का होगा।

इस निशान का अर्थ और भी निकाला जाता है। वह यह कि जातक उस समय अपने घर और सम्बन्धियों के बन्धन से आजाद होकर अपनी पसन्द की लड़की से शादी करता है।

अगर कोई रेखा भाग्य रेखा से अलग रहकर शनि क्षेत्र की तरफ जाए तो वह दूसरी भाग्य रेखा बन जाती है।

❑❑❑



भाग्य रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

भाग्य रेखाओं को हाथ की मुख्य रेखाओं में से एक माना गया है। हस्तरेखाओं के अध्ययन में इसका अपना विशेष स्थान है। इसके द्वारा मनुष्य की जीवन-वृत्ति का ज्ञान होता है। उसके जीवन यापन का माध्यम क्या है? साथ ही यह रेखा भविष्य के कार्यों का भी संकेत देती है कि जातक के जीवन में किस प्रकार के उतार-चढ़ाव आते हैं। जब यह रेखा धुंधली और अस्पष्ट हो तो जातक का भाग्य धुंधला और अंधकारयुक्त रहता है। कुछ के हाथ में स्पष्ट होने पर भविष्य के संकेत साफ-साफ स्पष्ट रहते हैं।

भाग्य रेखा निम्नलिखित स्थानों से आरम्भ हो सकती है—

(1) चन्द्र क्षेत्र से।

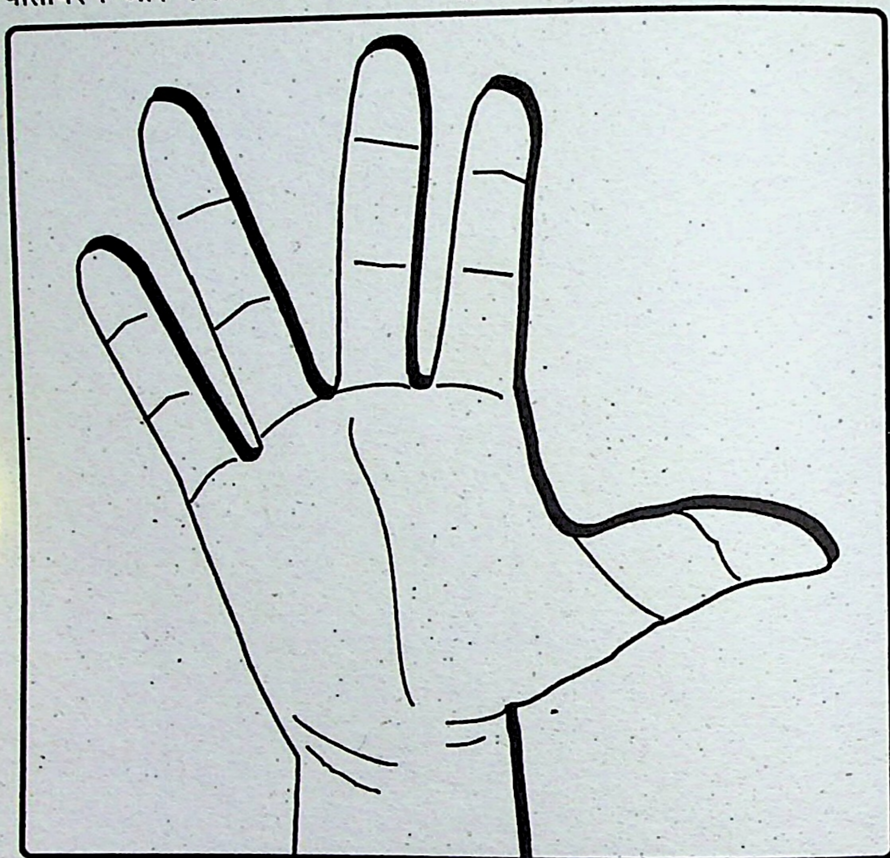
(2) मणिबन्ध से।

(3) जीवन रेखा से।

(4) करतल के मध्य से।

अगर भाग्य रेखा जीवन रेखा से आरम्भ हो तो जातक अपनी निजी कोशिशों और योग्यता एवं कठिन मेहनत द्वारा जीवन में कामयाबी प्राप्त करता है। ऐसे जातक का प्रारम्भिक जीवन कठिनाइयों से भरा होगा और उसके पास का

वातावरण और परिस्थितियां उसके प्रतिकूल होंगी।



चित्र 54—भाग्य रेखा

उस समय उसके माता-पिता या सगे-सम्बन्धी उसके अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए उसके मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करेंगे। अगर जीवन रेखा से मिलकर भाग्य रेखा सुस्पष्ट और बलवान बनकर आगे बढ़ जाए तो मनुष्य उन कठिनाइयों पर विजय पाकर अपनी मेहनत और योग्यता से कामयाबी प्राप्त करेगा। वह भाग्य पर भरोसा रखकर चुपचाप नहीं बैठा रहेगा। जिस समय भाग्य रेखा जीवन रेखा से अलग हो, उस समय का भाग्य रेखा से अनुमान लगाया जा सकता है और वह समय वही होगा जब मनुष्य अपने सम्बन्धियों के बन्धन से आजाद होकर जीवन शुरू करता है।

जब भाग्य रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होती है और करतल के बीच से होती हुई शनि क्षेत्र तक पहुंच जाती है और उसी वक्त सूर्य रेखा सुस्पष्ट बनी हो तो

मनुष्य का जीवन प्रतिभा, सौभाग्य और सफलता से परिपूर्ण होता है।

अगर भाग्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से शुरू हो तो जातक का भाग्य घटनापूर्ण परिवर्तनशील होता है और दूसरों की गतिविधियों पर अवलम्बित होता है।

अगर चन्द्र क्षेत्र से शुरू हुई भाग्य रेखा हृदय रेखा से मिल जाती है तो यह योग इसका सूचक है कि जातक को सौभाग्य और अत्यन्त सुखद वैवाहिक जीवन मिलता है। जिसमें आदर्श, रोमान्स और सौभाग्यपूर्ण परिस्थितियां अपनी पूरी भूमिका अदा करती हैं।

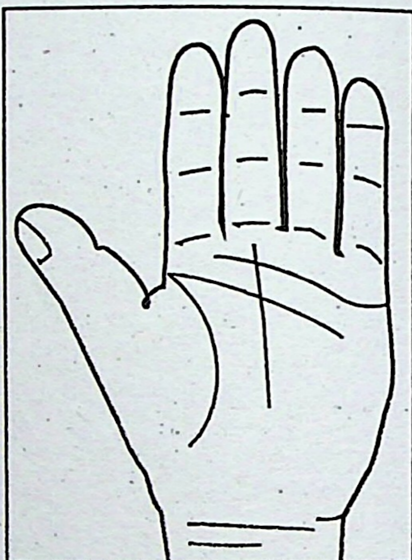
अगर मणिबन्ध से शुरू होने वाली भाग्य रेखा सीधी हो और चन्द्र क्षेत्र से आकर एक रेखा उसमें मिल जाए तो इसका यह मतलब होता है कि जातक की भाग्य वृद्धि किसी विपरीत योनि के मनुष्य की मदद से हुई है। जब चन्द्र क्षेत्र से आने वाली यह प्रभाव रेखा भाग्य रेखा से बिना मिले उसके साथ-साथ कुछ दूर तक चली जाए तो विपरीत योनि वाले व्यक्ति का प्रभाव मनुष्य पर उसी समय तक रहेगा जब तक प्रभाव रेखा के साथ चलती रहेगी। जब यह प्रभाव रेखा को काटकर कुछ दूर तक बृहस्पति क्षेत्र की ओर रुख करके चलती है तो यह समझना चाहिए कि जिस मनुष्य ने जातक पर प्रभाव डाला था, वह अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए किया था और अपना मतलब पूरा हो जाने पर उसने साथ छोड़ दिया। ऐसी रेखाएं ज्यादातर औरतों में पायी जाती हैं, जो प्रायः स्वार्थी लोगों के षड्यन्त्रों का शिकार बनती हैं। जब करतल में ऊपर की ओर बढ़ती भाग्य रेखा से निकलकर कोई शाखा बृहस्पति, सूर्य या बुध क्षेत्र की तरफ जाती है तो भाग्य पर उस क्षेत्र के गुणों का प्रभाव पड़ता है।

अगर शाखा बृहस्पति क्षेत्र की ओर जाए, तो मनुष्य को उत्तरदायित्व पूरी तरह दूसरों का अधिकार देने वाला उच्च पद प्राप्त होगा। यह घटना उस समय होगी, जब शाखा भाग्य रेखा से शुरू होगी। अगर शाखा बिल्कुल बृहस्पति क्षेत्र पर खत्म हो जाए तो यह असाधारण सौभाग्य और सफलता का योग है।

यदि शाखा सूर्य क्षेत्र की तरफ जाए तो मनुष्य धनवान होगा और सार्वजनिक जीवन में उसे प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। यह भी एक अपूर्व सफलता का योग है। अगर यह शाखा बुध क्षेत्र की तरफ जाए तो जातक को विज्ञान, व्यापार के क्षेत्र से अपूर्व सफलता प्राप्त होगी। अगर भाग्य रेखा अपने स्वाभाविक मार्ग पर शनि क्षेत्र पर जाने के बदले किसी और रास्ते पर मुड़ जाए तो मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन उस क्षेत्र के गुणों के अनुसार प्रभावित हो जाता है लेकिन इस योग में उतनी कामयाबी नहीं मिल पाती है जितनी उस परिस्थिति में होती है, जब उससे निकली शाखा किसी क्षेत्र की तरफ जाती है।

जब भाग्य रेखा बिना किसी शाखाओं के शनि क्षेत्र पर पहुंच जाती है तो ऐसी रेखा शुभ नहीं मानी जाती। ऐसी हालत में मनुष्य भाग्य का दास बन जाता है और परिस्थितियों की सड़क पर लोहे की जंजीर से बंध जाता है।

वह भाग्य की विडम्बनाओं का शिकार हो जाता है और उनका सामना करने में अपने को असमर्थ पाता है। उसको दूसरों से कोई मदद नहीं मिलती और उसका जीवन दुःखपूर्ण व्यतीत होता है।


चित्र-55

सौभाग्य भाग्य रेखा वह होती है जो बहुत गहरी अंकित न हो, सुस्पष्ट हो और उसके साथ में अच्छी सूर्य रेखा भी हो।

अगर भाग्य रेखा शनि क्षेत्र में प्रवेश होकर मध्यमा अंगुली के मूल तक पहुंचे तो यह एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण निशान होता है। मनुष्य जो भी करेगा वह उसके नियन्त्रण से बाहर हो जाएगा और वह जानने में असफल रहेगा कि कब और कैसे रोकथाम करें?

अगर भाग्य रेखा स्पष्ट रूप से हृदय रेखा द्वारा आगे बढ़ने से रोक दी जाए तो उसकी जीवन-वृत्ति गलत तरीके से प्रेम या स्नेह की वजह से बरबादी आ जाती है।

अगर भाग्य रेखा हृदय रेखा से मिल जाए और दोनों मिलकर बृहस्पति क्षेत्र की ओर बढ़ जाएं, तो दूसरों का प्रेम पाकर मनुष्य का अपना जीवन हर्षपूर्ण बना रहेगा और वह अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में सफल होगा। मित्रों द्वारा उसके भाग्य में वृद्धि होगी और उसे आर्थिक सहायता व लाभ होगा।

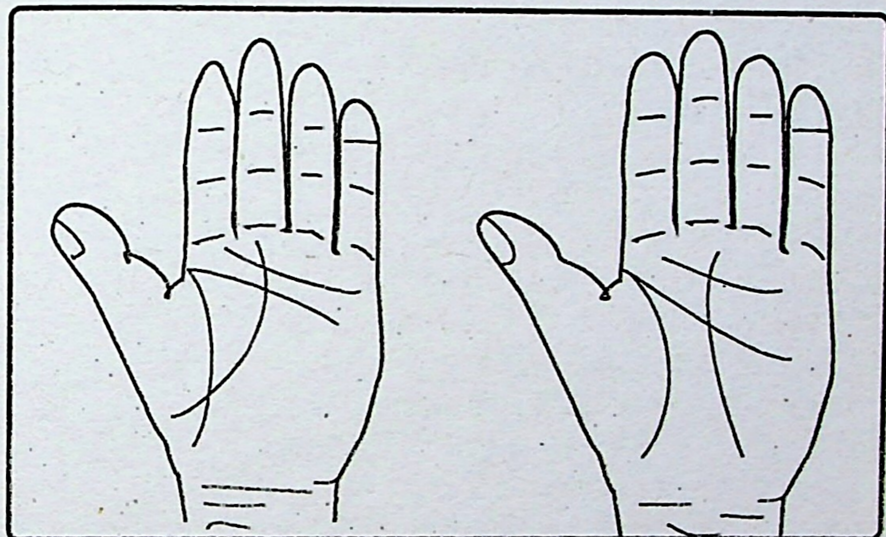
जब भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा द्वारा आगे से रोक दी जाए तो यह फल आदेश देना चाहिए कि जातक की अल्पबुद्धि और मानसिक विकारों द्वारा जीवन-वृत्ति में रुकावट आ गयी।

करतल के बीच को मंगल का मैदान कहते हैं, जब भाग्य रेखा वहां से शुरू होती है तो ऐसा योग इस बात की सूचना देता है कि मनुष्य का शुरू में जीवन कठिनाईपूर्ण रहा होगा और उसको अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा होगा।

अगर मंगल के मैदान से भाग्य रेखा शुरू हो और उसकी शाखा सूर्य क्षेत्र

की तरफ चली जाए तो मनुष्य बिना किसी सहायता के अपना भाग्य विधायक खुद बनेगा और अपने निजी पुरुषार्थ और योग्यता से धन-प्रतिष्ठा और कामयाबी हासिल करेगा।

अगर भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा से शुरू होती है तो मनुष्य का भाग्य-उदय देर से होगा। लगभग 35 वर्ष की उम्र के बाद और अपने मस्तिष्क की मदद से ही वह सफलता प्राप्त कर सकेगा।



चित्र-56 *चित्र-57*

जब भाग्य रेखा ऐसी हो कि उसकी एक शाखा शुक्र क्षेत्र की तरफ बढ़े और दूसरी चन्द्र क्षेत्र की तरफ तो मनुष्य का जीवन आवेश, रोमांस और उत्तेजना से पूर्ण होगा और इन गुणों का उसके भाग्य पर पूरा प्रभाव होगा।

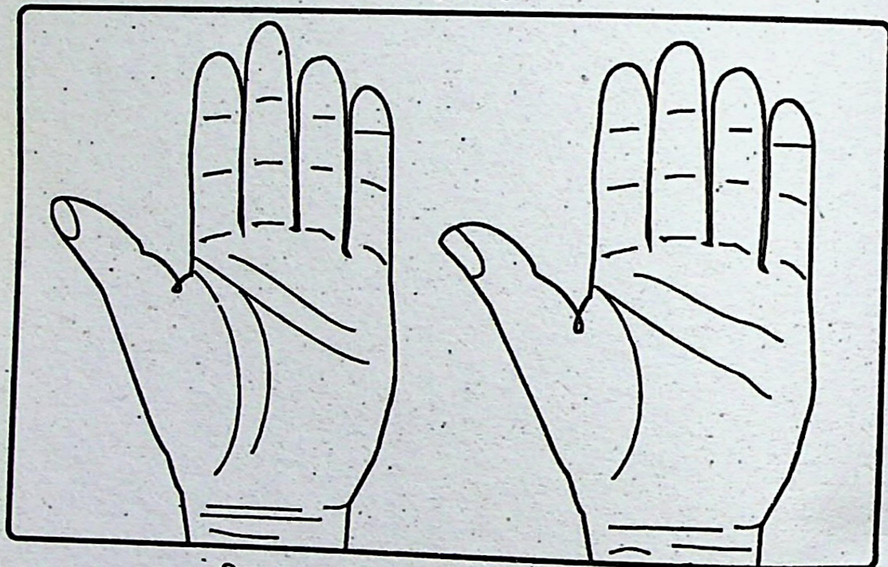
यदि भाग्य रेखा जीवन रेखा के अन्दर से शुरू हो तो मनुष्य की सारी जीवन-वृत्ति पर उत्तेजनात्मक प्रेम का प्रभाव पड़ेगा। इस यत्न में ऐसा होता है कि मनुष्य के प्रेम का झुकाव किसी विवाहित व्यक्ति की तरफ होता है, जिससे उसको प्रेम प्रतिदान नहीं मिलता, इस वजह से मनुष्य की जीवन-वृत्ति में बाधाएं पड़ती हैं। किसी औरत के हाथ में ऐसा निशान अत्यन्त दुर्भाग्यसूचक माना जाता है।

अगर भाग्य रेखा टूटी-फूटी हो या छोटे-छोटे टुकड़ों में बनी हो तो मनुष्य की जीवन-वृत्ति में कठिनाइयां और बाधाएं आएंगी और वह किसी भी काम पर स्थायी रूप से नहीं रह सकेगा। ऐसे लोगों को जीवन में सफलता नहीं मिलती।

अगर भाग्य रेखा किसी एक स्थान पर टूटी-फूटी हो तो वह एक अशुभ

निशान है। अगर टूटकर स्थान से ऊपर की ओर रेखा से नीचे से शुरू हो जिससे टूट का स्थान ढक जाए तो जातक के जीवन में बिल्कुल नया बदलाव आएगा और नई रेखा अगर अच्छी और सीधी हो तो यह बदलाव मनुष्य को जीवन में उन्नति देने वाला होगा।

अगर कोई रेखा छोटी-सी भाग्य रेखा से मिल जाए तो यह निशान उस समय पर मनुष्य के विवाह का सूचक है। अगर ऐसी प्रभाव रेखा भाग्य रेखा से मिलने के बदले उसके साथ चलती रहे तो मनुष्य प्रेम सम्बन्ध तो स्थापित करता है, लेकिन उसका विवाह नहीं होता है।



चित्र-58 चित्र-59

अगर कोई रेखा भाग्य रेखा के एक तरफ से शुरू होकर उसको काटती हुई मंगल क्षेत्र की तरफ चली जाए तो यह योग इस बात की सूचना देता है कि वह रेखा किसी ऐसे व्यक्ति का प्रभाव रखती है जो मनुष्य से नफरत करता है और उसकी जीवन-क्रिया को नुकसान पहुंचाना चाहता है।

अगर भाग्य रेखा दोहरी हो तो मनुष्य का जीवन भी दो तरह का होता है लेकिन अगर कुछ दूर चलकर ये दोनों रेखाएं मिलकर एक हो जाएं तो यह योग इस बात की सूचना देता है कि मनुष्य के दोहरे जीवन के पीछे कोई प्रेम प्रभाव छिपा हुआ है। जब तक वे रेखाएं अलग-अलग रहती हैं तो मनुष्य और उसके प्रेमी या प्रेमिका में वैवाहिक जीवन स्थापित नहीं होता, लेकिन जब रेखाएं मिल जाएं तो यह समझना चाहिए कि विघ्नदायक हालात खत्म हो जाते हैं।

अगर ये दोहरी भाग्य रेखाएं सुस्पष्ट हों और भिन्न क्षेत्रों की तरफ जाती हैं तो समझना चाहिए कि मनुष्य साथ ही साथ दो तरह की जीवन-वृत्तियों में संलग्न है, उनमें से एक कदाचित् शौक के लिए है और दूसरी व्यावसायिक है। अगर भाग्य रेखा बिल्कुल धुंधली या केवल नाममात्र की है तो मनुष्य भाग्य में विश्वास नहीं करता। ऐसे लोगों की मान्यता यह होती है कि जीवन में भाग्य नाम की कोई चीज़ नहीं, जो कुछ भी होता है वह कर्मों के अनुसार होता है।

अगर ऐसी भाग्य रेखा के साथ मस्तिष्क रेखा भी सुस्पष्ट और बलवान हो तो जातक को अपनी बौद्धिक क्षमता से जीवन में सफलता मिलती है। ऐसे लोगों के हाथ को देखकर भविष्य के सम्बन्ध में फल आदेश देना सम्भव नहीं होता। अगर हाथ में भाग्य रेखा हो ही नहीं और मस्तिष्क रेखा भी साधारण हो, तो ऐसे लोगों के भविष्य के विषय में कोई विशेष बात बताने को नहीं होती। कुछ का कहना है कि ऐसे निशान वाला अवैध सन्तान होता है।

अगर भाग्य रेखा में कोई रेखा शुक्र क्षेत्र में आकर मिल जाए और उस दूसरी रेखा के शुरू में द्वीप का निशान हो तो यह योग इस बात का परिचायक है कि वह औरत किसी मर्द द्वारा फुसलाये जाने पर उसके साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित कर लेती है।

अगर मंगल के मैदान में भाग्य रेखा पर कोई द्वीप हो, तो इस निशान से यह पता चलता है कि इस समय जातक का जीवन कठिनाइयों और संघर्षों में पड़ गया है जिनकी वजह से उसकी जीवन-वृत्ति समाप्त हो गयी है। यह निशान धनहानि का भी प्रमाण है।

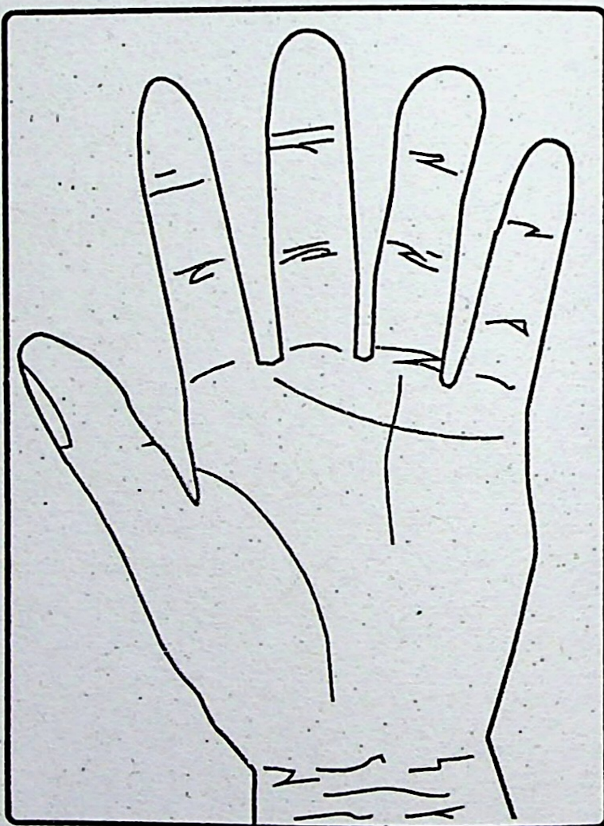
अगर द्वीप भाग्य रेखा और मस्तिष्क रेखा के मिलन स्थान पर हो तो यह निशान मनुष्य की मूर्खता और उसके मस्तिष्क विकार के कारण जीवन-वृत्ति में क्षति पहुंचने की सूचना देता है।

अगर भाग्य रेखा के अन्त में शनि क्षेत्र पर द्वीप हो तो यह समझना चाहिए कि मनुष्य को जीवन के अन्त में गरीबी और धनहीनता का सामना करना पड़ेगा। अगर भाग्य रेखा सहसा क्रॉस चिह्न के साथ खत्म हो जाए तो यह मृत्युसूचक चिह्न होता है। अगर भाग्य रेखा पर क्रॉस का निशान शनि क्षेत्र पर हो, तो यह चिह्न अधिक दुर्भाग्यवश होता है। तब तो व्यक्ति के भाग्य का अन्त अपमानजनक मृत्यु से होता है। बहुधा इस चिह्न का मतलब यह होता है कि मनुष्य के जीवन का अन्त फांसी के तख्ते पर होगा।

श्रम-शक्ति और परिश्रम बल से मनुष्य खुद ही अपने भाग्य का नियामक है। भाग्य का शुभ-अशुभ फल उसके पूर्वजन्म के कर्मों पर आधारित है। इसलिए

उसे प्रारब्ध कहा जाता है पर सामान्य धारणानुसार भविष्य में होने वाले सुख-दुःख को ही भाग्य समझना चाहिए।

भाग्य रेखा हाथ की प्रमुख रेखाओं में से एक है। यह रेखा हथेली के बीच भाग से या मणिबन्ध के ऊपर से या अन्य से आरम्भ होकर शनि क्षेत्र की ओर जाती है। इसे ऊर्ध्व रेखा भी कहा जाता है। कई बार भाग्य रेखा या उसकी कोई शाखा गुरु पर्वत तक भी चली जाती है पर वह जो भी हो, भाग्य रेखा कहलाने की अधिकारी नहीं, उसे सहायक रेखा भी कहा जा सकता है।



चित्र-60

हाथ में कई बार एक से ज्यादा रेखाएं भी दिखाई देती हैं, ऐसी रेखाएं किसी विशेष दिशा में व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले प्रयत्नों और सफलता-असफलता की परिचायक हैं। इनमें भी सबसे अधिक लम्बी, स्पष्ट सुडौल होती है, वह मनुष्य की भाग्य रेखा और शेष सहायक रेखाएं हैं।

यों इसे शनि रेखा भी कहा जा सकता है, कारण—इसका अन्त शनि क्षेत्र पर ही होता है।

जिन हाथों में यह रेखा कमजोर होती अथवा नहीं होती उन व्यक्तियों की उन्नति तो होती है, लेकिन उन्नति में भाई-बन्धु, कुटुम्बीजन या रिश्तेदार कोई मददगार नहीं होते। उसने जो कुछ पाया है वह खुद के प्रयत्नों से।

□□□



सूर्य रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

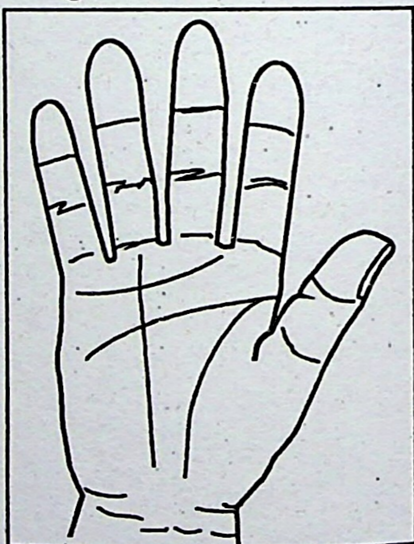
सूर्य रेखा एक खड़ी, सीधी और हथेली पर चन्द्र पर्वत के ऊपरी भाग से शुरू होकर सूर्य पर्वत की ओर जाने वाली रेखा है। यह कभी सूर्य पर्वत पर जाकर खत्म होती है और कभी सूर्य पर्वत पर पहुंचने से पहले खत्म हो जाती है। किसी मनुष्य के हाथ में अच्छी सूर्य रेखा देखते ही उसको कला, संगीत व अभिनय के साथ ही ऐसी विभिन्न कलात्मक प्रतिभाओं का धनी मान लिया जाता है।

सूर्य पर्वत की तरफ जाने वाली रेखा सूर्य सम्बन्धी गुणों और योग्यताओं की सूचक है। सूर्य-प्रधान जातक कुशाग्रबुद्धि होता है, इसलिए सूर्य रेखा प्रतिभा की द्योतक है और सम्बन्धित जातक को कला के क्षेत्र और कला सम्बन्धी व्यवसाय में धन और प्रसिद्धि दोनों प्रदान करती है। वे जिस किसी लोक या क्षेत्र को अपनाते हैं, उसी में अपनी प्रतिभा सिद्ध कर देतें हैं और प्रसिद्धि पाने में कामयाब होते हैं। सूर्य-प्रधान व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में प्रतिभावान हो सकते हैं इसलिए व्यक्ति अच्छी तरह समझने के बाद ही भविष्यकथन करने में सूर्य रेखा का सफलतापूर्वक उपयोग किया जा सकता है। यह उन शक्तियों की भी द्योतक है, जो व्यक्ति की योग्यता को किसी ऐसे काम या व्यवसाय को अपनाने के लिए प्रेरित करती है, जिसका कुछ फल मिले। इसमें कोई शक नहीं कि एक अच्छी सूर्य रेखा मित्र

बनाने, धन कमाने और दूसरों की अपेक्षा अधिक आसानी से प्रतिष्ठा अर्जित करने की विशेषताओं को प्रकट करती है। इसके इस स्वाभाविक और सामान्य फल को व्यक्त करते समय सम्बन्धित मनुष्य के विकसित लोक या भली-भांति अध्ययन करना भी आवश्यक है। उत्तम सूर्य रेखा दुर्लभ ही देखी जाती है, लेकिन जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह इसके फल को भी प्राप्त करता है। यह देखा गया है कि कई हाथों में सूर्य रेखा होती ही नहीं है।

एक उत्तम सूर्य रेखा का होना इस बात का द्योतक है कि जातक असाधारण प्रतिभाओं से सम्पन्न है और अगर हाथ के अन्य भाग भी उत्तम हों, तो वह संसार में निश्चय ही नाम कमाता है। सूर्य रेखा का आंकलन हस्तरेखा शास्त्र के प्रकाश में किया जाना चाहिए। एक शिथिल हाथ, अशक्त अंगूठा, खराब मस्तिष्क रेखा, मंगल, बृहस्पति, बुध, और शुक्र के निकृष्ट पर्वत या इसी तरह की अन्य कमियां एक उत्तम सूर्य रेखा के प्रभाव को खत्म कर डालती हैं। अतः सूर्य रेखा का मूल्यांकन करते हुए इन कारणों को भी ध्यान में रखना जरूरी होता है।

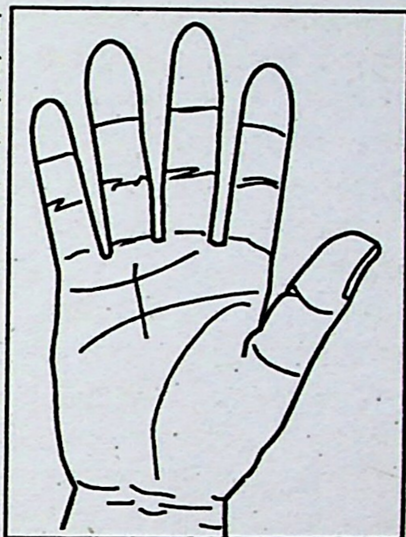
अगर उत्तम सूर्य रेखा के साथ कर्मशक्ति भी जुड़ जाए, तो असीमित सफलता पाना सम्भव है। यह कहना गलत है कि सूर्य रेखा के न होने का मतलब नाकामी से है; किन्तु यह सही है कि इस रेखा की मौजूदगी सफलता को आसान बना देती है। इस रेखा के विवेचन में उपर्युक्त तथ्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि सफलता शब्द का प्रयोग मनुष्य द्वारा अपने कर्मक्षेत्र में किये गये प्रयास या मेहनत के लिये किया जाता है। यह कर्मक्षेत्र कैसा होगा, इसका निर्धारण समूचे हाथ के तीनों लोकों की जांच और अंगुलियों के तीन पर्वों पर विचार करने के बाद किया जाता है।


चित्र-61

सूर्य रेखा भी शनि रेखा की तरह ही स्वास्थ्य के सम्बन्ध में कोई संकेत नहीं देती। खराब स्वास्थ्य का प्रभाव सूर्य रेखा को प्रभावित त[illegible] सकता है; किन्तु इस रेखा से स्वास्थ्य के संकेत नहीं मिलते।

रेखा की लम्बाई इसके प्रभाव की सीमा को निर्धारित करती है। रेखा जितनी

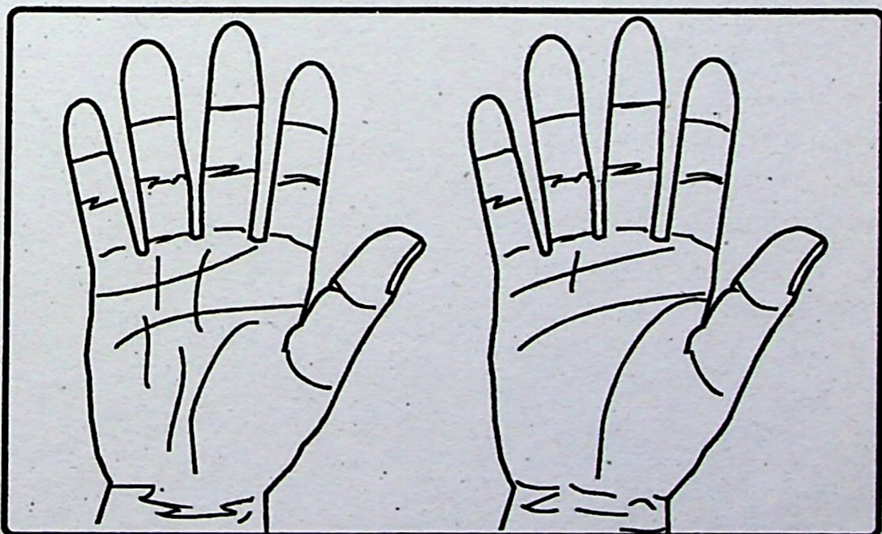
अधिक लम्बी होगी, व्यक्ति को उतना ही अधिक प्रभावित करेगी और छोटी रेखा प्रभाव की दृष्टि से उतनी ही कम महत्त्वपूर्ण होगी। कलाई से पर्वत तक जाने वाली सूर्य रेखा व्यक्ति के जीवन काल में निरन्तर बढ़ने वाली महान प्रतिभा की ओर इंगित करती है। ऐसा जातक अपने जीवन में बहुत कुछ पाने में कामयाब होता है।



चित्र-62

अगर रेखा नीचे से शुरू होकर कुछ ही दूरी तय कर पाती है तो इसका अर्थ होगा कि मनुष्य में प्रतिभा तो है, लेकिन कोई बड़ी सफलता दिलाने में ऐसी रेखा सक्षम नहीं होती।

अगर रेखा ऊपर-ही-ऊपर है और मस्तिष्क तथा हृदय रेखा के बीच के अन्तराल को भर देती है, तो जातक की विशेष प्रतिभा उसके जीवन के विकास काल के दौरान क्रियाशील रहेगी और संकट के समय को आसानी से पार करने में उसकी मदद करेगी।

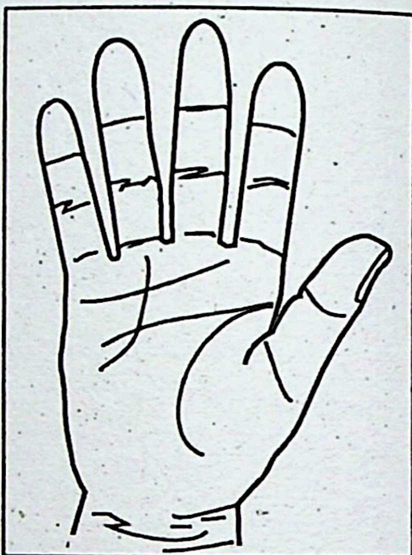


चित्र-63 चित्र-64

अगर सूर्य रेखा सूर्य पर्वत पर चढ़ जाती हो, तो जातक सूर्य-प्रधान

विशेषताओं से सम्पन्न होगा और जिस क्षेत्र में भी पांव रखेगा, उसी में अपनी प्रतिभा का परिचय देकर प्रतिष्ठा अर्जित करेगा।

शनि और सूर्य रेखाएं प्रायः अन्योन्याश्रित होती हैं और अनेक हाथों में यह देखा गया है कि इनमें से एक रेखा प्रबल और दूसरी दुर्बल होती है। इस तरह शनि और सूर्य रेखा सहायक रेखाओं के रूप में एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और एक-दूसरे को पूरा करती हैं।



चित्र-65

एक उत्तम सूर्य रेखा शनि रेखा की कमी को पूरा कर देती है। अगर सूर्य रेखा विद्यमान है, फिर एकदम लुप्त हो जाए और बाद में पुनः दिखने लगे, तो इसका मतलब यह होगा कि रेखा में आने वाले अन्तराल की अवधि के दौरान व्यक्ति की प्रतिभाएं अव्यक्त या प्रच्छन्न रहती हैं।

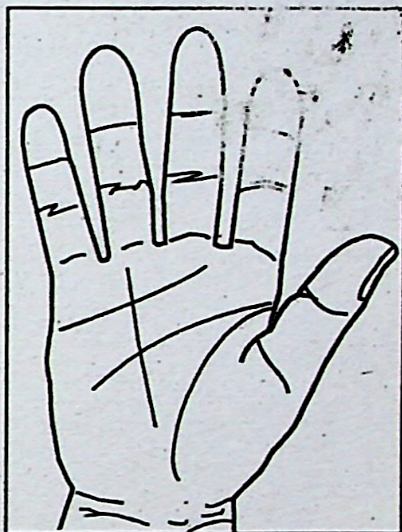
जब सूर्य रेखा हाथ के निकट चन्द्र पर्वत से शुरू हो तो इसका मतलब होता है कि मनुष्य कल्पना और भाषा शक्ति प्रखर है; और मस्तिष्क लोक प्रबलतम होने की दशा में उसको एक लेखक के रूप में सफलता प्राप्त करनी होगी। अगर उंगलियों के अग्रभाग नुकीले और उंगलियां चिकनी हों, तो मनुष्य काव्यप्रेमी होता है। अगर उसकी उंगलियां गंठीली हों या वर्गाकार हों, तो वह इतिहास, वीर-गाथाओं, ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना करता है।



चित्र-66

सूर्य रेखा की दिशा सूर्य पर्वत की ओर होनी चाहिए, क्योंकि इसी पर्वत-प्रकार के गुणों के प्रभाव से इस रेखा को उसका अर्थ एवं नाम मिलता है। सूर्य रेखा के अध्ययन में त्रुटि होने की आशंका आकस्मिक रेखाओं को सूर्य रेखा समझ लेने के कारण होती है। ऐसी आशंका से बचने के लिए उपाय यह

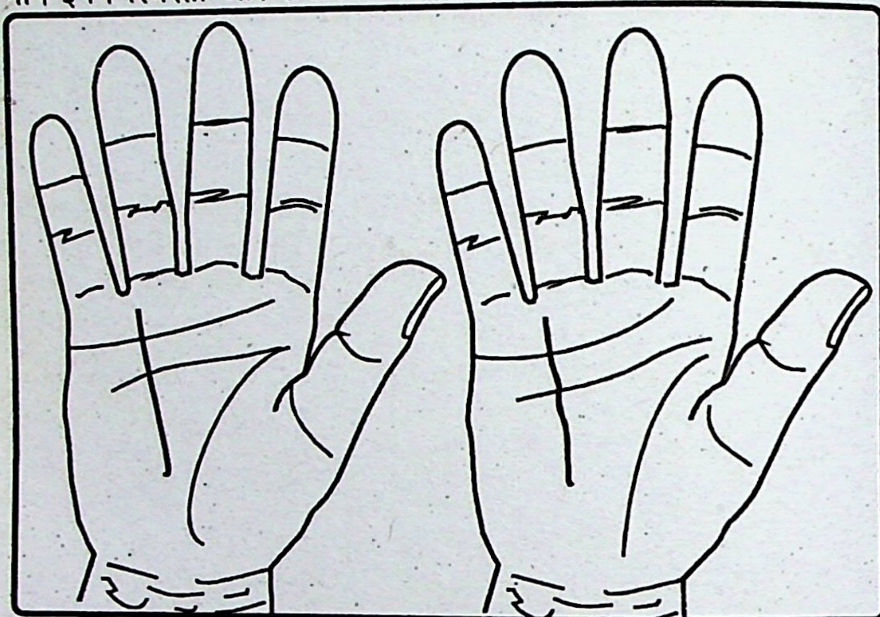
है कि सूर्य रेखा हाथ में चाहे आगे बढ़ते समय थोड़ा-सा मुड़ जाए, किसी स्थान पर रुक जाए, शाखाएं बनाएं या उसके साथ किसी स्थान पर आकस्मिक रेखाएं मिलकर उसे काट दें या उसकी शक्ति बढ़ायें लेकिन इस रेखा की सामान्य दिशा चन्द्र पर्वत की ओर जाने की होती है। उचित संयोजनों के साथ यह रेखा प्रख्यात महिला और पुरुष साहित्यकारों के हाथों में भी पायी जाती है। अगर उंगली का प्रथम पर्व सुविकसित और द्वितीय पर्व सबसे लम्बा हो तो जातक कलाकार होने के साथ ही अपनी प्रतिभाओं का उपयोग धन कमाने के लिए भी करता है, ऐसा मनुष्य व्यवसाय जगत में भी सफल रहता है और कलात्मक ढंग से धनार्जन करता है। यहां पर कलाकार का मतलब चित्र-कारी करने वाले व्यक्ति से नहीं है। मनुष्य एक कवि, अभिनेता, गायक या कला के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो सकता है। सूर्य-प्रधान व्यक्ति का यह विशेष गुण होता है कि वह हर उस चीज़ से प्रेम करता है, जो उसे देखने या अनुभव करने में अच्छी लगती है। अगर तृतीय पर्व सबसे लम्बा या विशेष रूप से मोटा हो और सूर्य रेखा गहरी हो तो इसका मतलब यह होता है कि वह व्यक्ति कलाकार नहीं है; क्योंकि प्राचीन श्रेष्ठ कलाकृति की अपेक्षा उसे सस्ती कलाकृतियों में अधिक रुचि होगी। उसे भड़कीले रंग व भड़कीली पोशाकें अच्छी लगेंगी, ऐसे जातक सिर्फ धनोपार्जक होते हैं। ये तीनों उदाहरण अंगुली के तीनों पर्वों की स्थिति में गहरी सूर्य रेखा के प्रभाव को प्रकट करते हैं। बारीक सूर्य रेखा मनुष्य की गुणवत्ता और महत्त्व में कमी लाती है। गहरी रेखा की तरह पतली रेखा में महान् सर्जनात्मक शक्ति नहीं होती। अगर जातक कलाकार हो तो उसे अन्य कलाकारों द्वारा बनायी गयी कलाकृति से ज्यादा प्रेरणा मिलेगी और मानसिक व्यावसायिक या भौतिक में से कोई भी लोक प्रभावी होने पर भी उसको प्रसिद्धि और धन कम ही मिलेगा।



चित्र-67

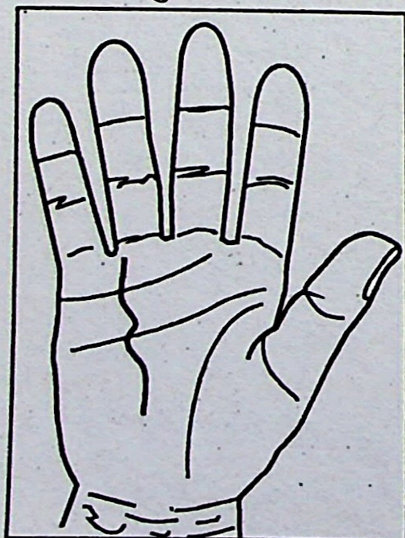
सूर्य रेखा के विशेष चिह्नों के रूप में पाए जाने वाले या इसकी निरन्तरता को नष्ट करने वाले दोष इसकी क्रिया में बाधा डालते हैं। अगर सूर्य रेखा चौड़ी और सतही सूर्य रेखा वाले मनुष्यों में सूर्य शक्ति या प्रभाव नाम मात्र को ही

होता है। गहरी, पतली हो तो मनुष्य को सफलताएं भी मिलती हैं और विफलताएं भी। इनमें स्थिरता और समानता भी नहीं रहती है।



चित्र-68 चित्र-69

ऐसे मनुष्य धन और प्रतिष्ठा दोनों प्राप्त करने का प्रयास करते हैं फिर भी निष्क्रियता की अवस्था में चले जाते हैं। कुछ समय बाद वे नये सिरे से कोशिशों में जुट जाते हैं। यह क्रम लगातार चलता रहता है ऐसे लोग प्रतिभाशाली और थोड़ी देर तक तेज गति से काम करने वाले होते हैं। ऐसे लोगों पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वे लगातार काम करेंगे या सफल रहेंगे। सूर्य पर्वत पर पहुंचने तक प्रबल रहने वाली सूर्य रेखा ही अन्तिम सफलता और प्रतिष्ठा का अधिक अनुकूल सन्देश देती है, क्योंकि जीवन के अन्तिम चरण में व्यक्ति के प्रयास अधिक सार्थक होते हैं। सूर्य रेखा का लहरदार होना यह दर्शाता है कि मनुष्य की जीविका अस्थिर और अनिश्चित रहेगी, वह

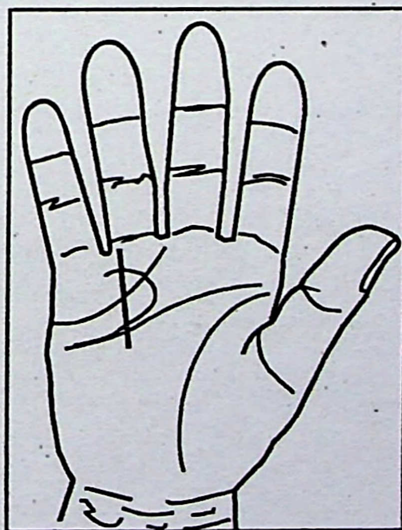


चित्र-70

चतुर होगा और अपने कार्यक्षेत्र में बहुत कुछ करने की योग्यता भी उसमें होगी, लेकिन उसके प्रयास अनियमित अस्थिर, अविश्वसनीय और उच्छ्रंखल होंगे। ऐसे मनुष्य बहुमुखी प्रतिभा वाले होते हैं, लेकिन अचानक विषय बदल देते हैं और एक दिशा में स्थिर रहकर कार्य करने के स्थान पर अपनी प्रतिभा और निपुणता को इधर-उधर की निरर्थक भाग-दौड़ में ही व्यय कर देते हैं। ऐसी रेखा का परिणाम अनिश्चित होता है।

अगर सूर्य की उंगली शनि की उंगली के बराबर या उससे अधिक लम्बी हो, तो यह जातक की गोताखोर प्रवृत्ति का द्योतक है। अगर उसकी मस्तिष्क व जीवन रेखाएं एक-दूसरे से बहुत दूर हैं तो अधिक आत्मविश्वास वाले ऐसे जातक की छलांग लगाने की ऐसी प्रवृत्ति और भी बढ़ जाती है। सूर्य रेखा में द्वीप चिह्न होने पर उसको धन की हानि के साथ-साथ प्रतिष्ठा की हानि का डर भी बराबर बना रहता है, अगर उपर्युक्त संयोजन के साथ-साथ सूर्य की उंगली का तृतीय पर्व भी लम्बा और मोटा हो तो ऐसा मनुष्य एक साधारण जुआरी होता है।

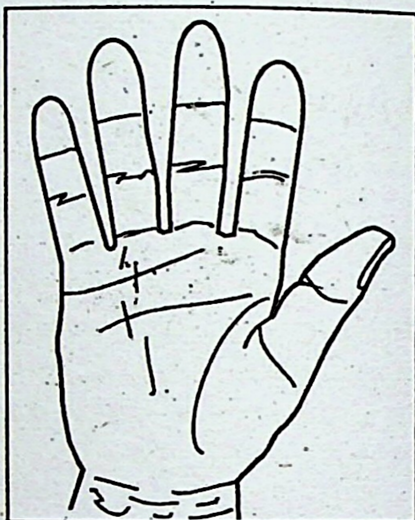
अगर बुध की उंगली टेढ़ी और ऐंठी हुई हो, हृदय रेखा बारीक हो या अनुपस्थित रहे और हाथ घटिया हो, तो ऐसा जातक लोगों को ठगने वाला और



चित्र-71

सूर्य रेखा से प्राप्त कुशाग्र बुद्धि का प्रयोग निकम्मे और निकृष्टतम कार्यों को करने वाला होता है। सूर्य रेखा को काटने वाली रेखाएं मनुष्य की सफलता में

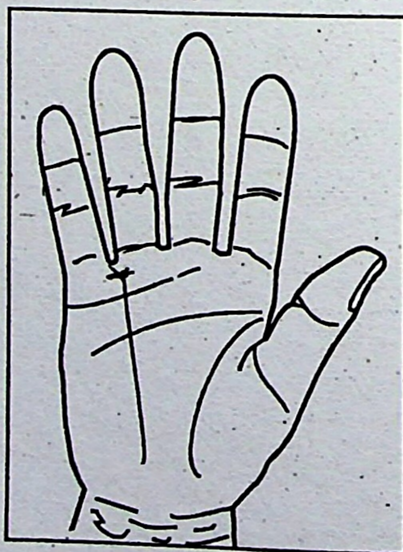
लगातार आने वाली अड़चनों की सूचक होती हैं। अगर सूर्य रेखा इन रेखाओं को काटती हुई जाती है तो मनुष्य सभी बाधाओं को पार कर लेता है।



चित्र-72

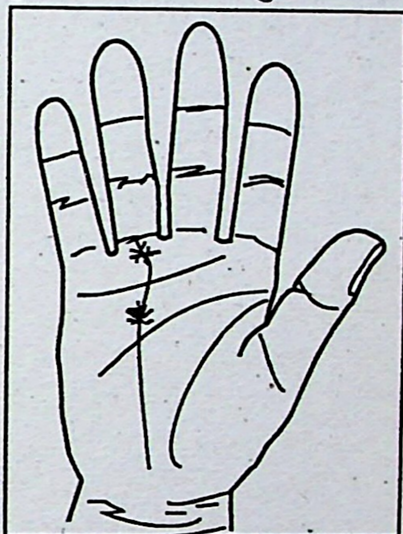
सूर्य रेखा में जगह-जगह अन्तराल या विच्छेद मनुष्य की उन्नति में बाधक होते हैं। इन्हीं बाधाओं की वजह से रेखा की उपयोगिता खत्म हो जाती है। ऐसी रेखा यह दर्शाती है कि जातक को कला से बहुत लगाव है, लेकिन वह उसका निर्माता या सर्जक कभी नहीं हो सकता। अगर वह धनाढ्य है तो कला का संरक्षक अवश्य हो जाता है। अगर व्यवसाय जगत प्रभावी हो तो ऐसे मनुष्य केवल आंशिक सफलता पा सकते हैं और रेखा के कुछ लाभकारी प्रभाव विद्यमान होने पर भी वे ऐसी गलतियां कर बैठते हैं जो उन्हें बहुत मंहगी पड़ती हैं।

एक उत्तम रेखा के अन्त में सूर्य पर्वत पर नक्षत्र चिह्न विद्युत-प्रकाश के समान होता है, ऐसे मनुष्य का भविष्य लोक प्रबल होने की दशा में वह एक कवि, [illegible], चित्र-कार, मूर्तिकार, अभिनेता अन्य व्यवसायों में महान् सफलता



चित्र-73

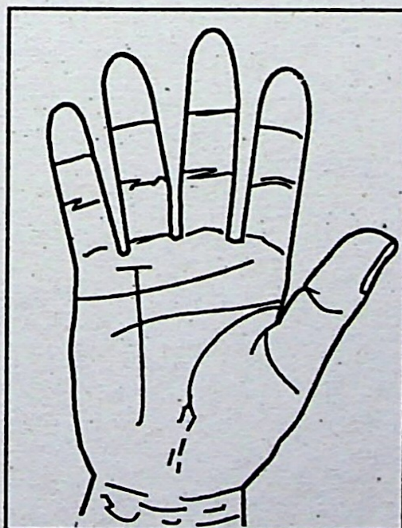
अर्जित करता है अगर जातक का सम्बन्ध व्यावहारिक जगत से हो तो, वह बड़ी तेजी और आसानी से धन कमाता है। वह जो भी काम करता है, लाभदायक होता है और उसका नाम भी होता है। अगर उसकी उंगली का तीसरा पर्व अधिक प्रबल है तो मनुष्य व्यवहार में बहुत परिष्कृत न होने पर भी अतुल धन कमा लेता है।



चित्र-74

अगर सूर्य रेखा पर दो नक्षत्र हैं तो मनुष्य में चौंका देने वाली प्रतिभा होती है और उसे महानतम प्रसिद्धि मिलती है। इन उदाहरणों में पहला नक्षत्र उस आयु को दर्शाता है, जिस आयु में मनुष्य को पहली महान् सफलता मिलती है; और रेखा के अन्त में दिखने वाला नक्षत्र चिह्न इस बात का इशारा देता है कि वह समृद्धि और प्रसिद्धि जातक के जीवन के अन्त तक बनी रहेगी।

अगर इस निशान के साथ जीवन रेखा पचास वर्ष के निकट दोषपूर्ण हो और आगे भी ऐसी ही रहे और रेखा के अन्त में गोपुच्छ द्विशाखा, द्वीप, नक्षत्र, गुणन चिह्न या अन्य दोष हों, तो मनुष्य उस आयु में अस्वस्थ रहता है और अस्वस्थता से कभी भी पूरी तरह ठीक नहीं हो पाता, जिसके फलस्वरूप उसकी भावी योजनाएं धरी-की-धरी रह जाती हैं।

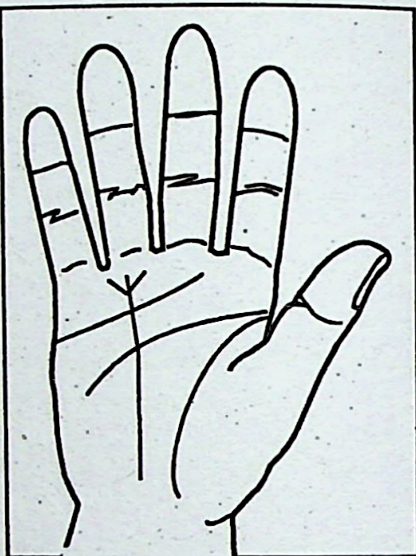


चित्र-75

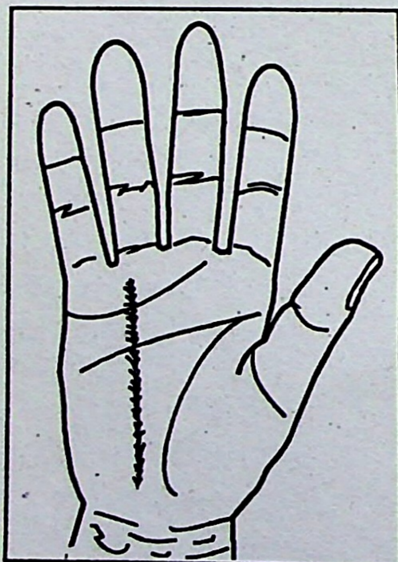
अगर सूर्य रेखा के अन्त में क्रॉस का निशान हो तो यह और भी खराब निशान माना जाता है। यह मनुष्य के मान-सम्मान को कलंकित कर देता है।

इस निशान के होने से मनुष्य की निर्णय लेने की शक्ति ठीक से काम नहीं कर पाती और वह जीवन में अनेक ऐसी गलती कर बैठता है, जिनकी कीमत उसे

चुकानी पड़ती है। अभी तक इस रेखा को उत्तम सूर्य रेखाओं के अन्त में देखा गया है और विचार किया है कि अगर यह निशान द्वोषपूर्ण और अस्पष्ट रेखाओं पर दिखाई दे तो इनके परिणाम की व्याख्या रेखा की गुणवत्ता में कमी के अनुपात के अनुकूल की जानी चाहिए।

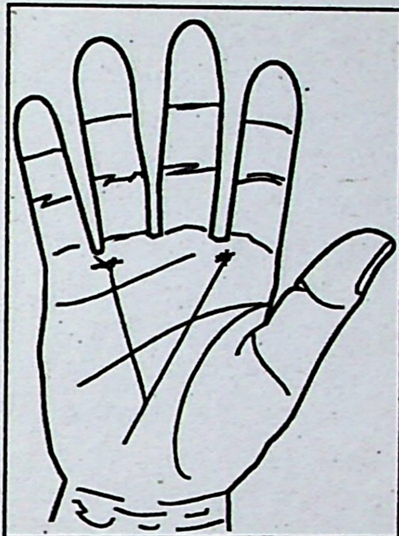

चित्र-76

अगर सूर्य रेखा अन्त में द्विशाखी हो जाती है तो इसका मतलब होता है कि मनुष्य अपनी प्रतिभा का उपयोग किसी एक दिशा में न करके एक से अधिक दिशाओं में करेगा, जिसके कारण उसके सारे प्रयास एक दिशा में केन्द्रित नहीं हो सकते हैं। सूर्य रेखा के अन्त में त्रिशूल का चिह्न उतना ही शुभ होता है। जितना कि एक प्रसिद्धि एवं धन-सम्पत्ति प्राप्त होने का संकेत है।


चित्र-77

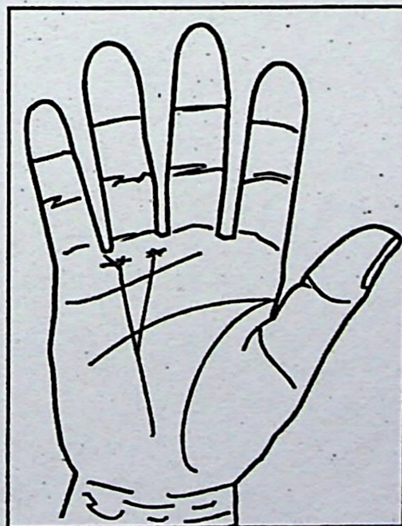
सूर्य रेखा से ऊपर की ओर निकली हुई शाखाएं या महीन रेखाएं सूर्य रेखा के अच्छे प्रभाव में वृद्धि करती हैं और मनुष्य की सफलता को और ज्यादा निश्चित बना देती हैं। मनुष्य अपनी कठिनाइयों को पीछे छोड़ता हुआ और आगे निकल जाता है, लेकिन रेखा से नीचे की ओर निकलने वाली रेखाएं यह दर्शाती हैं कि मनुष्य को सफलता पाने के लिए अधिक प्रयास करने पड़ेंगे। यह आसानी से मुश्किलों को पार नहीं कर सकेगा। ऐसी रेखा के ऊपर की ओर निकलने वाली शाखाएं भी जीवन को वैभवशाली बनाने में कोई वचन नहीं देतीं। सूर्य रेखा से जो शाखा निकलती है और दूसरी रेखाओं, चिह्नों या पर्वतों से जाकर मिलती हैं, उनमें से हरएक का कोई विशेष अर्थ होता है, जिसे उस स्थान से पढ़ा जा सकता है जहां वे समाप्त होती हैं।

सूर्य रेखा की बृहस्पति पर्वत को जाने वाली एक ऊर्ध्वगामी शाखा यह बताती है कि मनुष्य में महान् प्रतिभा के साथ-साथ प्रबल अभिलाषा और नेतृत्व की शक्ति भी है। ऐसे योग होने पर वह सफल होता है; और उसे धन-दौलत भले ही न मिले, प्रसिद्धि अवश्य मिलती है। अगर सूर्य पर्वत पर एक नक्षत्र चिह्न दिखाई दे तो उसे जरूर प्रसिद्धि मिलती है। इस तरह का निशान देखने पर हस्तरेखा शास्त्र सम्बन्धी लक्षणों का फौरन अध्ययन किया जाना चाहिए। कोमल हाथ, विशाल शुक्र पर्वत और उंगलियों के नुकीले अग्रभाग मनुष्य को संगीतकार बना देते हैं। उसको हृदयस्पर्शी और मार्मिक राग और गीत अधिक पसन्द होते हैं।



चित्र-78

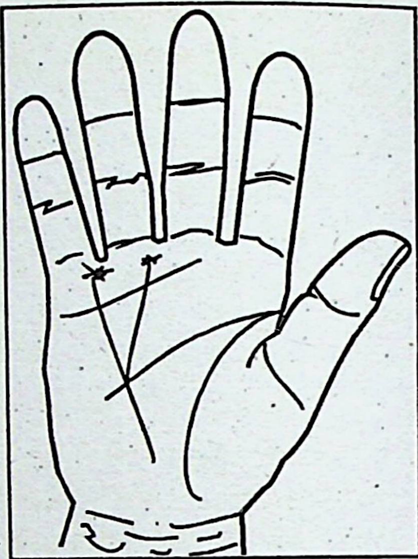
अगर शनि पर्वत को जाने वाली शाखा पर नक्षत्र चिह्न हो, तो उस पर्वत की विशेषताएं बड़ी सफलता दिलाने वाली होती हैं। इसके अलावा अगर सूर्य पर्वत पर भी एक नक्षत्र हो तो मनुष्य की सफलता और भी निश्चित हो जाती है। अगर व्यावहारिक लोक प्रभावी हो, तो जातक को अपने प्रयासों से धन-सम्पत्ति और प्रसिद्धि प्राप्त होगी, और अगर निचला प्रबल हो तो वह कंजूसी की हद तक मितव्ययी होता है। अगर अंगूठा कठोर हो, तो यह उसकी कृपणता का और भी पक्का प्रमाण होता है। अगर इस निशान के साथ-साथ हाथ भी घटिया हो तो मनुष्य में नीचता भी चरम सीमा तक होती है।



चित्र-79

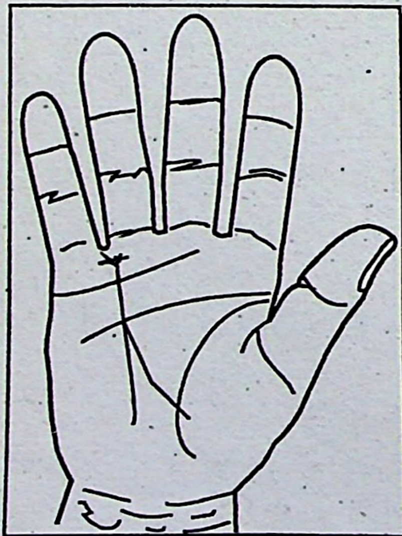
अगर सूर्य रेखा से कोई शाखा निकलकर बुध पर्वत तक जाए, तो उस पर्वत के गुण मनुष्य की सहायता करते हैं। मनुष्य चालाक और समझदार होता है, उसमें व्यवसाय की योग्यता होती है, उसकी सोच

वैज्ञानिक होती है, विचारों की अभिव्यक्ति करने की विलक्षण योग्यता होती है और इन सभी गुणों के अलावा सूर्य-प्रधान प्रतिभाओं के साथ वह किसी दिशा में प्रशंसनीय सफलता भी प्राप्त कर सकता है। अगर मस्तिष्क लोक प्रभावी हो, तो सूर्य व बुध परिवारीय जातक एक सफल लेखक या वक्ता होता है। अगर उसकी उंगलियां छोटी होंगी, तो वह अपने विषयों के निष्कर्षों तक फौरन पहुंच जाएगा, अगर हाथ लचीला होगा, तो वह काम करना पसन्द करेगा और बहुत कुछ हासिल करने में सफल होगा, मगर हाथ कोमल होने पर वह जितना सोचेगा उतना करेगा नहीं। अगर बुध की उंगली का द्वितीय पर्व लम्बा होगा, तो वह एक अच्छा चिकित्सक बनेगा, जब बुध पर्वत पर खड़ी रेखाएं हों, तो वह एक अच्छा वकील बनकर अपने मुकदमों को सुलझाने में न्याय और विधि विशेषज्ञता का उपयोग करेगा।



चित्र-80

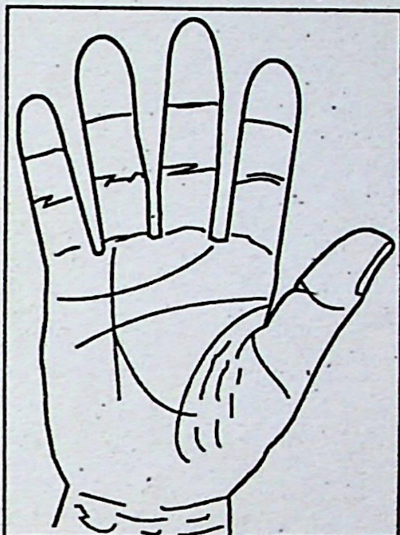
सूर्य रेखा से निकलकर किसी रेखा का प्रबल शुक्र पर्वत को जाना यह प्रकट करता है कि मनुष्य को सुमधुर और सुरीले संगीत का बहुत शौक है। उंगलियां वर्गाकार हों और उंगलियों के आगे का भाग चमचाकार होने पर उसे लय-ताल और तकनीक दोनों में श्रेष्ठता प्राप्त होगी। अगर इस तरह का हाथ कोमल या शिथिल संगीत वाला हो, तो मनुष्य संगीत सुनना तो पसन्द करेगा, लेकिन संगीत में निपुणता प्राप्त करने की पर्याप्त कर्मशक्ति उसके पास नहीं होगी। अगर सूर्य पर्वत पर एक नक्षत्र चिह्न देखाई दे तो उसे संगीतकार के रूप में महान् प्रतिष्ठा प्राप्त होगी अगर इस रेखा पर रेखा के अन्त में गुणन चिह्न, आड़ी रेखाएं, बिन्दु या अन्य दोष हों, तो उन्हें संगीत से सफलता



चित्र-81

के मार्ग में बाधाओं का प्रतीक समझना चाहिए

शुक्र पर्वत से निकलकर सूर्य रेखा के साथ चलने वाली प्रभावी रेखाएं जातक की सफलता में सम्बन्धियों द्वारा सहायता प्रदान करती हैं। इन रेखाओं को रिश्तेदारों से मिली वसीयत का नाम दिया जाता है। लेकिन इनका अभिप्राय केवल इसी मदद से नहीं है। यह रेखा वित्तीय सहायता के अलावा सहानुभूति, परामर्श और प्रोत्साहन की भी द्योतक है।


चित्र-82

सूर्य रेखा को आधार और मनुष्य के सन्दर्भ में सामंजस्य स्थापित करके हाथ की पूरी रूपरेखा की कई पहलुओं से व्याख्या करके महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। उत्तम रेखा दैदीप्यमान जीवन वृत्त की द्योतक है और इसके विवेचन में की जाने वाली त्रुटियों के कारण इस रेखा की गुणवत्ता पर परदा नहीं डाला जा सकता। यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए कि सूर्य रेखा का सम्बन्ध केवल कला से नहीं, बल्कि दैनिक जीवन के प्रत्येक व्यवसाय से होता है। इस रेखा को सिर्फ कला व्यवसाय से जोड़कर इसकी व्याख्या करना अनेक भ्रान्तियों को जन्म देता है, हमें इनसे बचना चाहिए।

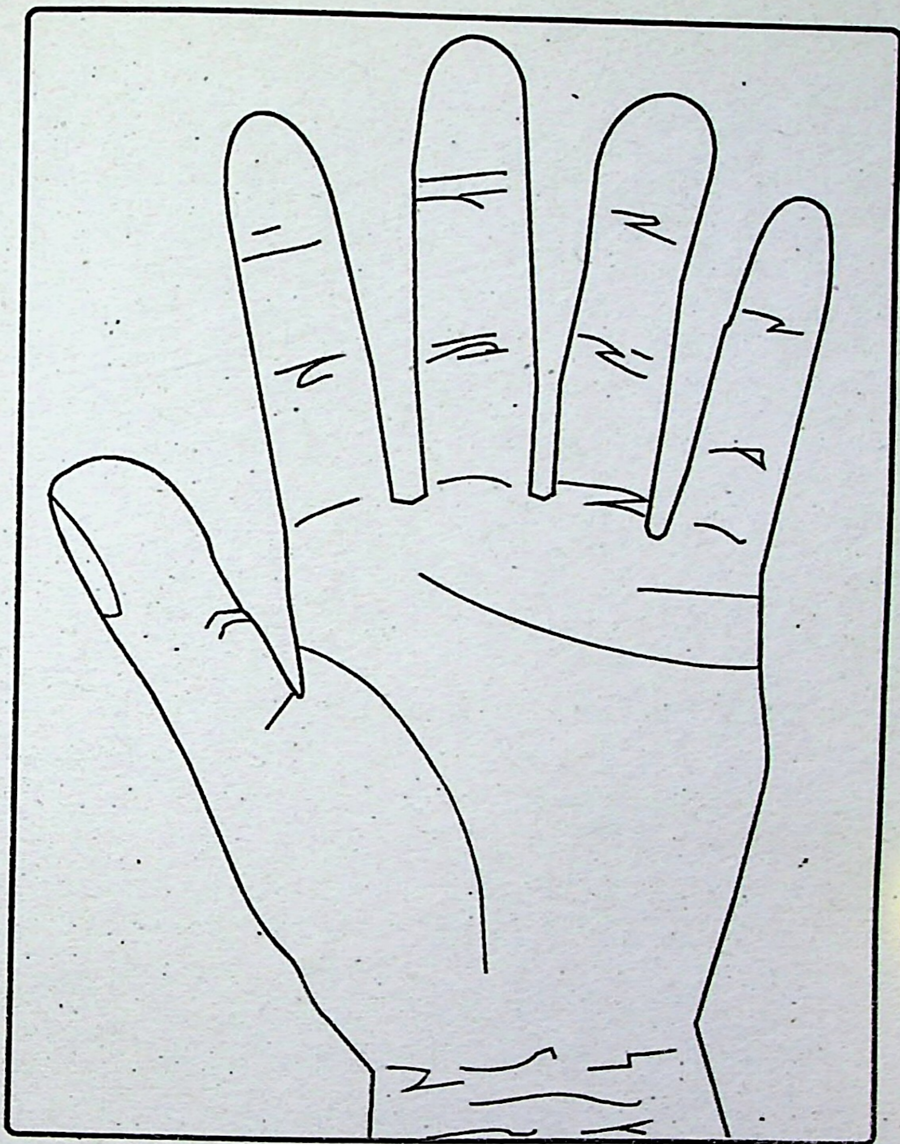
❑❑❑



विवाह रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

विवाह रेखा का अध्ययन करते समय पहले यह देखना जरूरी हो जाता है कि जातक का हाथ किस ग्रह से प्रभावित है, क्योंकि विवाह के विषय में अलग-अलग लोगों की अलग-अलग मान्यता और प्रभाव हैं। बृहस्पति ग्रह से प्रभावित व्यक्ति विवाह करता है, इन हाथों में छोटी आयु में ही विवाह रेखा स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाएगी। उसके विपरीत शनि-प्रधान व्यक्ति विवाह को पसन्द नहीं करेगा। ऐसे लोग अपने जीवन साथी से प्रेम नहीं करते। विवाह करने से पहले इनके किसी दूसरे से गहरे सम्बन्ध होते हैं। अतः इनके हाथ में यह "लगाव रेखा" जीवन के मध्य में पहुंचते-पहुंचते गहरी होकर "विवाह रेखा" में परिवर्तित होती है।

सूर्य-प्रधान व्यक्ति युवावस्था में प्रवेश करते ही विवाह करना पसन्द करेंगे; पर उनका वैवाहिक जीवन आनन्दमय नहीं होता, क्योंकि वे ऐसे आकर्षक व तेजस्वी जीवन साथी पसन्द करते हैं जो उनको अकसर मिलते नहीं। बुध-प्रधान व्यक्ति भी युवा होते ही विवाह करना चाहते हैं, पर वे बहुत नुकताचीनी के साथ, मीन-मेख निकालते हुए अपने जीवन साथी का चयन करते हैं। मंगल-प्रधान व्यक्ति वचन के पक्के व दृढ़प्रतिज्ञ होते हैं। मंगल और बुध-प्रधान व्यक्ति



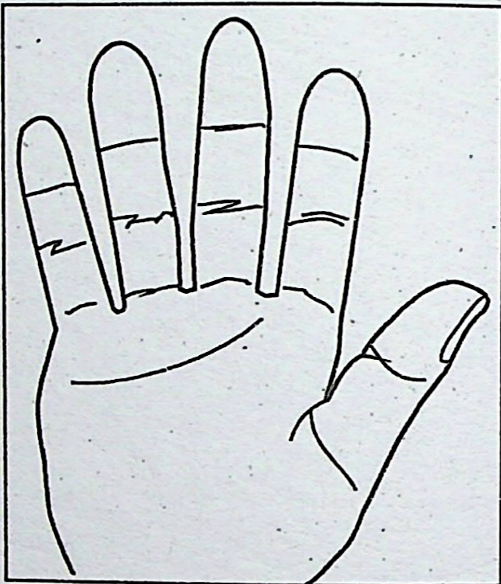
चित्र-83

भावनात्मक रूप से विवाह से जुड़े रहते हैं और कभी-कभी अनमेल विवाह से निराश भी हो जाते हैं। इनके हाथ में विवाह रेखा अधिक गहरी होती है। शुक्र-प्रधान व्यक्ति विवाह से दूर रहना चाहें तो भी नहीं रह सकते, क्योंकि विपरीत लिंगी हर समय इनको घेरे रहते हैं। शुक्र-प्रधान हाथ में इस रेखा की छोटी-सी

उपस्थिति भी "विवाह रेखा" की श्रेणी में आएगी। हालांकि ऐसे हाथों में विवाह रेखा प्रायः गहरी ही होती है।

अनेक हस्तरेखाविद् बुध पर्वत पर जितनी "लगाव रेखाएं" देखते हैं, उनको गिनते चले जाते हैं और मनुष्य को बताते हैं कि तुम्हारे इतने विवाह होंगे। इस प्रकार कहना गलत है।

इसलिए इस विज्ञान के बारे में पहले ही कोई प्रतिज्ञा मत करो, क्योंकि जब तक आपने हाथ ही नहीं देखा तो उसके बारे में पहले की प्रामाणिक भविष्यवाणियां क्यों करते हैं, यह भी पूछा जा सकता है कि विवाह को ही आप प्रधानता क्यों दे रहे हैं? सीधी-सीधी बात है विवाह का व्यक्ति के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव है। यह लगाव रेखा कभी सूर्य और शनि पर्वत पर पहुंचकर अपना पूरा प्रभाव ही बदल देती है।



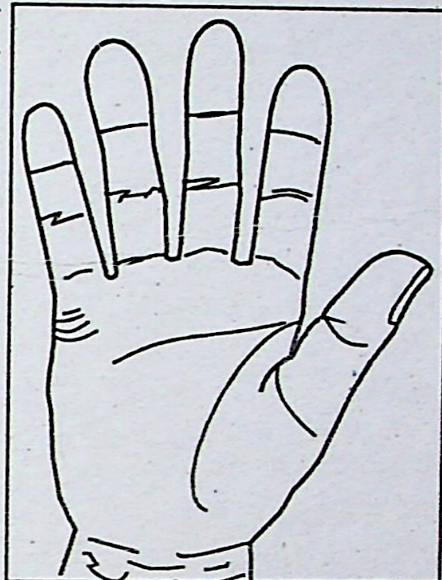
चित्र-84

इसलिए सबसे पहले यह देखना जरूरी है कि हाथ में विवाह रेखा है या नहीं। अगर कुछ भी नहीं दिखाई देती तो समझें कि जातक स्त्री या पुरुष में अब तक गहरे रूप से प्रभावित नहीं हुआ है। वह जातक जिसके हाथ में लगाव रेखा नहीं है, निश्चय ही हृदय रोग का बीमार होता है।

चित्र-की तरह अगर बहुत-सी विवाह रेखाएं बुध पर्वत पर दिखलाई दें तो जातक अत्यधिक भावुक होता है और दूसरों को दिल देने में अधिक उदार होता है। विवाह रेखा की गहराई और सूक्ष्मता से जातक के प्रेम प्रसंगों की गम्भीरता का पता चलता है। लगाव रेखाएं हमेशा आड़ी ही होती हैं और हथेली के बाहरी भाग से बुध पर्वत के अन्दर तक पहुंचती दिखलाई पड़ती हैं। अगर यह रेखा एक मात्र अकेली एवं गहरी हो तो ज़ातक का लगाव विपरीतलिंगी के प्रति गहरा है। यहां यह ध्यान रखना है कि "लगाव रेखा" अपने परिवार या किसी कुटुम्बी जन के प्रति वैषयिक वितृष्णा को बताती है।

अगर "लगाव रेखा" शुरू में ही द्विशाखी हो और चित्र-की तरह आगे चलकर

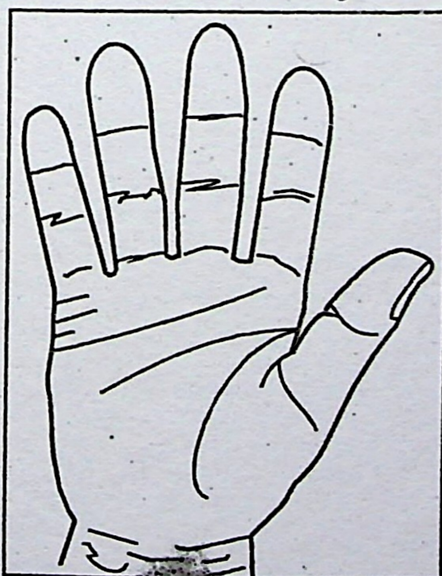
एक गहरी रेखा में बदल जाए तो यह बहुत गहरी अनुशक्ति की द्योतक है, जैसे विद्युत के दो भिन्न-भिन्न प्रवाह आगे चलकर एक हो गये हों। यह दुगुनी शक्ति से लगाव को प्रदर्शित करती है।



चित्र-85

यह पता लगाने के लिए कि यह लगाव कब से होगी और कब तक चलेगी, हृदय रेखा पर एक विन्दु लगाएं और बुध के पर्वत पर एक बिन्दु लगाऐं। मनुष्य की आयु निर्धारित करें। मनुष्य की औसत आयु निर्धारित करें। सत्तर वर्ष की आयु में है तो हृदय रेखा पर प्रारम्भिक मान बिन्दु 1 रखें और बुध पर्वत पर कनिष्ठिका मूल पर 70 का मानदण्ड रखें। इन दोनों रेखाओं के बीच 36 वर्ष का बिन्दु स्थापित रखें।

सबसे ऊपर वाली लगाव रेखा गहरी और उसके नीचे की कुछ रेखाओं को छोड़कर एक और रेखा भी गहरी हो तो यह समझें कि पहले का प्रेम अभी तक जातक के जीवन से गायब नहीं हुआ है। प्रत्येक लगाव रेखा का गहराई से अध्ययन करें। जो रेखा सबसे गहरी हो वही उसके सर्वाधिक लगाव की द्योतक है। यदि अन्तिम रेखा पतली है पर लम्बी है तो इसे आप जातक की विवाह रेखा ही समझें। ऐसे जातक ने विवाह अपने फायदे के लिए, रुपयों के लिए किया है न कि सच्चे प्रेम से प्रभावित होकर विवाह किया है।

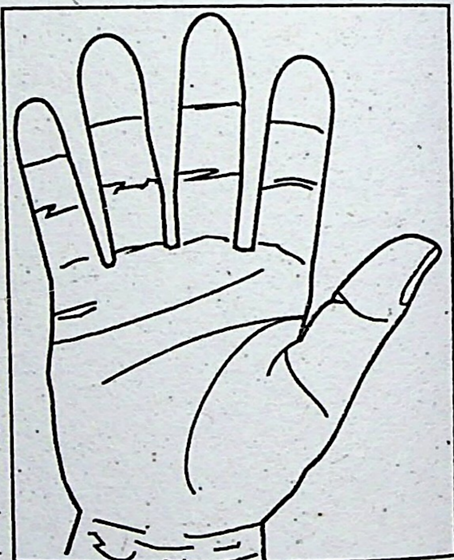


चित्र-86

अगर लगाव रेखा हाथ की अन्य रेखाओं की तुलना में पतली है तो निश्चित जानें, तो जातक को अपने जीवन साथी से गहरा लगाव नहीं है।

पति-पत्नी का स्वरूप भी एक दिखावटी छलावा होगा प्रेम के क्षणों में ये ठण्डे होंगे। अगले इनके हाथ में और भी लगाव रेखाएं दिखलाई पड़ें तो यह और भी चोंचलेबाज होंगे। तथा एक-दूसरे को गुमराह करते रहेंगे। अगर ऐसे जातक दिखने में खूबसूरत हों तो निश्चय ही अनेकों का दिल तोड़ेंगे। अगर हाथ में लगाव रेखा मोटी, जाली या जंजीरदार हो तो उसका अपने साथी के प्रति कोई लगाव नहीं होगा, अपितु वह स्वार्थी, कामुक और क्रूर महिला होगी।

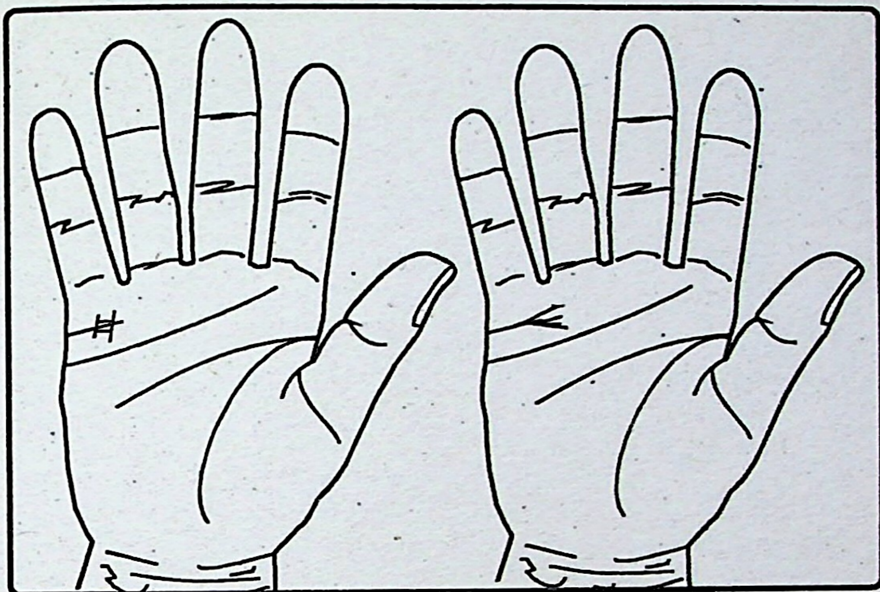
लगाव रेखा अगर सफेद रंग की हो तो मनुष्य प्रेम के मामले में ठन्डा व निरुत्साही होगा। जो रेखाएं शुद्ध एवं गहरे प्रेम को बताती हैं वे गुलाबी या लाल रंग की दोषरहित होंगी। ऐसी दोषरहित रेखा वाले जातक अपने प्रेमी को दिलोजान से चाहते हैं और उसके लिए किसी भी तरह का त्याग और कुर्बानी देने को तैयार रहते हैं। प्रेम में सच्चाई और साथ निभाने का वादा उनकी गर्वोक्ति होता है।


चित्र-87

अगर ऐसी गहरी रेखा निर्दोष और कटावरहित हो तो जातक अपने साथी का प्रारम्भ से लेकर अन्तिम समय तक पूरा साथ देगा। अगर यह रेखा शुरू अवस्था में गहरी हो और आगे चलकर धीरे-धीरे पतली हो जाए जैसे चित्र-में दिखाई गई है तो ऐसा मनुष्य भी धीरे-धीरे अपने साथी के लिए उदास हो जाता है। अगर चित्र-की तरह रेखा शुरू से पतली और फिर मोटी होती चली जाए तो इस रेखा की तरह मनुष्य शुरू में कम और फिर अपने प्रेमी को गहरा प्यार करता है।

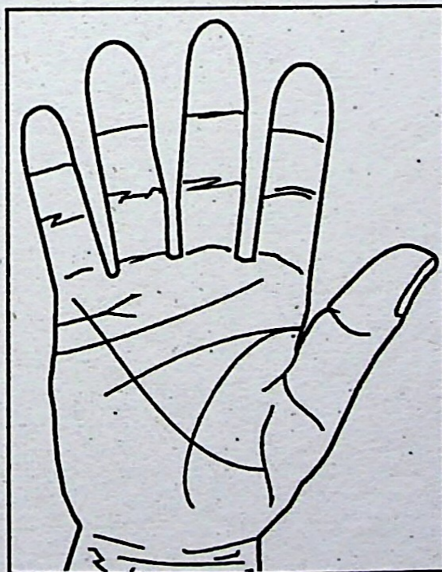
अगर लगाव रेखा पर संलग्न चित्र-की तरह कोई द्वीप दिखाई दे, तो प्रेमप्रसंगों के समय कोई अप्रिय घटना घटती है। अगर लगाव रेखा पर द्वीप-शृंखला दिखाई पड़े तो ऐसा जातक किसी से विवाह करने और प्रेमप्रसंग बन[illegible] रज़ामन्द नहीं होगा।

अगर चित्र-की तरह इस टूटी रेख[illegible] कोण दिखलाई पड़े तो मनुष्य पारिवारिक बिखराव को वापिस समेट लेगा और जीवन साथी से सम्बन्ध सुधर जाएंगे। यह रेखा वापिस मुड़कर हुक की आकृति बना ले तो वैवाहिक सम्बन्ध नहीं सुधर पाएंगे। अगर इस रेखा पर काला धब्बा दिखाई दे तो यह प्रेमप्रसंगों में भयंकर विघ्न-बाधा की सूचना देता है।



चित्र-88 चित्र-89

चित्र-की तरह अगर काले धब्बे वाली इस रेखा का अन्त द्विशाखी, त्रिशाखी या बहुशाखी हो तो प्रेम का अन्त छोड़ने से होगा। अगर काले धब्बे के बाद रेखा पतली हो जाए तो ऐसे मनुष्य का अपनी प्रेमिका के प्रति लगाव धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है।



चित्र-90

अगर शुक्र स्थल से कोई रेखा चलकर विवाह रेखा को स्पर्श करके काट दे तो इसे चिन्ता रेखा कहते हैं। यह रेखा बताती है कि मनुष्य के वैवाहिक जीवन में उसके रिश्तेदार ही सबसे अधिक बाधा डाल रहे हैं।

अगर विवाह रेखा द्विशाखी हो और वहीं से विवाह रेखा को काटती हुई शुक्र पर्वत तक और सहायक जीवन रेखा को स्पर्श कर जाए तो निश्चित जानें आपके विवाह या प्रेम में बाधा डालने वाला व्यक्ति आपका नजदीकी ही है

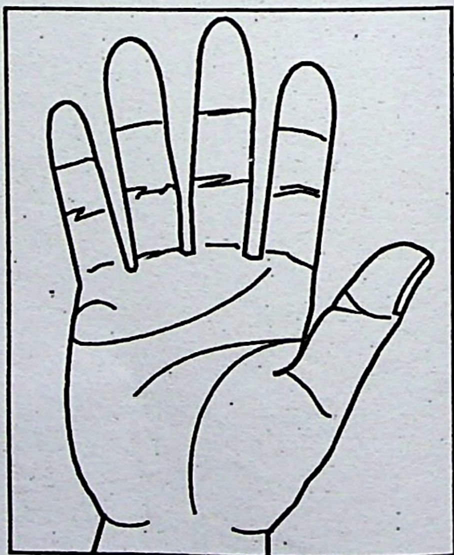
ज़िसका रिश्ता जातक के खून से है। इस कारण मनुष्य के रंग में भंग जरूर पड़ता है।

अगर उपर्युक्त रेखा त्रिशाखी या बहुशाखी की तरह हो तो परिणाम ज्यादा घातक होंगे। चित्र-की तरह अगर विवाह रेखा एक खड़ी रेखा के द्वारा छेदित हो जाए (कट जाये) और वहीं से इसकी शाखा या अन्य आकस्मिक रेखा हृदय रेखा को काटती हुई मस्तिष्क रेखा को स्पर्श करे, जहां स्पर्श करे वहां एक द्वीप की आकृति हो, क्रॉस हो, तो निश्चय ही वैवाहिक जीवन दुःखमय और कष्ट से पूर्ण होगा, और यह प्रसंग जातक को मानसिक रूप से परेशान करेगा।

इस तरह से यह आकस्मिक रेखा जीवन रेखा या अन्य पर्वत स्थलों को भी दूषित कर सकती है। अगर यह जीवन रेखा को स्पर्श करे तो वैवाहिक बन जाएगी। सही तरह से इस रेखा के अन्त से अलग-अलग प्रकार से भविष्य का कथन करना चाहिए।

विवाह एवं प्रेमप्रसंगों के सन्दर्भ में लगाव रेखाओं के साथ-साथ शुक्र पर्वत और उस पर उदित रेखाओं का भी सूक्ष्मता से अध्ययन करना चाहिए। ये दोनों स्थल प्रेमप्रसंगों एवं विपरीतलिंगियों के साथ सम्पर्क सूत्रों को उद्घाटित करते हैं।

अगर विवाह रेखा हृदय रेखा की तरफ झुकाव लिये हुए मुड़ी हुई प्रतीत होती है तो मनुष्य को अपने जीवन साथी के प्रति कोई लगाव या आकर्षण नहीं होगा। ऐसे मनुष्य की विषय-भोग के प्रति रुचि कम रहेगी, उसमें नैराश्य या वैराग्य की भावना अधिक होंगी। अनुभव में आया है कि ऐसे मनुष्य के जीवन साथी का साथ अधूरा छूट जाता है।

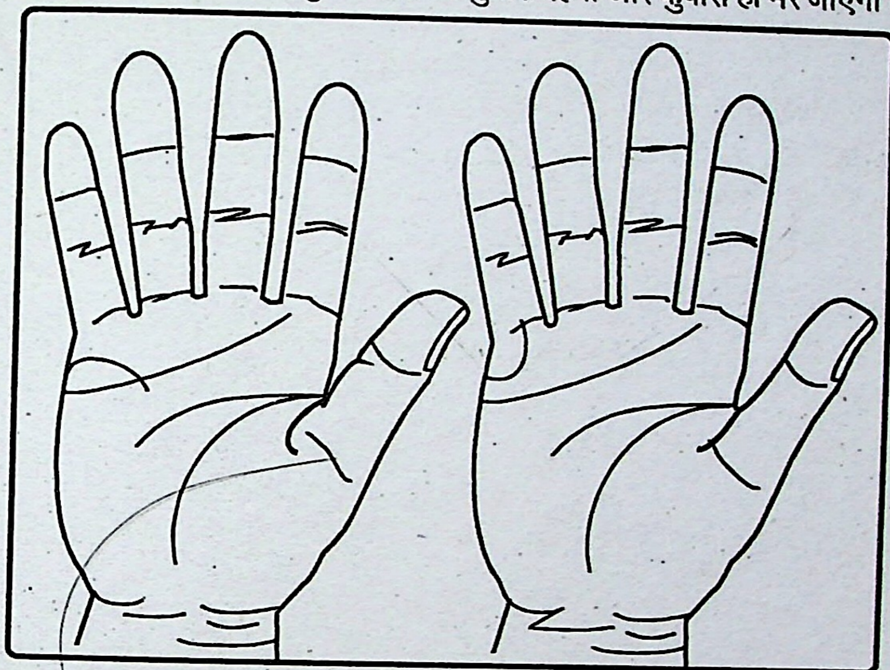


चित्र-91

अगर विवाह रेखा इतनी अधिक झुक जाए कि वह हृदय रेखा का स्पर्श कर ले या उसको काटकर आगे बढ़ जाए तो यह 'वैधव्य' की निशानी है। ऐसे लोगों का जीवन साथी उसकी मौजूदगी में ही गुज़र जाता है।

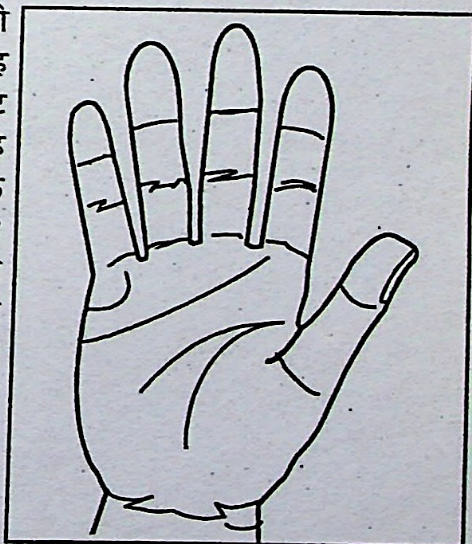
अगर विवाह रेखा ऊपर की ओर मुड़ जाए और कनिष्ठिका उंगली में

प्रवेश कर जाए तो ऐसा मनुष्य आजीवन कुंवारा रहेगा और कुंवारा ही मर जाएगा।



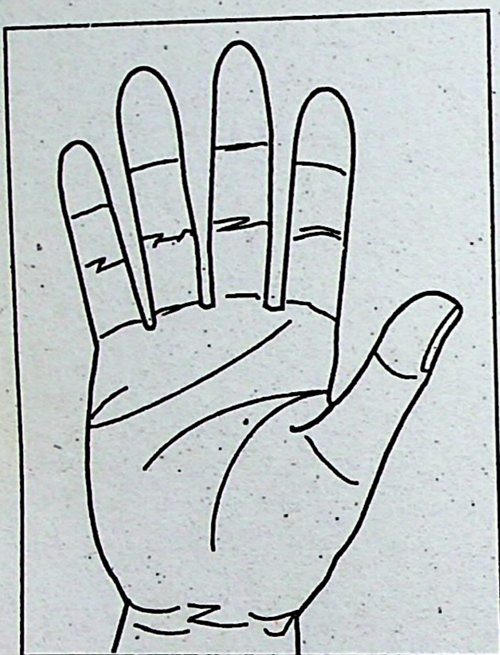
चित्र-92

चित्र-93



चित्र-94

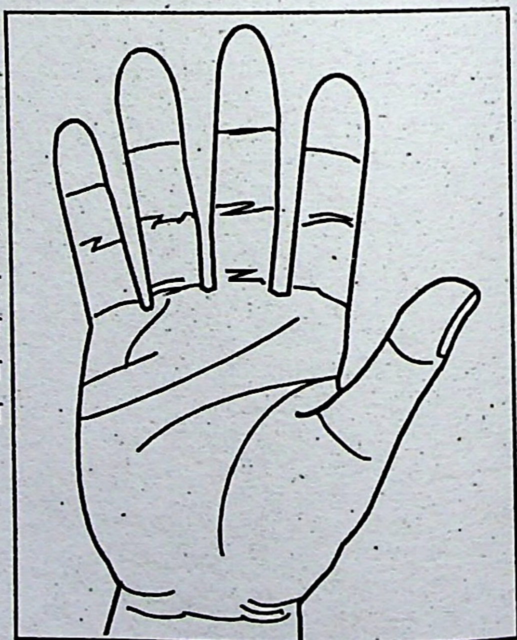
अगर विवाह रेखा ऊपर की ओर मुड़ी हुई हो तो मनुष्य के विवाह में रुकावट आती है। यह रुकावट मनुष्य के खुद के द्वारा होती है। वह खुद यह फैसला नहीं कर पाता कि उसे विवाह करना चाहिए या नहीं? कुछ और कल्पनाओं के आधार पर वह अपने विवाह में कुछ और अधिक अच्छा पाने के आधार पर विलम्ब करता रहता है। जिसके फलस्वरूप विवाह नहीं हो पाता। ऐसे केस में शुक्र पर्वत, हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा का भी तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए।



चित्र-95

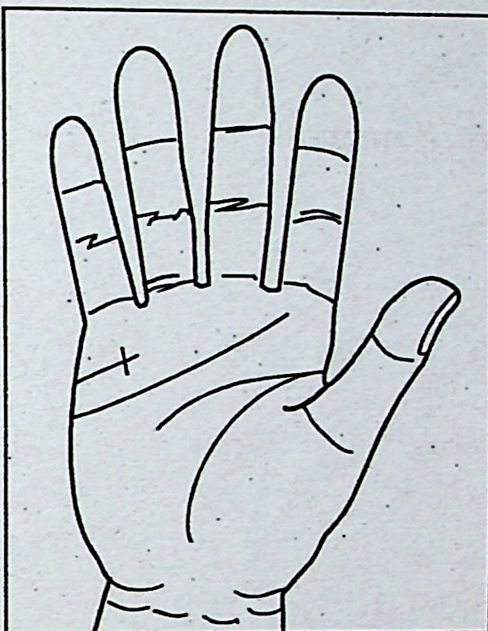
अगर विवाह रेखा हृदय रेखा के बिल्कुल पास (सटी हुई) हो तो जातक का शीघ्र छोटी उम्र में विवाह होता है। भारत में यह उम्र 14 से 16 के बीच में और विदेश में यह उम्र 18 से 21 वर्ष के बाद एवं 35 वर्ष की आयु से पहले होता है।

अगर विवाह रेखा में से कोई शाखा सूर्य पर्वत पर निकलकर पहुंच जाए तो विवाह बहुत ही शानदार यादगार के रूप में होता है। जातक को विवाह के द्वारा धन व यश की प्राप्ति भी होती है।



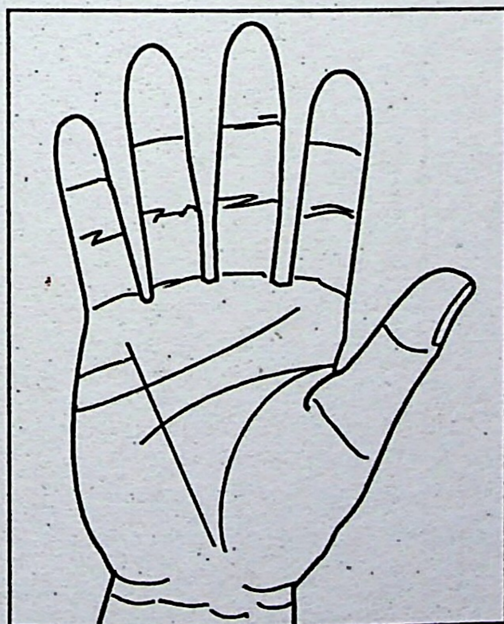
चित्र-96

अगर विवाह रेखा को कोई रेखा काट दे तो यह विवाह में बाधा की सूचना देती है। यह बाधा परिवार से सम्बन्धित भी हो सकती है और आर्थिक भी। अगर खड़ी रेखा विवाह रेखा की तुलना में मोटी है तो परिवार के झगड़े या दुविधा की वजह से कुछ वर्ष तक विवाह में रुकावट रहेगी। अगर खड़ी रेखा विवाह रेखा की तुलना में पतली व बारीक है तो आर्थिक और परिवारिक रुकावटें कुछ देर तक बाधा डालने के बाद स्वतः ही प्राप्त हो जाएंगी। कई हाथों में यह रेखा गायब भी हो जाती है। अनुभव में आया है कि यह



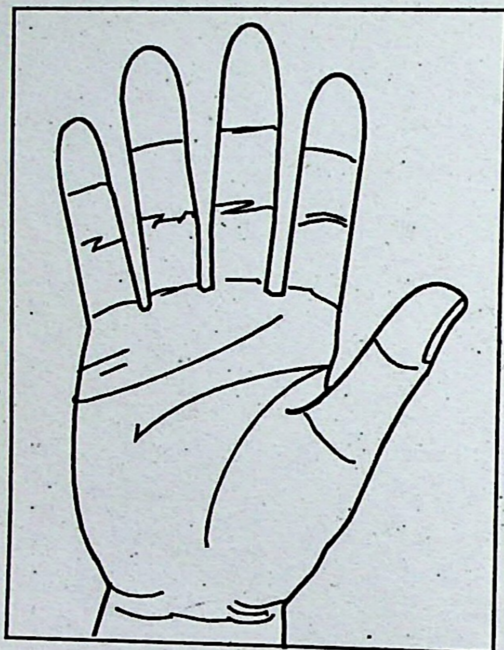
चित्र-97

अन्तर्जातीय विवाह की सूचना देती है। प्रायः शुरूआत में कुछ मुश्किलों के बाद विवाह हो जाता है।



चित्र-98

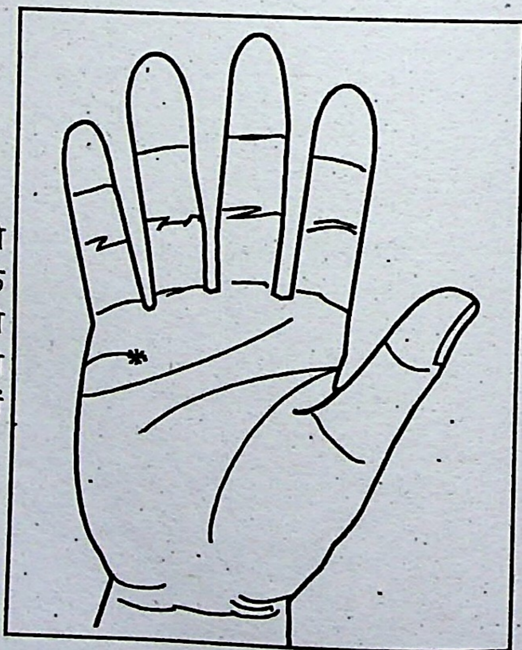
अगर विवाह रेखा इतनी लम्बी हो जाए कि सूर्य रेखा या भाग्य रेखा को स्पर्श कर ले तो निश्चय ही मनुष्य की शादी किसी अमीर या प्रसिद्ध घराने में होगी और विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।



विवाह रेखा खण्डित हो, पर उसके साथ ही एक दूसरी रेखा, सहायक रेखा के रूप में दिखलाई पड़े, तो जातक का पुनर्विवाह होता है। बिछुड़े दिल मिल जाते हैं। कई बार ऐसी ही रेखा जातक के दूसरे विवाह को भी बतलाती है। ज्योतिष की भाषा में इसे 'द्विभार्या' योग कहते हैं।

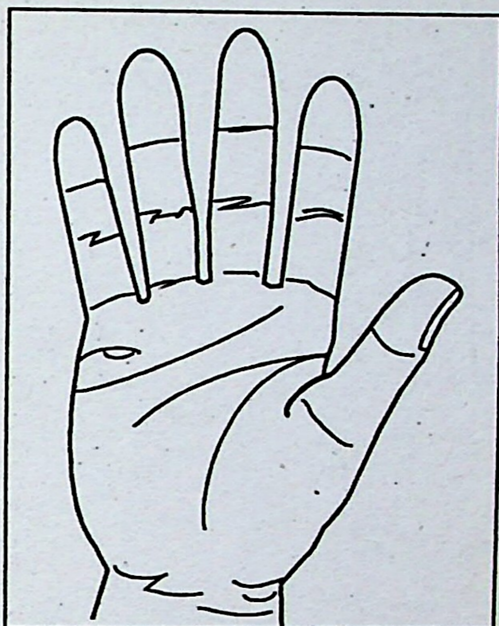
चित्र-99

विवाह रेखा हृदय रेखा की ओर मुड़ती हुई उस पर एक चौकड़ी (क्रॉस) का निशान बनाये तो ऐसे जातक ने जिससे शादी की है वह प्राणी शीघ्र मर जाएगा, इसमें सन्देह नहीं है।

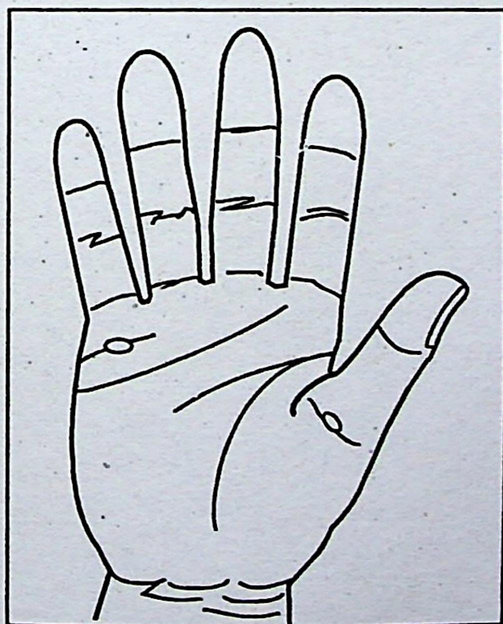


चित्र-100

विवाह रेखा पर द्वीप जातक की अपराध प्रवृत्ति को बतलाता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन साथी के साथ झगड़ता रहता है। वैवाहिक जीवन कलह व कष्ट में व्यतीत होता है। यह सुखी वैवाहिक जीवन के लिए अशुभ चिह्न होता है।

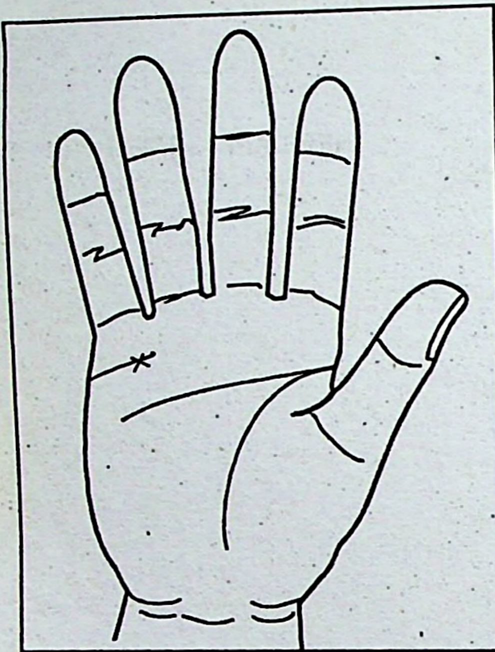


चित्र-101



चित्र-102

विवाह रेखा पर द्वीप का निशान हो, साथ में अंगूठे के मूल में भी द्वीप का निशान हो तो व्यक्ति अपनी नज़दीकी रिश्तेदार के साथ ही विवाह करता है। सेक्स के मामले में अपराधी मनोवृत्ति होती है और वैवाहिक जीवन कलेश का विषय बना रहता है।



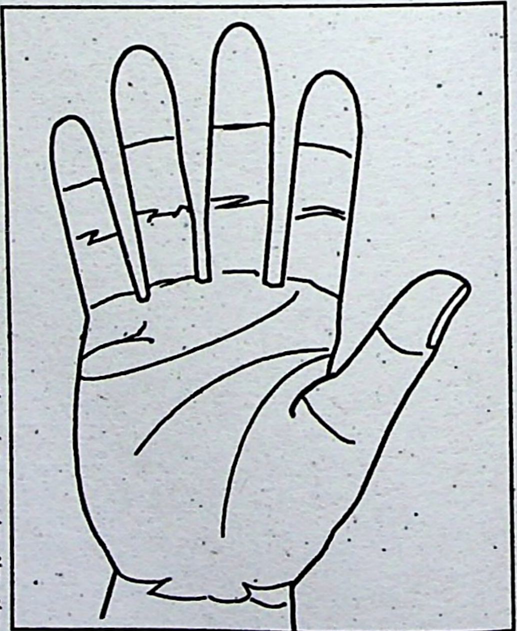
चित्र-103

चित्र-की तरह अगर लगाव रेखा पर चौकी दिखलाई पड़े तो विवाह या प्रेमप्रसंग में भयंकर विघ्न आएगा। अगर यह रेखा एक सितारे की आकृति के साथ समाप्त हो तो प्रेमप्रसंग विस्फोटक होगा।

यह रेखा लम्बी होकर सूर्य पर्वत तक पहुंच जाए और वहां पर एक सितारा हो तो मनुष्य का किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार होगा जो अत्यन्त ही सौभाग्यशाली, धनी एवं मानी होगा।

अगर यह रेखा अन्त में द्विशाखी हो जाये तो लगाव धीमा पड़कर जीवन साथी अलग हो जाएंगे। पुराने हस्तरेखाविदों के अनुसार यह तलाक की रेखा है। मेरे विचार से यह रेखा वैवाहिक जीवन में बाधा उत्पन्न करती है लेकिन हमेशा इस रेखा की परिणति तलाक में नहीं होती। इतना जरूर है कि ऐसे व्यक्ति के वैवाहिक जीवन की शुरूआत अपव्यता एवं धूर्तता से होती है। अगर इस रेखा का द्विशाखीपन ज्यादा चौड़ा नहीं है तो विरह विच्छेद ज्यादा गम्भीर नहीं होगा।

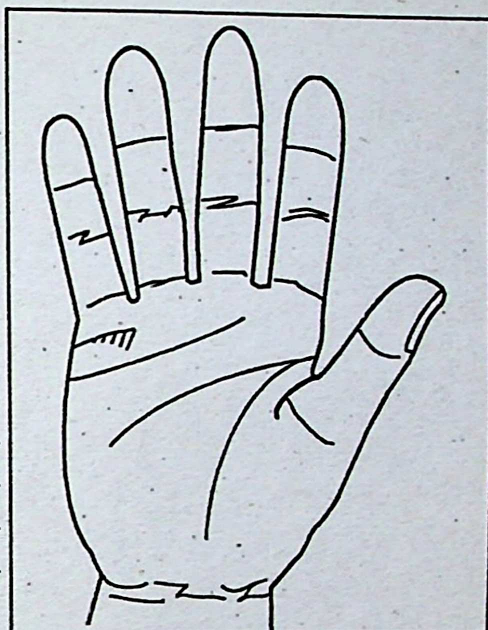
अगर यह रेखा अन्त में या अतिशाखी हो जाए तो यह प्रेमप्रसंगों में अति धूर्तता और अति प्रेमप्रसंगों (केवल विषय वासना की पूर्ति हेतु)



चित्र-104

की द्योतक रेखा बन जाती है।

चित्र-की तरह अगर विवाह रेखा में छोटी-छोटी शाखाएं नीचे की ओर जाती हुई दिखाई दें तो जातक का वैवाहिक जीवन निराश और दुःखमय होगा। अगर विवाह रेखा में कुछ छोटी-छोटी शाखाएं ऊपर की ओर जाती हुई दिखलाई दें तो जातक का प्रेमप्रसंग या विवाह जातक के लिए सौभाग्यशाली और उन्नतिदायक होगा। अगर विवाह रेखा टूटी हुई हो तो निश्चय जानें कि इस समय में जातक का गृहस्थ जीवन रुक-सा जाएगा या सम्बन्ध टूट जाएगा।



चित्र-105





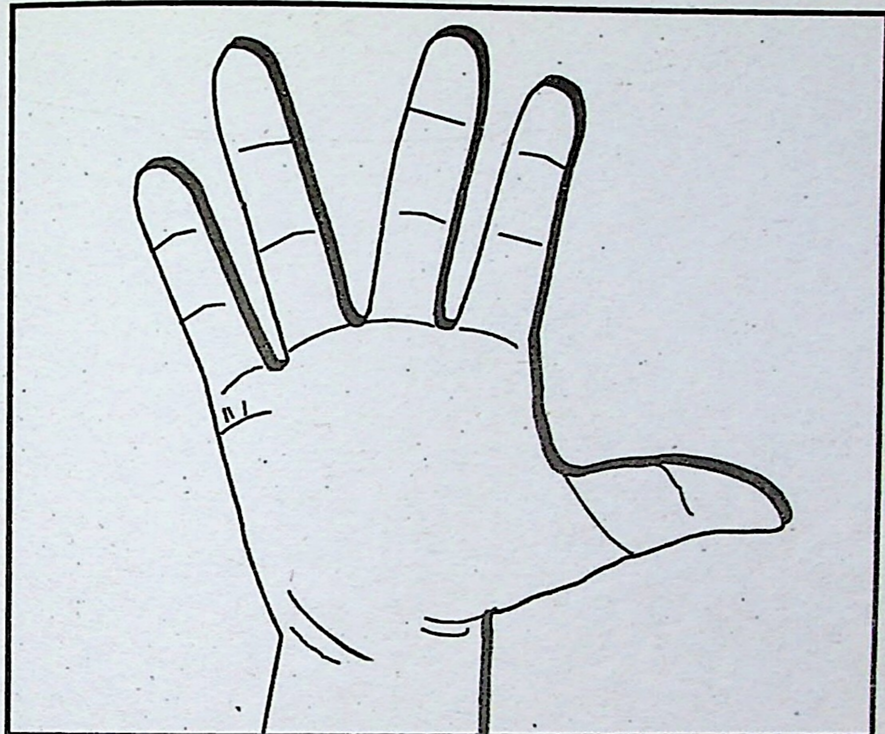
सन्तान रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

सन्तान रेखा के विषय में भारतीय मत में एकरूपता नहीं है। अतः इस सम्बन्ध में पाश्चात्य मत को आधार बनाना ही उचित है। क्योंकि उस पर आधुनिक शोधों एवं अनुभवों का प्रभाव है। पाश्चात्य मत के अनुसार, सन्तान रेखाएं विवाह रेखा पर हथेली के किनारे ऊपर की ओर खड़ी छोटी-छोटी रेखाएं हैं। हालांकि पाश्चात्य विद्वान् भी मानते हैं कि सन्तान का निर्धारण कई स्थान की रेखाओं से किया जाता है, लेकिन मूल रूप से वे उपर्युक्त रेखाओं को ही आधार बनाते हैं। इस सम्बन्ध में वे कहते हैं–

(1) अगर किसी के हाथ पर विवाह रेखा के स्थान पर सन्तान रेखा नहीं है या दोनों ही रेखाएं नहीं हैं, तो प्रथम मंगल क्षेत्र में हथेली के बाहर से भीतर की ओर आने वाली रेखाओं को सन्तान रेखा समझना चाहिए।

(2) अगर उपर्युक्त दोनों हालात नहीं हैं, तो हृदय रेखा के मूल में एक या दो या अधिक शाखाएं उससे मिलकर प्रथम मंगल क्षेत्र में पहुंच रही हों, तो उन्हें ही सन्तान रेखा समझना चाहिए।

(3) अगर ये तीनों हालात नहीं हैं, तो हृदय रेखा से निकलने वाली सूक्ष्म शाखाओं को सन्तान रेखा समझा जा सकता है।



चित्र-106–सन्तान रेखा

भारतीय विद्वानों के अनुसार सन्तान रेखा का प्रभाव–

(1) अंगूठे के मूल में स्थित यवचिह्न (जौ की आकृति) यदि बड़े हों तो पुत्र, छोटे हों तो पुत्रियों की सूचना देते हैं।

(2) अंगूठे के मूल में स्थित स्थूल रेखाएं पुत्र एवं सूक्ष्म रेखाएं पुत्री की सूचक हैं।

(3) अंगूठे के मूल में मणिबन्ध तक जितनी रेखाएं हथेली के किनारे से स्थूल रेखा पुत्रों एवं महीन रेखा से पुत्रियों का लाभ होता है। स्मरणीय है कि अनुभव से यह सिद्ध नहीं होता। इसके लिए विधान है कि सौभाग्य रेखा और आयु रेखा (हृदय रेखा) और स्वास्थ्य रेखा का अध्ययन करके इसका फल निकाला जाए।

इस विषय में पश्चिमी विश्लेषण को आधार बनाने वाले कुछ पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों का अनुभव है कि शुक्र पर्वत की रेखाएं स्त्री के हाथ में सन्तान की ही सूचना देती हैं, बशर्ते कि वह हथेली के पृष्ठ किनारे से भीतर की ओर

गयी हों। यदि वे भीतर से बाहर की ओर पृष्ठ भाग की तरफ मुड़ी हों, तो वे उससे सम्बन्ध रखने वाले पुरुषों की संख्या बताती हैं।

इनका यह भी कहना है कि बुध क्षेत्र और मंगल क्षेत्र दोनों का अध्ययन करके ही सन्तान का निर्णय करना चाहिए।

लेकिन इन सबसे अधिक स्पष्ट संकेत विवाह रेखाओं पर स्थित खड़ी रेखा ही करती है।

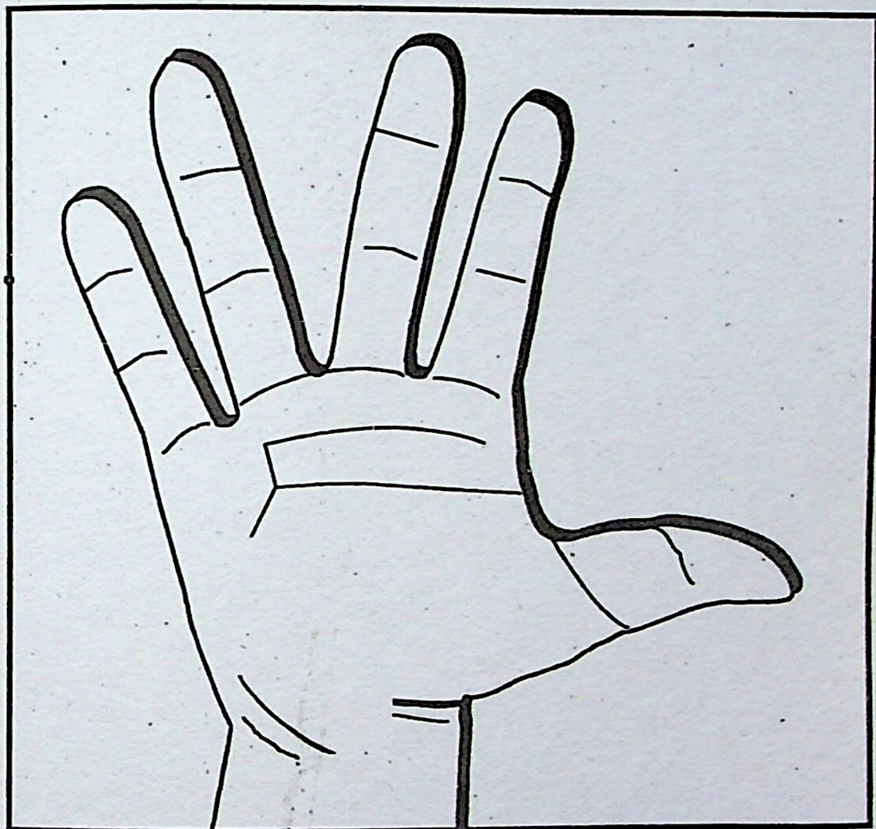
प्रभाव–

(1) सीधी रेखाएं पुत्रों की, कुछ झुकी हुई रेखाएं पुत्रियों की पहचान है।
(2) लहरदार रेखाएं स्वास्थहीन सन्तान की सूचक हैं।
(3) कोई रेखा बड़ी हो, पुष्ट और सशक्त हो, तो वह एक सन्तान अधिक उन्नत और स्वस्थ होगी।
(4) ये रेखाएं स्वस्थ हों तो स्वस्थ, निर्बल एवं बीच से टूटी हों, तो अल्पायु सन्तान की प्राप्ति होती है।
(5) चौड़ी रेखाएं पुत्र, पतली पुत्री की द्योतक हैं।
(6) द्वीप चिह्न प्रारम्भ हो, तो रोगी; रेखा के अन्त में हो, तो अल्पआयु सन्तान की सूचक है।
(7) अगर सन्तान रेखा मुड़कर दोहरी हो, तो वह गर्भ में मृत्यु की सूचक है।
(8) अगर सन्तान रेखा मुड़कर दोहरी हो गयी हो, तो वह सन्तान, यश, प्रतिष्ठा प्रभाव में अधिक उन्नति करेगी।
(9) पुरुप के हाथ में पुत्र रेखा एवं स्त्री के हाथ में कन्या रेखा स्पष्ट दिखायी देती है।
(10) सन्तान का क्रम बाहर से अन्दर की ओर गिनना चाहिए।
(11) हृदय रेखा और विवाह रेखा के मध्य में स्थित सन्तान रेखा ऐसी सन्तानों की ओर संकेत करती है, जिन्हें माता-पिता अधिक प्रेम करते हैं।
(12) नक्षत्र क्रॉस, वर्ग, द्वीप, पुच्छाकृति, अर्द्धचन्द्र वृत्त आदि यदि सन्तान रेखा पर हों, तो उसका फल प्रभाव रेखा पर उसकी स्थिति एवं पूर्ववर्णित (दूसरी रेखाओं के सन्दर्भ में) फल प्रभाव के अनुसार होगा।

एक विशिष्ट योग और उसका फल–

लाखों हाथों में से किसी एक के हाथों में दोहरी मस्तिष्क रेखा मिलती है। यह जन्मजात भी हो जाती है और आयु के किसी विशेष भाग में भी उत्पन्न

हो सकती है। रेखाओं की सुस्पष्टता एवं सरलता आदि के फल तो उपर्युक्त प्रकार के होते हैं, पर जातक में दोनों रेखाओं के गुणों का समावेश हो जाता है। वह एक अत्यन्त सौभाग्यशाली स्थिति है और किसी-किसी को ही प्राप्त होती है।



चित्र-107–दोहरी मस्तिष्क रेखा

ऐसा जातक महान् ज्ञानी, विद्वान्,कवि, लेखक, दार्शनिक, कलाकार, दयालु, सूक्ष्म विश्लेषण की क्षमता वाला, परोपकारी, सद्गुणी, परपीड़ा से पीड़ित होने वाला, प्रेम एवं अपनत्व को सर्वस्व समझने वाला, धन के प्रति लापरवाह, स्वस्थ, यशस्वी, स्पष्टवक्ता, उग्र होने पर शत्रु को ध्वस्त कर देने वाला, पर आत्मसमर्पण करने पर हृदय से क्षमा, अनेक कलाओं का ज्ञाता होता है। ऐसे व्यक्ति को किसी भी कला को सीखने में समय नहीं लगता है। ये मृदुभाषी होते हैं; किन्तु सत्य कहने में किसी प्रकार के शिष्टाचारिक प्रभाव का ध्यान नहीं रखते। ये किसी

व्यक्ति के चरित्र और व्यवहार को देखकर या परिस्थितियों का आंकलन करके भविष्यवाणी कर दें तो सत्य सिद्ध होता है।

ऐसे लोगों के मित्र भी कम होंगे, क्योंकि ज्ञान का दायरा ब्रह्माण्ड और सूक्ष्म जीवन तरंगों तक होता है; और इन्हें अपना मानसिक स्तर बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। लेकिन दुनियावी मित्रों की संख्या अधिक होती है। अगर चन्द्र और शुक्र क्षेत्र उन्नत हों, तो ये अनेक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध बनाते हैं और मर्यादित भाव को तृप्त रखते हैं। ऐसे लोग ऐसी सम्बन्ध की पीड़ा के अन्तिम स्तर को बर्दाश्त करते हैं लेकिन अगर विरक्त हो जाएं, तो उस अध्याय को ही जीवन से काट फेंकते हैं, पर ये किसी पुराने सम्बन्ध पर दुःखी होकर भी विवाद नहीं करते हैं। चुपचाप सम्बन्धों को तोड़ देते हैं।

यदि ऐसे लोगों की जीवन रेखा और मस्तक रेखा से बनने वाला त्रिकोण बड़ा है, और हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच रहस्यमय क्रॉस है, तो यह और भी कमजोर हालत है। ऐसा जातक नैतिकता, धर्म, किसी भी प्रकार के नियम और व्यवस्था के प्रति अन्य आस्थावाद नहीं होता, यही स्थिति इसकी चरित्र सम्बन्धी मान्यताओं में भी होता है, यह हर किसी का सुधारक, समालोचक और नये नियमों का नियामक होता है। पाखण्ड, रूढ़िवादिता, अप्राकृतिक आचरण, कृत्रिमता के प्रति यह विक्षुब्धता की सीमा तक विरक्त होता है। इस विषय पर इसे छोड़ दिया जाए तो अवतारों, पैगम्बरों, मसीहाओं और महापुरुषों की भी खैर नहीं, ये समआलोचनाएं निरर्थक नहीं होतीं, क्योंकि ऐसे लोगों की नज़र में मानव-जीवन विश्व और दूर तक फैला हुआ मानवता का इतिहास एक चलचित्र-से अधिक महत्त्व नहीं रखता। ये लोग गुप्त विद्याओं के ज्ञाता, रहस्यवादी तत्वज्ञानी और दार्शनिक होते हैं। पैगम्बरों, अवतारों, मसीहाओं आदि की स्थिति इनकी दृष्टि में एक समाज-सुधारक से अधिक नहीं होती और समाज-सुधार के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति कुछ-न-कुछ पाखण्ड अपने व्यक्तित्व की प्रतिस्थापना के लिए करता है।

अपनी इन्हीं बुरी आदतों की वजह से इन्हें धन और भौतिकता सम्बन्धी कामयाबी कम ही मिलती है। इस वजह से इस सांसारिक जीवन में इन्हें अपमानित भी होना पड़ता है, और अपने सम्बन्धियों से क़लेश भी ज़्यादा रहता है। पर इन सबका ऐसे लोगों पर क्या प्रभाव हो, जो पृथ्वी को ही पानी का बुलबुला समझता हो।

□□□

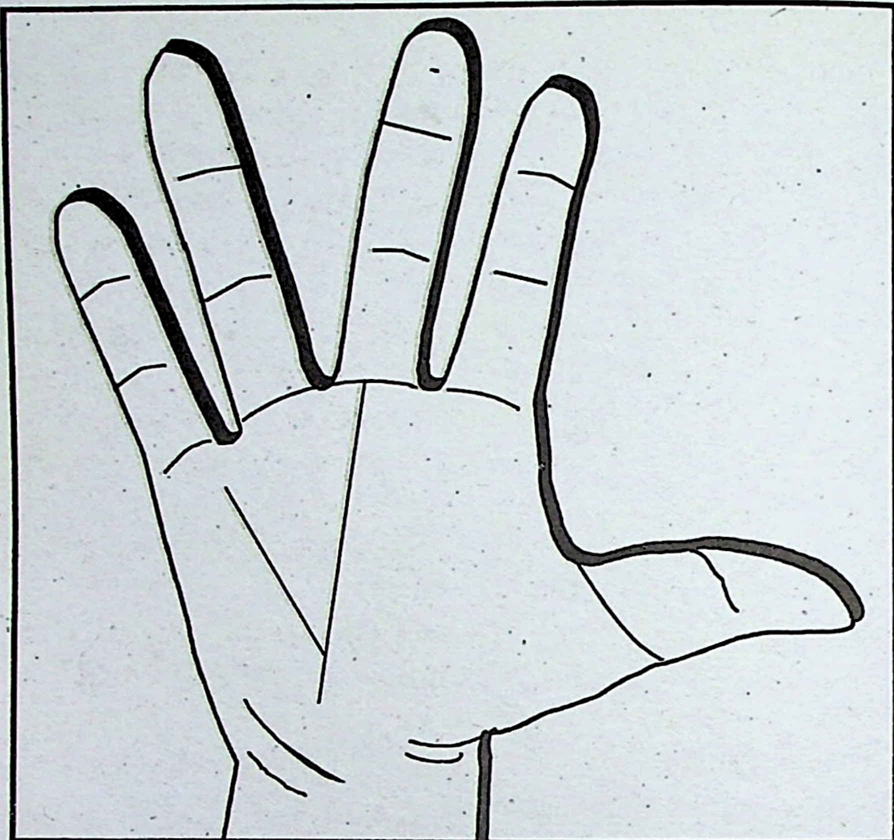


स्वास्थ्य रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

जीवन रेखा मणिबन्ध शुक्र क्षेत्र या चन्द्र क्षेत्र से निकलकर कनिष्ठिका के मूल यानि बुध पर्वत की ओर जाने वाली रेखा को पश्चिमी हस्तरेखाविद् स्वास्थ्य रेखा कहते हैं।

प्राचीन भारतीय विद्वानों ने इसे सहायक ऊर्ध्व रेखा मानकर इससे सम्मान, यश, प्रतिष्ठा आदि का आंकलन किया है। एक-दो स्थानों पर इससे स्वास्थ्य सम्बन्धी गणना के भी उदाहरण मिलते हैं, इन्होंने इस रेखा के सम्बन्ध में अधिक विचार नहीं किया है। ये सिर्फ इतना कहते हैं कि यह रेखा पुष्ट व निर्दोष हो, तो यश, सौभाग्य, पत्नी, पुत्र आदि का सुख प्राप्त होता है।

यह रेखा सभी के हाथों पर नहीं पायी जाती। यह न हो, तो शुभ ही है। यह निर्दोष और सुस्पष्ट हो, तो जीवन रेखा के दोषों को कम करती है। अगर यह टूटी-फूटी लहरदार शृंखलायुक्त कटी-फटी है, तो जीवन रेखा के शुभ प्रभाव को बाधित करती है। ऐसा ही पाश्चात्य विद्वानों का कहना है कि यह रेखा जन्म से या जीवन रेखा के किसी समय में भी उत्पन्न हो सकती है। यहां यह स्पष्ट करना जरूरी है कि इसकी उत्पत्ति के स्थान के विषय में आधुनिक भारतीय विद्वानों में भी मतभेद है। अधिकतर पाश्चात्य विद्वान् और प्राचीन आधुनिक



चित्र–108

भारतीय विद्वानों ने इसे नीचे से ऊपर की ओर जाने वाली रेखा माना है। और मणिबन्ध, चन्द्र क्षेत्र, शुक्र क्षेत्र या हथेली के बीच से बुध क्षेत्र की ओर समाप्ति मानी है। इसे नीचे की तरफ उन्मुख माना है; और मणिबन्ध, चन्द्र क्षेत्र, शुक्र क्षेत्र या हथेली के बीच से बुध क्षेत्र की तरफ खत्म होती है। इसे नीचे की ओर उन्मुख माना है। अनेक हस्तरेखाविदों ने इसका समर्थन भी किया है कि वह नीचे से ऊपर की तरफ चलती है। इसके प्रभाव का वर्णन अग्रलिखित है–

प्रभाव–

(1) अगर यह जीवन रेखा से शुरू हुई हो, तो बुरे स्वास्थ्य की सूचना देती है।

(2) [illegible] ह भाग्य रेखा से शुरू हुई हो, तो स्वास्थ्य की अनुकूलता का [illegible] भाग्य पर अच्छा पड़ता है।

(3) अगर निर्दोष स्वास्थ्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से शुरू होकर बुध क्षेत्र पर समाप्त हुई हो, और जीवन रेखा से अलग हो, तो स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

(4) यह रेखा जीवन रेखा के साथ-साथ मस्तिष्क रेखा के फल को भी प्रभावित करती है। निर्दोष रेखा दोनों के शुभ प्रभाव में वृद्धि और अशुभ प्रभाव में कमी लाती हैं, लेकिन दोषपूर्ण स्वास्थ्य रेखा इसका विपरीत प्रभाव डालती है।

(5) अगर यह जीवन रेखा को काटती हुई मणिबन्ध या शुक्र क्षेत्र से निकलकर बुध क्षेत्र की तरफ गयी है तो जीवन रेखा को जहां काट रही है, उस आयुमान में गम्भीरता स्वास्थ्य में खतरे की सूचक है। अगर यह रेखा गहरी और सुस्पष्ट हो, तो क्रॉस बिन्दु पर मृत्यु योग है।

(6) हथेली के बीच भाग से उत्पन्न होकर बुध क्षेत्र पर खत्म होने वाली रेखा भी शुभ स्वास्थ्य की सूचक है।

(7) अगर जीवन रेखा से कोई शाखा निकलकर इस रेखा से मिल रही हो, तो जीवन रेखा के स्थान पर जो आयुमान होगा उसमें गम्भीर रोग होने का खतरा होता है।

(8) पतली, लहरदार, पीली, टूटी-फूटी शृंखलायुक्त नीचे झूलती पतली रेखाओं से युक्त स्वास्थ्य रेखा दुर्बल स्वास्थ्य की सूचक है।

(9) क्षुद्र रेखाएं इस रेखा को काट रही हैं, इस पर बिन्दु क्रॉस, अर्द्धवृत्त, द्वीप के निशान हों, जाल बना हो या शृंखला कृति हो, तो वह बिन्दु या स्थान गम्भीर स्वास्थ्य विकार का द्योतक है।

(10) यह लाल रंग की हो, विशेषकर हृदय रेखा की ओर (पार करते) समय, तो हृदय रोग की सूचक है।

(11) यह रेखा चौड़ी और उथली हो या छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो, तो मन्दाग्नि, अजीर्ण, सिरदर्द और यकृत सम्बन्धी विकार बने रहेंगे।

(12) कीरो के अनुसार, जीवन रेखा से इस रेखा का मिलन बिन्दु यह बताता है कि जीवन जीने का प्रभाव स्वास्थ्य पर पड़ रहा होगा—और यह मिलन बिन्दु गहरा हो गया हो, तो मृत्यु का खतरा बन जाता है।

(13) यह छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो, और टुकड़े अलग-अलग हों, तो दुर्बल पचान शक्ति की द्योतक है।

(14) अगर यह रेखा पीली फीकी या चौड़ी उथली हो, तो रक्त विकार की सूचना देती है।

(15) यह छोटी-छोटी लकीरों के रूप में रक्तिम वर्ण की हो, तो शरीर की ज्वर प्रवणता की सूचक है।

(16) अगर यह सिर्फ मस्तिष्क या हृदय रेखा के पास दिखायी दे रही है और उससे मिली हुई हो, तो मस्तिष्क और हृदय रोग की सूचक है।

विशेष–

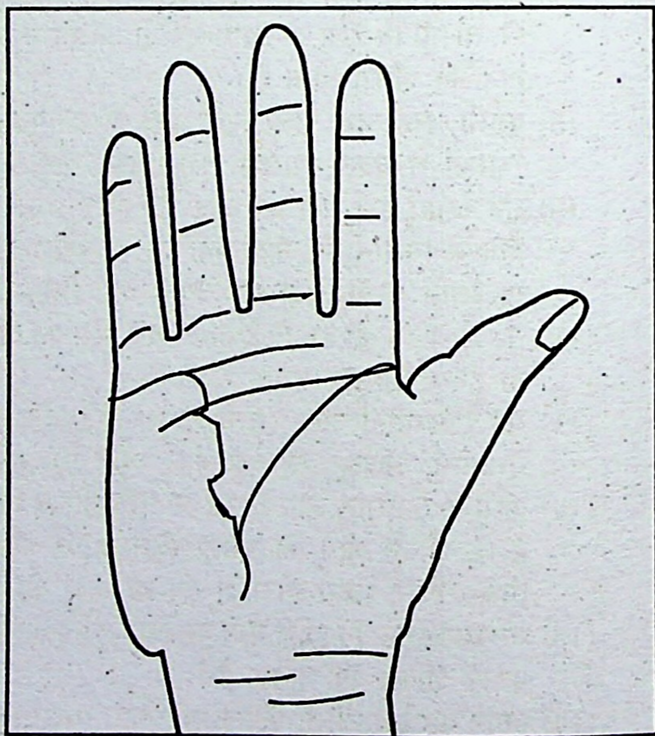
(1) हाथों की बनावट, उसके गुण, जीवन रेखा की स्थिति का प्रभाव इस रेखा पर पड़ता है। अच्छी निर्दोष स्वास्थ्य रेखा इनके अच्छे प्रभाव को बढ़ाती और बुरे प्रभाव को कम करती है, बुरी स्वास्थ्य रेखा का प्रभाव विपरीत है।

(2) कीरो का कहना है कि स्वास्थ्य रेखा के प्रभाव को हमेशा नाखूनों के गुणों से मिलाकर देखना चाहिए।

स्वास्थ्य रेखा की विभिन्न स्थितियां–

नीचे दिये गये चित्रों के माध्यम से स्वास्थ्य रेखा की विभिन्न स्थितियों को दर्शाया है।

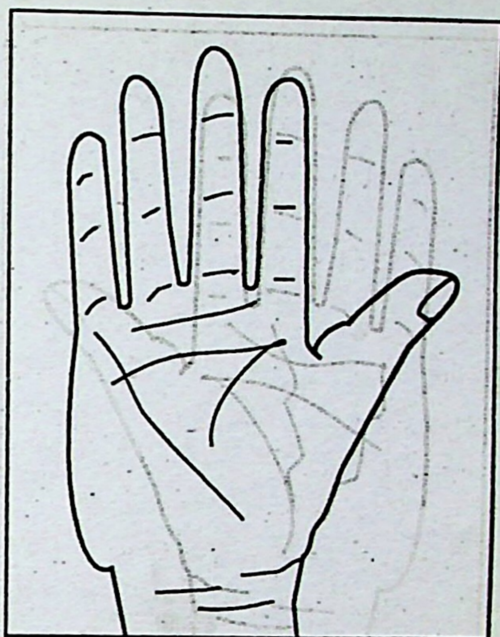
अगर स्वास्थ्य रेखा लहरदार होकर चले तो ज़ातक के व्यवहार में कम कामयाबी मिलती है। अगर हाथ में अन्य लक्षण बुरे हों, तो जातक को बेईमान बनाती है। अगर स्वास्थ्य रेखा हाथ में न हो, लेकिन बुध पर्वत विकसित हो, तो जातक के पास शब्दों का भण्डार होता है; और हर बात का उसी समय प्रयुत्तर देता है।



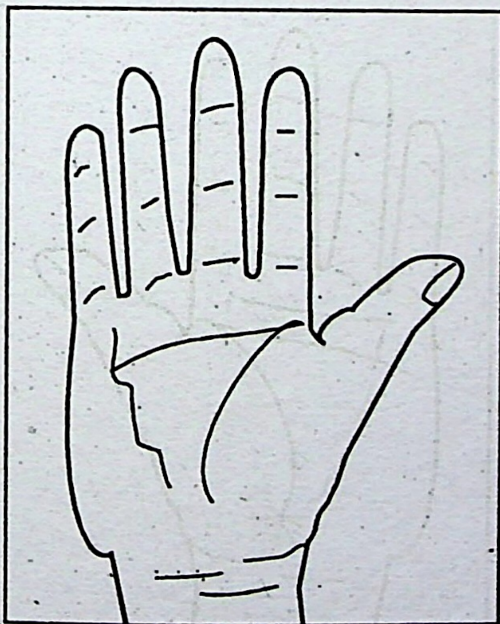
चित्र-109

अगर स्वास्थ्य रेखा लम्बी, तंग, साफ और सीधी हो और मस्तिष्क रेखा साधारणतः अच्छी पूरी हो तो जातक की स्मरण शक्ति अच्छी होती है।

अगर जीवन रेखा छोटी हो मगर स्वास्थ्य रेखा लम्बी और सीधी हो, तो जातक की आयु को कोई खतरा नहीं होता। वह अपना जीवन सुख, सम्पन्नता से व्यतीत करता है।



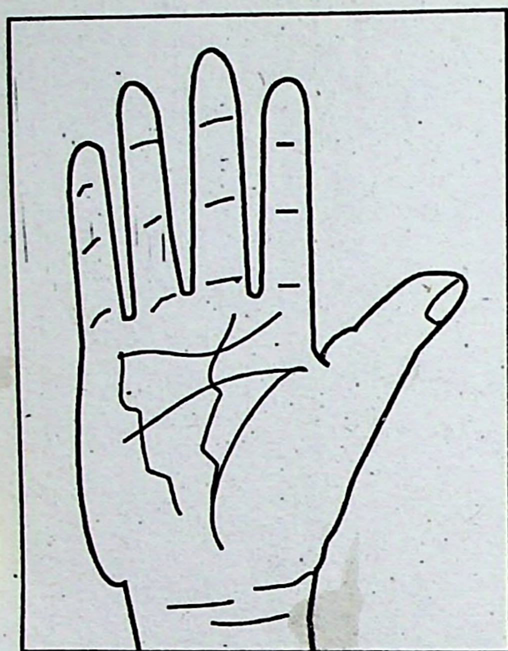
चित्र-110



चित्र-111

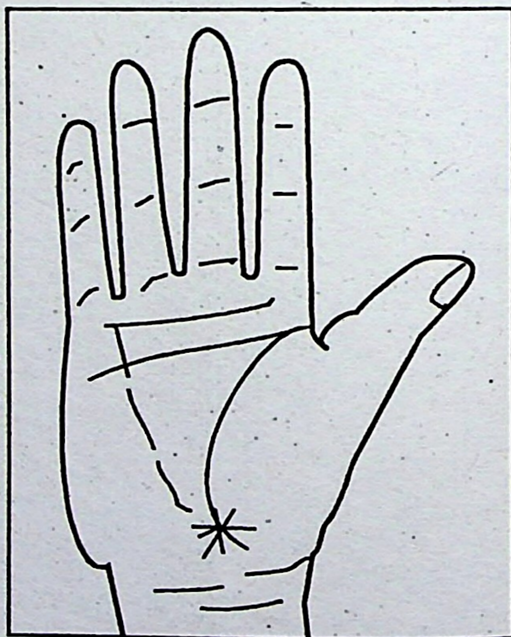
अगर स्वास्थ्य रेखा लहरदार और अनियमित रूप से चले, साथ ही मस्तिष्क रेखा कमजोर हो, तो जातक की पाचन शक्ति कमजोर होती है। जातक में व्यापारिक योग्यता भी कम होती है।

अगर स्वास्थ्य रेखा हाथ में कमजोर हो और अन्य रेखाएं भी कमजोर हैं, तो जातक को अधरंग हो सकता है।



चित्र-112

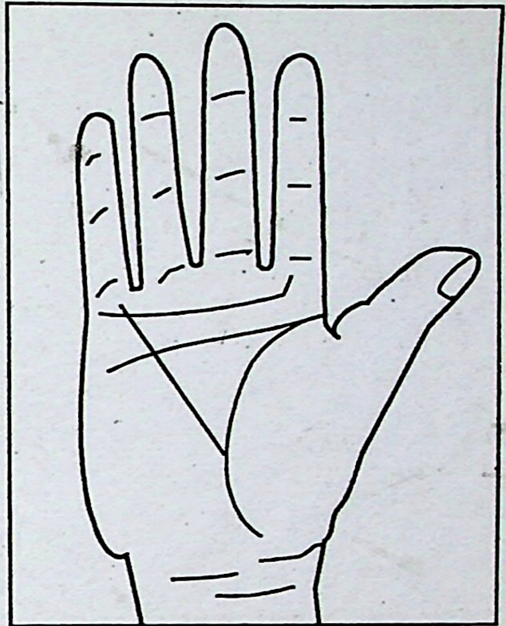
अगर स्वास्थ्य रेखा और भाग्य रेखा दोनों ही लहरदार हों और सभी उंगलियों का दूसरा पर्व और पर्वों से बड़ा हो तो जातक को दांतों की बीमारियां—पायरिया, मसूढ़ों की सूजन, अचानक दांतों से पीव आना, दांतों में चोट लगने से दांत हिलना आदि हो सकता है।



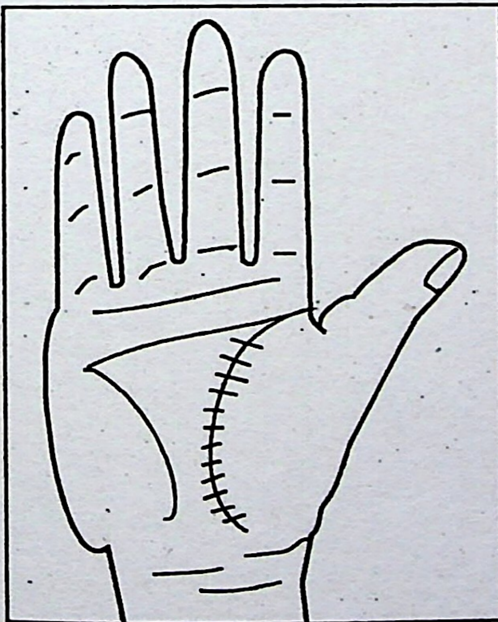
चित्र-113

यदि स्वास्थ्य रेखा कमजोर हो, मस्तिष्क रेखा भी कमजोर हो और जीवन रेखा के अन्त में क्रॉस चिह्न हो, तो ऐसे जातक का स्वास्थ्य कमजोर होता है, विशेषकर बुढ़ापे में ऐसे जातक अधिक कमजोर हो जाते हैं।

अगर स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से निकलकर बुध पर्वत तक और हृदय रेखा से मस्तिष्क रेखा की तरफ झुकने पर चतुर्भुज तंग हो तो मनुष्य की पाचन शक्ति कमजोर होने से उसे बेहोशी के दौरे भी पड़ने लगते हैं।

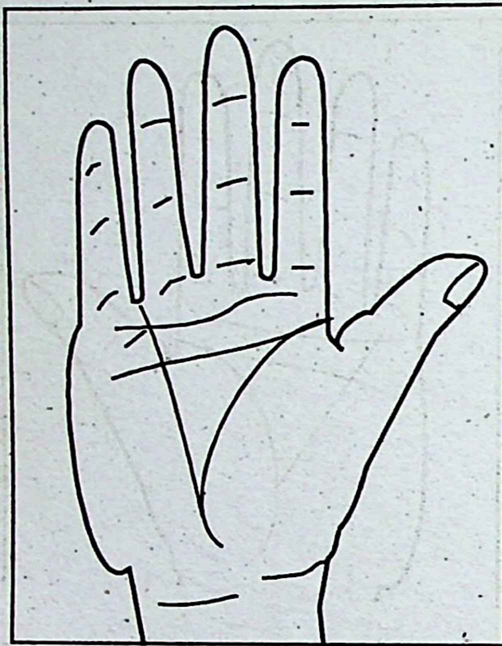


चित्र-114



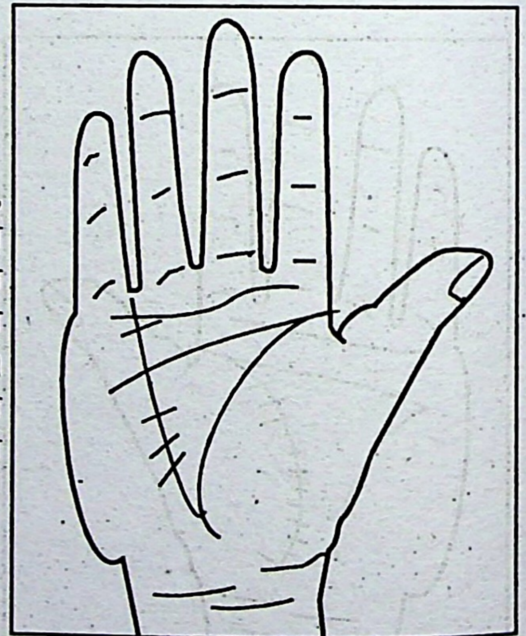
चित्र-115

अगर स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से शुरू होकर मस्तिष्क रेखा तक जाए और जीवन रेखा को छोटी-छोटी आड़ी रेखाएं काटें, तो मेदे के खराब होने से दिमाग में कोई बीमारी हो सकती है—गैस बनना, एसीडिटी होना, सरदर्द, चक्कर आना जैसे रोग हो जाते हैं।



चित्र-116

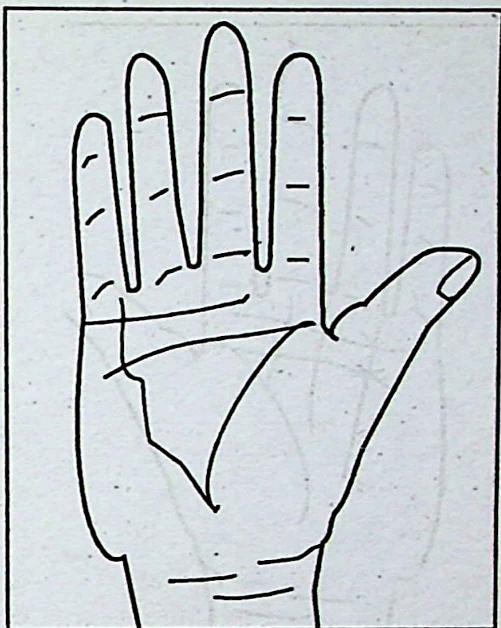
अगर स्वास्थ्य रेखा मस्तिष्क रेखा पर फोर्क बनकर खत्म होती है, तो मनुष्य को यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र में रुचि होती है और उसमें ख्याति और शक्ति पाने की प्रबल इच्छा होती है। ऐसा जातक अपनी रुचि में कामयाबी प्राप्त करता है।



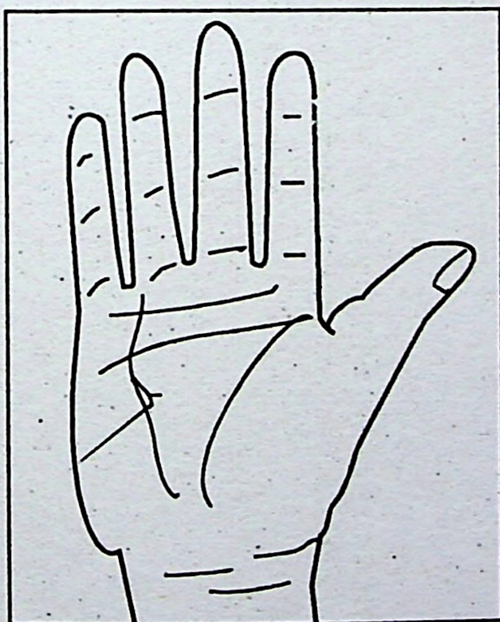
चित्र-117

अगर स्वास्थ्य रेखा को छोटी, सीधी और आड़ी रेखाएं काटें, तो जातक को उन वर्षों में व्यापार या व्यवसाय में घाटा होता है। बीमारी का भी सामना करना पड़ता है। जीवन रेखा के योग से स्वास्थ्य रेखा पर ऐसी आयु में सावधानी ही बरतनी चाहिए।

अगर स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से निकलकर अनियमित होकर चले और बुध पर्वत तक पहुंचे और साथ में जीवन रेखा पर लाल और नीचे बिन्दु हों तो मनुष्य को हृदय की बीमारी हो सकती है। मलेरिया, टायफाइड आदि भी हो सकता है।

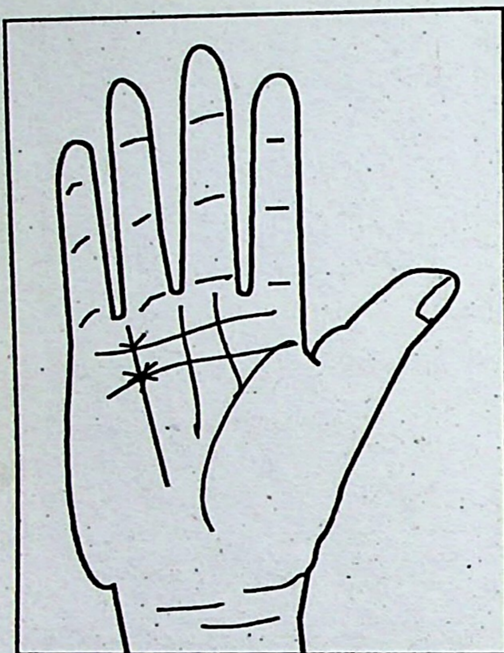


चित्र-118



चित्र-119

अगर स्वास्थ्य रेखा पर तारे का निशान हो तो बांझपन का द्योतक है। अगर स्वास्थ्य रेखा और मस्तिष्क रेखा के मिलन स्थान पर तारे का निशान हो, तो जातक को प्रसवकाल का दुःख उठाना पड़ता है। बांझपन भी हो सकता है; ऐसे में जातक को पीलिया रोग का भी खतरा रहता है।



चित्र-120

अगर स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप बना हो, तो जातक को टी०बी० की बीमारी होती है। उसे आयु रेखा से मिलकर जाना चाहिए। जिस आयु में रोग के लक्षण हैं, उसमें दूषित जलवायु से बचाव करने से इस घातक बीमारी से बचा जा सकता है।





मंगल रेखा का विश्लेषण और प्रभाव

मंगल रेखा वह रेखा होती है जो गुरु क्षेत्र में जीवन रेखा के भीतर उससे समानान्तर अर्द्धवृत्त के रूप में होती है। वह रेखा जो कम हाथों में पायी जाती है, मंगल क्षेत्र से निकलती है, अगर स्पष्ट और बलवान हो तो जीवन रेखा को बल प्रदान करती है। इसके होने से जीवन शक्ति की वृद्धि होती है और रोगों का मुकाबला करने की क्षमता मिलती है।

फौजियों और उन लोगों के हाथ में संकटपूर्ण व्यवसाय करते हैं, यह एक शुभ निशान माना जाता है। अगर जीवन रेखा कहीं से टूटती हो और उसके पीछे सबल मंगल रेखा मौजूद हो, तो जातक की टूटी जीवन रेखा के कुप्रभाव से रक्षा होती है। अगर मंगल रेखा बाहरी हो और लाल रंग की हो तो जातक संकटपूर्ण कार्यों और झगड़ों में रुचि लेता है, क्योंकि इसकी वजह से उसके दिमाग की गर्मी बढ़ जाती है।

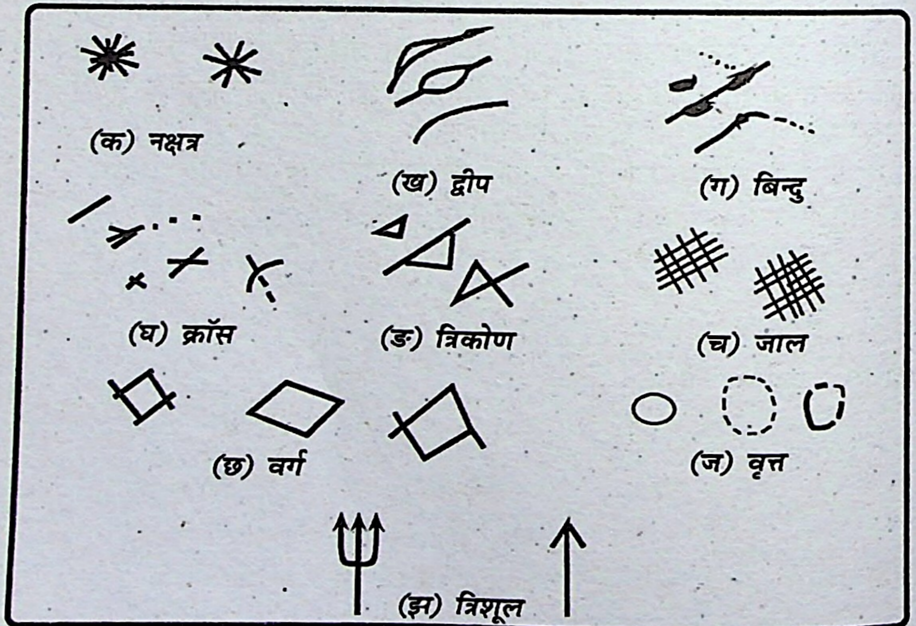
अगर मंगल रेखा से कोई शाखा निकलकर चन्द्र क्षेत्र की तरफ चली जाए तो जातक के स्वभाव में उत्तेजना-बेचैनी काफी हद तक उत्पन्न हो जाती है। अगर मस्तिष्क रेखा निर्बल हो तो जातक मद्यपान और नशीले पदार्थों के सेवन में लिप्त हो जाता है। उस बिन्दु पर जहां पर जीवन रेखा काटती है, मद्यपान और नशीले पदार्थों के सेवन के कारण जातक की मृत्यु हो जाती है।

□□□



हथेली के कुछ विशेष चिन्ह

हाथ की हथेली में कुछ खास निशान होते हैं, जिनको हम चित्र-के द्वारा दिखा रहे हैं और फिर विस्तृत रूप में समझ सकते हैं।



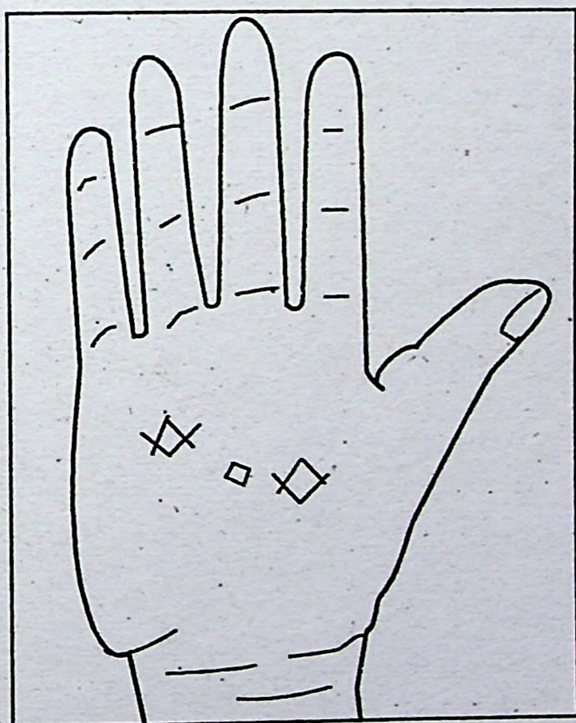
चित्र-121

वर्गाकार चिह्न—वर्ग हाथ के अपेक्षा कृत कम महत्त्व वाले हाथों में ज्यादा दिलचस्प होता है। इसे प्रायः रेखा का चिह्न कहा जाता है, क्योंकि यह दर्शाता है कि इस स्थल विशेष पर मनुष्य को जो खतरे मंडरा रहा है, उनसे हिफाज़त में होगा।

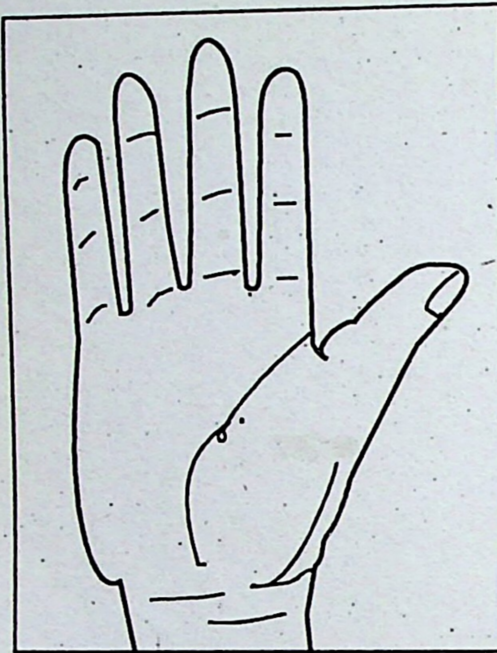
एक सुविकसित वर्ग में होकर बीच की रेखा निकल रही हो, तो यह व्यक्ति के भौतिक जीवन में आने वाले गम्भीरता संकट की द्योतक होती है। जिसका सम्बन्ध आर्थिक दुर्घटना या नुकसान से है, लेकिन अगर भाग्य रेखा वर्ग से पार होकर सीधी बढ़ती हो तो सभी खतरे टल जाते हैं, अगर यह रेखा वर्ग के भीतर टूट भी रही हो, तब भी यह किसी गम्भीर नुकसान से हिफाज़त का निशान है।

जब वर्ग रेखा के बाहर हो और सिर्फ इसे छू रहा हो तो यह खुद मस्तिष्क की शक्ति और सुरक्षा का निशान है और साथ ही उस क्षण विशेष पर किसी कार्य से सम्बन्धित भयंकर तनाव या फिक्र का द्योतक होता है।

जब वर्ग मस्तिष्क रेखा के ऊपर उठ रहा हो और शनि के नीचे हो तो यह सिर के किसी खतरे में रक्षा की भविष्यवाणी करता है।



चित्र-122



हृदय रेखा किसी वर्ग में से गुज़रती हो, तो यह प्रेम के कारण किसी भी खतरे का सूचक चिह्न है। जब शनि के नीचे हो तो व्यक्ति के प्रेम विषय के किसी खतरे का निशान है।

जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र के पर्वत पर वर्ग का मतलब है कि कामसंवेगों के कारण आने वाले खतरों से रक्षा, जब वर्ग शुक्र पर्वत के केन्द्र में स्थित होता है तो इसका अर्थ है कि व्यक्ति कामसंवेगों की वजह से हर तरह के खतरों में पड़ेगा लेकिन हमेशा बच निकलेगा।

चित्र-123

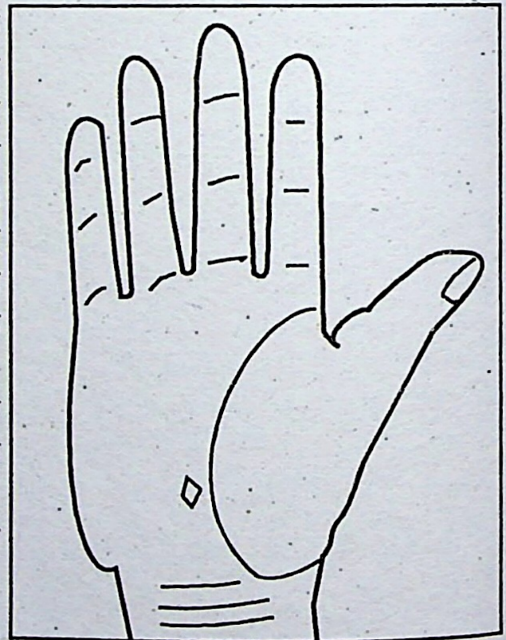
और जब वर्ग जीवन रेखा के बाहर हो और मंगल क्षेत्र से आकर उसे छू रहा हो तो इस स्थान पर वर्ग का अर्थ या तो कारावास या शेष जगत से अलग-अलग रहना होता है।

जब वर्ग किसी भी पर्वत पर होता है तो उस पर्वत के गुणों के कारण होने वाले किसी भी अतिरेक से रक्षा का द्योतक होता है।

ऐसा होने से यह मनुष्य की आकांक्षा से उसे हिफाज़त प्रदान करता है।

शनि पर होने से जीवन को जो खतरा हो उससे बचाता है।

बुध पर होने से उद्विग्नता, चंचल वृत्ति से बचाता है।



चित्र-124

मंगल पर होने से शत्रुओं से होने वाले खतरे से बचाता है।

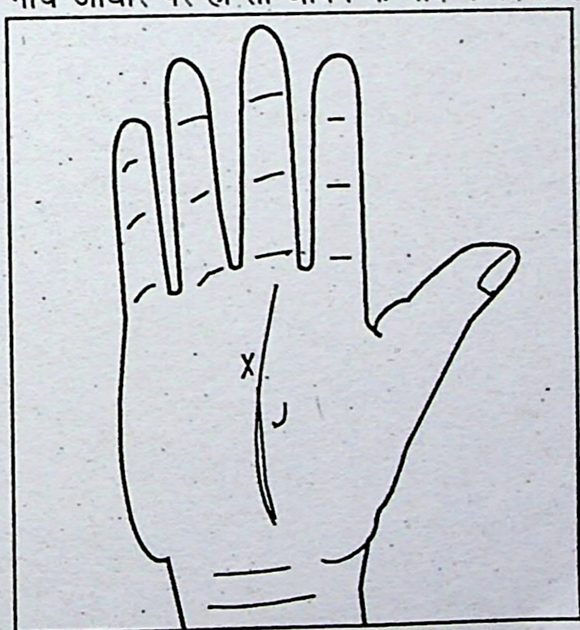
चन्द्र पर होने से कल्पनाधिक्य से या किसी अन्य रेखा के दुष्प्रभाव से बचाता है।

गुणन चिह्न (क्रॉस का चिह्न)–

गुणन का निशान नक्षत्र का विपरीत निशान है और अनुकूल निशान के रूप में कभी दिखाई नहीं देता। यह संकट, निराशा, खतरे आदि का और कभी-कभी जीवन में स्थिति के बदलने का द्योतक है जोकि किसी मुसीबत के द्वारा ही आया होता है। सिर्फ एक स्थिति ऐसी है जिससे इसका होना एक अच्छी निशानी मानी जा सकती है और वह है इसका गुरु पर्वत पर होना।

इस हालात में कम-से-कम एक गहरा प्रेम तो जरूर होगा। ऐसा उस वक्त होता है जब भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से ऊपर उठती है। उस पर इस गुणन के निशान का होना एक विशेष गुण यह है कि यह लगभग उसी समय की ओर इंगित करता है जब ऐसा प्रेम सम्बन्ध मनुष्य को प्रभावित करता है।

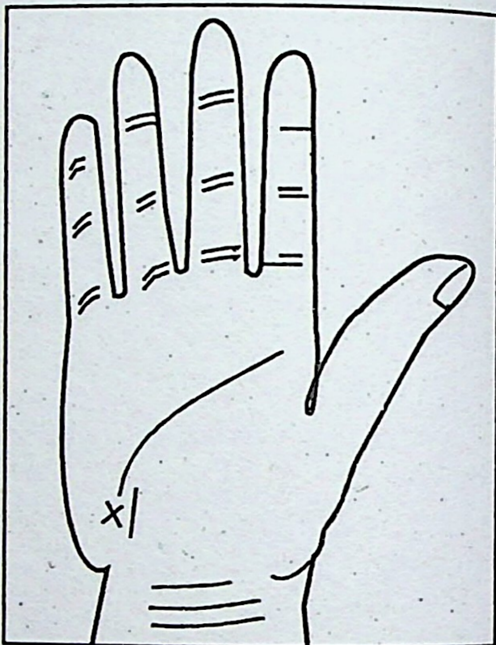
जब यह जीवन रेखा के शुरू के निकट और हाथ की बगल में होता है, तो ऐसा जीवन में शुरू के दिनों में ही होगा, पर्व के शिखर पर हो तो बीच जीवन में होगा और नीचे आधार पर हो तो जीवन के बाद के दिनों में होगा।



चित्र-125–गुरु पर्वत पर क्रॉस

शनि के पर्वत पर जब यह क्रॉस भाग्य रेखा को छूता है तो यह दुर्घटना में खतरनाक ढंग से मृत्यु का बोध करता है, लेकिन जब पर्वत के केन्द्र में अकेला होता है, तो यह जीवन की बुरी विनाशकारी वृत्तियों की वृद्धि कराता है।

सूर्य पर्वत पर यह निशान ख्याति, कला और समृद्धि की तलाश करने वालों के जीवन में घोर निराशा का द्योतक है।



चित्र-126

जब यह निशान शुक्र पर्वत पर गहन रूप से अंकित हो, तो प्रेम के रास्ते या मारक प्रभाव का द्योतक है, लेकिन जब यह बहुत छोटा हो और जीवन रेखा के पास अंकित हो तो यह पास के सम्बन्धियों से झगड़े का और उनके द्वारा पैदा की हुई मुसीबतों का द्योतक है।

बुध पर्वत पर गुणन चिह्न के होने का नियम है कि वह बेईमान और दोहरी चाल चलने वाले चरित्र का पता देता है।

बुध के नीचे मंगल पर्वत पर यह शत्रुओं द्वारा किये जाने वाले खतरनाक विरोधों का आभास कराता है और गुरु के नीचे मंगल पर्वत पर इसके होने का मतलब होता है शक्ति, हिंसा और यहां तक कि लड़ाई-झगड़े में मृत्यु।

भाग्य रेखा के बगल में क्रॉस का निशान जो जीवन के बीच मंगल के स्थान पर स्थित होता है, व्यक्ति के कारोबारी क्षेत्र में सम्बन्धियों के विरोध को बताता है और नियत में परिवर्तन इसका अर्थ होता है। लेकिन हाथ के दूसरी ओर चक्र के बाद इसकी स्थिति यात्रा में निराशा से सम्बन्धित होती है।

जब यह ऊपर की तरफ हो, मस्तिष्क रेखा को स्पष्ट करता हो, तो इसका मतलब सिर की चोट या दुर्घटना से होता है।

सूर्य रेखा की बगल में यह सियम के मामले में निराशा का प्रदर्शन करता है। जब यह भाग्य रेखा में जा मिलता हो तो अर्थ है धन के मामले में निराशा और हृदय रेखा के ऊपर इसकी स्थिति का मतलब है, किसी प्रिय सम्बन्धी की मृत्यु।

मस्तिष्क रेखा से नीचे चन्द्र पर्वत पर क्रॉस के निशान का मतलब है, कल्पना का मारक प्रभाव। ऐसे निशान वाला मनुष्य खुद अपने आप को भी धोखा देता है।

द्वीप–

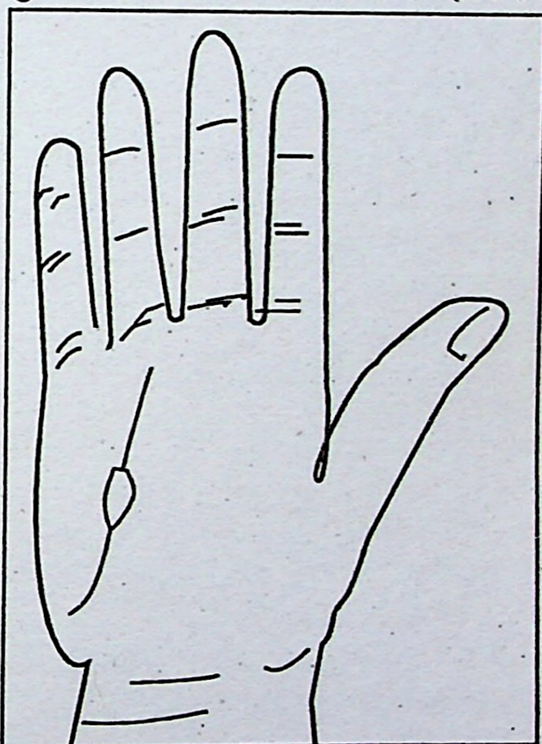
द्वीप अधिक सौभाग्यशाली निशान नहीं है लेकिन इसका सम्बन्ध जिस रेखा से हो या हाथ के जिस हिस्से पर यह हो, उसी भाग से होता है। यह जान लेना जरूरी है कि ज्यादातर विरासत में मिली बुराइयों से सम्बन्धित होता है। उदाहरण के लिए, अगर हृदय रेखा पर सुविकसित द्वीप हो तो विरासत में मिले हृदय रोग का द्योतक है।

जब यह मस्तिष्क रेखा के केन्द्र में एक स्पष्ट निशान के रूप में हो, तो यह मानसिकता से सम्बद्ध किसी पैतृक दुर्बलता का लक्षण है।

जब जीवन रेखा पर हो तो उस बिन्दु पर किसी दुर्बलता या रोग का द्योतक है। जब भाग्य रेखा पर हो तो सांसारिक मामलों में किसी भारी नुकसान का द्योतक है।

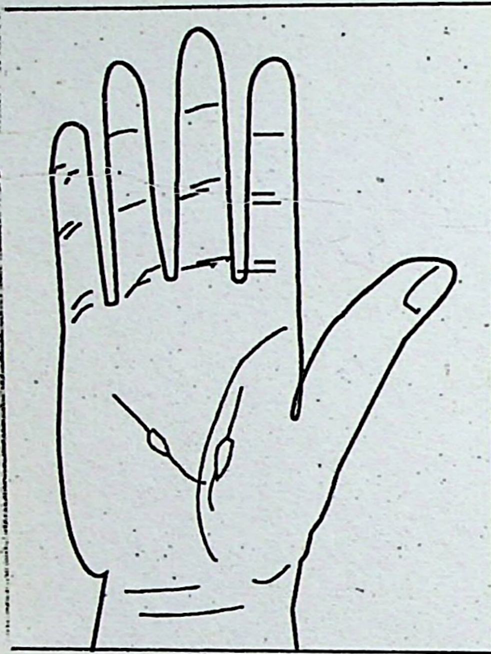
जब सूर्य रेखा पर हो, तो प्रसिद्धि और हैसियत के नुकसान की भविष्यवाणी करता है, जो किसी बदनामी के कारण होती है।

कोई रेखा या तो द्वीप में मिल रही हो या द्वीप बनाती हो, तो यह हाथ के जिस हिस्से पर है उसके सम्बन्ध में एक बुरा लक्षण है।



चित्र–127

शुक्र पर्वत पर एक सहायक रेखा अगर एक द्वीप में मिल रही हो तो वह जीवन को प्रभावित करने वाले स्त्री या पुरुष के लिए कामसंवेगों के कारण बदनामी या मुसीबत की भविष्यवाणी करने वाला लक्षण होता है।



चित्र-128

एक द्वीप बनाती रेखा जब शुक्र पर्वत से आती हुई हाथ को पार करके विवाह रेखा तक जा रही हो, तो इस बात की भविष्यवाणी करती है कि इस विशेष बिन्दु का कोई दुष्प्रभाव जीवन पर पड़ेगा, जो विवाह को बदनाम करेगा।

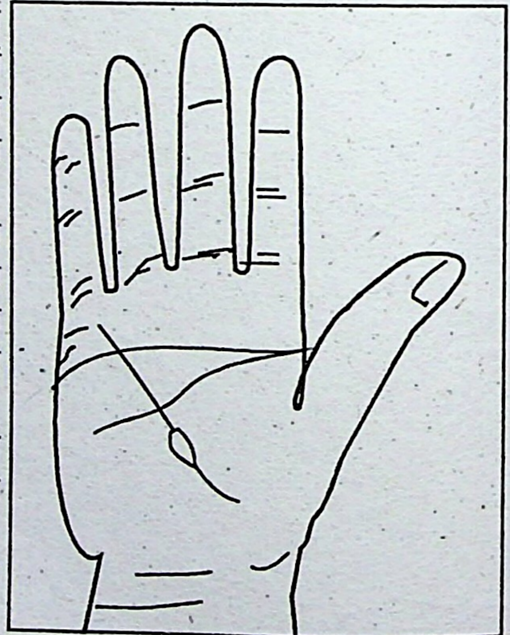
अगर इसी तरह की कोई रेखा हृदय रेखा की तरफ जाती है तो कोई दुष्प्रभाव और संकट में डालेगी और जब मस्तिष्क रेखा की तरफ जाती हो, तो व्यक्ति की प्रतिभा और नियत को किसी बदनाम काम की तरफ प्रेरित करेगी और जब वह भाग्य रेखा से मिले और उसे वहीं रोक ले, तो कोई दुष्प्रभाव व्यक्ति की सफलता में बाधा डालेगा। यह उस हालात में होगा जब दोनों रेखाएं मिल रही हैं।

किसी भी पर्वत पर पाया जाने वाला द्वीप उनके गुणों को नुकसान पहुंचाता है। गुरु का पर्वत आत्माभिमान और आकांक्षा को कमजोर करता है।

शनि पर्वत पर द्वीप का निशान व्यक्ति को दुर्भाग्य का शिकार बनाता है।

सूर्य के पर्वत पर कला के लिए प्रतिभा को कमजोर करता है।

बुध पर व्यक्ति को इतना



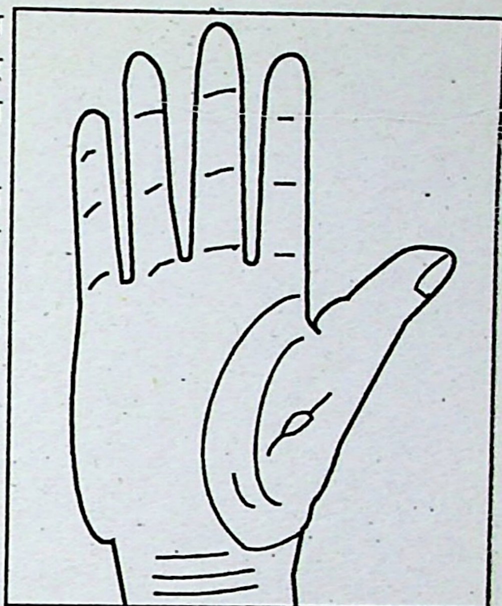
चित्र-129

परिवतर्नशील बनाता है कि उसे कामयाबी न मिल सके। खासकर विज्ञान या व्यवसाय के किसी क्षेत्र में जुड़े व्यक्ति को।

मंगल पर द्वीप का निशान भावना की दुर्बलता और कायरता का द्योतक है।

चन्द्र पर इसका अर्थ है कि कल्पना की क्षमता को अमल में ला सकने में कमजोरी।

शुक्र पर यह व्यक्ति के कल्पना के खेल हैं और समय संवेद से आसानी से प्रभावित और प्रचलित होने वाला बताया है।



चित्र-130

बिन्दु–

बिन्दु प्रायः अस्थायी खण्डता का द्योतक है।

एक चमकीला लाल बिन्दु अगर मस्तिष्क रेखा पर हो तो किसी आघात या गिरने के कारण घायल होने का निशान है।

एक काला या नीला बिन्दु स्नायविक रोग का चिह्न है।

स्वास्थ्य रेखा पर चमकीला लाल बिन्दु बुखार होने का सूचक है और जीवन रेखा पर होने से यह किसी ऐसी बीमारी का द्योतक है, जो बुखार प्रकृति की होती है।

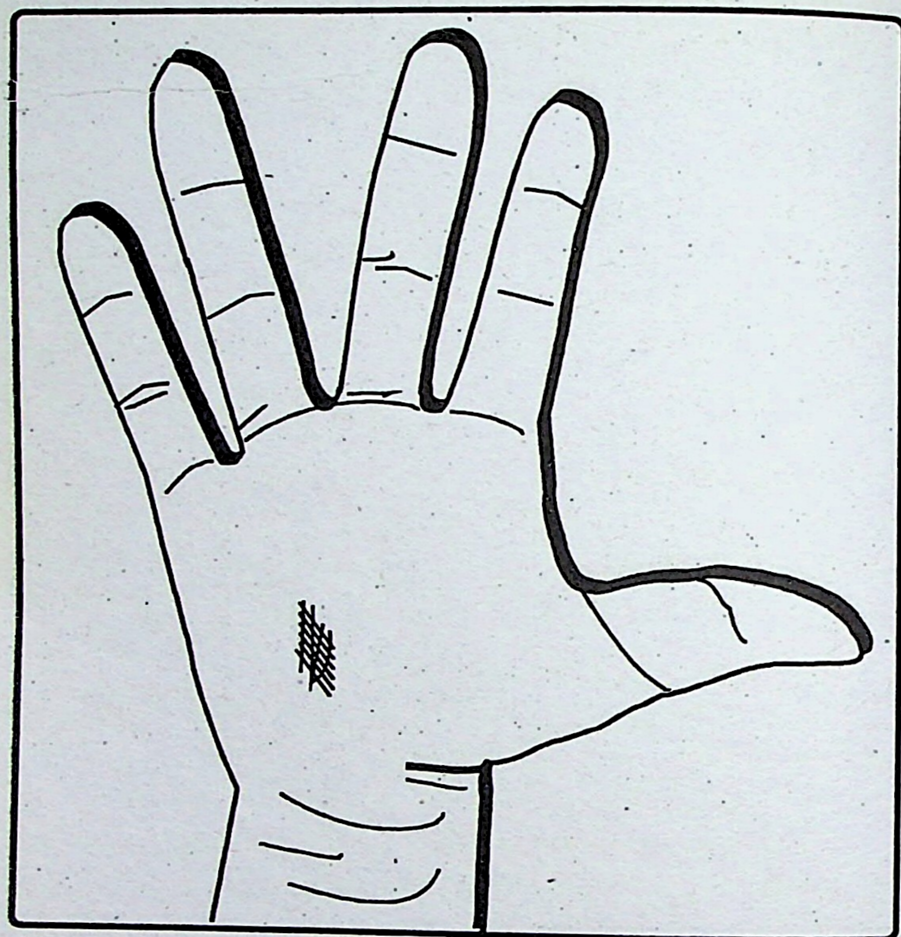
जाल–

जाल रेखाओं पर प्रायः दिखाई दे जाता है और आम तौर पर हाथ के पर्वतों पर होता है। यह उस पर्वत की कामयाबी के रास्ते में बाधाओं की सूचना देता है और खास बात यह है कि इसका मतलब यह है यह बाधायें हाथ के उस भाग के अनुसार जिस पर जाल है, व्यक्ति को अपनी प्रवृत्तियों की वजह से आती हैं।

गुरु के पर्वत पर यह गर्व, घमण्ड और खा जाने वाली वृत्ति का सूचक है।

शनि के पर्वत पर यह दुर्भाग्य की सूचना देता है। प्रकृति एकान्त, बड़ी उदास, विकृत और पीड़ायुक्त होती हैं।

सूर्य के पर्वत पर घमण्ड, मूर्खता और विख्यात होने की इच्छा प्रकट करता है।



चित्र–131

चन्द्र के पर्वत पर इसका मतलब है बेचैनी और असन्तोष।

शुक्र के पर्वत पर कामसंवेगों में बेलगामी बतलाता है।

वृत्त–

वृत्त अगर सूर्य के पर्वत पर हो तो यह शुभ लक्षण होता है। यही एक स्थिति है जिसमें यह सौभाग्य का सूचक है। किसी और पर्वत पर वृत्त व्यक्ति की कामयाबी के विपरीत लक्षण है।

चन्द्र के पर्वत पर वृत्त के होने से डूबकर मृत्यु का डर होता है।

जब यह किसी महत्त्वपूर्ण रेखा को छू रहा हो तो, यह उस बात का सूचक है कि उस विशेष जगह पर व्यक्ति अपने को दुर्भाग्य से बचाने में सक्षम नहीं होगा। दूसरे शब्दों में जैसा कि नीयति है, वह गोल चक्कर में घूमता चला जाएगा और दुष्चक्र को भंग करके आजाद होने के योग्य नहीं होगा।

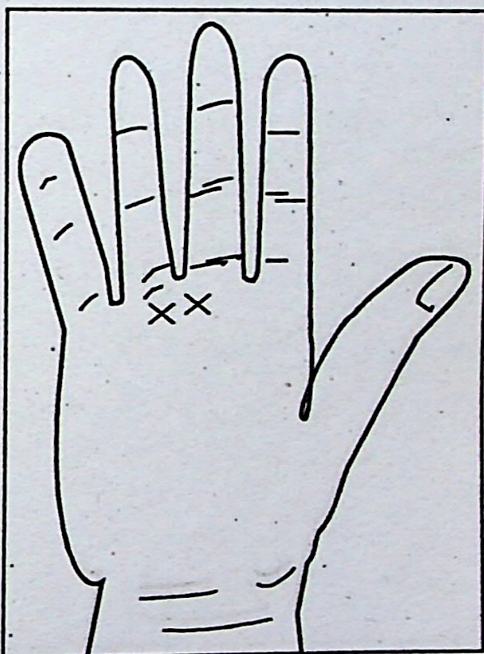
रहस्य क्रॉस–

यह विचित्र–सा निशान आम तौर पर चतुष्कोण का केन्द्र स्थल अपने लिए चुनता है। लेकिन यह इसके ऊपरी या बिल्कुल निचले भाग पर हो सकता है।

यह भाग्य और मस्तिष्क रेखा से हृदय रेखा की तरफ किसी रेखा के मिलने से भी बना हो सकता है और किसी मुख्य रेखा से किसी तरह सम्बन्धित न होकर एक सुस्पष्ट चिह्न के रूप में मौजूद हो सकता है।

यह रहस्यवाद और अंधविश्वास का द्योतक है।

यह गुण एक-दूसरे से बिल्कुल अलग है। इसलिए रहस्य क्रॉस की स्थिति हाथ पर किसी जगह है, यह ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। जब यह हाथ पर बहुत ऊपर गुरु की तरफ हो तो यह व्यक्ति के अपने जीवन को लेकर रहस्यवाद में यकीन प्रदान करता है लेकिन उसमें जितना अपने आप में है, उससे आगे अध्ययन की इच्छा नहीं होती, ऐसे लोग चाहते हैं कि उनका भविष्य बताया जाए, परन्तु जिज्ञासा की वजह से अधिक वे जान सकें, उनकी महत्त्वाकांक्षा किस रूप में सामने आएगी।



चित्र–132

जब रहस्य क्रॉस मस्तिष्क रेखा की अपेक्षा हृदय रेखा के पास स्थित होता है, तो यह अंधविश्वासी प्रकृति प्रदान करता है और यह बात तब और भी ज्यादा होती है जब यह मस्तिष्क रेखा के केन्द्र पर अंकित होता है और वह रेखा तेजी से नीचे को हो रही हो। यह जरूर ध्यान रहे कि मस्तिष्क रेखा की लम्बाई का उससे बहुत गहरा सम्बन्ध है। छोटी मस्तिष्क रेखा के साथ इस

क्रॉस का होना लम्बी रेखा के मुकाबले व्यक्ति को हजार गुना अधिक अन्धविश्वासी बना देता है। यह क्रॉस जब भाग्य रेखा को छूता है या उससे निर्मित होता है तो रहस्यवाद पूरे भविष्य को प्रभावित करते हैं।

त्रिकोण–

त्रिकोण एक विचित्र-निशान है और स्पष्ट तथा स्वच्छ रूप से अंकित होता है, जो सेवाओं के संयोग से एक-दूसरें के काटने की वजह से नहीं बना होता।

जब यह शुक्र के पर्वत पर सुविकसित रूप में होता है तो यह लोगों को प्रशासन चलाने में सामान्य से अधिक कामयाबी उन्हें संभालने और यहां तक कि रोज-मर्रा के कामों में सुव्यवस्था लाने का द्योतक होता है।

शनि के पर्वत पर यह रहस्यवादी कामों के प्रति अभिरुचि और प्रतिभा प्रदान करता है।

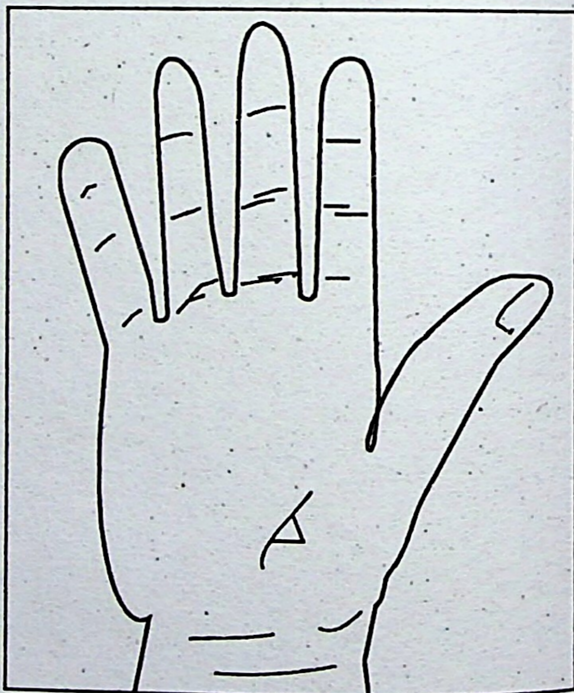
आगे तथ्य पर जाने पर मानवीय चुम्बकीयता अध्ययन आदि की तरफ झुकाव देता है।

सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का मतलब है कला का व्यावहारिक उपयोग, सफलता व ख्याति की दिशा में शान्त प्रयत्न। कामयाबी ऐसे मनुष्यों को कभी भ्रष्ट नहीं करती है।

मंगल के पर्वत पर यह युद्ध कला में वैज्ञानिकता, संकट के वक्त में महान् धीरज और खतरों में तुरन्त बुद्धि प्रदान करता है।

चन्द्र के पर्वत पर त्रिकोण का मतलब है कल्पना प्रेरित विचारों में वैज्ञानिक पद्धति के आने की क्षमता।

बुध के पर्वत पर प्रेम में शान्ति और नपा-तुला व्यवहार अपने ऊपर नियन्त्रण रखने की ताकत देता है।



चित्र-133

तिल चिह्न का प्रभाव

मनुष्य के शरीर पर दो प्रकार के तिल पाए जाते हैं—

(1) काले, (2) लाल।

जिन तिलों का रंग शहद के समान लाल होता है वे शुभ माने जाते हैं और जो काले रंग के होते हैं वे अशुभ माने जाते हैं। तिलों के फलाफल के विषय में प्राच्य विद्वानों के मत को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

मनुष्य के माथे पर क्रमशः (1) शनि, (2) गुरु, (3) मंगल, (4) सूर्य, (5) शुक्र, (6) बुध और (7) चन्द्र—इन सात ग्रहों की सात रेखाएं होती हैं। इन रेखाओं पर पांच-पांच तिल पाए जाते हैं, लेकिन सभी लोगों के माथे पर साधारणतया तिल पाएं जाएं यह जरूरी नहीं है, किसी-किसी मनुष्य के तो एक भी तिल नहीं पाया जाता। रेखाओं पर पाए जाने वाले तिलों की संख्या क्रमशः दायीं से बायीं ओर गिनी जाती है।

इन सात रेखाओं के अलावा व्यक्ति के चेहरे और शरीर के अन्य भागों पर भी तिल पाए जाते हैं।

शनि रेखा पर स्थित तिलों का प्रभाव

(1) पहला तिल—अगर लाल हो तो मेहनती, तीक्ष्ण बुद्धि, दृढ़निश्चयी और धनोपार्जन में कुशल।

(2) दूसरा तिल—लाल हो तो स्त्रियों से विशेष प्रेम रखने वाला और अपना काम आसानी से कर लेने वाला, काला हो तो किसी स्त्री के प्रेम में पड़कर अपयश पाने वाला और सभी कामों में असफल।

(3) तीसरा तिल—लाल अथवा काला कैसा भी हो, दोनों का प्रभाव बराबर या भीरू प्रकृति।

(4) चौथा तथा पांचवां तिल—लाल या काला कैसा भी हो सबका प्रभाव एक-जैसा या यात्राप्रेमी।

गुरु रेखा पर स्थित तिलों का प्रभाव

(1) पहला तथा दूसरा तिल—चाहे लाल हो या काला—उन्नतिकारक और शुभ फलदायक।

(2) तीसरा तिल—रंग कोई-सा भी—बुद्धिमान और चतुर।

(3) चौथा और पांचवां तिल—चाहे किसी भी रंग का हो—सुखी जीवन।

मंगल रेखा पर स्थित तिलों का प्रभाव

(1) पहला और दूसरा तिल—चाहे किसी भी रंग का हो—शूरवीर और यशस्वी।

(2) तीसरा तिल—तिल चाहे जिस रंग का भी हो—निःसन्तान और भीरू स्वभाव।

(3) चौथा और पांचवां तिल—चाहे किसी भी रंग का हो—दुःखी जीवन।

सूर्य रेखा पर स्थित तिलों का प्रभाव

(1) पहला और दूसरा तिल—चाहे किसी रंग का हो—परेशानी, सम्पत्ति की हानि, अशुभ फल।

(2) तीसरा तिल—चाहे जिस रंग का भी हो—धनधान्य एवं ऐश्वर्य सुख।

(3) चौथा और पांचवां तिल—चाहे जिस रंग का भी हो—गृह-कलह।

शुक्र रेखा पर स्थित तिलों का प्रभाव

(1) पहला और दूसरा तिल—चाहे जिस रंग का हो—पति-पत्नी में प्रेम।

(2) तीसरा तिल—चाहे जिस रंग का हो—तीक्ष्ण बुद्धि।

(3) चौथा और पांचवां तिल—चाहे जिस रंग का हो—भीरू स्वभाव।

चन्द्र रेखा पर स्थित तिलों का प्रभाव

(1) पहला तथा दूसरा तिल—चाहे जिस रंग का हो—यात्राप्रेमी, यात्रा द्वारा लाभ।

(2) तीसरा तिल—चाहे जिस रंग का हो—गुदा रोग, पुरुष जातक अल्पायु, स्त्री जातक आत्महत्या करने को उद्धत।

(3) चौथा और पांचवां तिल—चाहे जिस रंग का हो—दूसरों को नुकसान पहुंचाकर खुद खुश होना।

चेहरे के अन्य भागों पर पाए जाने वाले तिलों का प्रभाव निम्न अनुसार होता है—

(1) दायीं कनपटी पर—किसी भी रंग का हो—दाम्पत्य प्रेम, सुख, शान्ति।

(2) बायीं कनपटी पर—किसी भी रंग का हो—जीवन में मुश्किल।

(3) बायीं बरौनी पर—किसी भी रंग का हो—अस्थिरता, असफलता और दुःख।

(4) दायीं बरौनी पर—किसी भी रंग का हो—धन, तीक्ष्ण बुद्धि।

(5) बायीं भौंह पर—काले रंग का हो तो अहंकारी स्वभाव; लाल रंग का हो तो पुरुष जातक शुभ कार्य करने वाला, एकान्तप्रिय, स्त्री जातक सुन्दर लेकिन छोटे विचारों वाली।

(6) दायीं ओर तथा बरौनी के बीच में—किसी भी रंग का हो—भले-बुरे परिवर्तन, कष्ट, नेत्र-ज्योति।

(7) दाएं कान और आंख की बरौनी के बीच में—किसी भी रंग का हो—अल्प साहसी, असफलता से घबराहट, श्रेष्ठ भोजन।

(8) बायीं नेत्र पंक्ति के नीचे—किसी भी रंग का—आयु घातक।

(9) नाक के ऊपरी दाएं भाग पर—लाल हो तो शुभ सम्पत्तिदायक; काला हो तो कष्टदायक रोग, 35 से 45 वर्ष की आयु में दुर्घटना।

(10) नाक के दाएं भाग पर—किसी भी रंग का—पारस्परिक प्रेम वासना।

(11) नाक के बाएं भाग पर—किसी भी रंग का—युवावस्था में अनेक प्रकार के दुःख और प्रौढ़ावस्था में सुख-सम्पत्ति।

(12) नाक के ऊपरी मध्य भाग पर—काला हो तो पुरुष जातक दुष्ट प्रकृकि का, लगातार यात्रा, स्त्री जातक को 30 वर्ष की आयु में जलोदर रोग। लाल हो तो शुभ फल।

(13) बाएं कान के ऊपरी भाग में—किसी भी रंग का हो—अल्प आयु स्त्री जातक के प्रथम गर्भ में कन्या का जन्म।

(14) बाएं कान के मध्य भाग पर निम्न भाग में—लाल हो तो आयुवर्द्धक, काला हो तो आयु में परिवर्तन।

(15) गर्दन पर—काला हो तो पानी में डूबने या ऊंचे स्थान से गिरने का डर, लाल हो तो सुख-सौभाग्य का फल।

(16) दाएं कान पर—किसी भी रंग का—सरल स्वभाव, विवाह के बाद सुखी जीवन, युद्ध अवस्था में भाग्य उन्नति, धार्मिक विचार, सुख।

(17) ठोड़ी पर—किसी भी रंग का—धन की कमी रहते हुए भी शान्तिपूर्वक जीवन यापन।

(18) ऊपरी होंठ पर—किसी भी रंग का—ज्यादातर विश्वासी।

(19) दाएं गाल पर—किसी भी रंग का हो—पुरुष जातक बुद्धिमान प्रसन्नचित्त, बहुत मित्रों वाला, स्त्री जातक पति-सुख अल्प।

(20) बाएं गाल पर—किसी भी रंग का हो—धन की कमी रहते हुए भी शान्तिपूर्वक जीवन यापन।

हथेली के निशानों की पहचान

हस्त-परीक्षकों ने असंख्य हाथों के परीक्षण के बाद हाथ में पाए जाने वाले विभिन्न निशानों के बारे में कुछ जानकारियां दी हैं। हमारे ऋषि-मुनियों ने भी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों और पुराणों में इन निशानों की विभिन्न पहचान पर प्रकाश डाला है।

जिन निशानों के विषय में बताया जा रहा है उनकी पहचान इस तरह है–

शंख–अगर हाथ में यह निशान पाया जाता है तो जातक विदेश यात्रा करता और विदेशों से उसे धन-लाभ भी होता है।

चक्र–जिसके हाथ में चक्र हो, वह राजा के समान होता है। यह उसके वैभव और शक्ति का प्रतीक है।

चंवर–अगर हथेली में चंवर का निशान हो तो जातक उच्च अधिकारी का पद ग्रहण करता है।

स्वास्तिक–यह धनी आदमियों के हाथों में पाया जाता है। ऐसा आदमी राजा का मन्त्री, संस्था का संचालक अनेक विधाओं का ज्ञाता होता है।

पदम–जिसके हाथ में पदम हो वह आदमी उदार दिल का होता है। वह राजकीय सेवाओं में उच्च अधिकारी होता है।

गदा–जिसके हाथ में गदा का निशान हो, उसमें शासकीय योग्यता होती है। उसमें अद्‌भुत शारीरिक बल होता है।

त्रिशूल–यह शक्ति का प्रतीक है जिसके हाथ में यह निशान हो वह धनी सम्पन्न, वैभवशाली होता है। इसकी धार्मिक प्रवृत्ति होती है।

छत्र–यह राजा का प्रतीक है, जिस आदमी के हाथ में यह निशान हो, वह राष्ट्र अध्यक्ष, प्रदेश अध्यक्ष या किसी ऊंचे अंन्य पद पर प्रतिष्ठित होता है।

रथ–जिस व्यक्ति के हाथ में रथ का निशान हो, उसके पास अपना वाहन स्कूटर, मोटरसाइकिल या कार होती है। ऐसे मनुष्य धनवान, बुद्धिमान और मिलसार होते हैं।

ध्वज–जिसके हाथ में ध्वज का निशान होता है, वह मनुष्य दुनिया में प्रसिद्ध होता है। इसे जीवन में उच्च पद हासिल होता है।

हाथी–हाथ में इस निशान का होना ऐश्वर्य का प्रतीक है। जातक हाथी की सवारी करने वाला, सौभाग्यशाली, कोई राजा या उसके समान होता है। बड़े-बड़े व्यापारियों, ऊंचे पद अधिकारियों के हाथों में यह निशान होते हैं।

पर्वत–जिस मनुष्य के हाथ में पर्वत का निशान हो वह पर्वत के समान अडिग विचारों वाला होता है, वह किसी भी बात का फैसला सोच-समझकर करता

है, उस पर अमल भी करता है, किसी के पीछे नहीं लगता। आम तौर पर ऐसा निशान सरकारी भवन बनाने वाले व्यापारियों के हाथों में देखा जाता है।

हल—हल का निशान जिस मनुष्य के हाथ में होता है, वह कृषि कर्म करने वाला किसान होता है।

लक्ष्मी—जिसके हाथ में लक्ष्मी का निशान हो, वह अपार धन-सम्पत्ति का मालिक बनता है। उसकी बीवी भी लक्ष्मी के समान सुन्दर और सौभाग्यशाली होती है।

कल्पवृक्ष—जिस मनुष्य के हाथ में कल्पवृक्ष हो, वह बहुत वैभवशाली भवयुक्त होता है, बड़े भवनों का स्वामी होता है और अनेक नौकरों से युक्त होता है। दान की प्रवृत्ति होने के कारण इसके दरवाज़े पर याचकों की भीड़ लगी रहती है।

कमण्डल—साधुओं की सेवा करने वाला, धर्म का प्रचार करने वाला, दूर देशों की यात्रा करने वाला होता है।

जहाज—अगर हाथ में जहाज का निशान हो तो जातक समुद्र पार दूसरे देश की यात्रा करता है, बड़ा व्यापारी बनता है।

सिंह—अगर सिंह का निशान हो तो जातक बड़ा बहादुर, दूसरों पर राज्य करने वाला होता है। वह कभी भी नहीं हारता है और राज-वैभव से युक्त होता है।

घोड़े का निशान—अगर घोड़े की आकृति हाथ में पायी जाती है तो मनुष्य सेना में ऊंचा पद प्राप्त करता है। जातक को मोटरगाड़ी आदि सवारी का सुख मिलता है।

सिंहासन—उच्च पद अधिकारी, राजा या मन्त्री।

कलश—हाथ में कलश का निशान हो तो जातक धार्मिक यात्रा करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला होता है। वह देव मन्दिर या धर्मशाला बनवाता है।

सूर्य—जिसके हाथ में सूर्य का निशान हो, वह आदमी तेजस्वी होता है; और किसी सरकारी पद पर विराजमान होता है।

मोर—मोर का निशान नृत्य कला या संगीत से सम्बन्धित प्रतिष्ठित आदमियों के हाथों में पाया जाता है।

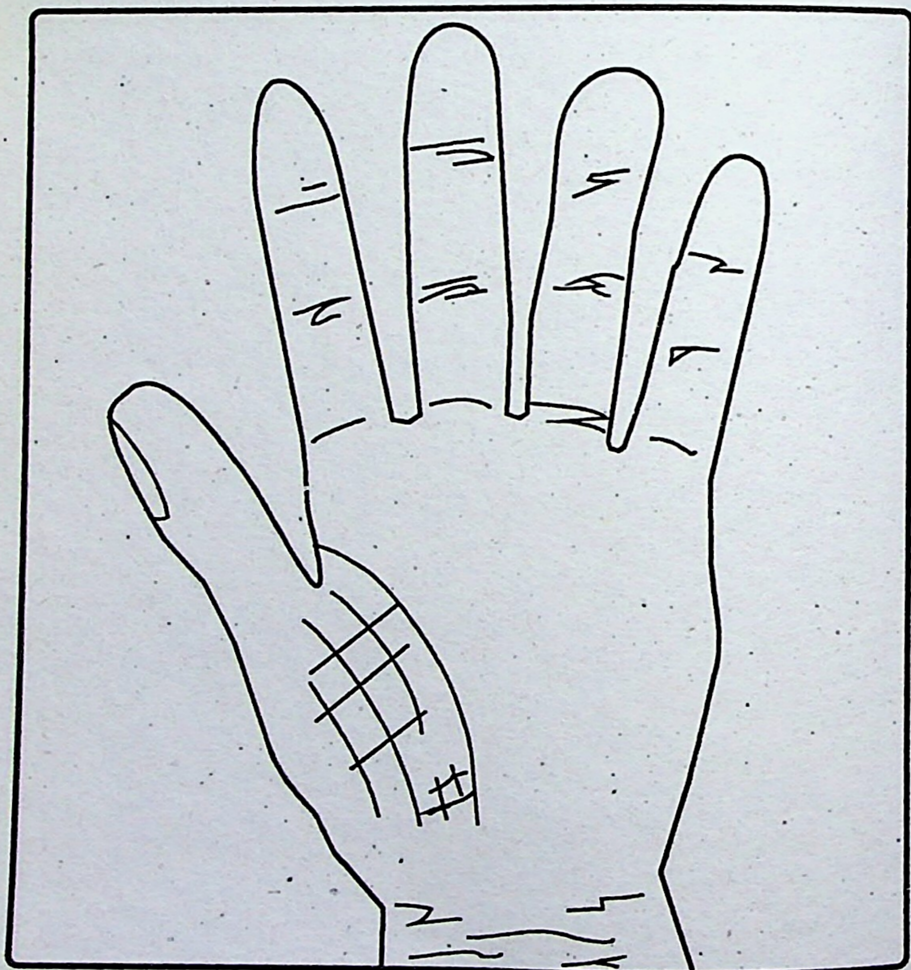
फूलमाला—फूलमाला का निशान अगर हाथ में पाया जाए तो मनुष्य धनी, प्रतिष्ठित, समाजसेवी होता है। इसे हर जगह दुश्मनों पर विजय प्राप्त होती है।

ऊपर दिये गये निशानों के अलावा कुछ अन्य निशान भी हाथ में पाए जाते हैं।

ये निशान ज्यादातर अस्पष्ट और अधूरे होते हैं। हस्तरेखा अध्ययन करने वालों को असंख्य हाथ देखने के बाद कहीं जाकर पता चलता है कि अमुक हाथ में कोई ऐसा निशान है कि नहीं।

प्रभावी रेखाएं

शुक्र पर्वत और जीवन रेखा के भीतर अनेक रेखाएं होती हैं। ये जीवन रेखा के समानान्तर चलती हैं और कुछ शुक्र पर्वत के आर-पार जाती हैं, इन रेखाओं को प्रभावी रेखाएं कहा जाता है और ये जातक के जीवन को बाहर से प्रभावित करती हैं। जीवन रेखा के भीतर चलने वाली रेखाएं भी प्रभावी रेखाएं कहलाती हैं। यह रेखाएं जातक को भलाई या बुराई के मार्गों की ओर प्रेरित करने वाली यह रेखाएं होती हैं। सामान्यतया ये अपने ही परिवार या अपने निकटतम मित्रों के प्रेरणा-प्रभाव को प्रकट करती हैं।



चित्र-134

मंगल रेखा जीवन रेखा के अन्दर और उसके समानान्तर चलती है, इसीलिए उसको जीवन रेखा की सहायक रेखा कहते हैं। यह वास्तव में एक प्रभावी रेखा होती है लेकिन इसका प्रभाव जातक के स्वास्थ्य पर होता है, दूसरे व्यक्तियों के प्रभाव से इसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। मंगल रेखा अपेक्षाकृत एक दुर्लभ चिह्न है क्योंकि जीवन रेखा के साथ-साथ चलने वाली अधिकतर रेखाएं मात्र प्रभावी रेखाएं होती हैं।

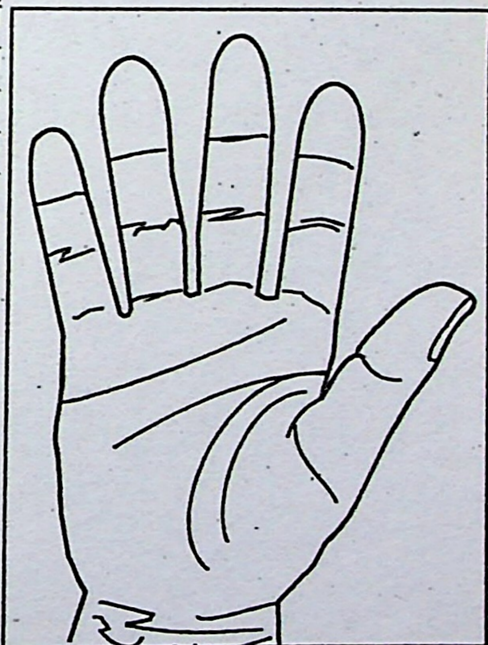
इन रेखाओं की लम्बाई यह बताती है कि जातक के जीवन में किसका और कितने समय तक का प्रभाव रहा है। ज्यादातर हाथों में एक नयी प्रभावी रेखा बीस और तीस साल की उम्र के बीच दीखने लगती है; क्योंकि लगभग इसी उम्र में अधिकतर विवाह होते हैं। अगर विवाह शुभ एवं सुखमय हो, तो यह रेखा अपने प्रकट होने के समय से ही जातक पर विशेष प्रभाव डालती है, लेकिन इसके विपरीत स्थिति में रेखा अस्पष्ट और धुंधली-सी दिखाई देती है।

गहरी प्रबल और सुरंजित प्रभावी रेखाएं ही प्रभावशाली होती हैं। पतली शृंखलाकार सतही ऊबड़-खाबड या टूटी-फूटी रेखाओं का प्रभाव दमदार नहीं होता।

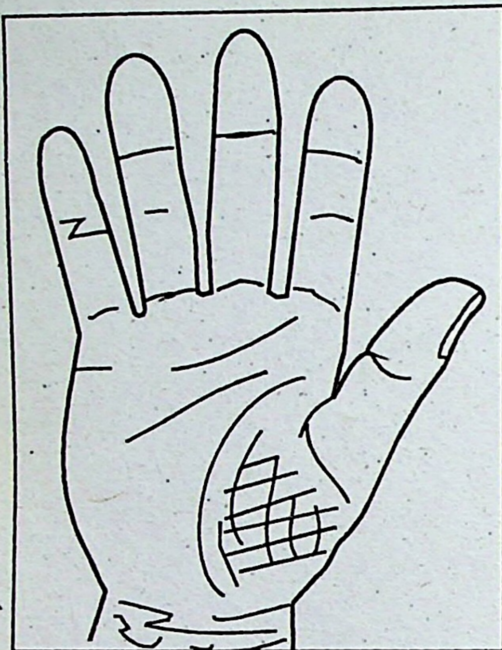
जब कोई प्रभावी रेखा शुरू में गहरी होती है और बाद में पतली होते-होते गायब हो जाती है तो इसका मतलब होता है कि प्रभाव शुरू में तो प्रबल था लेकिन धीरे-धीरे बिल्कुल खत्म हो गया।

इस रेखा का पुनर्जीवित होना और धीरे-धीरे अधिक शक्तिशाली बनना जातक के जीवन में प्रभाव के वापिस लौट आने की सूचक होती है। ऐसे में जातक की शक्ति बढ़ जाती है।

इन प्रभावोत्पादक रेखाओं की हथेली में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका है जिसको पहली बार आप इस पुस्तक के जरिये से समझ जाएंगे।



चित्र-135

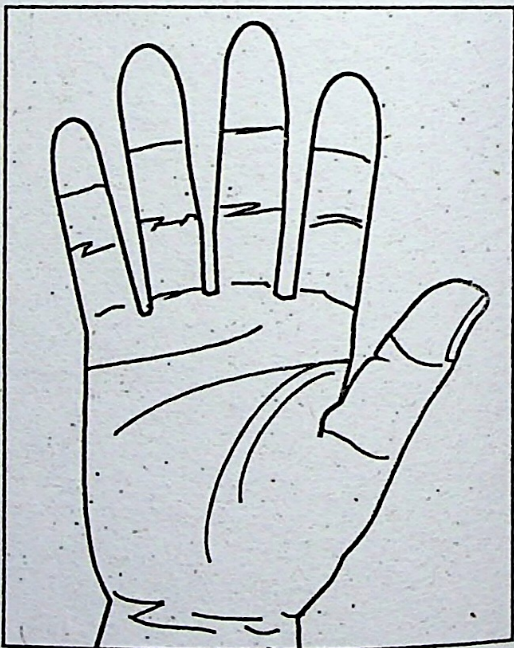


चित्र-136

शुक्र स्थल पर पायी जाने वाली बहुत सारी प्रभावी रेखाएं विलासी मनोवृत्ति को ही बताती हैं। ऐसा जातक प्रति पल विपरीतलिंगी के आगोश में रहना चाहता है।

चित्र-में आपको जीवन रेखा के समानान्तर एक दूसरी रेखा साथ-साथ चली हुई दिखाई दे रही है यह वास्तव में प्रभाव रेखा ही है; पर इसका प्रभाव जातक के स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखता है किसी अन्य व्यक्ति से नहीं। यह रेखा जातक के उत्कृष्ट स्वास्थ्य को बताती है। मंगल रेखा कम हाथों में पायी जाती है, इस रेखा के अलावा जितनी भी प्रभाव रेखाएं दिखलाई देंगी उनका अलग-अलग प्रभाव जातक के जीवन पर होता है। प्रभावी रेखा जितनी अधिक जीवन रेखा के पास होगी उतना ही अधिक मनुष्य का जीवन निकटतम सम्बन्धी से प्रभावित होगा। यह सम्बन्धी माता-पिता, भाई-बहन कोई भी हो सकता है।

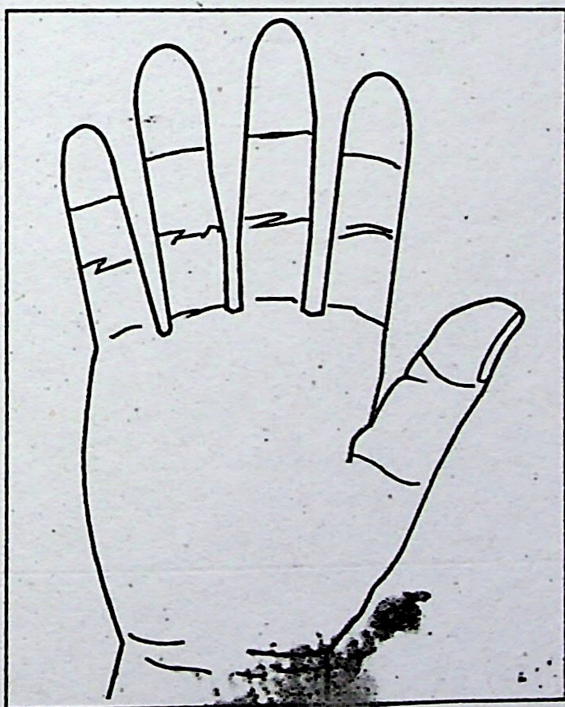
इससे यह पाया जाता है कि जो रेखा जीवन रेखा के बिल्कुल पास से शुरू होकर थोड़ी दूर तक साथ चलती है, यह वस्तुतः मातृ रेखा है जो माता के प्रति जातक के लगाव को बताती है; क्योंकि

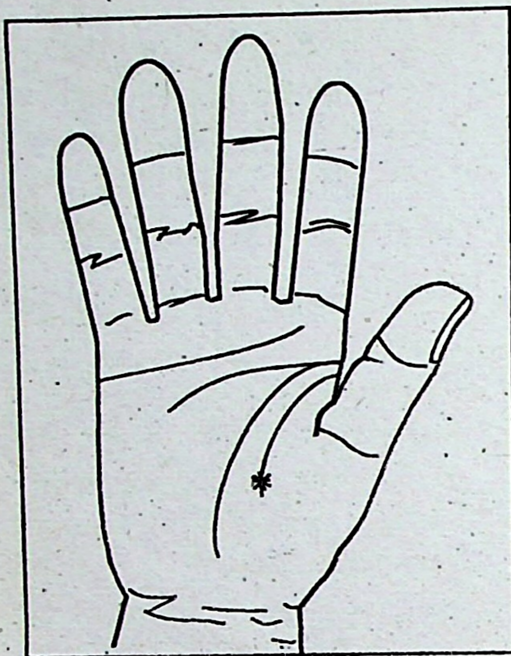


चित्र-137

माता का प्रभाव व्यक्ति के प्रारम्भिक जीवन में शुरू हो जाता है इसके बाद जो रेखा दिखलाई देगी, वह पिता के प्रति जातक के लगाव, रुझान एवं प्रभाव को बतलायेगी। माता-पिता के प्रति लगाव को दर्शाने वाली प्रभाव रेखा अन्य रेखाओं से ज्यादा गहरी व स्पष्ट होती है। अगर नम्बर चार पर और कोई प्रभाव रेखा स्पष्ट दिखती हो तो यह दादा-दादी की रेखा होगी, इस रेखा की लम्बाई जातक के प्रभावित समय की दीर्घता को बताती है।

कुछ हाथों में एक नये प्रकार की प्रभाव रेखा जीवन के 20 से 30 वर्ष की आयु में प्रकट होती है। यह रेखा जातक के जीवन साथी के प्रति होने वाले लगाव को बताती है। क्योंकि इसी उम्र में ज्यादातर जातकों का विवाह होता है। यह रेखा जब प्रकट होती है तो जातक का ज्यादातर झुकाव जीवन साथी की तरफ होता है। अगर यह रेखा स्पष्ट होकर जीवन रेखा को स्पर्श कर ले तो समझें कि प्रेमी या प्रेमिका का सम्बन्ध जातक के जीवन में अन्य रूप से जुड़ चुका है। केवल प्रभाव रेखाएं उन्हीं संकेतों को स्पष्ट करती हैं जिनका जातक के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा हो।

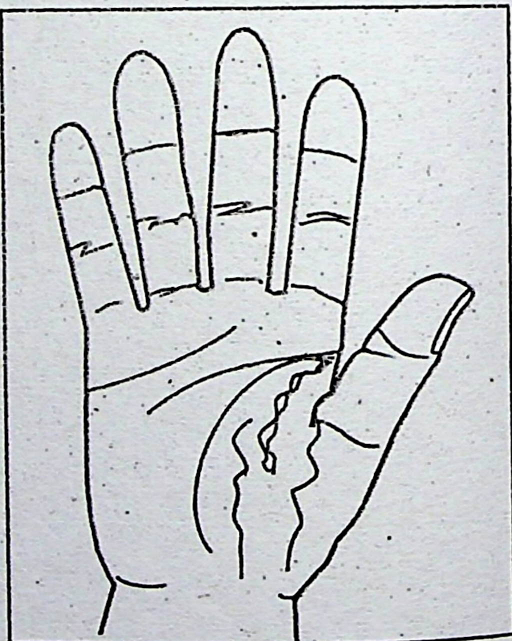




चित्र-139

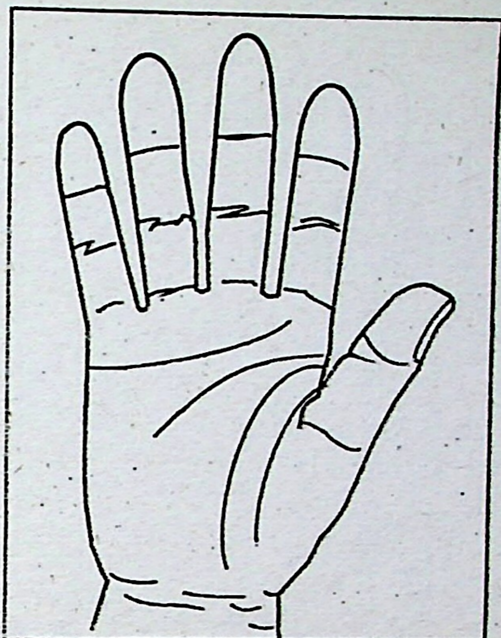
अगर प्रभाव रेखा के अन्त में एक सितारा या क्रॉस-सा प्रतीत हो तो समझें कि जातक को गहरा प्रभाव या लगाव जिसके भी प्रति रहा हो, अब समाप्त हो गया। यह लगाव किसके प्रति रहा होगा, इसका पता लगाना जरा मुश्किल काम है; पर प्रभाव रेखा जीवन रेखा से जितनी दूरी पर हो, इसके हिसाब से दूरी का परिमापन के अनुपात से प्रभावित प्राणी के प्रति अन्दाजा लगाया जा सकता है। यह याद रखें कि जीवन रेखा के नजदीकतम प्रकट होने वाली प्रभाव रेखा नज़दीकी रिश्तेदार एवं दूरी पर प्रकट होने वाली प्रभाव रेखा दूर के रिश्तेदार को बताती है।

चित्र में निर्दिष्ट प्रभाव रेखा से हमें कई बार जातक के रिश्तेदारों की मृत्यु का संकेत भी आश्चर्यजनक रूप से मिल जाता है। यह प्रभाव हमें शनि और सूर्य रेखा में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो जाता है। जातक के नज़दीकी रिश्तेदार की मृत्यु जातक के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अतः इन प्रभाव रेखाओं पर हथेली में इस दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

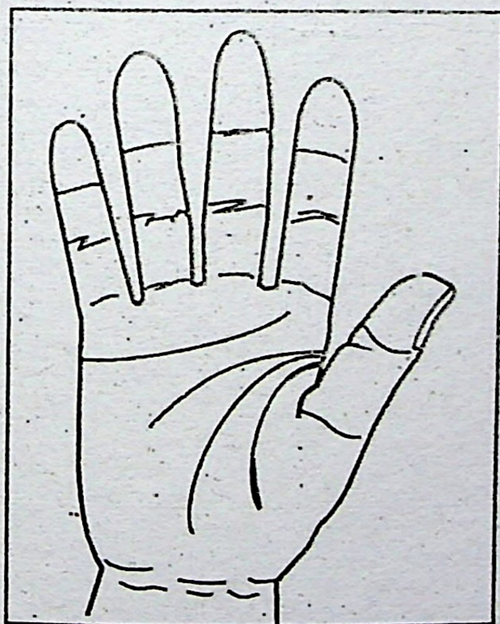


चित्र-140

जब प्रभाव रेखा गहरी स्पष्ट एवं रंगदार हो तो जातक का लगाव अन्य के प्रति गहरा प्रभावोत्पादक होता है लेकिन जब यह रेखा पतली, लहरदार, शृंखलाबद्ध, टेढ़ी-मेढ़ी, टूटी-फूटी हो तो जातक का किसी के प्रति लगाव प्रभाव स्थायी नहीं होता।



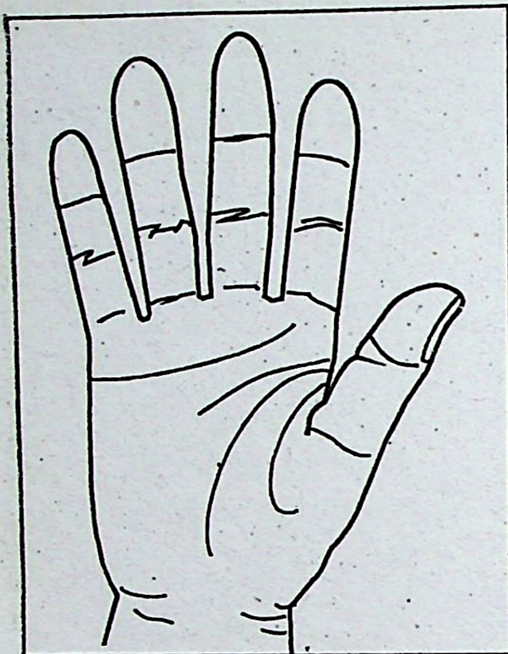
चित्र-141



चित्र-142

जब प्रभाव रेखा प्रारम्भ में गहरी एवं मोटी लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़े तो पतली होती चली जाए और धीरे-धीरे गायब ही हो जाए तो ऐसे में जातक का शुरू में किसी के प्रति ज्यादा लगाव होता है जो धीरे-धीरे कम होता हुआ खत्म हो जाता है।

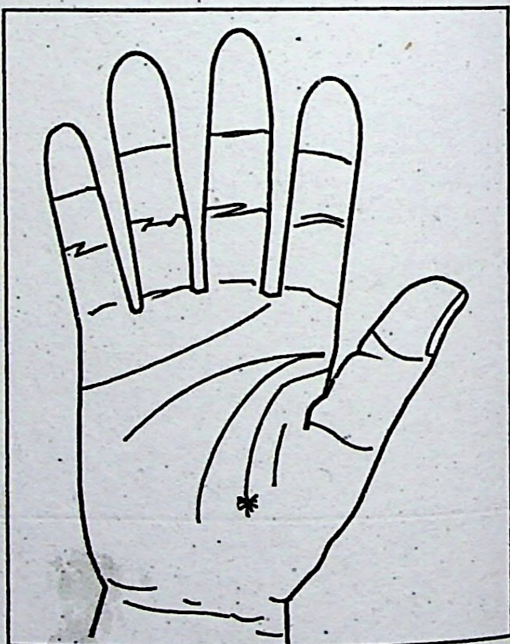
अगर यह रेखा आगे बढ़ती हुई वापस गहरी हो जाए तो जातक के जीवन में फिर किसी व्यक्ति से लगाव जुड़ता है और गहरा होता हुआ जीवन के अन्तरंग से जुड़ जाता है।



अगर प्रभाव रेखा जीवन रेखा से दूर होती हुई मुड़ जाए और खत्म हो जाए तो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि जातक का कोई नजदीकी व्यक्ति उससे विरक्त हो गया है या उसमें परायापन आ गया है, घटना कब घटित हुई होगी, इसका पता आयु रेखा की गणना करके बताया जा सकता है।

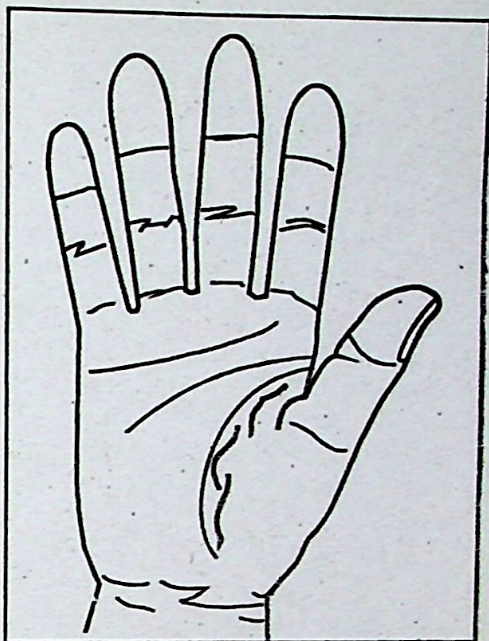
चित्र-143

अगर प्रभाव रेखा शुरू से ही उठान लिये हुए हो और थोड़ी दूर जाकर एक सितारे के निशान के साथ खत्म हो जाए और वहीं से एक और रेखा प्रभाव बनाती हुई दिखाई पड़े जो कि सितारे के निशान के बाद से ज्यादा साफ और गहरी दिखाई दे तो यह रेखा बताती है कि जातक के माता-पिता का देहान्त उस आयु में हो गया जहां पर सितारे की आकृति है और उसके बाद किसी अन्य व्यक्ति ने माता-पिता की जगह ले ली, जिसका जातक के जीवन पर गहरा प्रभाव है।

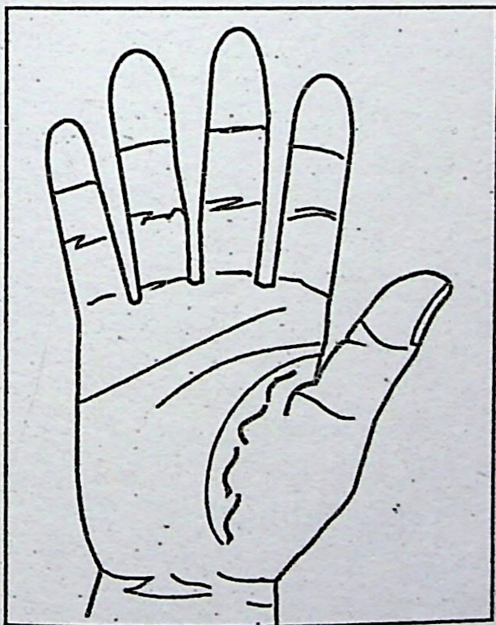


चित्र-144

अगर प्रभाव रेखा शुरू में दुबली-पतली होकर टूट जाए और वहीं से दूसरी रेखा दिखाई दे, इस तरह प्रभाव रेखा खण्ड-खण्ड होकर फिर उदय होती-सी दिखलाई दे, तो ऐसे जातक के जीवन में एक के बाद दूसरे रिश्तेदारों का क्रमशः प्रभाव पड़ता रहता है, ऐसे प्रभाव जिससे जातक का जीवन प्रभावित होता है।

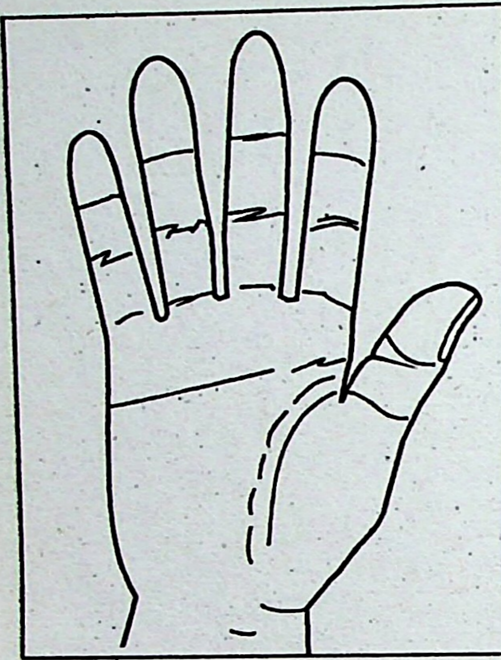


चित्र-145



चित्र-146

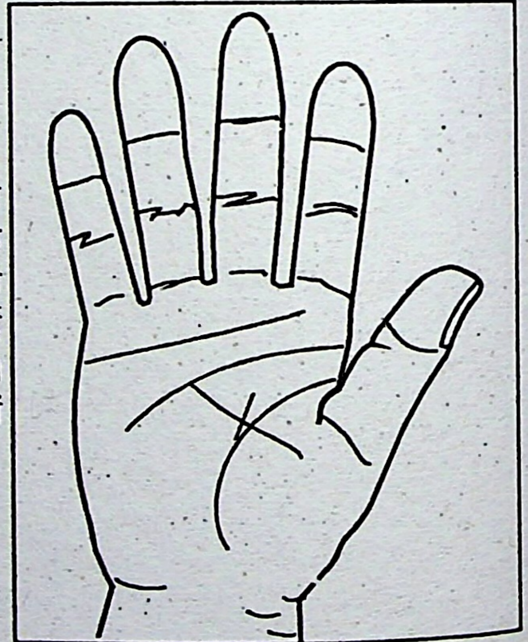
अगर जातक की जीवन रेखा कमजोर पतली शृंखलाकार, द्वीपयुक्त एवं दूषित हो और प्रभाव रेखा सुस्पष्ट एवं गहरी हो तो इसका मतलब यह है कि जातक जीवन में जब कभी भयानक बीमार रहा या दुर्घटनाग्रस्त रहा हो तो उसके किसी रिश्तेदार ने उसे पूरा-पूरा सहारा दिया। यह रेखा एक प्रकार से मंगल रेखा का काम करेगी और विपत्ति के वक्त जातक को लगातार देखभाल, सेवा-सुश्रूषा के माध्यम से नया जीवनदान मिला है, इसका संकेत देती है।



चित्र-147

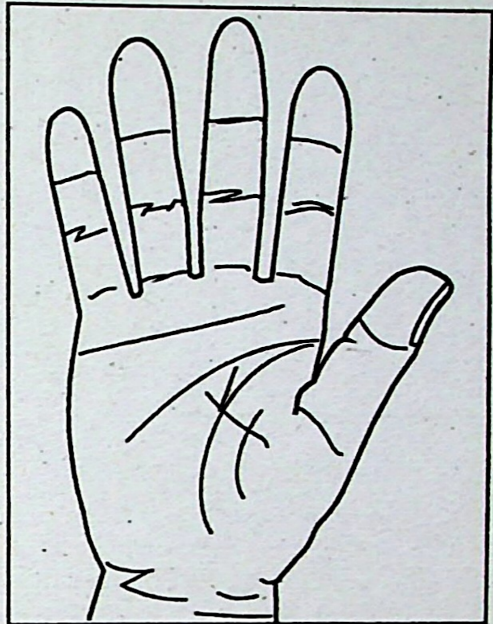
अगर मस्तिष्क रेखा अपनी शुरू अवस्था में कमजोर या छिन्न-भिन्न अस्पष्ट हो, जीवन रेखा दुबली हो, पर प्रभाव रेखा सुस्पष्ट व गहरी हो और आगे चलकर जीवन रेखा से दूर होती चली जाए तो ऐसी हालत में मस्तिष्क ज्वर रहा, दिमागी कमजोरी रही, पर किसी नज़दीकी रिश्तेदार की मदद से जातक स्वस्थ होगा। धीरे-धीरे मस्तिष्क ठीक हो जाएगा और रिश्तेदार के मदद की जरूरत नहीं रह जाएगी।

जीवन रेखा में से कोई शाखा ऊपर की तरफ उठती हो और यह रेखा शुरू क्षेत्र से उदित होने वाली "चिन्ता रेखा" द्वारा काट दी गई हो तो यह अशुभ फलदायी है। जातक की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं पर पानी फिर जाता है।

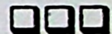


चित्र-148

अगर यह चिन्ता रेखा शुक्र स्थल की जगह प्रभाव रेखा में उत्पन्न होकर जीवन रेखा की शाखा को काटे तो जातक को अपनी महत्त्वाकांक्षा और उच्च अभिलाषा पर काबू रखना जरूरी है। बहुत सारे केसों में यह देखा गया है कि ऐसे जातक के जीवन में कोई केस या कानूनी आपत्ति जरूर आती है, जिससे आपकी लक्ष्य-प्राप्ति में बाधा पड़ती है। पुराने पॉमिस्ट इसे तलाक रेखा के रूप में पहचानते हैं।

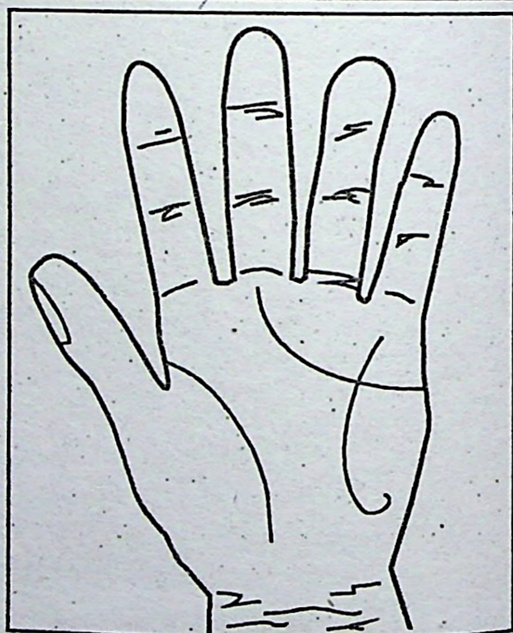


चित्र-149



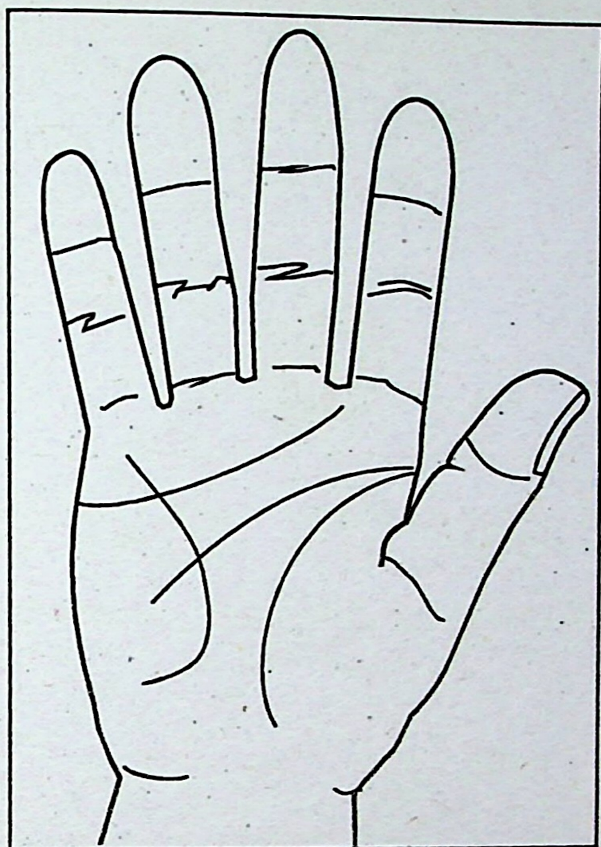


अन्तर्ज्ञान रेखाएं—विश्लेषण और प्रभाव



अन्तर्ज्ञान रेखाएं हाथ के पार्श्व में किनारे के पास पायी जाती हैं। यह रेखा चन्द्र पर्वत पर उदय होती है और मंगल के मैदान की तरफ घुमाव के बाद बुध पर्वत या उसके पास समाप्त हो जाती है। इसकी हालत वह होती है, जो बुध रेखा की होती है लेकिन इसकी पहचान इसकी घुमावदार बनावट से होती है। वस्तुतः यह बुध रेखा ही होती है।

चित्र-150



चित्र-151

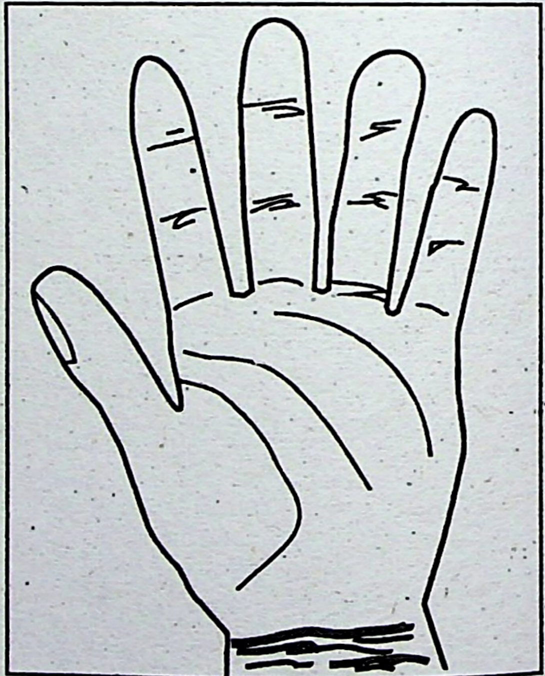
अगर यह रेखा गहरी और साफ हो, तो इससे जातक की क्षमता बहुत बढ़ जाती है, इसका यह नाम ही बुध सम्बन्धी चतुराई एवं समझदारी का परिचायक है।



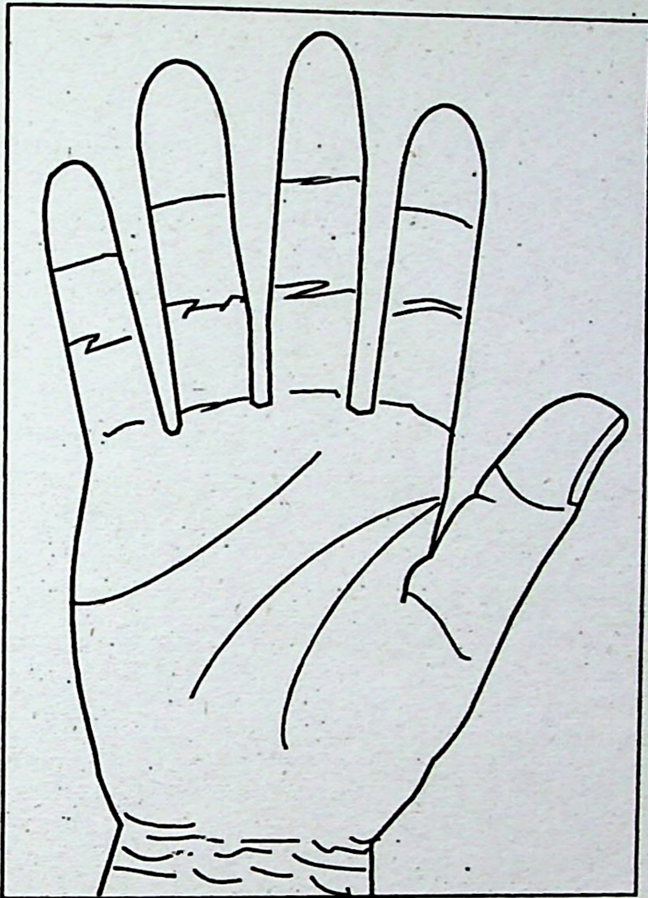


मणिबन्ध और यात्रा रेखाएं

मणिबन्ध या कंगन जैसी रेखाएं वे होती हैं जो कलाई पर पायी जाती हैं। इनकी संख्या कभी तीन होती है तो कभी एक। पहली रेखा को छोड़कर शेष दो रेखाओं के व्यवहार में कोई उपयोग नहीं होता। मणिबन्ध की पहली रेखा गहरी होने पर उसको सुदृढ़ शारीरिक गठन की पुष्टि करने वाला एक संकेत माना जाता है, अगर गहरी जीवन रेखा के साथ एक साफ-सुथरी और स्पष्ट मणिबन्ध रेखा की बनावट ठीक न होने पर या उसका शृंखलाकार या चौड़ी एवं सतही होने का अर्थ होता है कि जातक में उपेक्षित शारीरिक



चित्र-152



चित्र-153

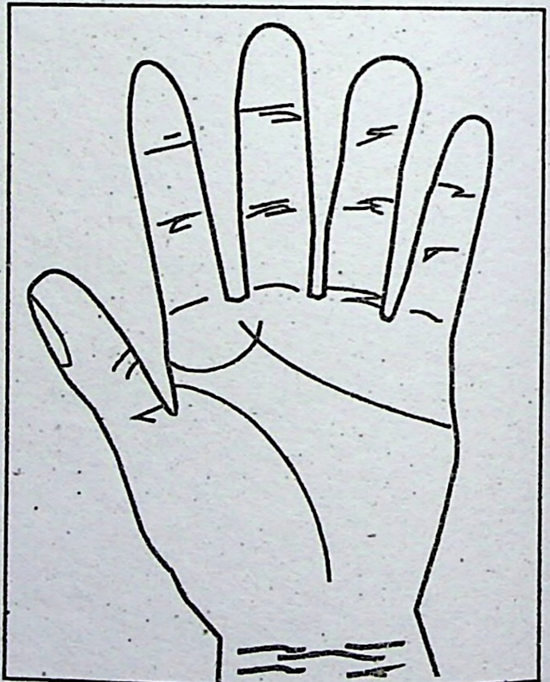
शक्ति नहीं है। मणिबन्ध रेखाओं से निकलने वाली छोटी-छोटी शाखाएं मनुष्य के जीवन में उन्नति करने की प्रवृत्ति को दर्शाती हैं।

❑❑❑

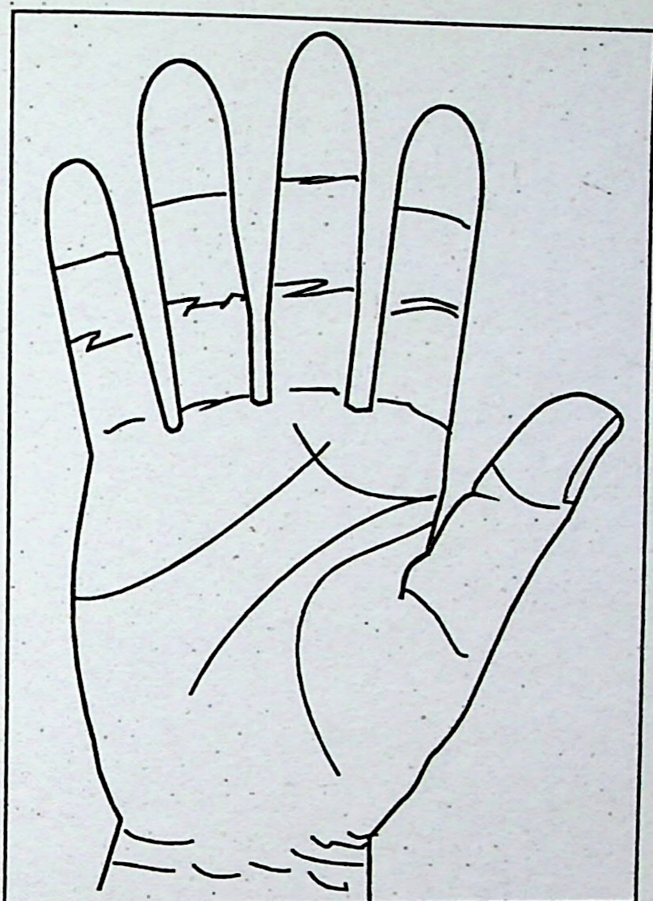


बृहस्पति मेखला

बृहस्पति मेखला एक छोटी रेखा होती है, जो बृहस्पति और शनि के बीच से निकलकर नीचे की तरफ जाती है और बृहस्पति पर्वत की घेराबन्दी करते हुए जीवन रेखा के उद्‌गम के पास पहुंचकर समाप्त होती है। ऐसी शाखा प्रायः बहुत रेखाओं वाले हाथों में दिखाई देती है और चतुष्कोण में सामान्यतः एक रहस्यपूर्ण गुणन चिह्न भी पाया जाता है। इस चिह्न के साथ रेखाओं से भरा हुआ हाथ जातक के प्रभाव एवं संवेदनशीलता का भी द्योतक है। ऐसे लोगों को सदा नई बातों में रुचि रहती है।

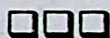


चित्र-154



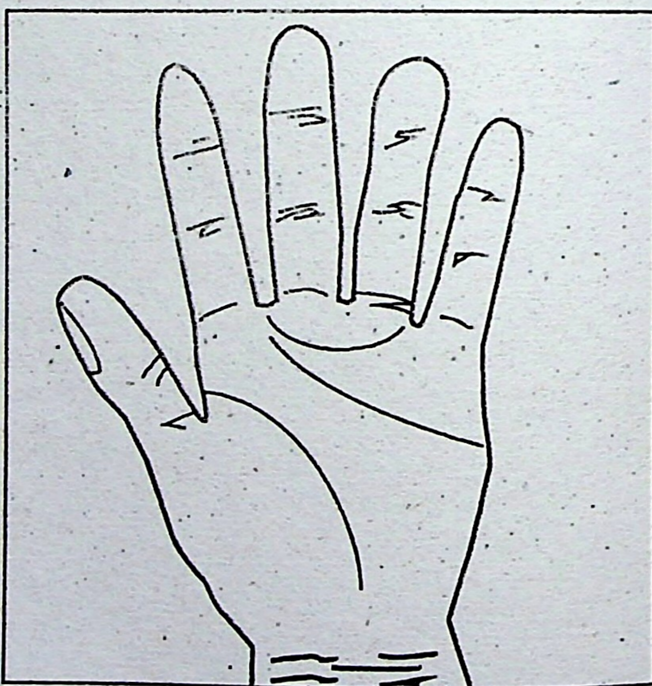
चित्र-155

इन जातकों की उंगलियों के आगे के भाग चमचाकार और उंगलियों के जोड़ गांठदार होते हैं।





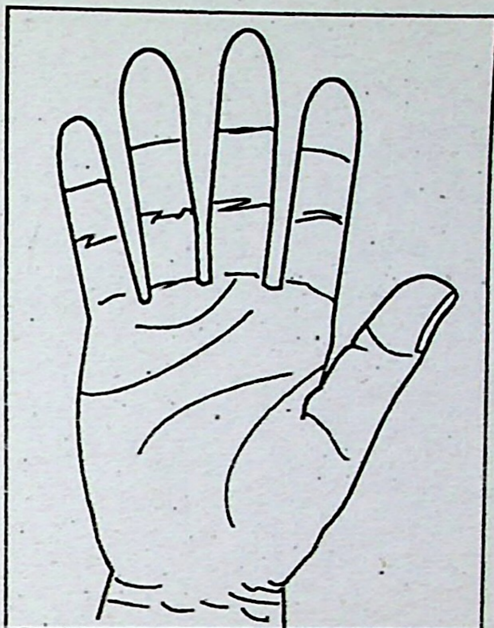
शुक्र रेखा



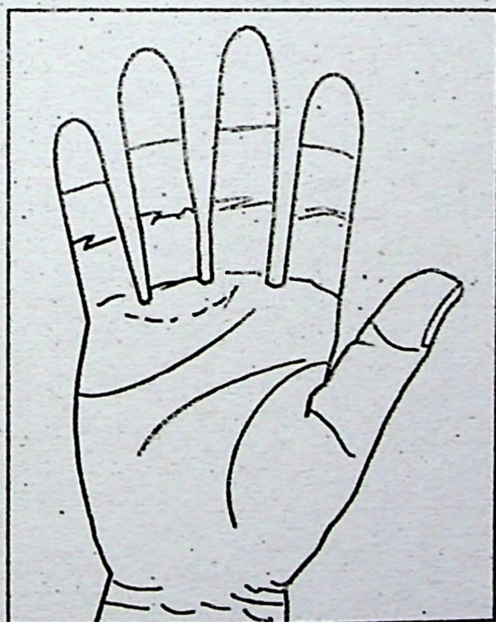
चित्र-156

हम छोटी-छोटी रेखाओं के समूह को गौण रेखाओं के रूप में जानते हैं, ये गौण रेखाएं हर हाथ में नहीं होतीं लेकिन जिन हाथों में ये होती हैं इसका उद्गम स्थान एक ही रहता है। इनकी प्रकृति इन्हें आकस्मिक रेखाओं से भिन्न करती है। नियमानुसार बहुत अधिक महत्त्व न रखने वाली इन रेखाओं की व्याख्या भी प्रायः एक

ही होती है, लेकिन यह व्याख्या विश्वसनीय अवश्य होती है। पहली गौण रेखा शुक्र मेखला बृहस्पति और शनि की उंगलियों के बीच से निकलती है और शनि तथा सूर्य पर्वत को पार करके सूर्य और बुध की उंगलियों के बीच जाकर समाप्त हो जाती है।

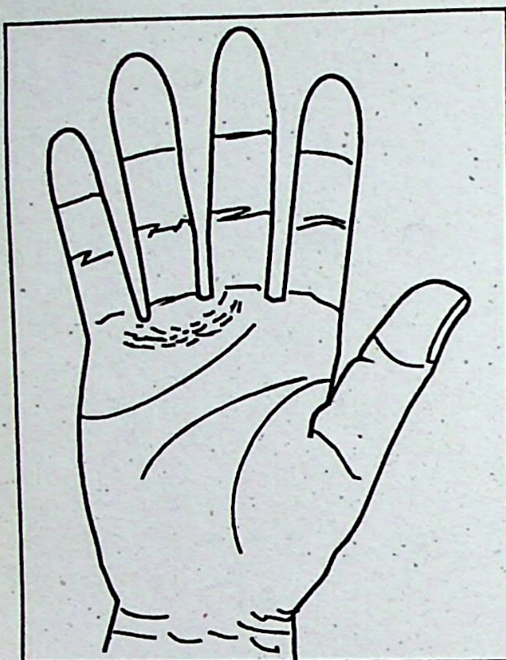


चित्र-157



चित्र-158

कई बार यह मेखला टूटे हुए रेखाखण्डों से बनी हुई भी देखी जाती है। इस तरह निर्मित मेखला जातक की अधीरता, हिस्टीरिया होने की आशंका और संकोची प्रवृत्ति को बढ़ा देती है। अगर ऐसे लोग दुर्व्यसनों का शिकार बनते हैं, तो उनके लिए इन बुरी आदतों से छुटकारा पाना बहुत कठिन हो जाता है। अगर शुक्र रेखा दोहरी या तिहरी रेखाओं से बनी है, तो स्वास्थ्य स्वभाव के विषय में इसके संकेतों की यह दोहरी पुष्टि होती है।



चित्र-159

अगर मेखला की रचना कई टूटी हुई रेखाओं से हुई हो और शेष हाथ से विकलता उत्तेजना का संकेत देती हो तो हिस्टीरिया का खतरा बहुत बढ़ जाता है और अधीरता के सभी लक्षण प्रचण्ड हो जाते हैं।

अगर मस्तिष्क रेखा में द्वीप, बिन्दु क्रॉस या एक नक्षत्र का निशान हो तो जातक के पागल होने का गम्भीर खतरा रहता है। जातक के जीवन में हर पल विकृत मेखला से युक्त उत्तेजना का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसी वजह से शनि और सूर्य रेखाओं में दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इन दोनों में से विद्यमान एक कारण का पता लगाने के लिए मुख्य रेखाओं की जांच करना आवश्यक होता हैं। शुक्र मेखला के साथ अन्य रेखाओं और चिह्नों के अनेक संयोग बन सकते हैं, लेकिन इसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।

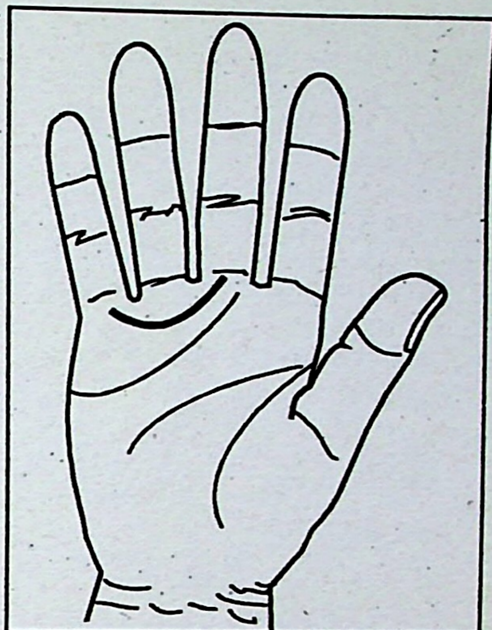


चित्र-160

यदि मस्तिष्क रेखा नीचे झुकते हुए चन्द्र पर्वत में प्रवेश कर जाती है और उस पर या उसके आखीर के पास एक नक्षत्र चिह्न, बिन्दु, क्रॉस चिह्न या द्वीप दिखलाई दे और शुक्र मेखला टूटी हुई हो, परन्तु हाथ में अनेक रेखाएं हों तो इसका मतलब यह है कि [illegible]ण्ड

उत्तेजना एवं अतिश्य कल्पना के कारण मनुष्य के पागल हो जाने का पूरा डर है।

अगर हाथ भारी हो, अंगुलियां मोटी हों, रंग लाल हो, रेखाएं गहरी और लाल हों, शुक्र मेखला गहरी हो और जीवन तथा मस्तिष्क रेखाएं छोटी हों और अन्त में दोष का निशान हो, तो इस बात की अधिक सम्भावना है कि दुर्व्यसन और असंयम की वजह से जातक की मृत्यु उस उम्र में हो जाएगी, उम्र के जिस बिन्दु पर जीवन रेखा समाप्त हुई है।



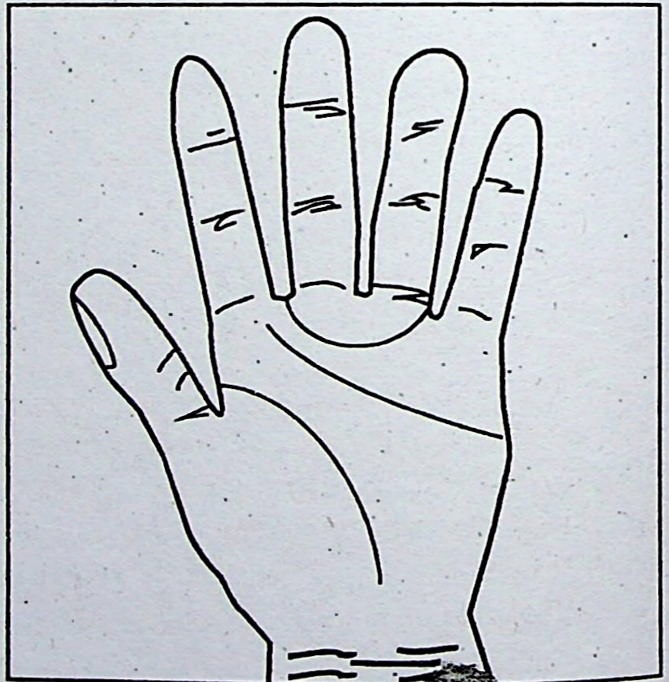
चित्र-161



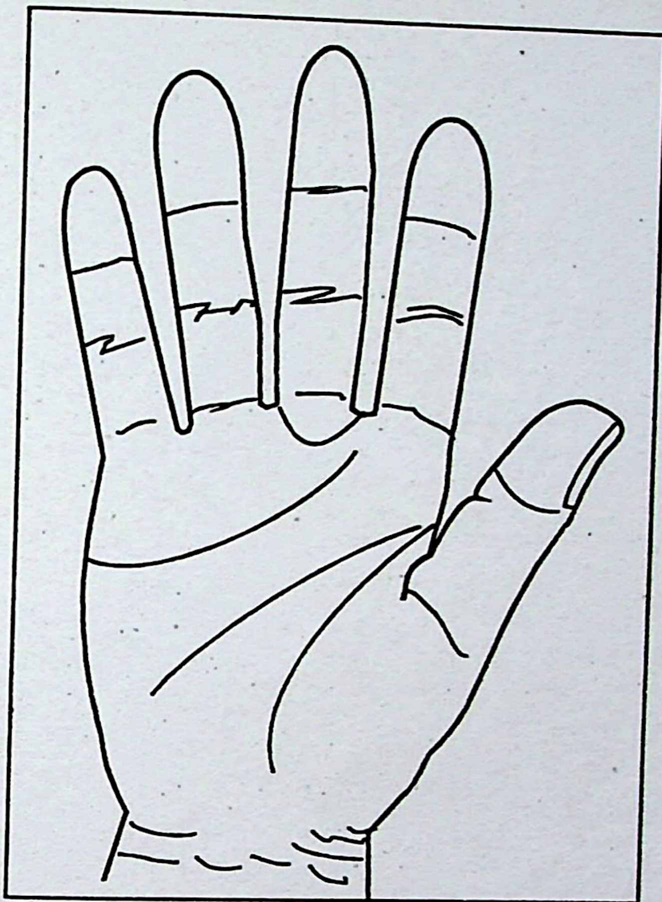


शनि मेखला

बृहस्पति और शनि की अंगुलियों के बीच से निकलकर शनि पर्वत को घेरने वाली और शनि व सूर्य की उंगली के बीच पहुंचकर खत्म हो जाने वाली रेखा शनि मेखला कहलाती है।



चित्र-162



चित्र-163

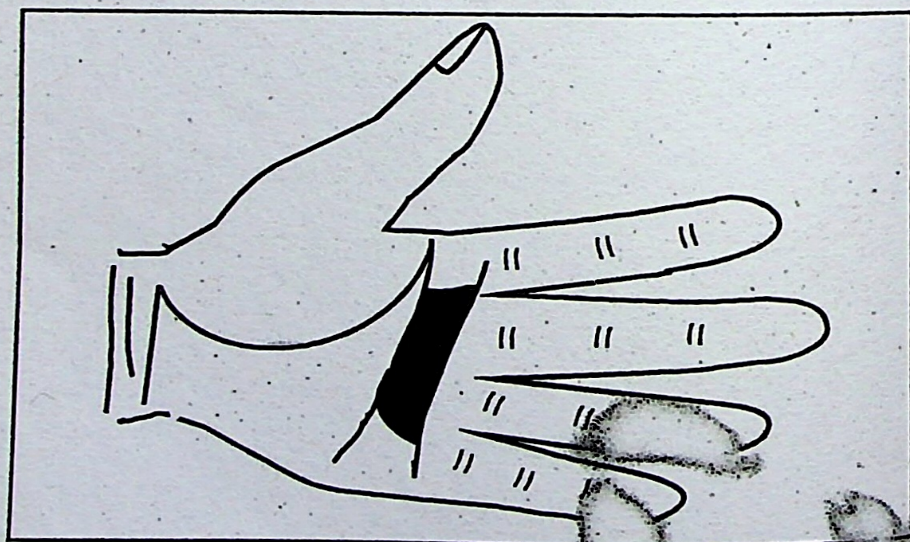
अगर शनि मेखला के साथ ही मस्तिष्क रेखा ढलवां होकर चन्द्र पर्वत तक चली जाए और चन्द्र पर्वत विशाल या जालदार हो या दोनों बातें हों तो मनुष्य ख्याली पुलाव पकाने वाला, मनमौजी, चंचल और अस्थिरमना होगा और अपने लिए कुछ भी नहीं कर पाएगा। शनि मेखला के साथ ही शनि रेखा में दोष और बाधाओं का रहना यह संकेत करता है कि उसका कोई निश्चित उद्देश्य नहीं रहा।

□□□



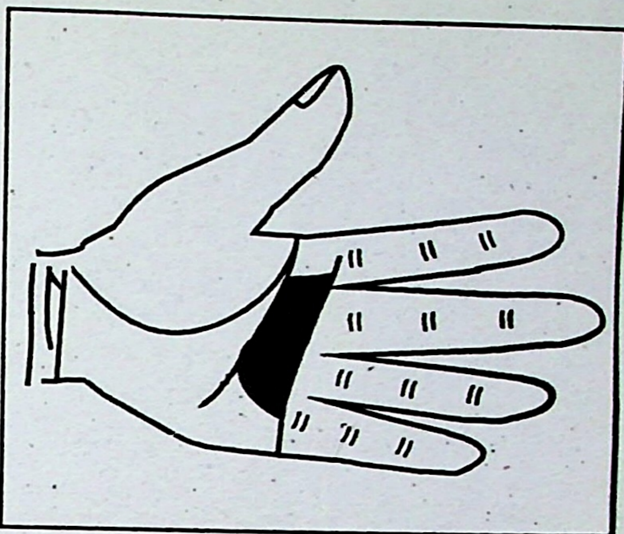
चतुर्भुज सम्बन्धी फलादेश

हथेली पर चतुर्भुज बनती है अगर मस्तक रेखा और हृदय रेखा अपनी जगह पर सुस्पष्ट बनी हों। यह गुरु पर्वत और मंगल पर्वत के बीच बनती हैं। हालांकि इन पर्वतों को चतुर्भुज में शामिल नहीं किया जाता।



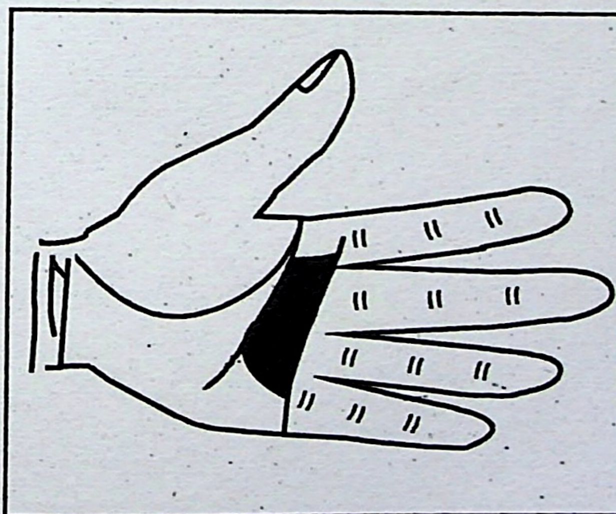
चित्र-164

अगर चतुर्भुज सुन्दर बनी हुई हो जैसे कि चित्र-में दिखाया गया है और इस पर छोटी-छोटी अस्पष्ट रेखाएं न हों तो व्यक्ति स्पष्टवादी होता है। उसमें कोई छल-फरेब नहीं होता; ऐसे मनुष्य वफादार साबित होते हैं, बशर्ते मंगल पर्वत की तरफ दोनों रेखाओं में अन्तर बढ़ जाता है।

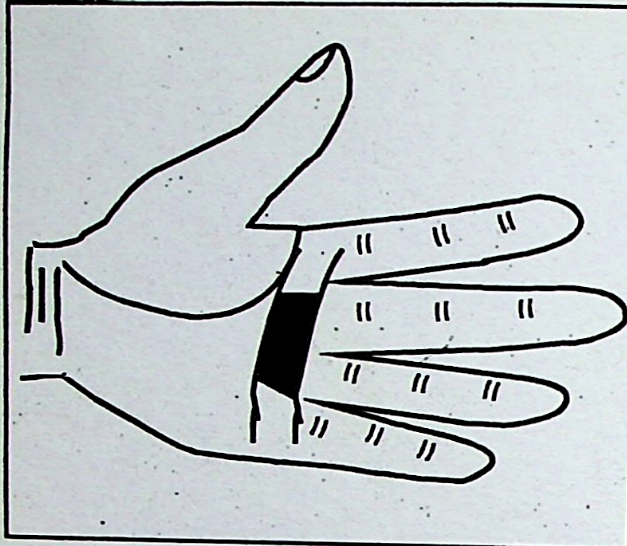


चित्र-165

एक साधारण व्यक्ति के हाथ में जब हृदय रेखा चलकर सूर्य पर्वत पर पहुंचती है तो यह ऊपर की दिशा में चलती है और जब मस्तक रेखा सूर्य पर्वत पर पहुंचती है तो यह नीचे की तरफ चलती है। अगर दोनों रेखाओं में अन्तर ज्यादा बढ़ जाए तो जातक इतना ज्यादा आजाद प्रवृत्ति का होता है कि जातक कभी-कभी मूर्खता कर बैठता है।



चित्र-166



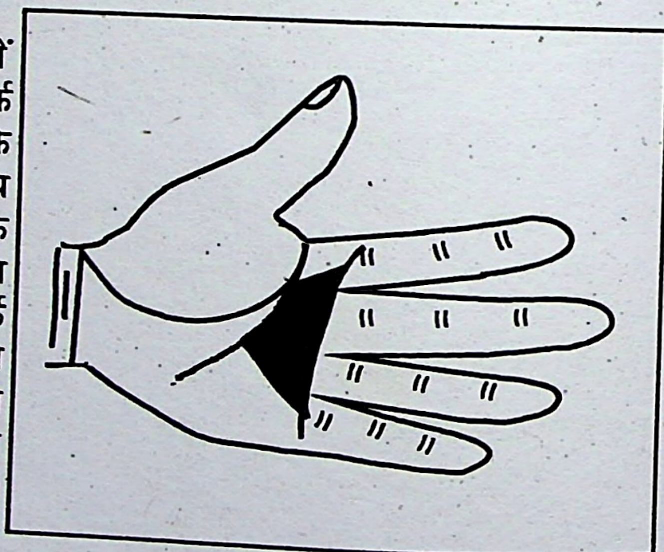
चित्र-167

अगर दोनों रेखाओं के बीच अन्तर शनि पर्वत के नीचे हो तो जातक अपनी मानहानि की भी परवाह नहीं करता।

अगर सूर्य पर्वत के नीचे दोनों रेखाओं में अन्तर बढ़ा हुआ हो तो जातक अपने मान-सम्मान का खास ख्याल रखता है और ऐसा काम नहीं करता जिससे उसकी मानहानि हो।

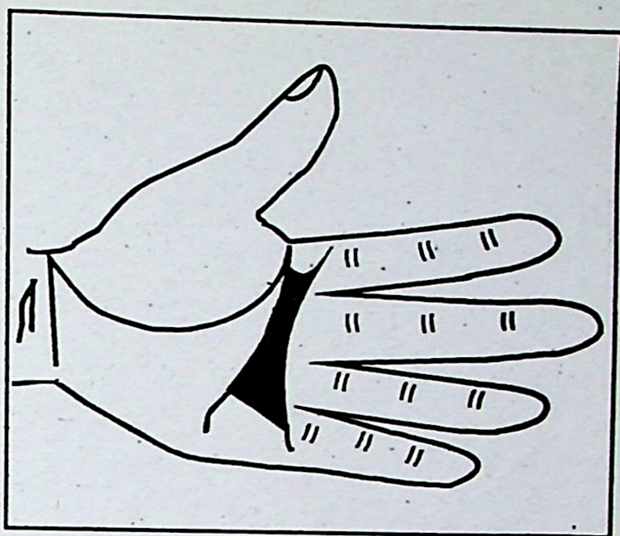
दोनों रेखाओं के बीच अगर अन्तर कम हो तो यह जातक की तंगदिली का द्योतक है।

अगर दोनों रेखाओं के बीच फर्क इसलिए कम हो क्योंकि मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा की तरफ झुक रही है तो समझना चाहिए कि जातक तर्क शक्ति की अपेक्षा अपनी भावनाओं को अधिक महत्त्व देता है।

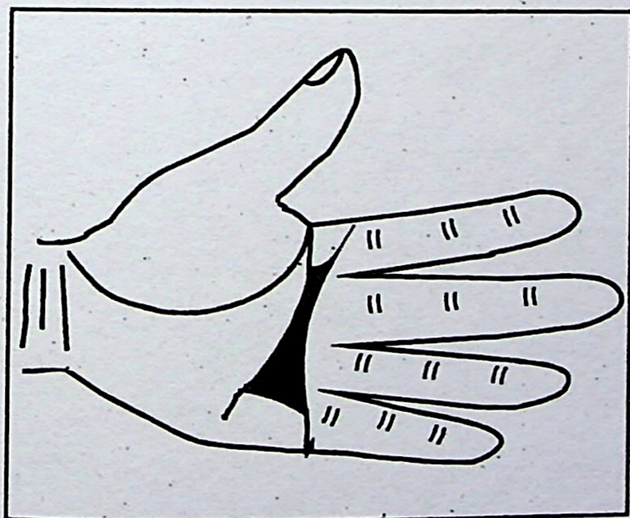


चित्र-168

अगर हृदय रेखा के मस्तिष्क रेखा की तरफ झुककर चलने से दोनों रेखाओं के बीच फर्क कम होता है तो यह कंजूसी और कमीनापन जाहिर करती है। ऐसे जातक में भावनाओं के लिए कोई जगह नहीं होती।

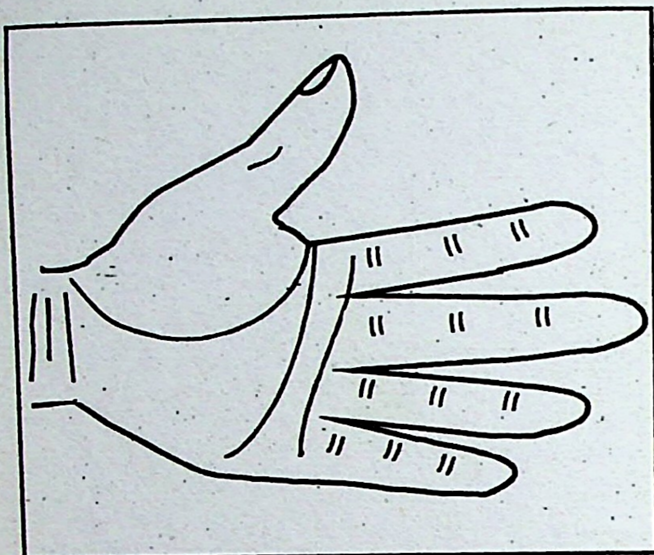


चित्र-169



अगर किसी हाथ में हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच अन्तर ज्यादातर कम हो या दोनों रेखाएं अस्पष्ट-सी हों तो जातक कमजोर बुद्धि वाला होता है, रूखे स्वभाव वाला होता है। जातक सेहत की दृष्टि से भी दुर्बल दिखाई देता है।

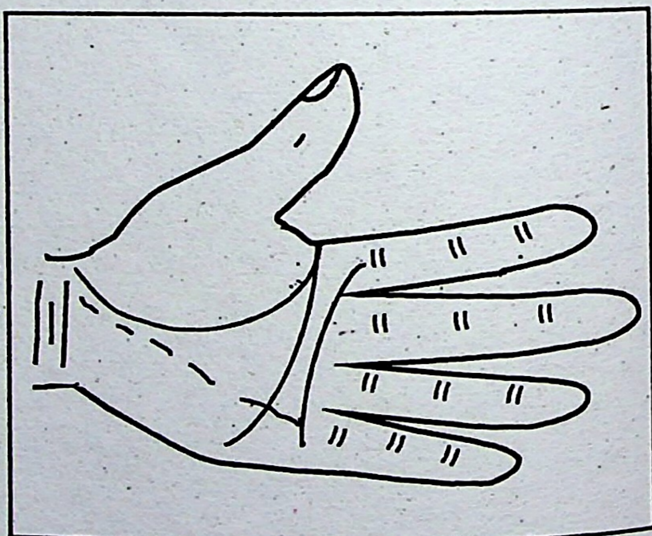
चित्र-170



अगर चतुर्भुज का आकार अच्छा हो और इसका तल उभरा हुआ हो तो जातक को धन कमाने और अर्जित करने का शौक होता है, ताकि वह उसका उपभोग कर सके और उदारता से उसका खर्च कर सके।

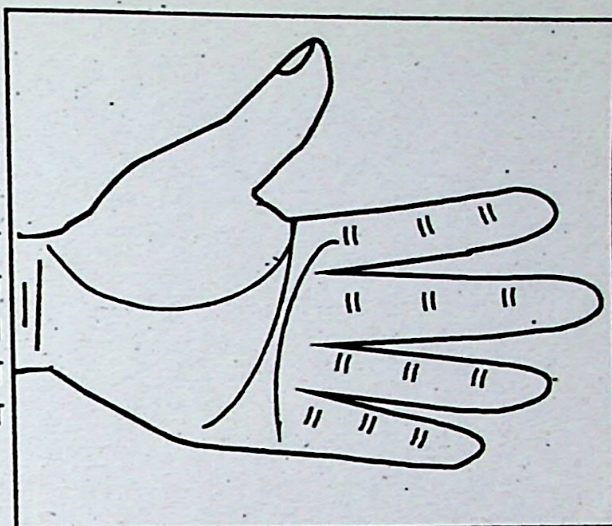
चित्र-171

अगर चतुर्भुज तंग हो तो जातक के दमा है या फीवर हो सकता है।



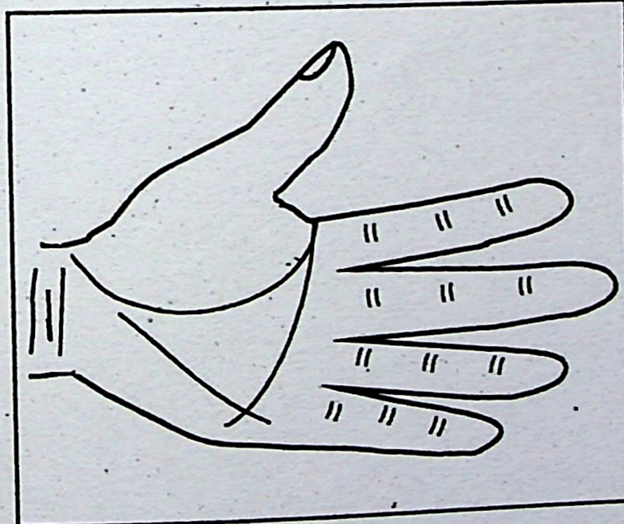
चित्र-172

अगर चतुर्भुज तंग हो, उंगलियां हथेली के अन्दर की तरफ झुकती हों, जब हथेली को खोला जाए तो जातक बड़े सख्त स्वभाव का होता है। दूसरों के साथ कंजूसी जैसा व्यवहार करता है।



चित्र-173

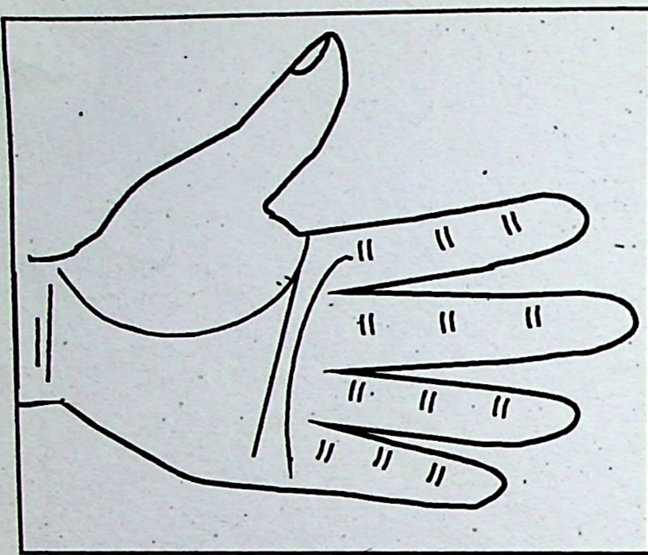
अगर हथेली में हृदय रेखा न हो तो चतुर्भुज नहीं होगी, इस अवस्था में जातक की प्रकृति सख्त और खुश्क होगी।



चित्र-174

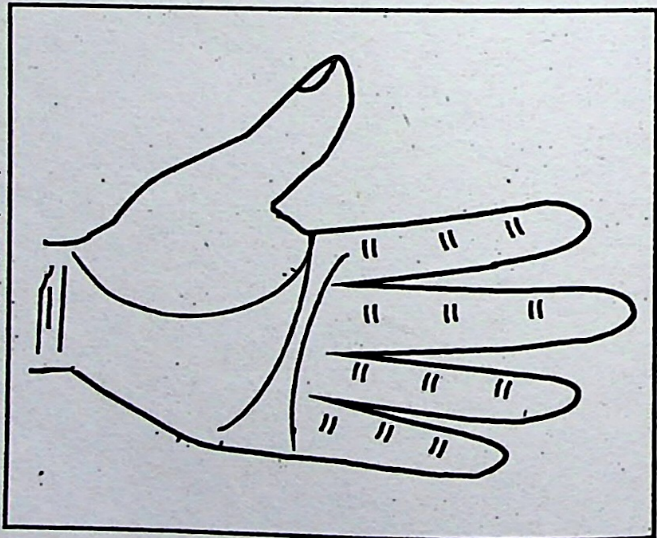
अगर चतुर्भुज सूर्य पर्वत के नीचे तंग दिखाई दे तो जातक के बौद्धिक विकास में बाधा डालती है।

चतुर्भुज तंग, साथ में गुरु का पर्वत उन्नत हो तो जातक धार्मिक विचारों वाला कट्टरपन्थी होता है, साधु वृत्ति का भी द्योतक है।



चतुर्भुज तंग हो, साथ में बुध का पर्वत अत्यधिक उन्नत हो, बुध पर्वत पर अनेक रेखाएं जाली-सा आकार बनाएं तो जातक झूठ बोलने वाला होता है। इस पर यकीन नहीं किया जा सकता।

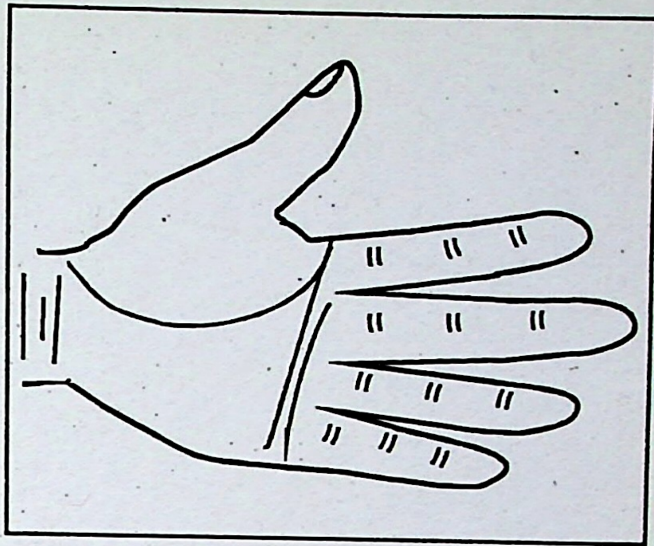
चित्र-175



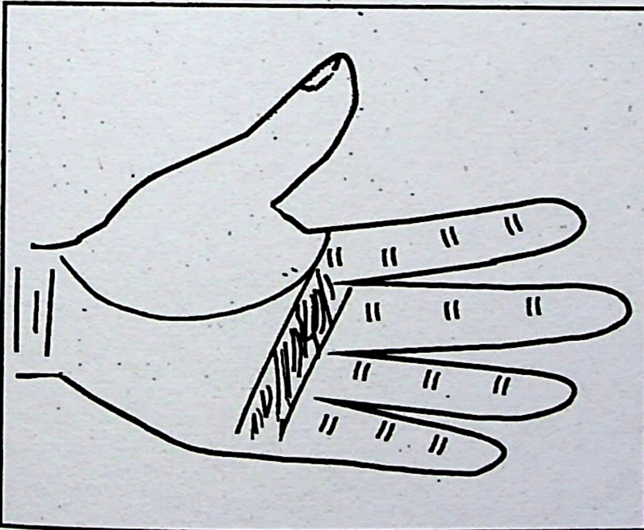
चतुर्भुज तंग हो साथ में मंगल और बुध पर्वत अधिकतर उठे हुए हों तो जातक का व्यवहार दूसरों के साथ ठीक नहीं होता।

चित्र-176

चतुर्भुज तंग हो, साथ में हृदय रेखा छोटी हो, मंगल पर्वत अत्यधिक उन्नत हो, तो जातक निर्दयी होता है।

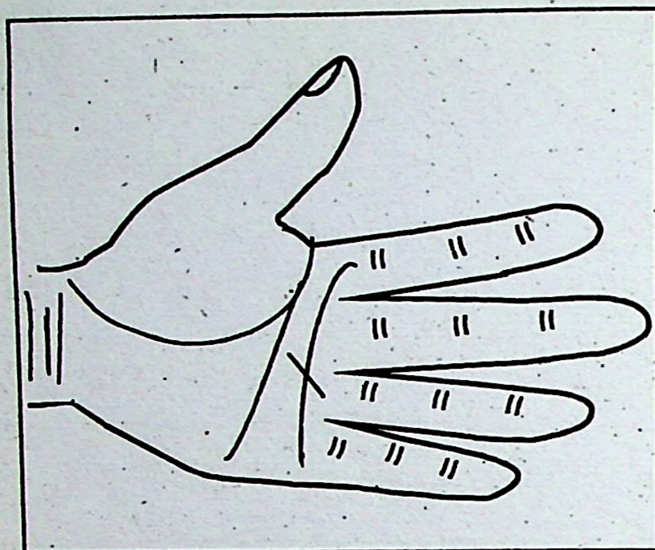


चित्र-177



चित्र-178

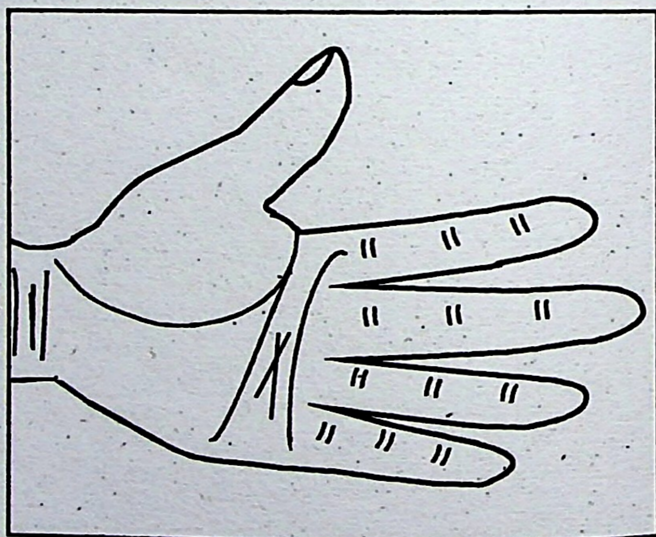
बड़े हाथ में लम्बी हथेली, सीधी अंगुलियों वाले जातक की हथेली में चतुर्भुज में अगर अनेक आड़ी रेखाएं हों तो जातक की सोचने-समझने की शक्ति दुर्बल होती है, मन अस्थिर रहता है, क्रोधी स्वभाव बन जाता है।



अगर चतुर्भुज में से कोई रेखा निकलकर सूर्य पर्वत पर जाए तो किसी बड़े व्यक्ति के संरक्षण में जातक सफलता प्राप्त करता है।

चित्र-179

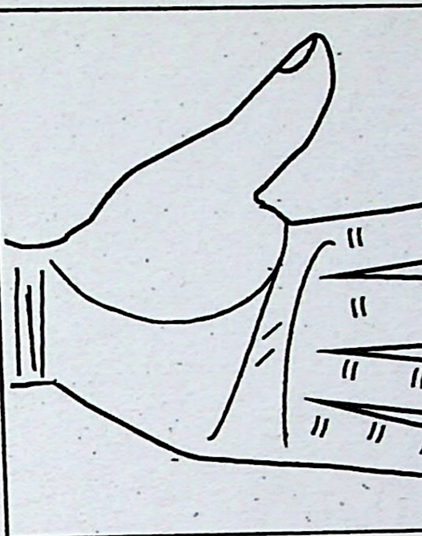
अगर चतुर्भुज में फोर्क वाली रेखा हो तो जातक अस्थिर मन वाला होता है, किसी भी विषय पर सही निर्णय करने में असमर्थ रहता है।



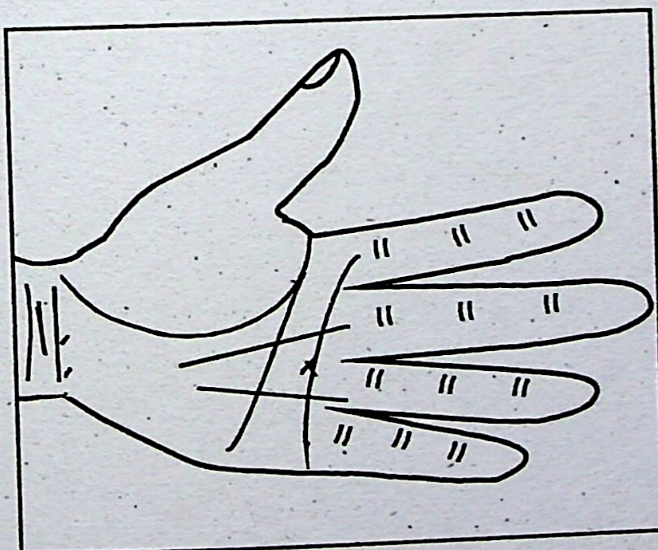
चित्र-180

अगर चतुर्भुज में लाल बिन्दु हो तो यह कत्ल (Murder) या गहरे घाव का सूचक है। जातक कत्ल करेगा या जातक का कत्ल होगा, यह हाथ में अन्य लक्षण देखकर बताया जा सकता है।

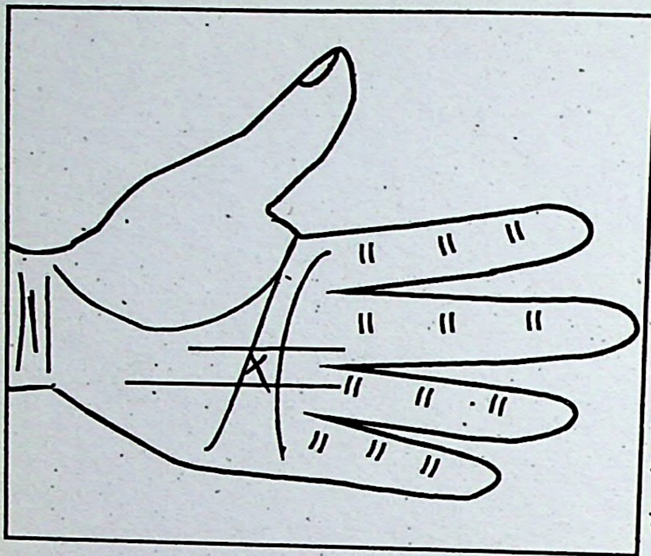
अगर सफेद बिन्दु हो तो यह सेहत की गिरावट की निशानी है।



चित्र-181



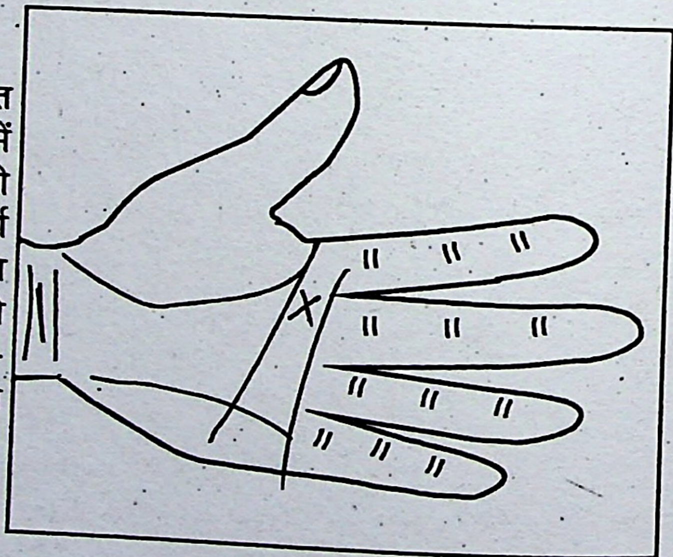
चित्र-182



अगर यही क्रॉस मस्तक रेखा को स्पर्श करता है तो जातक का प्रभाव विपरीत सेक्स के व्यक्ति पर अधिक होगा यानि उल्टी हालत होगी। अगर यह क्रॉस, भाग्य रेखा और सूर्य रेखा को स्पर्श न करे तो स्थिति जातक के हक में होगी।

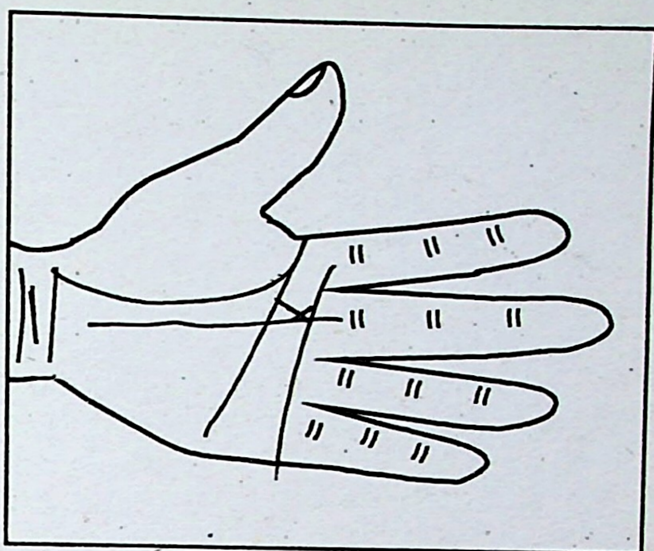
चित्र-183

अगर शनि पर्वत के नीचे चतुंर्भुज में क्रॉस हो जो किसी भी बड़ी रेखा को न स्पर्श करता हो, इन्ट्यूशन रेखा भी अच्छी हो तो जातक यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र ज्योतिष में रुचि रखता है।



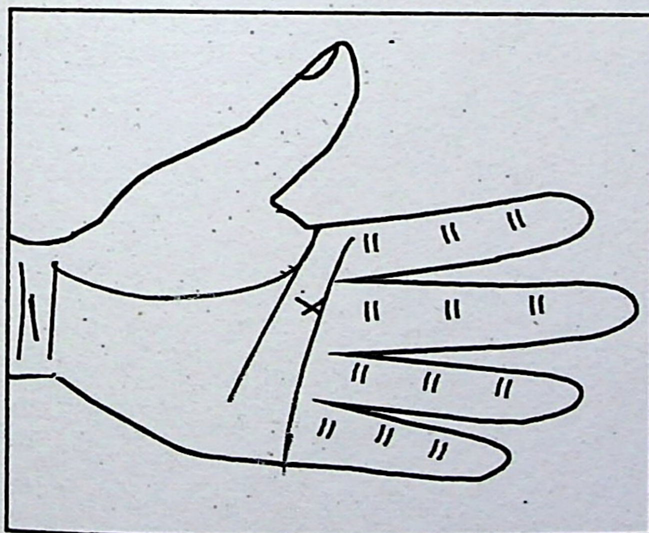
चित्र-184

अगर शनि पर्वत के नीचे चतुर्भुज में क्रॉस का निशान भाग्य रेखा को स्पर्श करे तो जातक पुजारी, पादरी या मौलवी होता है।

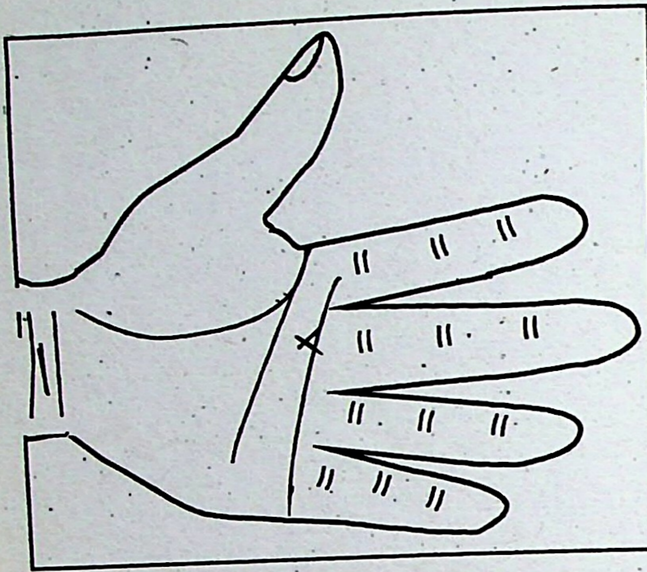


चित्र-185

अगर चतुर्भुज कमजोर, अस्पष्ट-सा क्रम क्रॉस बनता दिखाई दे शनि पर्वत के नीचे तो जातक उस पर्वत के शुभ गुणों को कम करता है जो पर्वत हाथ में सबसे ज्यादा उन्नत हो, अगर यह गुरु पर्वत हो तो जातक की महत्त्वाकाक्षाएं बहुत ऊंची होंगी, शनि पर्वत हो तो जातक रूष्ट स्वभाव और नीच प्रकृति का होगा, सूर्य पर्वत हो तो जातक ज्यादातर अभिमानी और लालची होगा। अगर चन्द्र पर्वत हो तो जातक की मानसिक हालत पागलपन की तरफ अग्रसर होगी। अगर मंगल पर्वत हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का होगा, अगर शुक्र पर्वत हो तो जातक अत्यधिक कामी होगा।



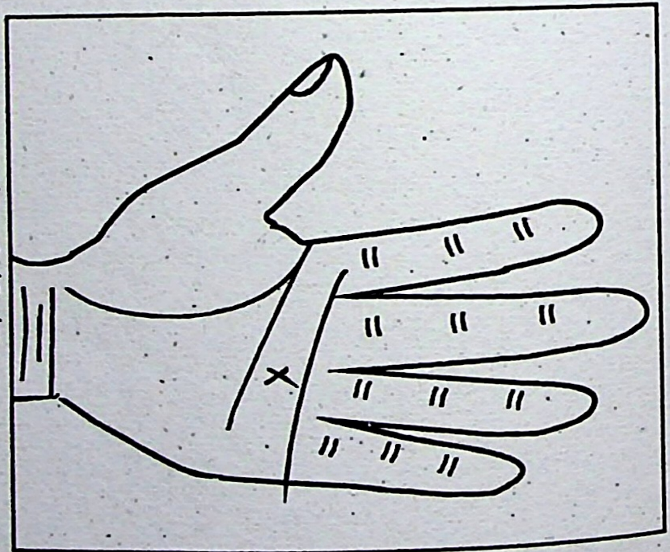
चित्र-186



चित्र-187

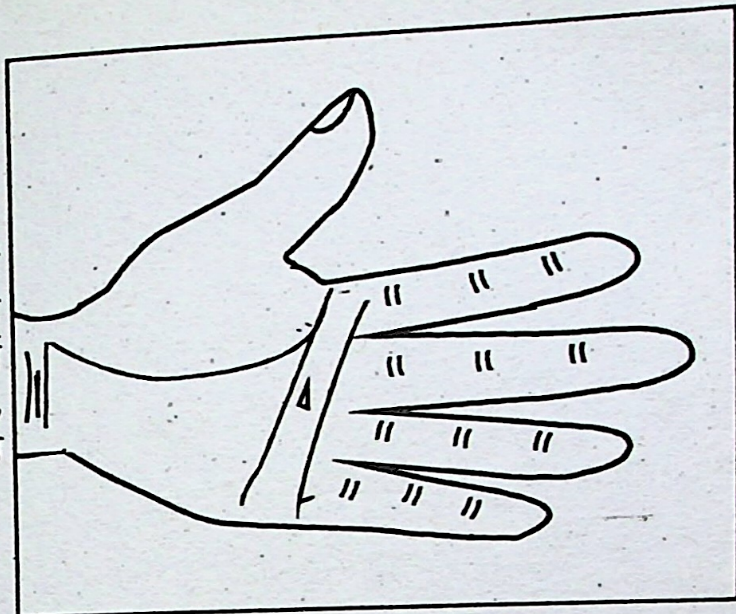
अगर चतुर्भुज में तारे का निशान शनि पर्वत के नीचे हो तो जातक का भविष्य उज्ज्वल होगा। अगर सूर्य पर्वत के नीचे हो तो कला या साहित्य के क्षेत्र में जातक को प्रसिद्धि मिलती है, अगर बुध पर्वत के नीचे हो तो वैज्ञानिक या इंजीनियर अथवा व्यापारी के रूप में ख्याति मिलती है।

अगर चतुर्भुज में त्रिभुज का निशान हो, तो जातक आध्यात्मिक विज्ञान में रुचि रखता है।

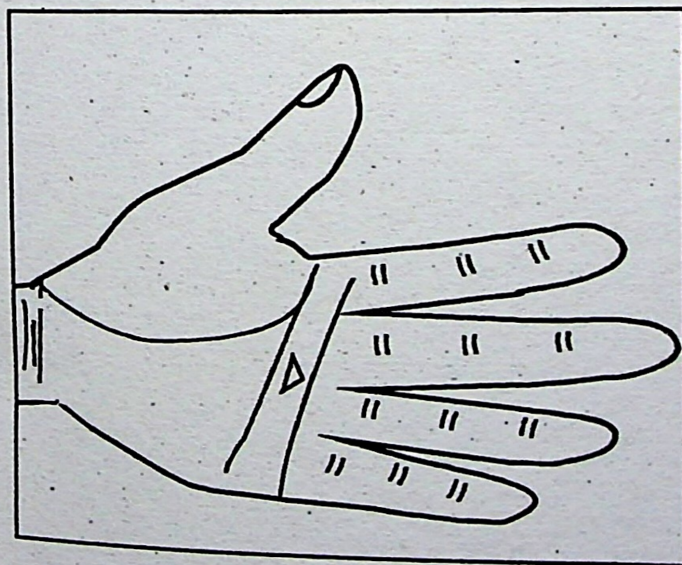


चित्र-188

अगर चतुर्भुज में वर्ग का निशान हो तो जातक तेज और गर्म स्वभाव का होता है, लेकिन उसका दिल नरम होता है।

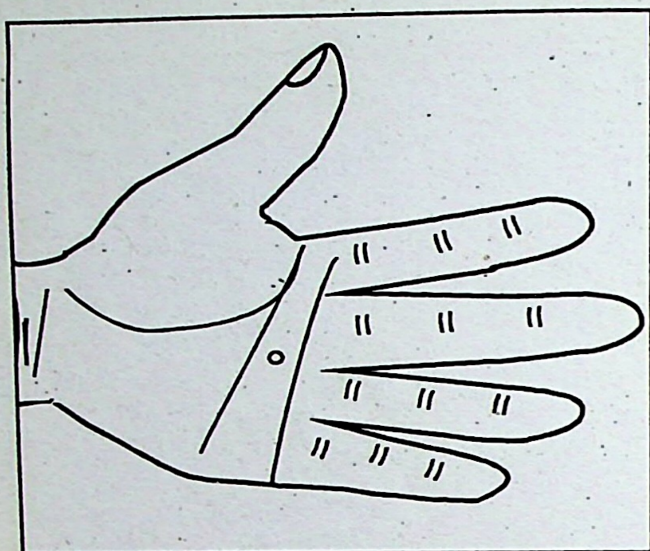


चित्र-189



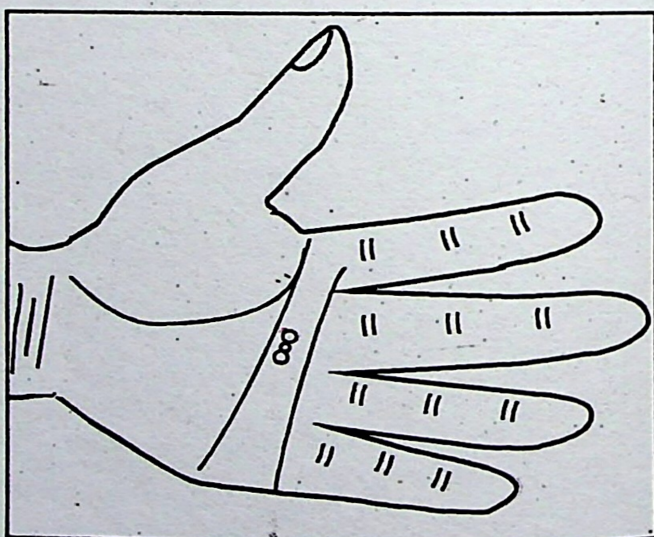
चित्र-190

अगर यह वर्ग किसी रेखा को स्पर्श करता है तो यह उस रेखा के दोषों को दूर करता है।



अगर चतुर्भुज में वृत्त हो तो जातक की आंख में कष्ट हो सकता है।

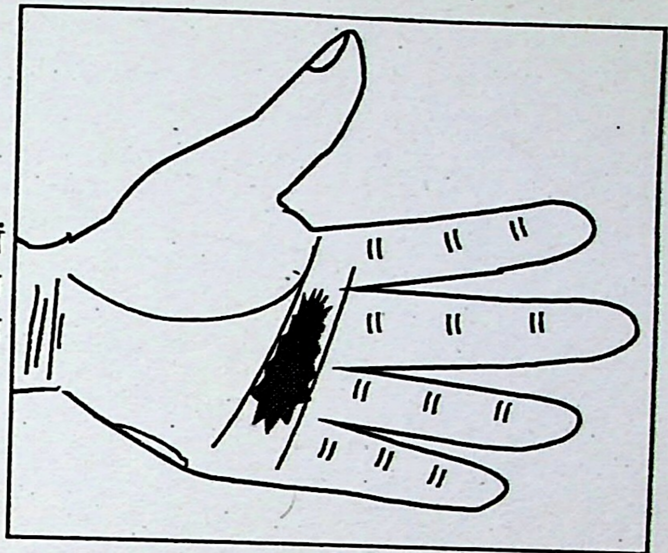
चित्र-191



अगर चतुर्भुज में शनि पर्वत के नीचे तीन वृत्त आपस में जुड़े हुए हों तो जातक को मृगी का दौरा पड़ सकता है।

चित्र-192

अगर चतुर्भुज में जाली का निशान हो तो जातक आधा पागल हो सकता है।



चित्र-193

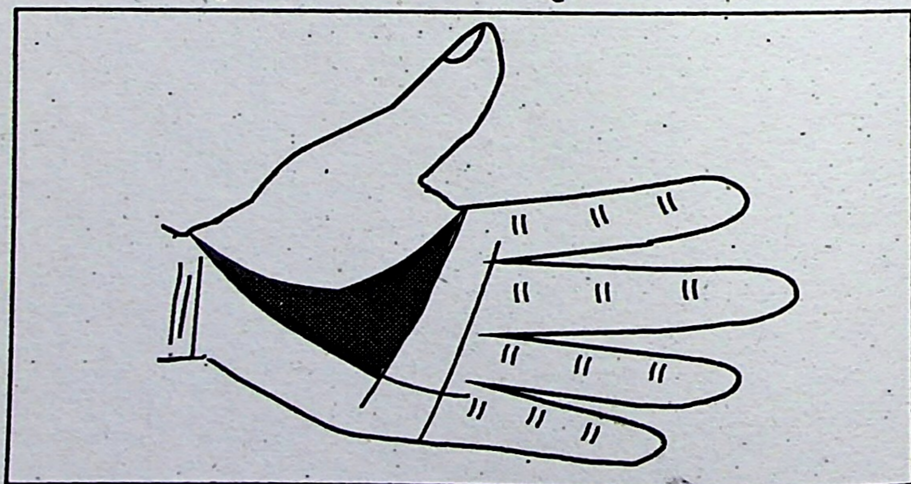




त्रिभुज सम्बन्धी फलादेश

जीवन रेखा, मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा के बीच का स्थान त्रिभुज कहलाता है। अगर इनमें से कोई रेखा न भी हो तो भी त्रिभुज के अन्दर के स्थान को अध्ययन की दृष्टि से ले लिया जाता है।

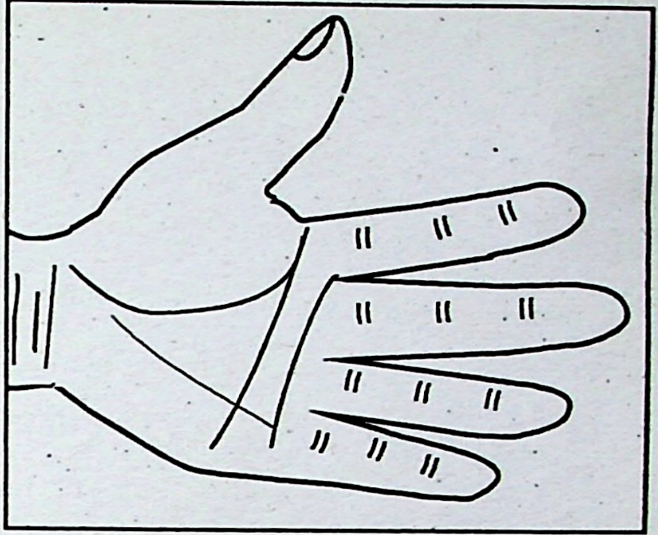
अगर त्रिभुज का स्थान दोनों हाथों में उभरा हुआ हो तो जातक हिंसात्मक एवं आक्रामक प्रवृत्ति का होता है। खर्चीली प्रवृत्ति भी लाता है।



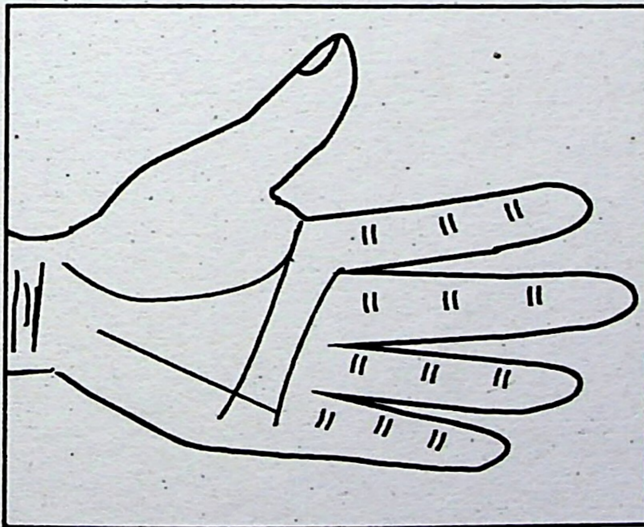
चित्र-194

अगर एक हाथ में ही यह स्थान उभरा हुआ हो तो यह जातक की बहादुरी और उदारता का परिचायक होता है।

अगर त्रिभुज का आकार बड़ा हो तो यह जातक की उदारता का लक्षण है। ऐसा तभी होगा जब जीवन रेखा, मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा अपने-अपने स्थान पर हों।

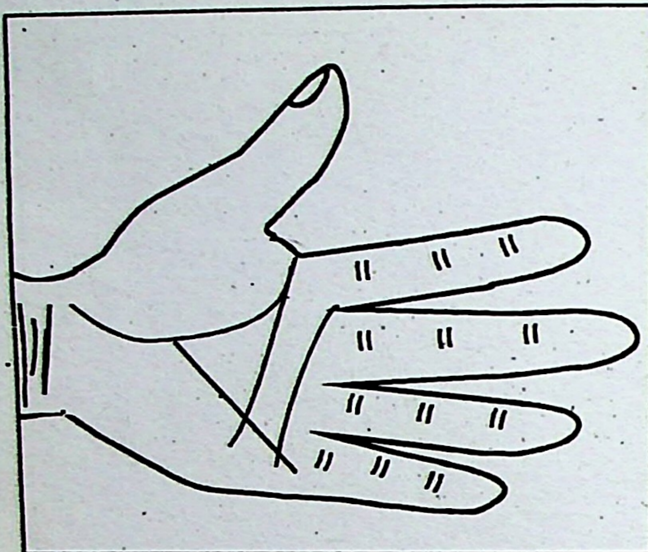


चित्र-195



चित्र-196

अगर त्रिभुज अधिक बड़ा हो और रंग भी अच्छा हो तो जातक की उम्र लम्बी होती है, उसकी हिम्मत भी अच्छी होती है।



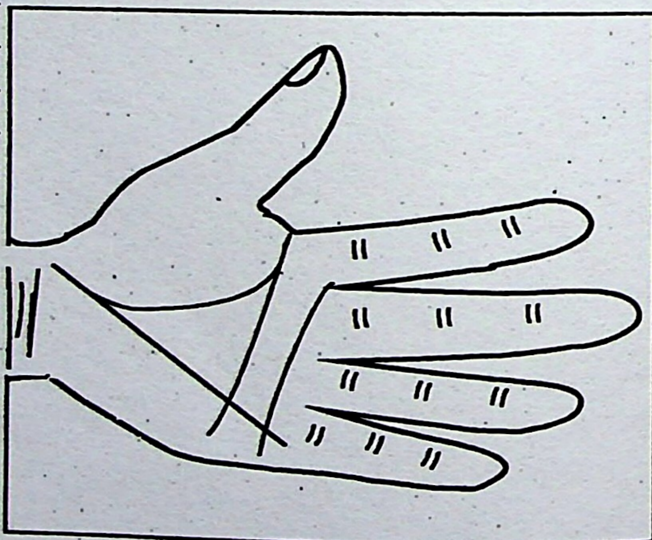
बड़े त्रिभुज के साथ अगर मंगल भी उभरा हो तो जातक स्पष्टवादी होता है और कोई भी बात कहने से नहीं डरता।

त्रिभुज छोटा हो तो जातक डरपोक और कंजूस होता है।

चित्र-197

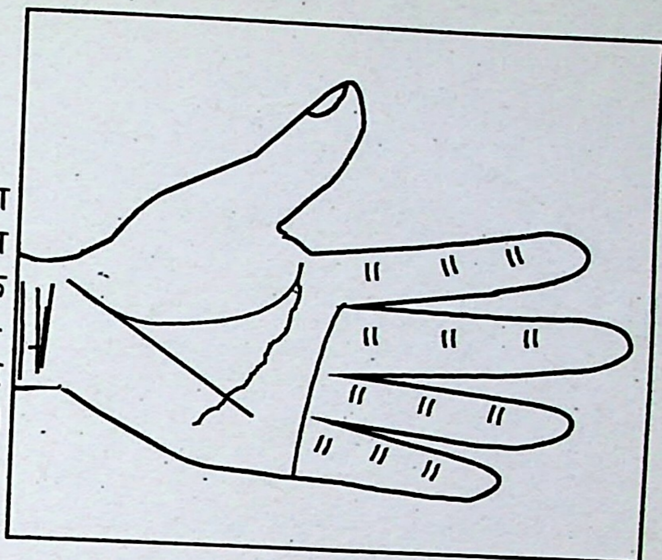
अगर त्रिभुज चपटा हो और शनि पर्वत भी दबा हुआ हो तो जातक का जीवन नीरस होता है, कोई महत्त्वपूर्ण उतार-चढ़ाव नहीं होता है।

अगर त्रिभुज दबा हुआ और गहरा हो तो जातक कंजूस और कमीना भी हो सकता है। ऐसे व्यक्ति को कोई भी पसन्द नहीं करता।



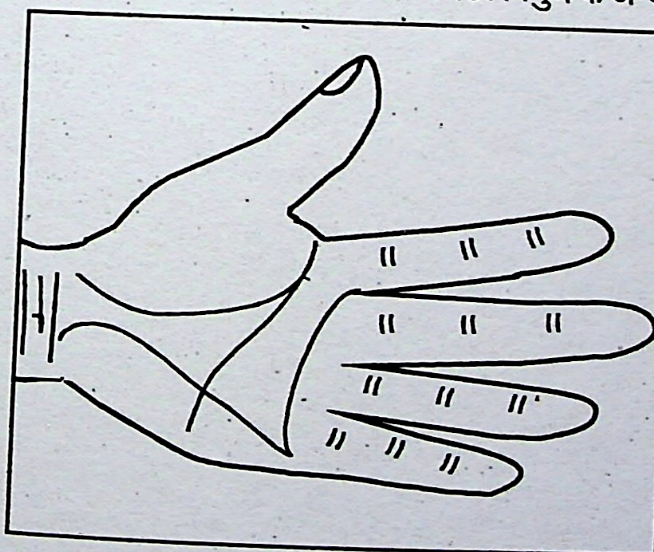
चित्र-198

अगर त्रिभुज तंग हो और मस्तिष्क रेखा स्वास्थ्य रेखा की तरफ झुकती चली जाए— दोनों रेखाएं कमजोर हों तो व्यापार में हानि।

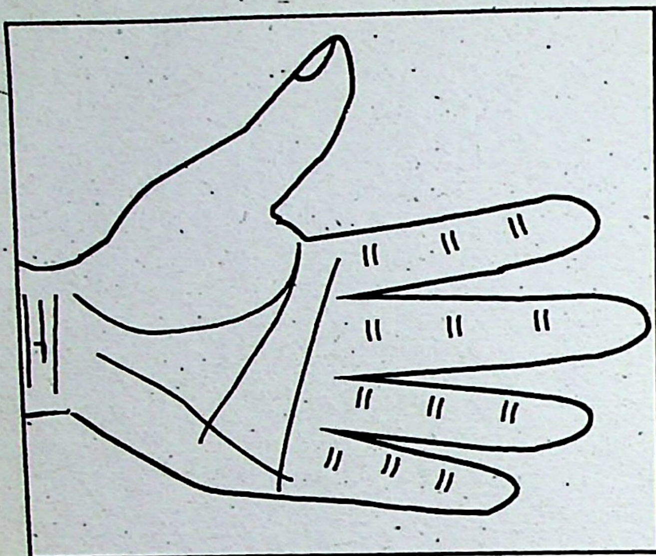


चित्र-199

अगर मस्तक रेखा और स्वास्थ्य रेखा त्रिभुज के अन्दर की तरफ अर्धवृत्ताकार मार्ग अपनाएं जिससे त्रिभुज भी छोटा हो जाए तो जातक डरपोक, कंजूस और कमीना होता है। अगर ज्यादातर अन्दर की तरफ मुड़ी हुई हों तो जातक शारीरिक तौर से तथा मानसिक तौर से कमजोर होता है।



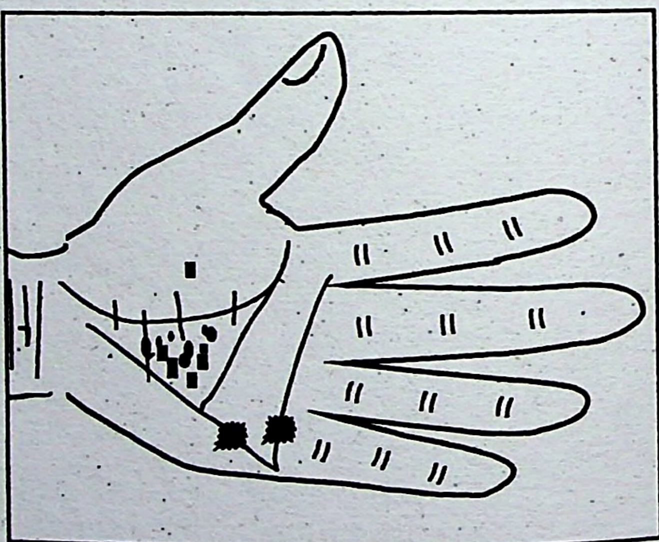
चित्र-200



अगर त्रिभुज अच्छी तरह न बना हो तो और हृदय रेखा सीधी छड़ की तरह हथेली के पार तक जाए तो जातक कंजूस होता है।

चित्र-201

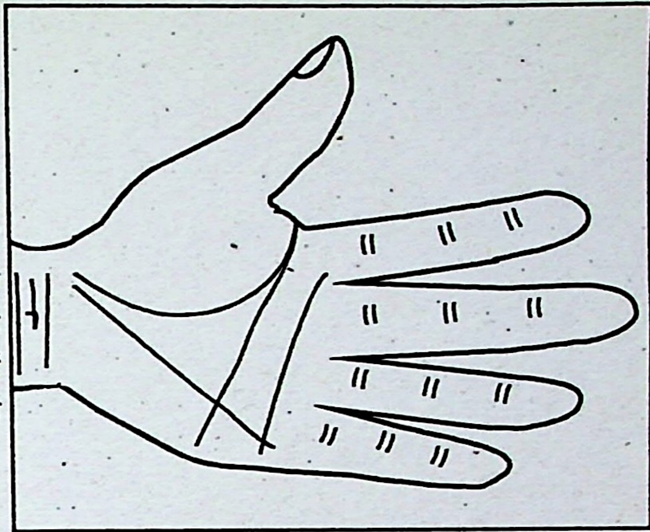
अगर त्रिभुज पर बहुत-सी आड़ी रेखाएं हों, मंगल और बुध के पर्वत उभरे हुए हों तो जातक में सहनशीलता नहीं होती, चिड़चिड़े स्वभाव का होता है और उसे गुस्सा भी जल्दी आता है।



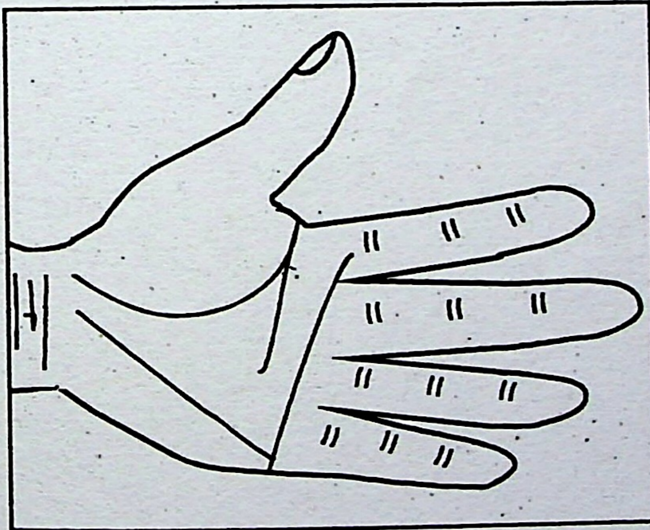
अगर त्रिभुज अच्छी तरह बना हो और हृदय रेखा अन्त में फोर्क बनाए तो जातक बड़ा उदार दिल का होता है।

चित्र-202

अगर त्रिभुज का पहला कोण (Angle) अच्छा बना हुआ हो तो जातक अच्छे मस्तिष्क का मालिक होता है और उसमें व्यावहारिक वृद्धि भी ठीक होती है।

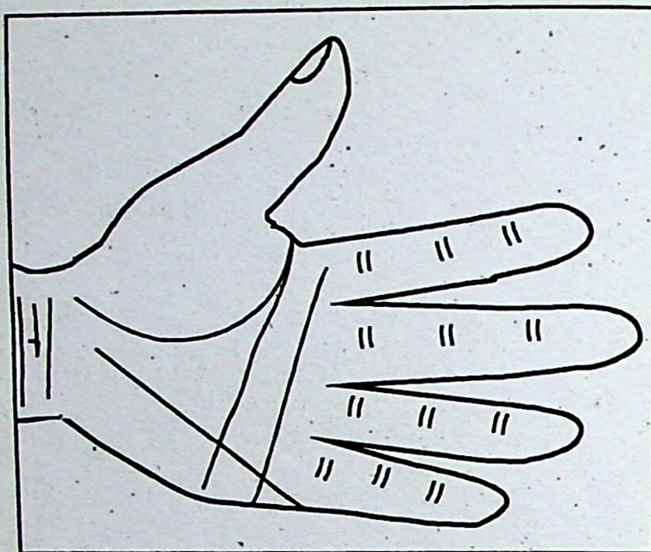


चित्र-203



चित्र-204

अगर मस्तिष्क रेखा छोटी, सीधी और तीखी हो तो जातक दिमाग से कमजोर और सुस्त होता है और वह खुश्क प्रकृति का होता है।

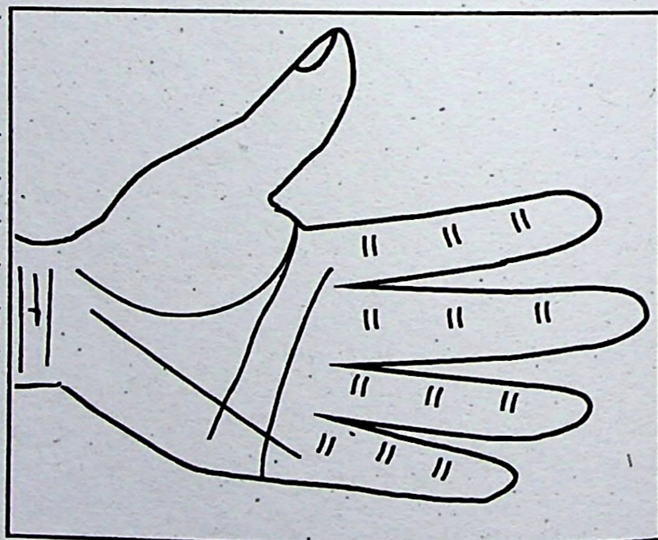


अगर त्रिभुज से जुड़ी मस्तक रेखा सीधी और तीखी हथेली के दूसरी तरफ जाए तो जातक गरीबी के डर से कंजूस बन जाता है और दूसरों की भलाई की परवाह नहीं करता।

अगर मस्तिष्क रेखा शुरू में जीवन रेखा से ही अलग रहे।

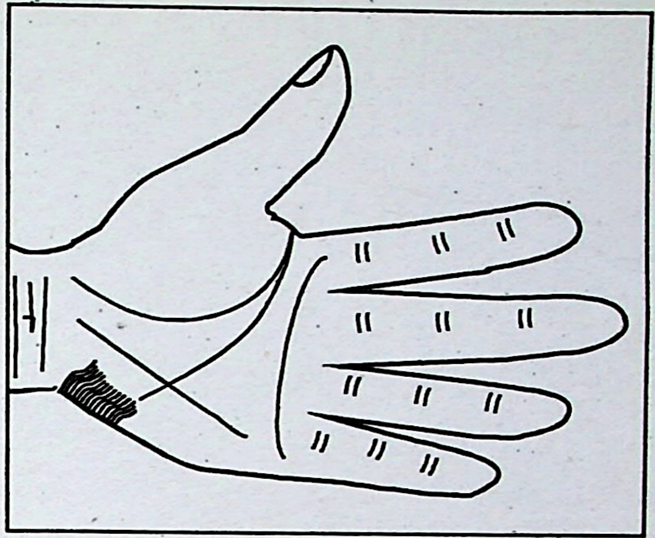
चित्र-205

मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा से बनने वाला दूसरा कोण अगर साफ और अच्छा बना हुआ हो तो जातक की आयु लम्बी होती है और वह कुशाग्र बुद्धि होता है।

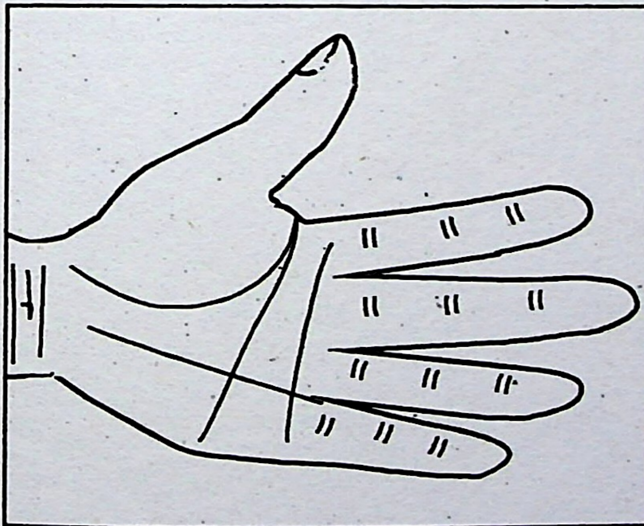


चित्र-206

अगर त्रिभुज का दूसरा कोण चन्द्र पर्वत पर बना हुआ हो तो मृगी अथवा पक्षाघात की बीमारी हो सकती है।



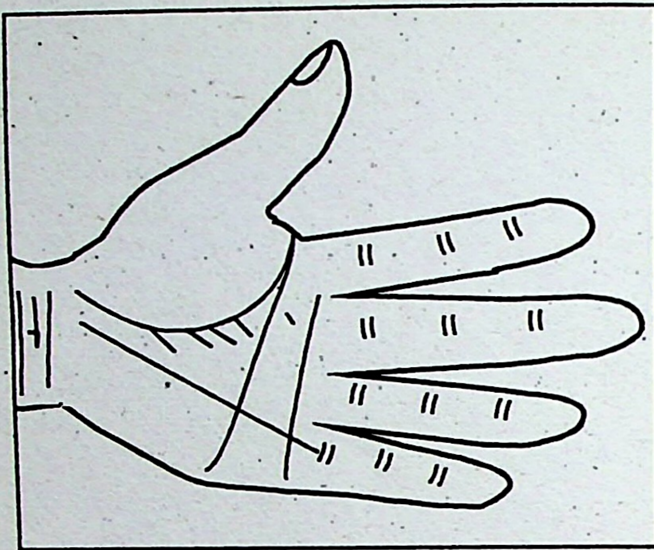
चित्र-207



चित्र-208

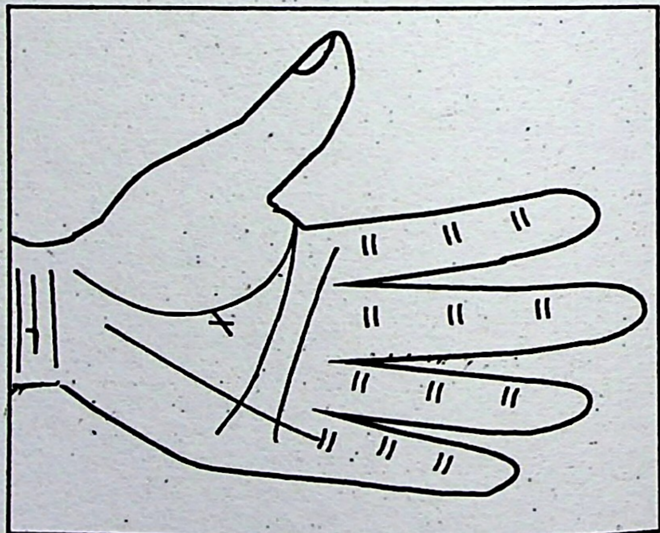
अगर त्रिभुज में लाल बिन्दु दिखाई दें तो औरत के हाथ में गर्भ धारण का सूचक है।

अगर श्वेत बिन्दु दिखाई दें तो यह खून की कमी, बेहोशी के दौरे पड़ने का संकेत देते हैं।



अगर जीवन रेखा से छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर त्रिभुज में खत्म हों तो जातक को बड़े संघर्ष के बाद धन और सम्मान मिलता है।

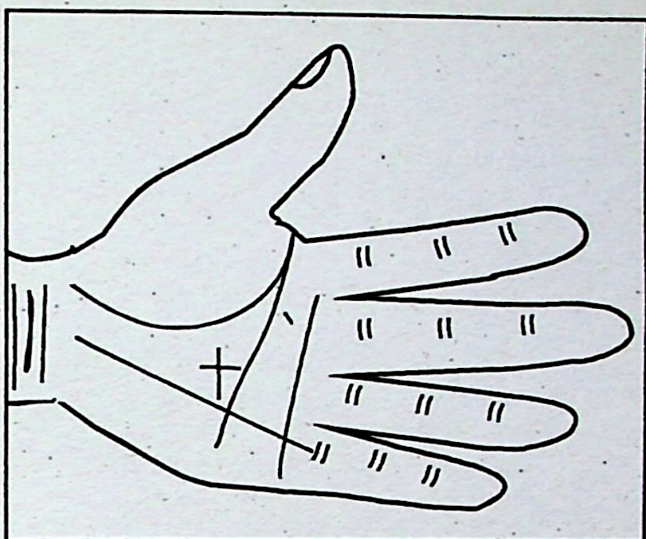
चित्र-209



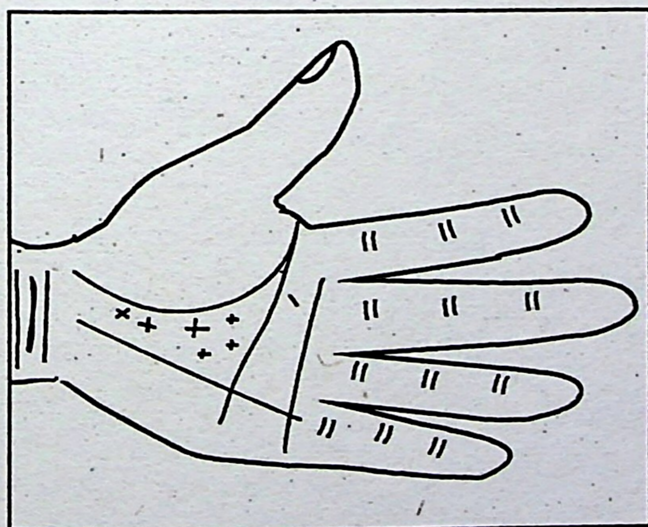
अगर त्रिभुज में छोटी रेखा फोर्क बनाए तो यह सेहत की कमजोरी की निशानी है।

चित्र-210

अगर त्रिभुज के केन्द्र में क्रॉस (×) का निशान हो तो जातक की झगड़ालू प्रवृत्ति होने से दूसरे लोग जातक के लिए मुसीबतें खड़ी करते हैं।

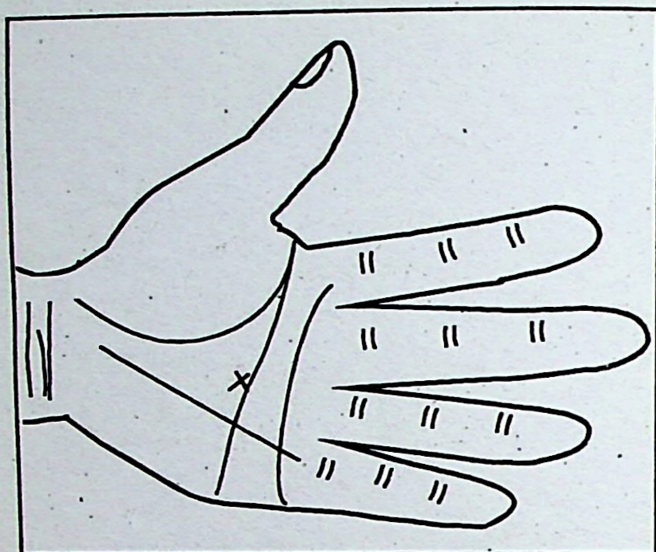


चित्र-211



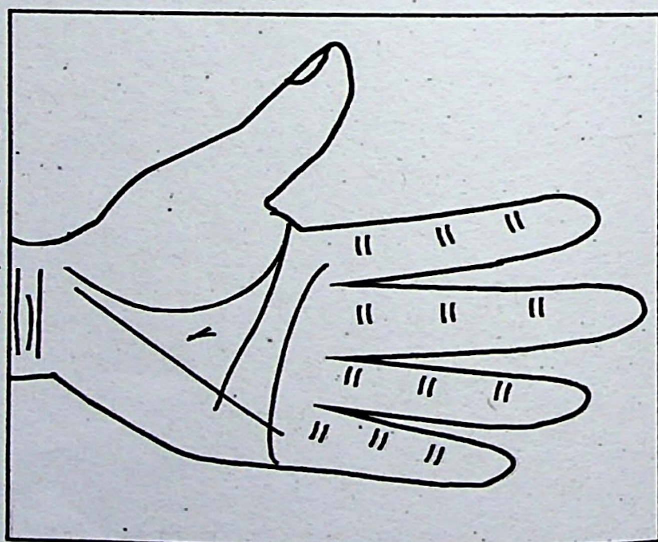
अगर त्रिभुज में क्रॉस (×) के निशान अधिक हों तो जातक को लगातार दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है।

चित्र-212



अगर दोनों हाथों में केन्द्र में क्रॉस (×) का निशान हो तो यह कत्ल होने की सूचना देता है।

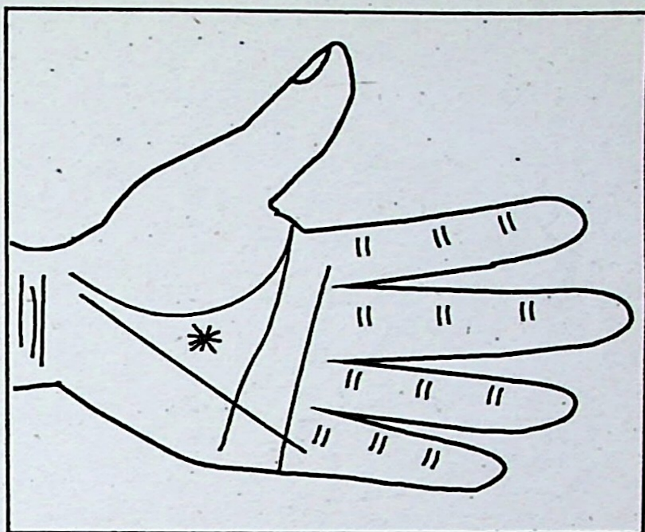
चित्र-213



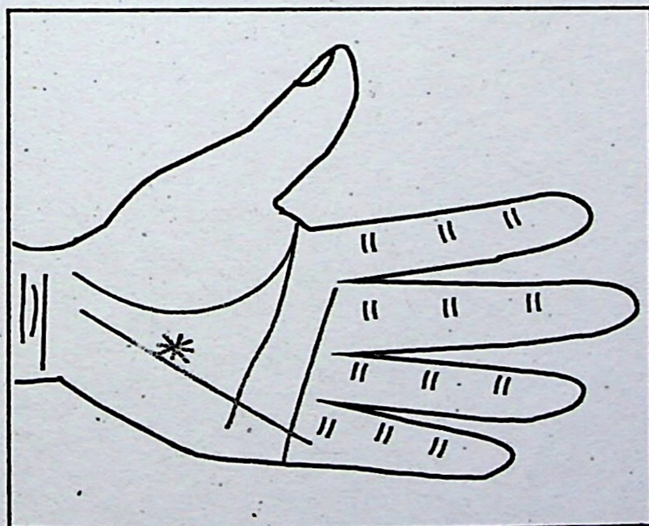
अगर त्रिभुज में बदशक्ल या अनियमित क्रॉस (×) का चिह्न हो तो जातक को बुरे दिन देखने पड़ते हैं।

चित्र-214

अगर त्रिभुज में केन्द्र में तारे (☆) का निशान हो तो यह धन-सम्पत्ति और सफलता का सूचक है। अगर दोनों हाथों में तारे का निशान हो तो यह घातक मृत्यु का द्योतक है। लेकिन क्रॉस (×) का निशान किसी भी रेखा को छूता न हो।

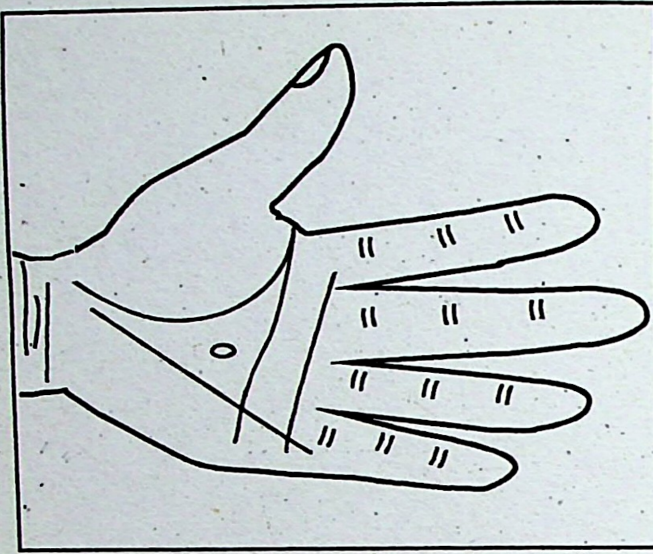


चित्र-215



चित्र-216

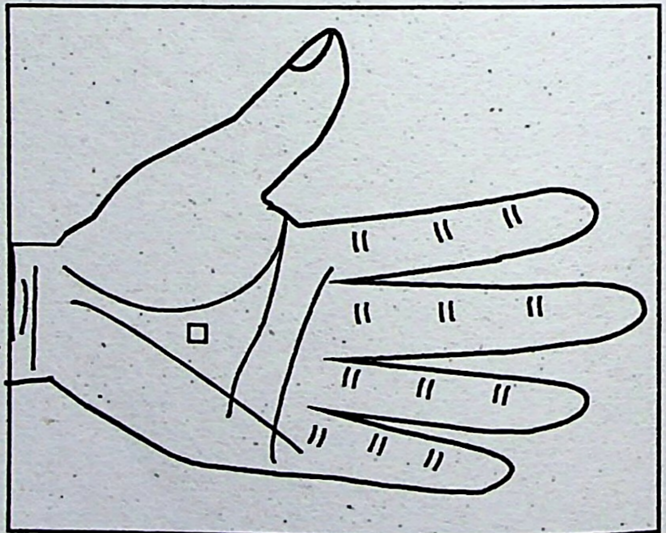
अगर त्रिभुज में स्वास्थ्य रेखा के पास तारे (☆) का निशान हो तो यह अन्धेपन का सूचक है।



अगर त्रिभुज में वृत्त (O) निशान हो तो जातक को विपरीत सेक्स के व्यक्ति से कष्ट और हानि पहुंचती है।

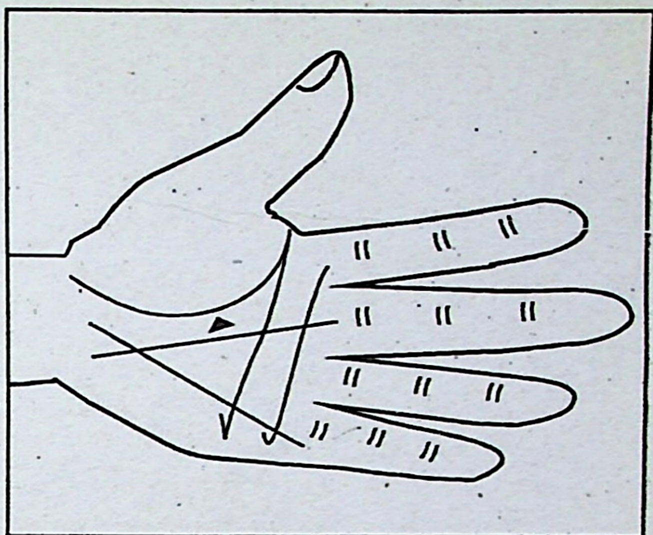
चित्र-217

अगर त्रिभुज के केन्द्र में वर्ग (□) का निशान हो जो किसी बड़ी रेखा को स्पर्श न करता हो तो यह किसी गम्भीर खतरे की सूचना देता है।

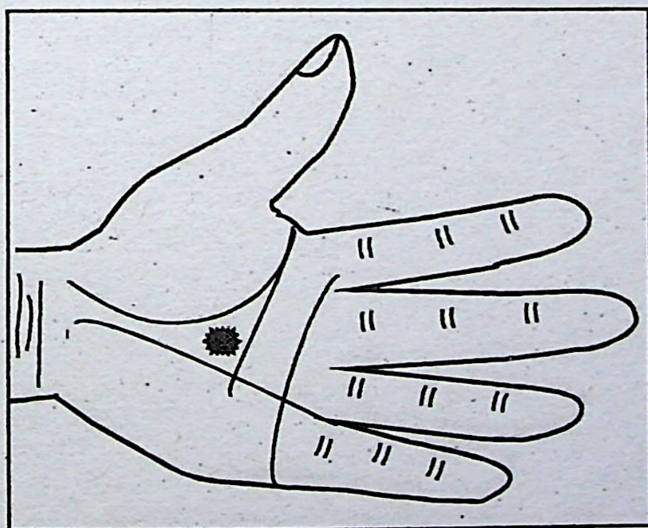


चित्र-218

अगर जीवन रेखा और भाग्य रेखा के बीच में त्रिभुज (◺) हो तो सेना में प्रसिद्धि मिलती है।

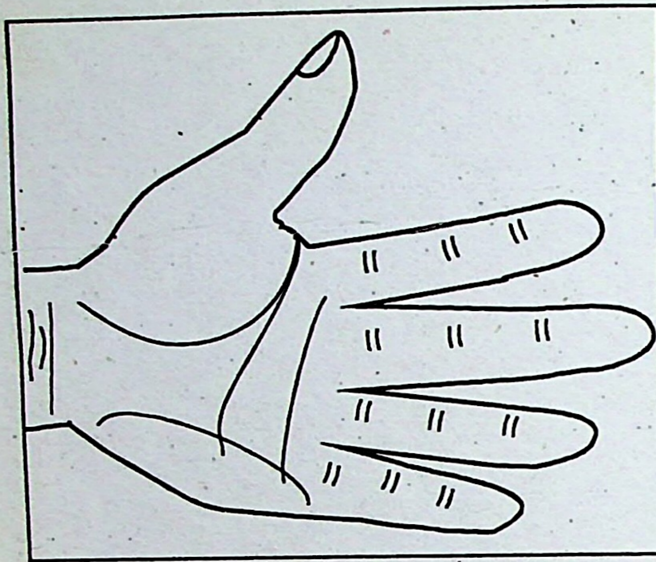


चित्र-219



चित्र-220

अगर त्रिभुज में जाली (▦) का निशान हो तो जातक की शर्मनाक मृत्यु होती है। एक अच्छे हाथ में यही निशान गुप्त शत्रुओं का पैदा होना बताता है।



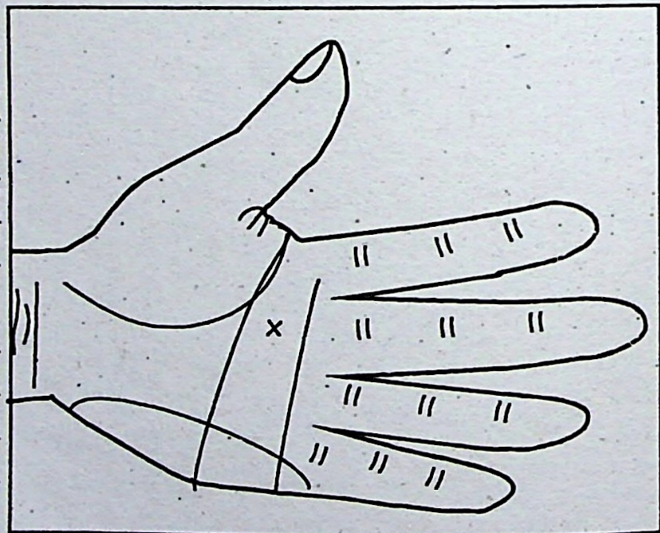
चित्र-221

अन्तःप्रेरणा रेखा

यह रेखा चन्द्र क्षेत्र से शुरू होकर गोलाई लिए हुए बुध पर्वत पर आती है। जिनके हाथ में यह अन्तःप्रेरणा रेखा हो, वह व्यक्ति ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र में रुचि रखते हैं तथा आने वाले भविष्य में होने वाली घटनाओं की पहले ही सूचना दे देते हैं।

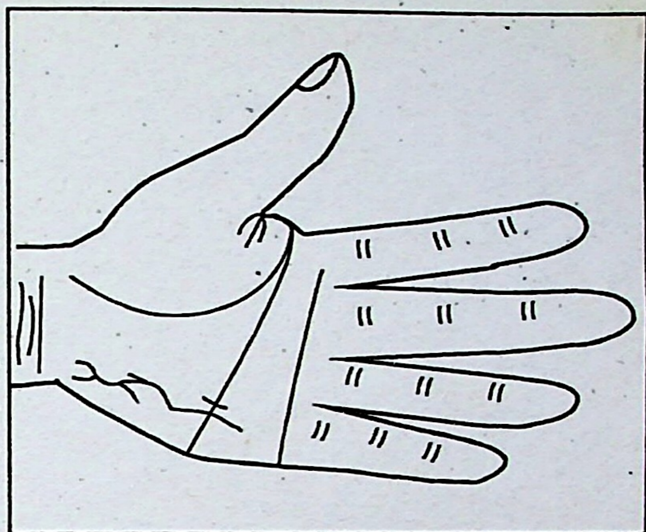
अगर यह रेखा स्पष्ट हो और वृहद् चतुष्कोण में क्रॉस का निशान हो तो जातक ज्योतिष आदि विद्याओं में विशेष प्रवीण होता है।

अगर यह रेखा स्पष्ट हो और हाथ में चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक मैस्मेरिज्म में अधिक प्रवीण होगा।

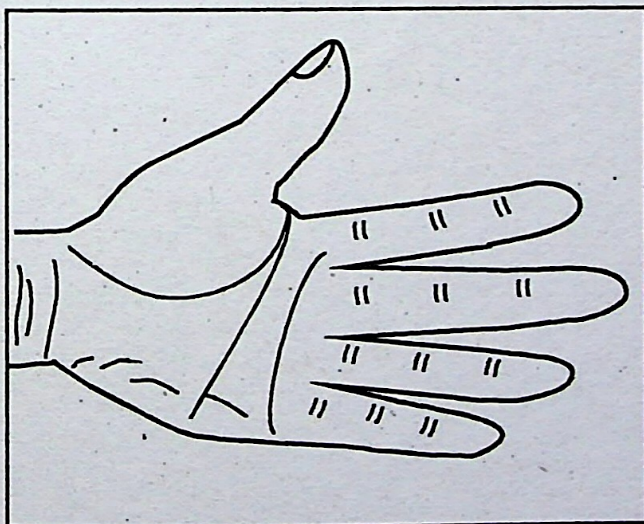


चित्र-222

अगर अन्तः-प्रेरणा रेखा छोटी, टेढ़ी, शाखायुक्त हो, मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तो जातक हलचल-युक्त अशान्त प्रवृत्ति का होता है, उसको किसी तरह भी खुश करना कठिन होता है।

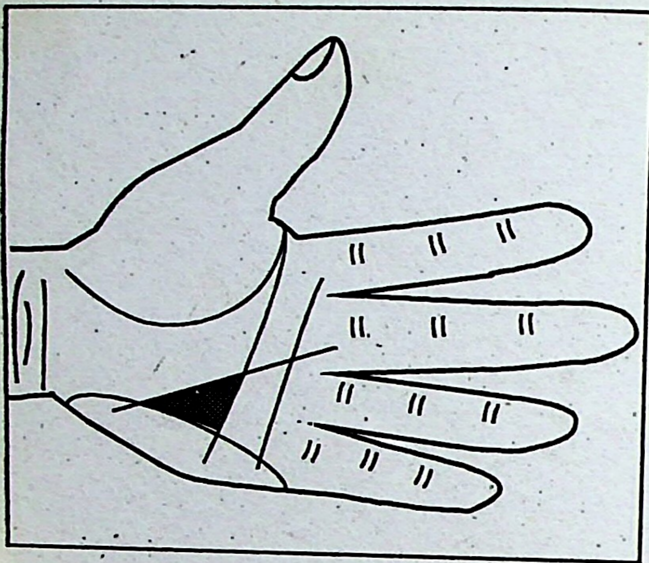


चित्र-223



चित्र-224

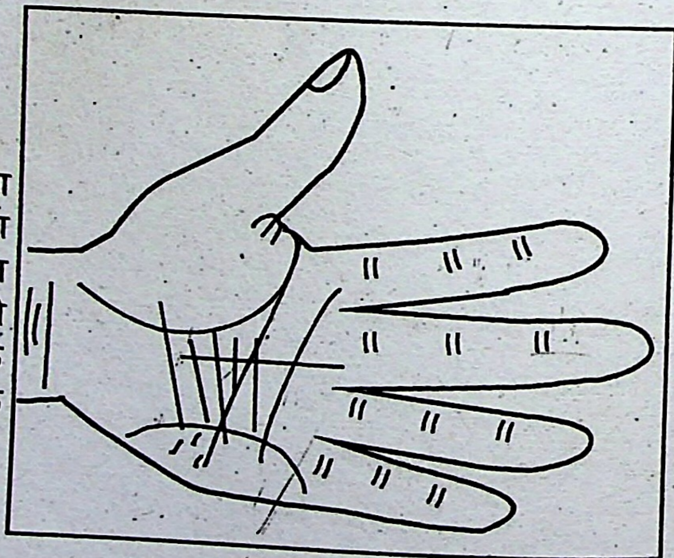
अगर अन्तः-प्रेरणा रेखा अपने मार्ग से बार-बार टूटे तो जातक को अन्तर्ज्ञान कभी-कभी होता है हमेशा नहीं।



अगर अन्तः-प्रेरणा रेखा भाग्य रेखा और मस्तिष्क रेखा के साथ मिलकर छोटी त्रिकोण बनाए तो जातक गुप्त विद्याओं में बहुत प्रवीण होता है।

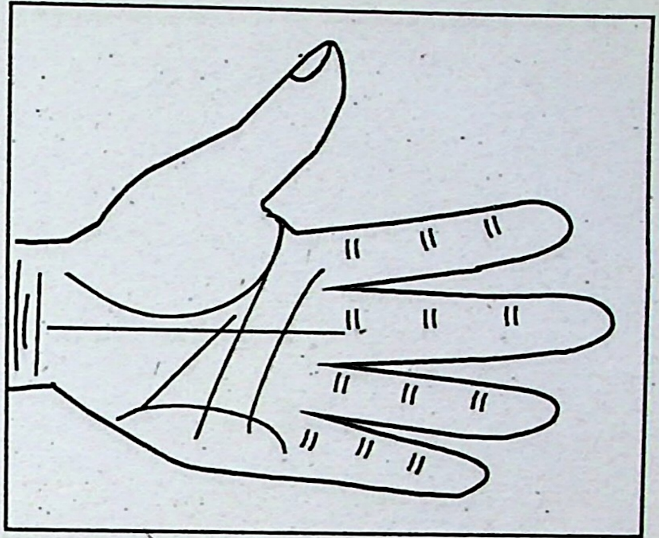
चित्र-225

अगर यह रेखा भाग्य और जीवन रेखा को काटे तो उस व्यक्ति के सम्बन्धी उसकी गुप्त विद्याओं के अध्ययन में बाधक होते हैं।

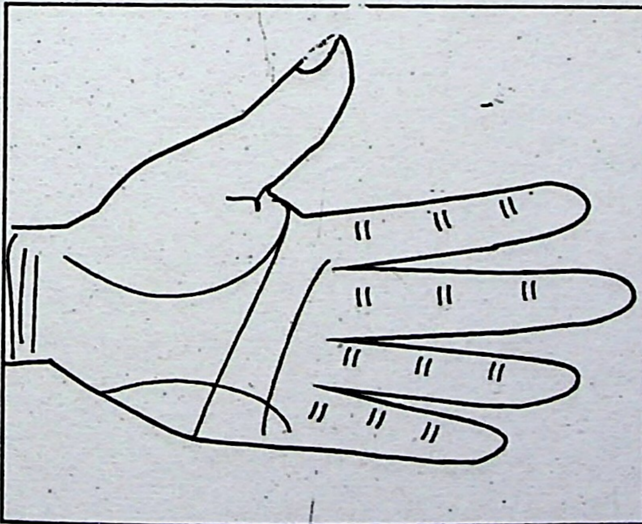


चित्र-226

अगर अन्तः-प्रेरणा रेखा को और भाग्य रेखा को चन्द्र पर्वत से निकली हुई कोई प्रभाव रेखा काटे तो जातक की गुप्त विद्याओं में रुचि जातक के भविष्य और व्यवसाय पर बुरा प्रभाव डालती है।

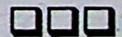


चित्र-227



चित्र-228

अगर अन्तः-प्रेरणा रेखा के शुरू में द्वीप हो तो जातक रात को नींद में उठकर चलने लगता है।





शरीर के कुछ अंग और ज्योतिष फल

(1) जो व्यक्ति शान्तिपूर्वक हाथ हिलाकर चलते हों, वे आक्रान्त स्वभाव के होते हैं।

(2) मोर और शेर जैसी चाल वाले व्यक्ति भाग्यवान होते हैं।

(3) बेचैनी से हाथों को एक-दूसरे से रगड़ने वाले व्यक्ति किंकर्त्तव्यविमूढ़, हतोत्साहित एवं स्वभाव से अमीर होते हैं।

(4) जो व्यक्ति खुले हाथ करके चलते हैं, वे खर्चीले, अय्याश होते हैं।

(5) भेड़िया, उल्लू और कौवे जैसे स्वर वाले व्यक्ति दुष्टता के प्रतीक होते हैं।

(6) मेघ और मोर जैसे स्वर वाले व्यक्ति सुख-सम्पत्ति का उपयोग करते हैं।

(7) जिन व्यक्तियों के हाथ कुहनी पर मुड़े हुए हों वे आत्मगर्व, प्रवंचना और दूसरों के प्रति हेय भावना रखने वाले होते हैं।

(8) जो व्यक्ति कहीं आते-जाते, स्वाभाविक रूप से हाथ हिलाते हैं, वे खुली किताब की तरह ईमानदार और विश्वसनीय होते हैं।

(9) जिन लोगों के अंगूठों पर गर्व का निशान हो ऐसे लोग बुद्धिमान और सम्पत्तिवान होते हैं।

(10) पीछे की तरफ कमर पर हाथ रखकर चलने वाले व्यक्ति शक्की, अधिक सतर्क एवं आत्मदर्प दर्शाते हैं।

(11) जिन लोगों के हाथ चलते समय शक्तिहीन रूप से हिलते हैं, ऐसे लोग लक्ष्यहीनता और लापरवाही के प्रतीक होते हैं।

(12) जिनकी मुट्ठियां बन्द रहती हैं, वे व्यक्ति किसी फैसले पर पहुंचने से पहले तर्क और चतुराई से काम लेते हैं।

(13) जिन लोगों के माथे पर पांच रेखाएं हों, वे लोग शतजीवी होते हैं।

(14) हंस, हाथी और बैल जैसी चाल वाले व्यक्ति धर्मात्मा एवं धन कमाने वाले होते हैं।

(15) जिन पुरुषों के चौड़े माथे पर सरल अखण्डित और स्पष्ट रेखा हों, तो वह पुरुष भाग्यशाली होता है। इस रेखा के नीचे दूसरी और तीसरी रेखा भी इसी रेखा की तरह सरल अखण्डित और स्पष्ट रहें, तब भी वह मनुष्य बड़ा भाग्यवान होता हैं।

(16) मांसल रक्त वर्ग पैर तल वाले लोग धनवान होते हैं।

(17) किसी भी मनुष्य की मांसल पिंडलियां और जंघायें जिन पर काले नरम और पतले रोम हों, ऐसे लोगों में निश्चय शक्ति और प्रभुत्व होता है।

(18) अगर हथेली का रंग पीला हो, तो यह तृष्णा की परिचायक है।

(19) हथेली में पतली रेखाएं बुद्धिमान व्यक्तियों के होती हैं।

(20) अगर पांव की अनामिका दीर्घ हो, तो व्यक्ति धनवान होता है।

(21) पांव की तर्जनी उंगली अगर अंगूठे से बड़ी हो, तो वह व्यक्ति स्त्री सुख प्राप्त करता है।

(22) अगर हथेली का रंग लाल हो, तो यह धनधान्य का सूचक होता है।

(23) हथेली में पतली रेखाएं बुद्धिमान व्यक्तियों की होती हैं।

(24) हथेली में ऊंची-नीची, टूटी-फूटी रेखाएं हों तो ये अशुभ मानी जाती हैं।

(25) काली और सफेद हथेली दरिद्रता की परिचायक होती हैं।

(26) भड़कीली फूली और रोमयुक्त भुजाएं नौकरों-चाकरों की होती हैं।

(27) घुटनों तक लम्बी हाथी की सूंड जैसी भुजाओं वाला व्यक्ति राजा होता है।

(28) अगर पांव की कनिष्ठिका उंगली छोटी और मांसल हो तो व्यक्ति मातृसुख से वंचित रहता है।

(29) नस न दिखने वाली भुजाओं वाला मनुष्य श्रेष्ठ होता है।

(30) अगर किसी मनुष्य की छाती नसों से भरी; खुरदरी हो तो जातक दरिद्र होता है।

(31) रूक्ष, कुरूप और अस्थि-प्रधान धरातल वाले व्यक्ति गरीब होते हैं।

(32) चौड़ा मुंह दुर्भाग्य का सूचक है।

(33) छोटी गर्दन वाले लोग श्रेष्ठ होते हैं।

(34) जिसके मस्तक पर चार रेखाएं हों, वह अस्सी साल की उम्र तक जीता है।

(35) स्त्रियों के समान सुख सन्तानहीनों को होता है।

(36) लम्बी गर्दन भयंकर लोगों की होती है।

(37) छोटे होंठ भीरू व्यक्ति के होते हैं।

(38) चौकोर मुंह धोखेबाज और मायावी लोगों का होता है।

(39) जिनके मस्तक पर तीन रेखाएं होती हैं, वे लोग सत्तर साल तक जीते हैं।



विश्वविख्यात हस्तरेखा विज्ञानी कीरो की यह अनुपम पुस्तक अपने सहज मगर अद्‌भुत ज्ञान के कारण सारे संसार की भाषाओं में अनुवादित होकर हाथों-हाथ बिकती रही है और बिक रही हैं। हिन्दी पाठकों के लिये यह पुस्तक हस्तरेखा विज्ञान की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करती है।

गुरु की उंगली
शनि की उंगली
सूर्य की उंगली
बुध की उंगली
विवाह रेखा
हृदय रेखा
मस्तिष्क रेखा
इच्छा शक्ति
आघात
जीवन रेखा
प्रेम
Nitin

A.H.W. MARUTI SERIES



मारुति प्रकाशन

Radhika Computers, 0121-767159